फिर अमृत की बूंद पड़ी

मैं स्वतंत्र आदमी हूं

बड़े दुख भरे हृदय से मुझे आपको बताना है कि आज हमारे पास जो आदमी है, वह इस योग्य नहीं है कि उसके लिए लड़ा जाए।

टूटे हुए सपनों, ध्वस्त कल्पनाओं और बिखरी हुई आशाओं के साथ मैं वापस लौटा हूं। जो मैंने देखा वह एक वास्तविकता है, और अपने पूरे जीवन भर जो कुछ मैं मनुष्य के विषय में सोचता रहा, वह केवल उसका मुखौटा था। मैं आपको थोड़े से उदाहरण दूंगा, क्योंकि यदि मैं अपनी पूरी विश्व यात्रा का वर्णन सुनाने लगूं तो इसमें करीब-करीब एक माह लग जाएगा। इसलिए कुछ महत्वपूर्ण बातें ही आपसे कहूंगा, जो कुछ संकेत दे सकें।

मुझसे पहले, पूरब से विवेकानंद, रामतीर्थ, कृष्णमूर्ति तथा सैकड़ों अन्य लोग दुनिया भर में गए हैं लेकिन उनमें से एक भी व्यक्ति पूरे विश्व द्वारा इस भांति निंदित नहीं किया गया जिस भांति मैं निंदित किया गया हूं; क्योंकि उन सभी ने राजनीतिज्ञों जैसा व्यवहार किया। जब वे किसी ईसाई देश में होते तो ईसाइयत की प्रशंसा करते और मुस्लिम देश में वे इस्लाम की प्रशंसा करते। स्वभावत: किसी ईसाई देश में यदि पूरब का कोई आदमी, जो कि ईसाई नहीं है, ईसा मसीह की गौतम बुद्ध की तरह प्रशंसा करता है तो ईसाई प्रसन्न होते हैं, अत्यंत प्रसन्न होते हैं। और इनमें से एक भी व्यक्ति ने पश्चिम के एक भी ईसाई को पूरब के जीवन दर्शन में, पूरब की जीवन-शैली में नहीं बदला। इसी दौरान पश्चिम से ईसाई मिशनरी यहां आते रहे और लाखों लोगों को ईसाई बनाते रहे।

शायद मैं पहला अकेला व्यक्ति हूं जिसने हजारों युवा शिक्षित, बुद्धिमान पश्चिमी लोगों को पूर्वी चिंतन और शैली में दीक्षित किया। और इससे पश्चिमी धार्मिक व राजनीतिक न्यस्त स्वार्थों को इस कदर धक्का लगा जो अविश्वसनीय है। यदि मैंने स्वयं इसका अनुभव न किया होता तो मैंने भी इस बात पर भरोसा नहीं किया होता।

सभी यूरोपीय देशों की एक संसद है, उस संसद ने यह निर्णय लिया है कि मेरा वायुयान यूरोप के किसी हवाई अड्डे पर नहीं उतर सकता। उनके देशों में मेरे प्रवेश का तो अब प्रश्न ही नहीं उठता। यहां तक कि उनके हवाई अड्डों पर ईंधन के लिए भी मेरा वायुयान नहीं उतर सकता और इसका कारण यह बताया गया कि मैं एक खतरनाक आदमी हूं। मुझे यह तर्क समझ में नहीं आता कि वायुयान के लिए ईंधन लेने के 15 मिनट के भीतर मैं किसी को क्या खतरा पहुंचा सकता हूं। मैं रात के 11 बजे इंग्लैंण्ड पहुंचा, पायलट के काम का समय पूरा हो चुका था, और उसे 12 घण्टे के लिए विश्राम करना था। फिर भी वे मुझे हवाई अड्डे पर विश्राम करने की भी अनुमति नहीं दे रहे थे। मैंने उन्हें बताया कि हवाई अड्डे पर आगे जाने वाले यात्रियों के विश्राम के लिए विशेष सुविधाएं रहती हैं जहां वे कुछ घण्टे विश्राम कर सकते हैं और फिर अपनी यात्रा पर निकल जाते हैं। और मैं इंग्लैंण्ड में प्रवेश नहीं करने वाला हूं। लेकिन उन्होंने कहा कि हमें खेद है, ऊपर से

ये आदेश दिए गए हैं कि यह व्यक्ति खतरनाक है। यह व्यक्ति तुम्हारे धर्म को नष्ट कर सकता है। यह व्यक्ति तुम्हारी नैतिकता को मिटा सकता है।इस व्यक्ति को देश में प्रवेश नहीं दिया जाना चाहिए।

मैंने कहा भी कि मैं तुम्हारे देश में प्रवेश नहीं कर रहा हूं, हवाई अड्डा तो देश नहीं है। और मेरी समझ में नहीं आता कि हवाई अड्डे पर पांच-छह घंटे सोने से मैं किस तरह तुम्हारी नैतिकता को, तुम्हारे धर्म को, तुम्हारी परंपरा को नष्ट कर सकता हूं। और यदि यह संभव है कि एक आदमी हवाई अड्डे पर प्रथम श्रेणी के विश्राम कक्ष में छह घंटे की नींद से ही एक ऐसे धर्म और नैतिकता को नष्ट कर दे जिसका तुम पिछले दो हजार वर्षों से प्रचार करते आ रहे हो तो वह धर्म और नैतिकता इस योग्य है कि उसे नष्ट कर दिया जाए।

और दूसरे दिन ही ब्रिटेन की संसद में जब यह प्रश्न पूछा गया कि मुझे क्यों रोका गया तो वही उत्तर मिला कि मैं नैतिकता के लिए, धर्म के लिए, परंपरा के लिए खतरा हूं और आश्चर्य की बात तो यह है कि पूरी संसद में एक आदमी ने भी यह नहीं पूछा कि किस प्रकार आधी रात थक कर सोया हुआ व्यक्ति जो सुबह छह बजे आगे यात्रा पर निकल जाने वाला है, तुम्हारी ईसाइयत को नष्ट कर सकता है, जिसकी शिक्षा तुम पिछले 2000 वर्षों से हर बच्चे को बचपन से ही देते आ रहे हो, उसमें संस्कारित करते आ रहे हो। यदि 2000 वर्षों की शिक्षा छह घंटे में ही नष्ट की जा सकती हो तो फिर तुम्हारी उस शिक्षा में जरूर कुछ दोष होगा।

यहां तक कि उन देशों की संसदों ने भी जहां मुझे जाना ही नहीं था यह निर्णय लिया कि मुझे उन देशों में प्रवेश की अनुमति न दी जाए।

दक्षिणी अमरीका के एक छोटे-से देश उरुग्वे ने मुझे अनुमति दी, क्योंकि उस देश के राष्ट्रपति मेरी पुस्तकों को पढ़ते रहे हैं, मेरे टेप सुनते रहे हैं। वे एक युवा बुद्धिमान व्यक्ति हैं। उन्होंने मुझे रहने के लिए छह महीने का वीसा दिया। वह मुझसे मिलना चाहते थे। लेकिन जैसे ही मैंने उरुग्वे में प्रवेश किया कि उरुग्वे पर अमरीकी दबाव एकदम बढ़ गया।

अमरीकी राष्ट्रपति ने उरुग्वे के राष्ट्रपति को कहा कि यदि मुझे 36 घंटे के अंदर देश के बाहर नहीं निकाला गया तो उन्हें उरूग्वे को अतीत में दिया गया ऋण जो कि करोड़ों डालर है तुरंत चुकाना पड़ेगा। और यदि वे ऐसा नहीं करते हैं तो उस पर ब्याज की दर कल से ही दोगुनी हो जाएगी।

और दूसरी बात यह कि उरुग्वे के साथ करोड़ों डालर के आगामी पांच वर्षों के लिए सहायतार्थ जो समझौते किए गए हैं वे भी रद्द कर दिए जाएंगे। अब आप ही चुनाव करें। आप चुनाव करने के लिए स्वतंत्र हैं। आपको हमारे सहयोग और इस व्यक्ति के बीच चुनाव करना होगा।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा, मुझे बताया गया कि आंसू-भरी आंखों से उरुग्वे के राष्ट्रपति ने यह कहा कि भगवान के उरुग्वे आगमन से हमें अंतर्दृष्टि मिली

है, कम से कम इससे एक बात तो साफ हो गई कि हम स्वतंत्र नहीं हैं। मुझे 36 घंटों के भीतर ही उरुग्वे छोड़ना पड़ा। क्योंकि उरुग्वे जैसे एक छोटे से देश के लिए यह संभव नहीं है कि वह लाखों डालर का ऋण भुगतान कर सके और भविष्य में मिलने वाले ऋणों के बिना काम चला सके। मैंने स्वयं ही उरुग्वे के राष्ट्रपति को का कि आप चिंतित न हों, मुझे आपकी स्थिति का एहसास है। यदि आप मुझे यहां से वापस भेजते हैं तो आपको ऐसा करना अच्छा नहीं लगेगा। इसलिए मैं खुद ही जा रहा हूं ताकि आपको कुछ खराब न लगे।

और जैसे ही मैंने उरुग्वे छोड़ा उरुग्वे के राष्ट्रपति को वाशिंग्टन से अमरीकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन की मुलाकात करने के लिए निमंत्रण दिया गया। अमरीका पहुंचने पर उरुग्वे के राष्ट्रपति का शानदार स्वागत हुआ, और 36 करोड़ डालर का उन्हें शीघ्र ऋण दिया गया जिसके लिए पहले से कोई समझौता नहीं था। यह पुरस्कार था।

ऐसा लगाता है कि पुराने ढंग की गुलामी तो मिट चुक है। मानवता राजनैतिक रूप से अब गुलाम नहीं है, लेकिन एक और बड़ी गुलामी, आर्थिक गुलामी प्रवेश कर चुकी है।

मैं करीब-करीब पूरी दुनिया में घूमा हूं। हर बार हर देश में एक ही कहानी दोहराई गई...जब तक मैं किसी देश में पहुंचूं कि मेरे पहले ही वहां पहुंच जाता ताकि वे उस देश के राष्ट्रपति से, प्रधान मंत्री से संपर्क कर सकें और उनका खतरे से आगाह कर सकें।

उरुग्वे के राष्ट्रपति ने मुझे सूचना दी है कि यह बेहतर होगा कि मैं अपनी विश्व यात्रा रोक दूं, क्योंकि वे मेरे जीवन के विषय में चिंतित हैं। राष्ट्रपति ने बताया कि व्हाइट हाउस में उन्होंने यह सुना कि 5 लाख डालर पर एक हत्यारे को मुझे जान से मारने लिए भाड़े पर लिया गया है। मैं एक अकेला निहत्था आदमी हूं। और पूरे विश्व इतिहास में अब तक की सबसे बड़ी शक्ति रखने वाला देश एक अकेले निहत्थे आदमी से इतना डरा हुआ है।

अमरीकी के एटार्नी जनरल ने समाचार पत्र प्रतिनिधियों से कहा कि वे मेरा नाम भी सुनना नहीं चाहते, वह किसी भी समाचार पत्र व पत्रिका में मेरा चित्र नहीं देखना चाहते हैं, वह यह भी नहीं जानना चाहते कि मैं जीवित हूं या नहीं। मेरा नामोनिशां पूरी तरह मिटा दिया जाना चाहिए। और मैंने अपराध क्या किया है? नहीं, केवल सोच-विचार करना सबसे बड़ा अपराध है, और लोगों को यह दिखाना कि तुम गलत हो सबसे बड़ा अपराध है।

ग्रीस के राष्ट्रपति के निमंत्रण पर मैं ग्रीस में था। मैंने यह निमंत्रण इसलिए स्वीकार किया कि मैं देखना चाहता था कि आखिर वे लोग कौन हैं जिन्होंने सुकरात जैसे व्यक्ति की हत्या कर दी। हमने तो यहां गौतम बुद्ध की पूजा की। और ये दोनों महापुरुष समसामयिक थे। दोनों में एक जैसी प्रखर मेधा थी। दोनों के पास वह चेतना थी जो मनुष्य के अस्तित्व के तल को ऊंचा उठा सके। हमने तो गौतम बु

द्ध की पूजा की और ग्रीस ने सुकरात को जहर दे दिया। मैं देखना चाहता था कि ये लोग कैसे हैं।

मैं एक माह का वीसा मिला था। और 15 दिन के भीतर ही ग्रीस में आर्चरशिप ने यह घोषणा कर दी कि यदि मुझे ग्रीस से तत्काल बाहर नहीं निकाला गया तो वे , जिस घर में मैं मेहमान था उस घर में मुझे मेरे सभी मित्रों के साथ जीवित जला देंगे।

जिस समय पुलिस पहुंची मैं सो रहा था। दो सप्ताह बीत चुके थे और मुझे केवल दो सप्ताह और वहां रहना था। ग्रीस में जो मेरी सचिव थी उसने पुलिस को कहा कि आप प्रतीक्षा कक्ष में बैठें, मैं उन्हें जगा देती हूं। जरा उन्हें मुंह हाथ धो लेने दें , कपड़े बदल लेने दें। लेकिन उन्होंने पांच मिनिट भी इंतजार करने से इनकार किया। उन्होंने कहा कि वे घर को आग लगा देंगे और यह कि हम अपने साथ डायनामाइट लाए हैं और हम घर को डायनामाइट से उड़ा देंगे। उन्होंने डायनामाइट भी दिखाया। और उन्होंने मेरी सचिव को एक ऊंचे स्थान से पथरीली सड़क पर धकका देकर गिरा दिया। वे उसे पुलिस की गाड़ी तक बिना किसी गिरफ्तारी के वारंट के, बिना किसी कारण घसीटते हुए ले गए। उसका अपराध सिर्फ इतना था कि उसने उनसे यह कहा था कि कृपया पांच मिनट प्रतीक्षा करें, जरा मैं उनका जगा दूं।

मैं अचानक उठा और जो कुछ मैंने देखा उस पर मैं भरोसा नहीं कर सका क्योंकि मैं कभी दुस्वप्न नहीं दुखता हूं। ऐसा लगा कि कि बम विस्फोट हो रहा है, पुलिस ने घर के दरवाजों पर खिड़कियों पर पत्थर फेंकने शुरू कर दिए थे। घर में पत्थर आ रहे थे।

मैं भागकर नीचे पहुंचा और पूछा कि आखिर बात क्या है। उन्होंने मुझसे कहा कि आपको इसी क्षण यहां से जाना होगा, क्योंकि आर्थोडाक्स क्रिश्चियन चर्च के आर्चबिशप यह नहीं चाहते कि आप यहां रहें। मैंने कहा, ठीक है। मैं अपनी मर्जी से यहां नहीं आया हूं। मुझे यहां आने का निमंत्रण दिया गया था। यह ग्रीस के राष्ट्रपति का अपमान है और मेरा भी। मुझे तो इस बात का प्रमाण मिल गया है कि तुम ही वे लोग हो, जिन्होंने निश्चय ही सुकरात को जान से मार दिया होगा। क्योंकि मैं यहां केवल अभी दो सप्ताह से ही हूं और मैं कभी इस घर से बाहर नहीं निकला। सुकरात तो पूरे जीवन भर यहां रहा। इन पच्चीस शताब्दियों मैं तुम जरा भी नहीं बदले हो, तुम अभी भी जंगली, दुष्ट हो।

मैं पूरी दुनिया में घूमता रहा, एक के बाद एक इसी तरह के अनुभव हुए। सारा लोकतंत्र नकली है। सभी स्वतंत्रता के सिद्धांत, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के सिद्धांत झूठे हैं। यह आशा कि किसी दिन मनुष्य मानव बनेगा, एक बहुत दूर का तारा मालूम पड़ती है।

मैंने हमेशा ही अहिंसा में विश्वास किया है, शांति में विश्वास किया है। लेकिन इस विश्व यात्रा के बाद मुझे यह स्वीकार करना पड़ रहा है कि अब शांति और अहिं

सा में मेरा भरोसा नहीं रहा। मैं तृतीय विश्व युद्ध के खिलाफ था, लेकिन बड़ी ही पीड़ा के साथ मुझे आपसे यह कहना पड़ रहा है कि शायद तृतीय महायुद्ध की ज रूरत है। यह मानवता इतनी सड़ी गली है कि इसे नष्ट ही हो जाना चाहिए। कम -से-कम दुनिया का कुरूप आदमियों से तो मुक्त हो जाना चाहिए। मानव-चेतना के विकास के लिए अस्तित्व को कोई और ढंग खोजना होगा।

और वैज्ञानिकों का कहना है कि ब्रह्मांड में कम-से-कम 50,000 ग्रह हैं, जहां जीव न है। अतः यदि इस कि सी धरती पर से जीवन विदा हो जाए तो कोई हर्ज नहीं है।

इस प्रकार का जीवन मनुष्य जीवन नहीं है। और डारविन बिलकुल गलत है, जब वह कहता है कि आदमी बंदर से विकसित हुआ है। आदमी अभी भी बंदर ही है। शायद वह पेड़ से गिर गया है। उसका विकास नहीं हुआ है, पतन हुआ है।

आज से मेरा कार्य कुछ थोड़े से उन व्यक्तियों के लिए होगा, जो ध्यान में, शांति में, मौन में गति करना चाहते हैं। और मैं इस मानवता के लिए और इस ग्रह के लिए सभी आशाएं छोड़ता हूं। यह पृथ्वी गंदे हाथों में है, और इस को बदलना अ संभव है, क्योंकि सारी सत्ता इनके पास है।

मेरे अपने ही देश में, कल ही जब मैंने हवाई अड्डे में प्रवेश किया तो वहां लिखा था, भारत में आपका स्वागत है। मेरे पास कोई सामान हनीं था। मेरे पास अधिका रियों के सामने घोषित करने योग्य वस्तु नहीं थी। और फिर भी मुझे वहां तीन घं टों तक रुकना पड़ा। और मैंने यह बार-बार यह पूछा भी कि एक भारतीय का य ह कैसा स्वागत है। मैं कोई टूरिस्ट नहीं हूं।

इस गंदी नौकरशाही ने, इन गंदी सरकारों ने, इन गंदे धर्मों ने एक सुंदर ग्रह को भ्रष्ट कर दिया है।

मैंने आपको सिर्फ यह कहने के लिए बुलाया है कि मैंने पूरी तरह निराश हो चुका हूं, मेरे सारे भ्रम टूट गए हैं। अब मैं केवल उन व्यक्तियों के लिए जीऊंगा, जो व यक्तिगत रूप से विकास करना चाहते हैं, क्योंकि पूरी मानवता के लिए अब कोई भी आशा नहीं है। मैं एक ही आशा करता हूं कि तृतीय महायुद्ध जितनी जल्दी हो उतना अच्छा। हम लोग इस कूड़े-करकट से हाथ धो लें।

अब आप अपने प्रश्न पूछ सकते हैं।

आप भारत आकर प्रसन्न हैं?

हां।

क्या हमेशा के लिए? पहली बात यह है कि आप यहां से गए ही क्यों थे?

तुम्हारे कारण।

पिछले तीस वर्षों से मैं भारत में कार्य करता रहा हूं। इस दौरान पश्चिम से हजार ों लोग मुझे सुनने के लिए भारत आने लगे। उन्होंने मुझे उनके देश में आने का नि मंत्रण दिया। मैंने सोचा कि पूर्व के लिए यह एक अच्छा अवसर है...क्योंकि पश्चिम का पूर्व पर प्रभुत्व रहा है। सैकड़ों वर्षों से पश्चिम ने भौतिक रूप से, राजनैतिक

रूप से गुलाम बना कर रखा है। पूर्व की ओर से इसका एक ही उत्तर हो सकता है कि वह पश्चिम पर आध्यात्मिक विजय पाए। इसलिए मैं वहां गया था।
वे हमें रोटी दे सकते हैं हम उन्हें आत्मा दे सकते हैं। वे हमें रहने के लिए आश्रय दे सकते हैं, लेकिन हम उन्हें जीवन दे सकते हैं। वे खोखले हैं, उनके भीतर कुछ भी नहीं है। हम भले ही गरीब हों लेकिन आध्यात्मिक रूप से समृद्ध हैं। लेकिन पश्चिम इस प्रयास में लगा है कि हम निर्धन से निर्धनता होते चले जाएं, क्योंकि सिर्फ गरीब लोगों को ही ईसाई बनाया जा सकता है।
और वे सब के सब मेरे दुश्मन बन गए। क्योंकि मेरी बातें गरीबों को, अनाथों को, भिखारियों को नहीं, बल्कि प्राफेसरों, चिकित्सकों, वैज्ञानिकों, कलाकारों, संगीतज्ञों को, जो वहां के श्रेष्ठतम प्रतिभाशाली लोग हैं, उनको प्रभावित कर रही थीं। उनके लिए यह एक गंभीर अपमानजनक बात थी। अन्यथा पूरी दुनिया में इतिहास में ऐसा कभी नहीं हुआ है कि एक व्यक्ति के खिलाफ पूरी दुनिया खड़ी हो। इन अर्थों में मैं सौभाग्यशाली हूं।
(सुना नहीं जा सका)
इसका कारण बहुत सीधा है। हरे कृष्ण आंदोलन ने क्राइस्ट के खिलाफ एक शब्द भी नहीं बोला है। इसके विपरीत हरे कृष्ण आंदोलन ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि क्राइस्ट सिर्फ कृष्ण का ही दूसरा नाम है। बंगला भाषा में बहुत से लोगों के नाम हैं कृष्टो, जो कृष्ण का ही एक रूप है। हरे कृष्ण आंदोलन के लोग पश्चिम को यही समझाते रहे हैं कि क्राइस्ट सिर्फ कृष्ण का ही दूसरा नाम है। स्वभावतः लोग खुश हुए। उन्हें कोई कठिनाई न थी।
कृष्णमूर्ति ने कभी किसी धर्म का नाम लेकर न तो निंदा की, न आलोचना की। यह शुद्ध राजनीति है। विवेकानंद ने ईसाइयत की उतनी ही प्रशंसा की है, जितनी अन्य किसी बात की। फिर वे लोग क्यों इनके खिलाफ होते? मैं सिर्फ सत्य कहता हूं। मैं वह नहीं कहता हूं, जो तुम सुनना चाहते हो, मैं तो जो वास्तविकता है, उसे ही कह रहा हूं।
मैं यह नहीं कह सकता कि जीसस पानी पर चले। यह बकवास है। यदि यह सच है तो पोप को कम से कम स्वीमिंग पूल पर तो चल कर दिखाना ही चाहिए। जीसस क्राइस्ट के प्रतिनिधि होने के नाते उन्हें म से कम एक छोटा सा उदाहरण तो देना चाहिए। जीसस का जन्म एक कुंआरी कन्या के गर्भ से हुआ। इसे वे नैतिकता कहते हैं।
अभी कल ही मैं एक मजाक पढ़ रहा था। एक सत्रह वर्षीय युवती गर्भवती हो गई। इस से उसकी मां को भारी धक्का लगा। वह उसे डाक्टर के पास ले गई। डाक्टर ने उसकी जांच की। लड़की ने डाक्टर को बताया कि आज तक मैं किसी पुरूष से नहीं मिली हूं, किसी पुरुष ने कभी मुझे स्पर्श तक नहीं किया, न कभी चूमा, फिर गर्भवती कैसे हो सकती हूं? डाक्टर खिड़की के पास गया, उसने खिड़की खोल

ी, और वह तारों की ओर देखने लगा। ऐसे कुछ क्षण बीत गए। लड़की की मां ने पूछा कि आखिर बात क्या है? आप वहां कर क्या रहे हैं।

डाक्टर ने उत्तर दिया कि ऐसा केवल एक बार हुआ है—जब जीसस क्राइस्ट का जन्म हुआ था। लेकिन उस समय एक विशेष सितारा आकाश में दिखाई दिया था। मैं देख रहा हूं कि वही सितारा फिर से आकाश पर चमक रहा है या नहीं। कैसे बिना किसी पुरुष के संपर्क के यह लड़की गर्भवती हो सकती है? लेकिन न तो मुझे कोई सितारा दिखाई पड़ता है न मैं यही देखता हूं कि पूरब से तीन ज्ञानवान लोग जीसस की पूजा के लिए आए हैं।

वैज्ञानिक दृष्टि से यह बिलकुल अनर्गल बात है। मैंने पोप को चुनौती दी है, मैं वैटकन में आकर उनके ही लोगों के बीच उनसे विवाद करने के लिए तैयार हूं। आप जीसस के विषय में एक भी बात सिद्ध नहीं कर सकते, और आपका सारा धर्म अंधविश्वास पर खड़ा है। जीसस लोगों को स्पर्श करते हैं और वे रोग मुक्त हो जाते हैं। वे मुर्दों को जीवित कर देते हैं। स्पर्श से ही कोई लोगों को रोग मुक्त करे, पानी पर चले, क्या यह सबसे बड़े समाचार का विषय नहीं होगा। न, लेकिन उस समय के यहूदी साहित्य में उनके नाम का भी उल्लेख नहीं मिलता है। ईसाइयों की बाइबिल के अलावा किसी भी शास्त्र में उनके नाम का उल्लेख नहीं मिलता है। ऐसा आदमी जो पानी को शराब में बदल देता है, उसके नाम का उल्लेख न हो यद्यपि पानी को शराब बनाना कोई चमत्कार नहीं है, यह एक जुर्म है।

कृष्णमूर्ति या महेश योगी या योगानंद या विवेकानंद, इनमें से एक ने भी इन दुखती हुई रगों पर हाथ नहीं रखा। इसलिए उनकी निंदा नहीं हुई ।और ईसाइयत कुल जमा इतनी ही है।

हमने धर्म की ऊंचाइयों को जाना है। हम यह स्वीकार नहीं करते कि जीसस को धार्मिक होने के लिए पानी पर चलना होगा। अन्यथा गौतम बुद्ध का क्या होगा? वे तो कभी पानी पर नहीं चले। कृष्ण का क्या होगा? वे कभी पानी पर नहीं चले। इन लोगों ने मृत लोगों को कभी पुनर्जीवित नहीं किया।

यदि जीसस धर्म की कसौटी हैं तो सभी धर्म निरर्थक हैं। लेकिन जीसस कसौटी नहीं हैं। और उनका दावा है कि केवल वह परमात्मा के इकलौते पुत्र हैं। जहां तक मेरा संबंध है, मैंने हमेशा पश्चिमी लोगों को यह कहा कि जीसस सनकी हैं। स्वाभाविक है कि उन्हें बुरा लगे। परमात्मा केवल एक ही पुत्र पैदा क्यों करेगा? अनंत काल से वह प्रयास करता रहा है और वह केवल एक ही पुत्र पैदा कर सका। और यहां भारत में भिखारी हर वर्ष और बड़े-बड़े परमात्मा पैदा किए चले जा रहा हैं।

और जिस ढंग से ईश्वर ने अपने पुत्र को रचा, वह नैतिक नहीं है। यह बिलकुल अनैतिक है। तुम जरा किसी दूसरे व्यक्ति की पत्नी को गर्भवती करने का प्रयास करो तो तुम्हें तुरंत पता चल जाएगा कि यह नैतिकता है या अनैतिकता। ईसाइयों की त्रिमूर्ति में स्त्री के लिए कोई स्थान नहीं है। वहां परमात्मा है पिता के रूप में

,फिर परमात्मा है पुत्र के रूप में, और होली घोस्ट के रूप में। यह होली घोस्ट कौ न है? स्त्री या पुरुष? ऐसा लगता है कि वह दोनों ढंग से कार्य करता है। संभवतः उभयलिंगी।

चीजों को वैसा ही देखना, जैसी कि वे हैं, एक अलग ही बात है। मेरा किसी से भी बात को मनवाने में कोई रस नहीं है। मैं सिर्फ लोगों तक सत्य को पहुंचा देना चाहता हूं और सत्य पीड़ादायक है। झूठ बहुत ही मीठा होता है उसे और भी मी ठा बनाया जा सकता है, क्योंकि झूठ गड़ने वाले तुम खुद हो।

वे तीन ज्ञानी कौन थे, जो पूरब से जेरूसलम के लिए जीसस का उत्सव मनाने गए थे। उनके नामों का कहीं उल्लेख नहीं मिलता है। क्योंकि आज भी कोई ज्ञानवान पुरुष ईसाइयत को धर्म नहीं स्वीकार करेगा। मैंने एक प्रसिद्ध जापानी फकीर रिंझ ाई के विषय में सुना है। ईसाइयों का एक बड़ा पादरी रिंझाई को ईसाई बनाने के लिए बाइबिल लेकर उसके पास गया। उसने 'सरमन आफद माउंट' अध्याय खोला। पूरी बाइबिल में यही एक मात्र सुंदर अध्याय है। अन्यथा पूरी दुनिया में बाइबिल सर्वाधिक अश्लील पुस्तक है। अश्लीलता पूरे 500 पृष्ठ। और इसे पवित्र बाइबिल कहा जाता है। फिर अपवित्र क्या है उसने 'सरमन आन द माउंट' अध्याय खोला और दो ही पंक्तियां पढ़ीं थीं कि रिंझाई ने कहा, रुको! भविष्य में कभी यह व्यकि त बुद्ध बनेगा, लेकिन अभी नहीं।

क्योंकि पहली दो पंक्तियां थीं : धन्य हैं वे जो गरीब हैं, क्योंकि वे ही प्रभु के राज य के अधिकारी होंगे। और दूसरी पंक्ति थी कि सुई के छेद से होकर एक ऊंट गु जर सकता है, लेकिन एक धनी व्यक्ति स्वर्ग के द्वार में प्रवेश नहीं कर सकता है। इसी कथन पर रिंझाई ने का कि रुक जाओ।

यदि गरीबी धन्यता है तो फिर हमें गरीबी को और फैलाना चाहिए। फिर दुनिया में जितने अधिक गरीब होंगे, दुनिया उतनी ही अधिक धन्य होगी। फिर अधिक लो ग स्वर्ग में होंगे। यदि धनवान होना इतना बड़ा पाप है कि सुई के छेद से होकर ऊंट निकल सकता है, लेकिन धनवान व्यक्ति स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकता है त ब तो सभी धनवानों को अपनी संपत्ति गरीबों में बांट देनी चाहिए, और गरीब औ र भिखारी बन जाना चाहिए।

यह धर्म नहीं है। यह शुद्ध राजनीति है। यह सिर्फ गरीबों के लिए एक सांत्वना है कि तुम चिंता न करो, यह कुछ वर्षों की ही बात है, और तुम प्रभु की सन्निधि में होगे। और यह दूसरी ओर क्रांति को रोकने का प्रयास है कि धनवानों पर क्रोध न करो, वे शाश्वत नरक में यातना भोगने ही वाले हैं।

यह शब्द याद रखो शाश्वत नरक। विश्व का कोई भी धर्म शाश्वत नरक में विश्वा स नहीं करता है। तुम एक जीवन में कितने पाप कर सकते हो, ईसाइयत केवल एक ही जन्म में विश्वास करती है। आखिर तुम एक ही जीवनकाल में कितने पाप कर सकते हो? जिस क्षण तुम्हारा जन्म हुआ था, उस क्षण से लेकर अंतिम श्वा स तक यदि तुम एक के बाद एक पाप ही करते ही चले जाओ, न खाओ, कुछ भ

ी न करो, केवल पाप ही करते चले जाओ, तो भी शाश्वत दंड उचित निर्णय नहीं होगा।

इस युग के महान दार्शनिक बर्ट्रेण्ड रसेल ने इस बात को एकदम अस्वीकार किया है। वह जन्म से ईसाई थे। उन्होंने एक पुस्तक भी लिखी है: व्हाई आइ एम नाट ए क्रिश्चियन' (मैं ईसाई क्यों नहीं हूं)। पुस्तक में जो उन्होंने बहुत से कारण दिए हैं, उनमें से यह भी एक है।

कहते हैं कि मैंने जो पाप किए हैं और वे पाप जो मैंने सपनों में किए हैं, यदि इन दोनों का मिला दिया जाए तो भी एक कठोर से कठोर न्यायाधीश भी मुझे साढ़े चार वर्ष की जेल से अधिक कोई सजा नहीं दे सकता।

लेकिन अनंतकाल के लिए नरक बाहर आने का कोई उपाय ही नहीं। एक बार तुम नरक चले जाओ, फिर तुम हमेशा वहीं रहोगे। ये मूढ़तापूर्ण बातें हैं, जिनके पीछे कोई तर्क नहीं है।

मेरी निंदा की गई है। क्योंकि मैं मानता हूं कि दुनिया में दो तरह के लोग हैं। एक तो वे जो चाहते हैं कि सत्य सदा उनके पीछे हो और दूसरे वे लोग जो चाहते हैं कि वे सदा सत्य के पीछे हों। मैं दूसरी कोटि में आता हूं। और तुमने जो नाम गिनाए हैं, वे पहली कोटि में आते हैं। और एक राजनेता तथा रहस्यदर्शी में यही फर्क है।

यह बात इसलिए दुखदायी है, क्योंकि तुमको शुरू से ही, बचपन से ही एक निश्चित ढंग से सोचने विचारने के लिए संस्कारित किया गया है।

जीसस को सूली लगी। जरा एक ऐसे व्यक्ति के विषय में सोचो, जो लोगों को उनकी मृत्यु के चार दिन बाद पुनर्जीवित कर देता है। और ये उसी के निजी व्यक्ति हैं, क्योंकि जीसस यहूदी थे।याद रखो, जीसस कभी ईसाई नहीं थे। उन्होंने ईसाई शब्द भी नहीं सुना था। अपने जीवन-काल में वह क्राइस्ट नाम से कभी नहीं जाने गए। क्योंकि क्राइस्ट शब्द ग्रीक भाषा का शब्द है। हिब्रू भाषा में क्राइस्ट या क्रिश्चियन, ऐसा कोई शब्द नहीं है। और जीसस पूरी तरह से अशिक्षित थे। यहां तक कि उन्हें हिब्रू भाषा का कोई ज्ञान न था। वह एक स्थानीय ग्रामीण भाषा अरेमैक बोलते थे। वे जन्म से यहूदी थे। एक यहूदी की तरह ही वे जीए। और एक यहूदी की तरह ही उनकी मृत्यु हुई। उस समय उनकी उम्र केवल 33 वर्ष थी।

यदि वे मुर्दों को जिलाते थे तो यहूदियों ने उनका ईश्वर की तरह स्वागत किया होता। अगर तुम सत्य साई बाबा की इसलिए प्रशंसा कर सकते हो कि वह व्यर्थ की वस्तुएं निकाल सकते हैं, जैसे कि स्विस घड़ियां या पवित्र राख और तुम उनकी ईश्वर की भांति पूजा कर सकते हो, तो इस तुलना में जीसस ने सच में ही चमत्कार किए हैं, यदि उन्होंने सच में ही ऐसा किया है तो। यहूदियों ने उन्हें हमेशा हमेशा के लिए आदर दिया होता। लेकिन उन्होंने जीसस को सूली दी।

उन दिन तीन लोगों को सूली दी जाने वाली थी। यहूदी परंपरा के अनुसार प्रतिवर्ष यहूदी त्योहार सबाथ के शुरू होने के पहले सूली दी जाने वाली थी। और यहूदिय

ों को एक मौका दिया गया था कि वे एक व्यक्ति को क्षमा कर सकते हैं। उन दिनों जूडिया रोम शासन का गुलाम था। जूडिया का वायसराय एक रोमन व्यक्ति पान्टियस पायलट था। उसको यह उम्मीद थी कि लोग जीसस को क्षमादान देंगे, क्योंकि वे निर्दोष थे। उन्होंने कभी किसी को कोई हानि नहीं पहुंचाई थी। हालांकि वे निरर्थक बात करते थे। वे एक मसखरे जैसे दिखते थे। वे पागलों की भांति बातें करते थे कि केवल वह ही परमात्मा के इकलौते पुत्र हैं। लेकिन इन बातों से किसी का कुछ बुरा नहीं हो पाता। और यह अपराध नहीं था। अधिक से अधिक उन्हें मनोचिकित्सा की आवश्यकता थी, लेकिन सूली की नहीं।

पायलट सोचता था कि यहूदी जीसस को क्षमादान देंगे क्योंकि यह पुष्ट हो चुका था कि अन्य दोनों व्यक्ति निस्संदिग्ध रूप से अपराधी थे। लेकिन यहूदियों ने मांग की कि बाराबास को छोड़ दिया जाए। बाराबास ने सात व्यक्तियों की हत्या की थी। उसने वे सारे अपराध किए थे, जो किसी भी मनुष्य के लिए कर सकना संभव था। पाटिन्यस पायलट भरोसा नहीं कर सका कि वे लोग बाराबास के लिए क्षमादान मांग सकते हैं, जीसस के लिए नहीं।

क्या तुम भरोसा कर सकते हो कि एक ऐसा व्यक्ति जिसने सिर्फ शुभ ही कार्य किए हों, लोगों को रोगमुक्त किया हो, मुर्दों को जीवित कर दिया हो, जहां तक कि जिस पर तेज गति से भी चलने का अपराध न हो, क्योंकि पूरे जीवन भर वे एक गधे पर ही सवारी करते रहे, उसे...!

मैं सोच ही नहीं सकता कि जीसस के विषय में जिन चमत्कारों की बातें की जाती हैं, वे सही हैं। वे सब के सब झूठ हैं, कोरी कहानियां हैं और मनगढंत हैं। यहां तक कि अब तो ईसाइयत के जो बड़े-बड़े ईसाई धर्मशास्त्री हैं, वे दुनिया भर की गोष्ठियां कर रहे हैं कि यदि हम इन चमत्कारों से छुटकारा पा पा सकें तो अच्छा होगा। क्योंकि भविष्य में बुद्धिमान लोगों के लिए यह चमत्कारों की गाथा बाधा बनेगी। अतीत में इन्होंने जीसस को परमात्मा सिद्ध किया था, भविष्य में यह उन्हें अधिक से अधिक एक जादूगर साबित करेंगी। लेकिन यदि तुम जीसस के सभी चमत्कार हटा लो तो फिर कुछ नहीं बच रहेगा।

हमने गौतम बुद्ध के जाना है। हमने महावीर को जाना है। हमने उपनिषदों के ऋषियों को जाना है, जिन्होंने उड़ानें भरीं मानव चेतना के आकाश में, परम उड़ानें भरीं। लेकिन तुम जिनके नामों की बातें करते हो, उन्होंने तो उपनिषद के ऋषियों को, गौतम बुद्ध, महावीर, शंकराचार्य को उसी श्रेणी में रखा है, जिसमें जीसस हैं। जीसस तो सत्य साईं बाबा की श्रेणी के हैं। उससे अधिक नहीं। और वे दोनों ही झूठे हैं। और जीसस के जीवन में रिसरेक्शन या पुनर्जीवन जैसी कोई घटना नहीं हुई। कारण?

मैंने कश्मीर में जीसस की कब्र देखी है। वे सूली पर नहीं मरे थे।यह एक षड़यंत्र था, जिसमें जानबूझकर देर की गई। जीसस को शुक्रवार के दिन सूली दी गई थी। शुक्रवार के बाद तीन दिन तक यहूदी कोई कार्य नहीं करते थे, इसलिए पान्टियस

पायलट ने शुक्रवार का दिन चुना था और जीसस को सूली देने में जितना विलंब किया जा सकता था, उतना विलंब किया गया। और तुमको पता होना चाहिए कि यहूदियों का सूली देने का ढंग ऐसा है कि इसमें किसी भी व्यक्ति को मरने में 48 घंटे का समय लगता है। क्योंकि जिस व्यक्ति को सूली दी जाती है, उसे वे गरदन से नहीं लटकाते हैं। व्यक्ति के हाथों व पैरों पर कीलें ठोंक दी जाती हैं, जिस कारण बूंद-बूंद कर खून टपकता रहता है। इस प्रकार एक स्वस्थ व्यक्ति को मरने में 48 घंटे का समय लग जाता है। और जीसस की आयु मात्र 33 वर्ष थी...पूर्णतया स्वस्थ। वे छह घंटों में नहीं मर सकते थे। कभी कोई छह घंटों में नहीं मरा।

लेकिन शुक्रवार का सूरज डूबने लगा था, अतः उनके शरीर को नीचे उतारा गया। क्योंकि नियमानुसार 3 दिन तक कोई कार्य नहीं होना था। और यही षड़यंत्र था। उन्हें एक गुफा में रखा गया, जहां से उन्हें चुरा लिया गया और वह बच निकले। इसके पश्चात जीसस काश्मीर (भारत) में ही रहे। यह कोई खास बात नहीं है कि पंडित जवाहरलाल नेहरू की नाक, इंदिरा गांधी की नाक यहूदियों जैसी है। हजरत मूसा की मृत्यु काश्मीर में हुई। और जीसस भी काश्मीर में मरे। जीसस बहुत लंबे समय तक जीए। 112 वर्ष की आयु में उन्होंने शरीर छोड़ा।

मैं उनकी कब्र पर गया हूं। आज भी इस कब्र की देखभाल एक यहूदी परिवार करता है। काश्मीर में यही एकमात्र ऐसी कब्र है, जो मक्का की दिया में पड़ती है। अन्य सभी कब्रें वहां मुसलमानों की हैं। मुसलमान मृतकों के लिए कब्र इस तरह बनाते हैं कि कब्र में मृतक का सिर मक्का की दिया में हो। काश्मीर में केवल दो कब्रें ऐसी हैं, एक जीसस की और दूसरी मूसा की, जिनका सिरहाना मक्का की ओर नहीं। और कब्र पर जो लिखा है वह स्पष्ट है। यह हिब्रू भाषा में है। और जिस 'जीसस' नाम के तुम अभ्यस्त हो गए हो, वह उनका नाम नहीं था। यह नाम ग्रीक भाषा से रूपांतरित होकर आया है। उसका नाम जोसुआ था। और अभी भी उस कब्र पर यह सुस्पष्ट रूप से लिखा हुआ है कि महान धर्म शिक्षक जोसुआ जूडिया से यात्रा कर यहां आए। वे वहां 112 वर्ष की आयु में मरे, तथा दफनाए गए।

लेकिन यह अजीब बात है कि सारे पश्चिमी जगत को मैंने यह बताया है, फिर भी पश्चिम से एक भी ईसाई यहां आकर इस कब्र को नहीं देखना चाहता है। क्योंकि यह उनके पुनर्जीविन के सिद्धांत को बिलकुल गलत सिद्ध कर देगा और मैंने उनसे पूछा कि यदि वे फिर से जीवित हो उठे थे तो वे कब मरे? तुम साबित करो, तुम्हें साबित करना होगा। निश्चय ही बात में उनकी मृत्यु हुई होगी, अन्यथा वे अभी भी यहीं कहीं घूमते होते। उनके पास जीसस की मृत्यु का कोई विवरण नहीं है।

मेरी निंदा की गई क्योंकि जो मैं कह रहा था, वह पूर्णतया तर्कसम्मत वैज्ञानिक व बुद्धिपूर्ण बात थी। और तुम जिन लोगों के विषय में बात कर रहे हो, उनकी रुचि सत्य में नहीं थी। उनकी रुचि उन्हीं बातों में थी, जिन्हें तुम पसंद करते हो। रा

जनीति और मेरे देखे राजनेता का मन इसी तरह कात करता है। और यह राजनी ति एकदम आरंभ से ही आरंभ हो जाती है। बच्चा जन्म के साथ ही राजनेता बन जाता है। वह मां को देखकर मुस्कराना चाहता नहीं है, लेकिन वह मुस्कराता है। उसके हृदय में कोई मुस्कराहट नहीं है, फिर भी वह जानता है मुस्कराहट से कु छ मिलेगा। वह पिता को देख कर मुस्कराता है। यद्यपि उसके पास इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि वही उसके पिता हैं। आदमी उसी क्षण से राजनीति सीखन ा आरंभ कर देता है : वही करो, जो लोगों को अच्छा लगे।

यह एक बड़ी विचित्र दुनिया है। यहां नेता अपने अनुयायियों के पीछे चलते हैं। मैं नेता नहीं हूं। मैं केवल एक विचारक हूं। और अपने जीवन के अंतिम क्षण तक मैं एक विचारक की तरह ही जीऊंगा। मैंने रोनाल्ड रीगन को संदेश भेजा है कि मुझे जान से मारने के लिए 5 लाख डालर व्यर्थ न गंवाओ। बस वे 5 लाख डालर आप मेरे कार्य के लिए दे दें और मैं अपना शरीर खुद ही छोड़ दूंगा। क्योंकि अप ने शरीर के लिए तो मैंने एक पैसा भी कीमत नहीं चुकाई है। और एक दिन मैं म रूंगा, तब भी कोई इसके लिए एक पैसा भी कीमत नहीं देगा। 5 लाख डालर इस का समुचित मूल्य है। लेकिन क्यों इसे किसी दूसरे व्यक्ति को दिया जाए और उस का दिक्कत में डाला जाए। मैं मरने के लिए तैयार हूं। बस 5 लाख डालर मेरे का र्य के लिए दे दें। और इस बात पर सौदा हो सकता है।

कोई दूसरा प्रश्न?

पिछली बार जब आप दिल्ली और कुल्लू में थे, तब भारत सरकार नहीं चाहती थ ी कि आपका भारत में आश्रम हो। क्या इस रिपोर्ट में कोई सचाई थी? क्या आप की किसी के साथ कोई झंझटें हैं।

मेरी किसी के साथ कोई झंझट नहीं है, परंतु हर किसी को मेरे साथ झंझट है। ए क तो यह कि अमरीकी सरकार भारत सरकार पर दबाव डालती है कि मुझे भार त में ही रखा जाए और भारत से बाहर जाने की अनुमति नहीं दी जाए। दूसरे, कोई विदेशी, विशेषकर समाचार-माध्यमों को मुझसे मिलने नहीं दिया जाए,। ये दो शर्तें थीं, जिन्हें मैं स्वीकार नहीं कर सकता। मैं कभी कोई शर्तें स्वीकार नहीं कर ता। मैं एक स्वतंत्र व्यक्ति हूं और एक स्वतंत्र व्यक्ति की भांति जीना और मरना चाहूंगा, चाहे गोली ही मार दी जाए, कोई हर्जा नहीं। परंतु मैं इन शर्तों का गुला म नहीं बन सकता। ऐसे जीने में भी क्या सार है, अगर मुझे इन शर्तों के आधीन जीना पड़ता है कि मैं भारत में रहूं और मेरे विदेशी शिष्यों को मुझसे मिलने की अनुमति न दी जाए? यह लगभग मुझे मार देने जैसा है। वह जीते जी मृत्यु होगी। मैंने इसलिए भारत छोड़ा था कि इसके पहले वे मेरा पासपोर्ट न लें। क्योंकि मैं ई साई देशों में घूमकर उन्हें यह जताना चाहता था कि वे मुझे मार सकते हैं, परंतु वे मेरी आत्मा को नहीं मार सकते। अब फिर मैं भारत हूं और यदि मुझ पर कोई शर्तें थोपी जाती हैं तो मैं भारत सरकार से लडूंगा। विदेशी शिष्य भी मेरे पास अ

ाते रहेंगे और मैं भी भारत के बाहर जाता रहूंगा; भारत सरकार की शर्तों के बा वजूद मैंने अपने इंतजाम कर लिए हैं।
और यह बोगस सरकार क्या आप सोचते हैं, मुझे रोक सकती है? उन्हें अपने दिन गिनने चाहिए। बस अगला चुनाव होगा, और वे जा चुके होंगे। राजनेताओं का ज ीवन लंबा नहीं होता। और ये राजनेता, जिन्होंने अपनी मां की हत्या का शोषण ि कया है। अगले चुनाव में इन्हें वास्तिविकता का सामना करना पड़ेगा। उन्हें कुछ प ता नहीं। क्योंकि मां की हत्या कर दी गई, इसलिए बेटा देश का प्रधान मंत्री बन गया, अन्यथा न कोई योग्यता है, न ईमानदारी, न कोई प्रेरणा और उत्साह ही है। वह आदमी पायलट से ज्यादा कुछ भी नहीं है और उसे कुछ और के लिए प्रयास भी नहीं करना चाहिए। वही उसका प्रशिक्षण है, और उसे अपनी ही लाइन पर जाना चाहिए और वह देश को उन लोगों के हाथ में छोड़ दे, जो अधिक बुद्धिमान हैं, और जो देश को बदलकर वापस स्वर्णयुग में ला सकते हैं। उसने क्या किया है?
केवल तीस वर्ष पहले, जब मैंने बोलना शुरू किया था, मैं जनसंख्या वृद्धि के खिला फ बोल रहा था। मुझ पर पथराव हुआ, मुझे विष दिया गया। मुझ पर मुकदमे च ले, एक चाकू तक फेंका गया; मेरे जीवन पर भी हमले हुए उन लोगों द्वारा जो स ोचते थे कि मैं हिंदूधर्म के विकास में बाधा डाल रहा हूं। उस समय देश की आबा दी चालीस करोड़ थी। उन्होंने मेरी बात सुनी होती तो हमारा देश आज दुनिया के बहुत सुखी देशों में होता। और अब जनसंख्या नब्बे करोड़ है। केवल तीस वर्षों में प्रचार करोड़ लोग बढ़ गए हैं। और तुम्हारे राजनेताओं में यह साहस नहीं कि वे सब लोगों से कहें, कि बंद करें, और बच्चे नहीं। अन्यथा इस शताब्दी के पूरे होते -होते हम अरब से ज्यादा हो गए होंगे। इतिहास में पहली बार हम चीन से भी अ ागे होंगे। अब तक चीन आगे रहा है। और हम दुनिया में सर्वाधिक गरीब देश हों गे। और पचास प्रतिशत लोग आपके आसपास मर रहे होंगे। जरा सोचो, अगर इस कमरे में सौ लोग हों, प्रचार मर जाएं, तो उन पचास व्यक्तियों का क्या होगा, जो पचास भूतों के साथ जी रहे होंगे? उनका जीवन कुछ जीवन जैसा न होगा।
तुम्हारे पास कोई सरकार नहीं है, तुम्हारे पास कोई राजनेता नहीं हैं, तुम्हारे पास बुद्धिमान लोग नहीं हैं, जो देश का भाग्य बदल दें। और देश को सख्त जरूरत है , क्योंकि देश के पास सर्वाधिक लंबी विरासत है। और महानतम विरासत। हमारे पास संसार को देने के लिए कुछ है। और वे मुझे बाहर जाने से रोकना चाहते हैं। कोई मुझे बाहर जाने से रोक नहीं सकता। और लोगों को मुझसे मिलने से भी क ोई रोक नहीं सकता।
महाशय, क्या यह भारत के लोगों को, जो वर्तमान सरकार की परवाह करते हैं, एक अप्रत्यक्ष संदेश है?
निश्चित ही। यह एक बोगस सरकार है और उसे निकाल बाहर करना होगा। केव ल अपरिपक्व लोगों से तुम्हारी सरकार बनी हुई है। और जरा सोचो कि जब चाल

ीस वर्ष तक परिपक्व राजनेता कुछ न कर सके, तो ये जो अपरिपक्व लोग हैं, सिवाय नुकसान के ये और कुछ नहीं कर सकते। तुम्हें गुणवान लोगों को ढूंढना शुरू कर देना चाहिए और गुणवान लोग देश में हैं। यह एक बड़ा देश है। परंतु समस्या यह है कि गुणवान व्यक्ति, वह व्यक्ति जो बुद्धिमान है, और जो सहायता कर सकता है, वह वोट की भीख नहीं मांगेगा। आपको उस व्यक्ति से याचना करनी होगी कि कृपया आएं और देश की मदद करें। ये राजनेता तो वोट के भिखारी है, और भिखारी तुम पर शासन कर रहे हैं। और मैं इस बात में सहयोग नहीं देता।
मा शीला के विषय में कुछ कहना चाहेंगे क्या?
नहीं। जो बीत गया सो बीत गया, और जो खत्म हो गया वह खत्म हो गया और मेरा भूतों से कोई लेना-देना नहीं है।
क्या उनका धार्मिक उत्पीड़न हुआ,या क्या अमरीकी सरकार ने उन्हें सताया? और आपका मतलब है कि आपको कुछ...
उन्होंने मुझे सताया और तुम अमरीकी राजनेताओं तथा सरकार की मूढ़ता देख सकते हो। अभी जब अन्य लोगों को जेल में भेद दिया गया तो पत्रकारों ने अमरीकी एटार्नी जनरल से पूछा कि भगवान को जेल क्यों नहीं हुई? और उन्होंने उत्तर में तीन बातें कहीं, जो ध्यान देन योग्य हैं। पहली तो बात उन्होंने यह कही कि हमारा पूरा ध्यान, हमारा पहला कार्य भगवान के कम्यून को नष्ट करना था। क्योंकि अमरीका के एक मरुस्थल में 126 वर्ग मील में, कम्यून खड़ा किया था, जिस पर पिछले सैकड़ों वर्षों से खेती नहीं की गई थी। हमने कम्यून को आत्म-निर्भर बनाया था। हमने इसको एक सुंदर मरुद्यान बना दिया था। 5000 संन्यासी वहां रहते थे। हमने अपने घर बनाए, सड़कें और बांध बनाए। हम सभी क्षेत्रों में आत्म-निर्भर थे।
और अमरीकी जनता का ध्यान इस ओर आकृष्ट होने लगा कि यह एक चमत्कार है। यह कैसा हुआ कि बाहर से आए हुए इन लोगों ने मरुस्थल को उद्यान में, गीत, ध्यान और उत्सव के क्षेत्र में बदल दिया। हम ऐसा क्यों नहीं कर सके। उन्होंने ये प्रश्न पूछने आरंभ कर दिए थे। कम्यून राजनेताओं के हृदय में छुरे की भांति घुस गया था। तो उत्तर में एटार्नी जनरल ने पहली बात कही कि हमारा सर्वप्रथम कार्य कम्यून को नष्ट करना था।
दूसरी बात उन्होंने यह कही कि दो वर्षों तक हम भगवान को गिरफ्तार नहीं कर सके। वे दो वर्षों से मुझे बिना किसी कारण के गिरफ्तार करने का प्रयास कर रहे थे। वे मुझे इसलिए गिरफ्तार नहीं कर सके, क्योंकि वे जानते थे कि मुझे गिरफ्तार करने के पूर्व उन्हें पांच हजार संन्यासियों को जान से मारना होगा। इसके पहले वे मुझे गिरफ्तार नहीं कर सकते थे। उन्होंने कभी कम्यून में प्रवेश करने तक का साहस नहीं किया था। वे यह प्रतीक्षा कर रहे थे कि यदि वे मुझे कम्यून के बाहर पा सकें तो वे मुझे तुरंत गिरफ्तार कर लें। और ठीक यही हुआ।

मैं नार्थ कैरोलिना में एक मित्र को मिलने जा रहा था, जहां उन्होंने मुझे बिना कि
सी गिरफ्तारी के वारंट के, बिना किसी कारण के गिरफ्तार कर लिया। उन्होंने मु
झे नार्थ कैरोलिना में अपने एटर्नियों को भी खबर देने की अनुमति नहीं दी। नार्थ
कैरोलिना से ओरेगॉन में मेरे कम्यून तक वायुयान से पहुंचने में केवल छह घंटे का
समय लगता है, जबकि मुझे ओरेगॉन लाने में उन्होंने 12 दिन निकाल दिए।
इस दौरान मुझे पांच जेलों की यात्रा करनी पड़ी। और वे मुझसे लगातार झूठ बोल
ते रहे कि हम तुमको ओरेगॉन ले जा रहे हैं। जबकि जहां भी मैं पहुंचता तो पाता
कि मैं किसी दूसरी जेल में हूं। मैंने कहा, यह बड़ी अजीब बात है। यदि तुम्हें मु
झको एक जेल से दूसरी जेल में ही ले जाना तो कोई हर्ज नहीं। मैं तो इसका मज
ा ले रहा हूं। मुझे तुम्हारे दूसरे पक्ष का पता चल रहा है। क्योंकि तुम्हारी जेलें सि
र्फ काले लोगों से भरी हैं। एक श्वेत व्यक्ति उनमें नहीं है। अजीब बात है। मैंने क
हा कि ऐसा लगता है कि कोई गोरा आदमी यहां अपराध नहीं करता है, केवल अ
श्वेत व्यक्ति ही अपराध करते हैं। मैंने उन अश्वेत व्यक्तियों से पूछा कि तुम्हारा
अपराध क्या है?
उन्होंने कहा कि यह हमें नहीं बताया जाता है कि हमारे अपराध क्या हैं। वे हमें
यह कहते हैं कि हमें न्यायालय में उपस्थित किया जाएगा और उन्हीं में से कोई-क
ोई तो पिछले नौ महीनों से मुकदमे के पूर्व जेल में बंद हैं। क्योंकि वे जानते हैं कि
न्यायालय उन्हें छोड़ देगा, उन्होंने कोई अपराध नहीं किया है। और यह प्रजातंत्र
है। और ये सभी लोग युवा हैं। प्रत्येक जेल में पांच सौ, छह सौ, यहां तक कि सा
त सौ युवा उम्र के काले लोग बंद हैं। उनमें एक भी बूढ़ा व्यक्ति नहीं। मैंने कहा,
यह मात्र संयोग नहीं प्रतीत होता है। केवल युवक ही क्यों? तुम लोग डरते हो ि
क कहीं ये लोग अमरीका में काली क्रांति न कर दें। और उनका यही अपराध है ि
क ये युवक हैं, कि इनका खून गरम है।
दूसरी बात उसने यह कही कि हम नहीं चाहते हैं कि भगवान एक शहीद बन जा
एं। अमेरिका के एटार्नी जनरल राष्ट्रपति रीगन के निकट के मित्र हैं, शायद उनके
मनुष्य प्रवक्ता भी इसलिए, उनके इस वक्तव्य का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया
जाना चाहिए। उनका भय यह था कि यदि मैं शहीद हो जाता हूं तो दुनिया भर में
फैले मेरे संन्यासियों की एकता और मतबूत हो जाएगी। वे एक दूसरा धर्म खड़ा
कर देंगे। ठीक उसी तरह जैसे कि जीसस की सूली की कहानी ने एक धर्म खड़ा
कर दिया। वे डर गए हैं।
और तीसरी बात जो उसने कही, उसको सुनकर तुम्हें आश्चर्य होगा। उसने कहा ि
क भगवान ने कोई अपराध नहीं किया है, और हमारे पास उनके खिलाफ कोई प्र
माण नहीं है। इसलिए उन्हें रिहा करने के सिवा और कोई रास्ता न था।
ये तुम्हारे महान लोकतांत्रिक देश हैं। अब उस देश का एटार्नी जनरल इस बात क
ो स्वीकार कर रहा है कि मैंने कोई अपराध नहीं किया। फिर भी मुझे गिरफ्तार ि
कया गया, एक जेल से दूसरी जेल ले जाकर परेशान किया गया। और चूंकि मैंने

कोई अपराध नहीं किया था इसलिए मेरे ऊपर 60 लाख रुपए जुर्माना चढ़ाया गया। मैंने एक सीख ली कि अपराध नहीं करना खतरनाक है।

मुझे अमरीका से बाहर जाने को कहा गया था, लेकिन जब मैं न्यायालय से बाहर निकल रहा था तो मैंने एटार्नी ने मुझे कहा, सावधान हो जाइए, न्यायालय से हवाई अड्डे तक ये पंद्रह मिनट बड़े खतरनाक हैं। सबसे पहले वे आपको आपके कपड़े व अन्य चीजें लौटाने के लिए जेल ले जाएंगे। मैंने यह सुना है कि वहां कुछ खतरा है।

और वहां खतरा था।

जब मैं जेल के भीतर पहुंचा तो मुझे आश्चर्य हुआ। वहां निचली मंजिल बिलकुल खाली थी। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। बहुत से अधिकारियों और लोगों की चहल पहल की गूंज से वातावरण भरा रहता था। मैंने पूछा, आखिर बात क्या है? क्या आज कोई छुट्टी का दिन है? क्या लोग मेरी रिहाई का जश्न मना रहे हैं? या और कोई बात है? उन्होंने उत्तर दिया कि हमें कुछ नहीं मालूम है? फिर उन दो लोगों ने जो मुझे वहां ले गए थे मुझे वहीं एक कमरे में छोड़ दिया और खुद गायब हो गए। उस कमरे में एक ही व्यक्ति था। उसने मुझसे कहा कि इसके पूर्व कि मैं आपको आपकी चीजें वापस करूं मुझे अपने अधिकारी के हस्ताक्षर चाहिए। बाद में पता चला कि इसकी कोई आवश्यकता नहीं थी। क्योंकि चीजें मेरी थीं, उसके अधिकारी का उनसे कुछ लेना देना नहीं था। मुझे हस्ताक्षर करना था कि मेरी चीजें वापस मिल गई हैं। वह कमरे से बाहर निकल गया और उसने बाहर से दरवाजा बंद कर दिया।

पंद्रह मिनट तक मैं उस कमरे में बंद था।

बाद में मेरी कुर्सी के नीचे से बम बरामद हुआ। बस एक छोटी भूल हो गई थी। उन्हें यह नहीं पता था कि न्यायालय से मैं किस समय छूटूंगा। वह एक टाइम बम था। अतः वे चूक गए। अन्यथा उन्होंने 15 मिनट में मुझे समाप्त कर देने का आयोजन कर लिया था। और जेल में कोई भी बाहर का व्यक्ति आकर बम नहीं रख सकता है। निश्चित ही यह सरकार की तरफ से रखा गया है। और इसलिए निचली मंजिल पूरी तरह से खाली थी और जो व्यक्ति मुझे मेरी चीजें लौटाने वाला था, वह खुद भी थोड़ी देर के लिए गायब हो गया था। मैं उस बम की कृपा से यहां हूं।

यह किस जेल में हुआ था?

पोर्टलैंड, ओरेगॉन में।

और अन्य पांच जेलें?

हूं?

अन्य पांच कौन-सी जेलें थीं?

वे पांच जेलें ये थीं। पहले मैं उत्तरी कैरोलिना में अमरीकी मार्शल की जेल में था। फिर उत्तरी कैरोलिना की दूसरी जेल में। इसके बाद वे मुझे ओकलाहोमा जेल ले गए। वहां भी कुछ हुआ, वह मैं आपको बताना चाहूंगा।

मैं वहां रात के 12 बजे पहुंचा था। वहां अमरीकी मार्शल स्वयं मौजूद था, जिसके कोट पर लिखा था डिपार्टमेंट ऑफ जस्टिस(न्याय विभाग)। उसने मुझे कहा कि मु झे जेल रजिस्टर पर अपना नाम नहीं लिखना है। मैंने पूछा क्यों? उसका उत्तर था , क्यों का कोई प्रश्न नहीं है। ऊपर का आदेश; आपको अपने नाम के स्थान पर डे विड वाशिंगटन लिखना है। मैंने कहा कि कृपया पहले तुम अपना यह कोट उतार दो। तुम मुझे यह अपराध करने के लिए विवश कर रहे हो।यह मेरा नाम नहीं है। और क्या तुम सोचते हो कि मैं तुम्हारे जैसा मूढ़ हूं? तुम मुझे कह रहे हो कि मैं अपना नाम डेविड वाशिंगटन लिखूं, ताकि तुम मुझे जान से मार दो और दुनिया को यह भी पता नहीं चलेगा कि मेरी हत्या कर दी गई, मैं कहां गायब हो गया। क्योंकि फाइलों में कोई प्रमाण नहीं मिलेगा। मैं यह नहीं कर सकता हूं। तुम लिखो और मैं हस्ताक्षर कर दूंगा।

रात के बारह बज रहे थे। वह स्वयं अपने घर जाना चाहता था। मैंने कहा, यदि तुम घर जाना चाहते हो तो तुम लिख सकते हो, तुम फार्म भर दो। और मैंने अप ने नाम का हस्ताक्षर कर दिया। उसने कहा भी कि तुम क्या कर रहे हो? मैंने क हा, जो कानूनी है वही मैं कर रहा हूं। और कल सुबह ही तुम देखोगे कि सभी दू रदर्शन पर, समाचार-पत्रों में यह बात प्रकाशित हो जाएगी कि मुझे कोई अन्य ना म लिख कर उसके नीचे हस्ताक्षर करने को विवश किया गया है। क्या यही व्यकि त की निजता का सम्मान है, यही स्वतंत्रता है और क्या यही वह देश है, जो पूरी दुनिया को बचाने वाला है? और मैंने ऐसा इसलिए कहा, क्योंकि मेरे बगल में ए क स्त्री बैठी हुई थी। मैंने उससे का कि तुम मार्शल के साथ जो यहां मेरी बातची त हो रही है, उसे सुनती रहो। करीब-करीब दो हजार लोग चारों ओर घेरे खड़े हैं। तुम बाहर जाकर जो कुछ भी यहां हुआ है, उन्हें बता देना।

सुबह 6 बजे के समाचार प्रसारण द्वारा पूरे अमरीका को यह पता चल गया कि मु झ पर दबाव डाला गया है। इसलिए उन्हें तुरंत मेरी जेल बदलनी पड़ी, ताकि वे कागजों को नष्ट कर सकें। जैसे कि मैं कभी उस जेल में था ही नहीं।

इसके बाद वे मुझे जिस जेल में ले गए मुझे उसका नाम नहीं मालूम है। क्योंकि य ह एफ बी आई(अमरीकी गुप्तचर संस्था) की खास जेल थी। यह जेल दूर किसी जं गल में थी, जहां समाचार माध्यमों के प्रतिनिधी नहीं पहुंच सकते थे। लेकिन अमर ीकी समाचार-माध्यमों के प्रतिनिधियों ने मेरी बहुत मदद की। वे वहां भी पहुंच ग ए। वे मेरी कार के साथ साथ हैलिकाप्टरों में चल रहे थे। उनकी कारें मेरी कार के पीछे-पीछे चल रही थीं।

यदि आज मैं जीवित हूं तो इसका कारण अमरीकी समाचार माध्यम हैं। और अम रीकी समाचार माध्यम संभवतः पूरे विश्व में सर्वश्रेष्ठ हैं। अधिक प्रामाणिक और स

रकार से अपेक्षाकृत अधिक निडर। पूरे रास्ते वे मेरे पीछे-पीछे चले और उन्होंने पूरे विश्व को समाचार से अवगत कराया।

एक जेलर के बाद दूसरे जेलर ने मुझे कहा कि ऐसा कैदी उन्होंने पूरे जीवन में नहीं देखा। क्योंकि पूरी की पूरी जेल चारों ओर कैमरों, फोटोग्राफी, टेलीविजन, पत्र पत्रिकाओं के प्रतिनिधियों से घिर हुई थी।मुझे आप सबसे यह इसलिए कहना पड़ रहा है कि इस देश में भी समाचार-सूत्रों को ऐसा ही बनना है कि वह व्यक्ति की रक्षा कर सके, सरकार की स्वतंत्रता की रक्षा कर सके।

लेकिन अभी ऐसा नहीं है। बस थोड़े से ही पत्रकारों के पास ईमानदारी है, निजता है, अन्यथा यहां प्रीतीष नंदी जैसे लोग भी हैं, जिसने इलेस्ट्रेटेड वीकली जैसी सुंदर पत्रिका को एक तीसरे दर्जे का, पीला पत्र, अश्लील पत्र बना दिया है। बेशक इसकी बिक्री बहुत बढ़ गई है, लेकिन इसकी आत्मा मर गई है। मुझे समाचार-माध्यमों से बहुत उम्मीदें हैं। समाचार-माध्यम सरकारों की विशाल शक्ति के खिलाफ व्यक्ति की स्वतंत्रता के रक्षक के रूप में आगे आए हैं। मेरे पास कोई ताकत है। यदि आप मेरे साथ हों तो मैं अकेला नहीं हूं। ठीक

क्या आपने निवास स्थान का निर्धारण कर लिया है अस्पष्ट।

यह मकान। यह मकान मेरा घर है।

क्या लोगों को आपके विचारों से निराशा हुई?

उन लोगों को आप मेरे पास ले आइए। क्योंकि मुझे तो अभी तक ऐसा कोई व्यकित नहीं मिला, जिसे मुझसे निराशा हुई हो। उन्हें ले आइए।

एक अंगरक्षक जो?

उसे मेरे सामने लाइए और मैं प्रत्येक बात का उत्तर दे सकता हूं कि उन्हें निराशा हुई है उस प्रतिमा से जो उन्होंने मेरी बना रखी थी। अगर आप मुझे परमात्मा बनाते हो तो आप मूर्ख हैं। और जब आप को वह परमात्मा नहीं मिलता तो आप निराश होते हैं। तो क्या आप सोचते हैं कि इसके लिए मैं जिम्मेवार हूं? मैं एक सामान्य व्यक्ति हूं—मनुष्य की सभी कमियों और कमजोरियों को लिए हुए। परंतु आप मुझे परमात्मा बना देते हैं, तब आप सोचते हैं कि पानी पर चल सकता हूं और पानी को शराब में बदल सकता हूं। और मैं यह नहीं कर सकता हूं। तब किसको किससे निराशा हुई? आपको अपनी ही जड़ धारणाओं से निराशा हुई। मैं एक सामान्य मनुष्य हूं।

(सुनाई नहीं दिया)

भगवान का मात्र इतना ही अर्थ है :भाग्यवान। इसका अर्थ परमात्मा नहीं है। यही कारण है कि हम बुद्ध को, जो परमात्मा पर विश्वास नहीं करते। भगवान पुकारने हैं। भगवान का अर्थ केवल भाग्यवान है।

संस्कृत में प्रत्येक शब्द के बहुत अर्थ हैं।केवल हिंदू भगवान को परमात्मा की भांति सोचते हैं। में कोई हिंदू नहीं हूं। मैं बस मैं ही हूं। और मैं यहां किसी की धारणा

ओं को पोषित करने के लिए नहीं हूं। इसलिए अगर वे नष्ट होती हैं तो आप मूर्ख हैं। दस मिनट पर्याप्त होने चाहिए।
(सुनाई नहीं दिया)
मैं अपने को बचाता नहीं हूं, और वह मेरा अंगरक्षक नहीं था।
(सुनाई नहीं दिया)
नहीं। मैं नहीं कर सकता। आप मेरे रक्षक हैं। वे जिन्हें मुझसे प्रेम है, वे मुझे बचाएंगे। और अगर किसी को मुझसे प्रेम नहीं तब मुझे बचाने की कोई जरूरत नहीं।
प्रश्न आपकी भावी योजनाएं क्या हैं?
कोई योजनाएं नहीं।
क्या आप कोरेगांव पार्क पूना जाएंगे?
नहीं। मैं कभी अतीत की तरफ नहीं जाता, मैं भविष्य की तरफ जाता हूं।
जब आपने पूना छोड़ा तब आपको सरकार को बहुत धन चुकाना था।
मेरे जिम्मे कभी किसी का एक पैसा भी नहीं है।
कम्यून को, कम्यून को काफी टैक्स चुकाना है
कम्यून सरकार से लड़ रही है। यह कम्यून का धंधा है। यह मेरा धंधा नहीं है। मैं यहां एक अतिथि हूं। यदि यहां मकान में कोई गड़बड़ है तो मेरी समस्या नहीं है। यह समस्या उस व्यक्ति की होगी, जिसका यह मकान है। मैं मात्र एक मेहमान हूं।
जब आप पूना में थे पहले वर्ष आपके सभी शिष्य आपसे मिल सकते थे। आपने यह अनुमति क्यों दी कि दूसरे वर्ष हम कभी आपसे मिल नहीं सकते थे।
मुझे बहुत तरह की एलर्जी है। मैं नहीं चाहता कि विशेषकर तेज गंध लगाए हुए महिलाएं मेरे निकट आएं। क्योंकि ये गंध मुझे दमा के दौरे देती है। मैं कोई परमात्मा नहीं, मुझे दमा है।
(सुनाई नहीं दया)
यह उनका धंधा है। जिसने भी आपको जो कुछ बताया। सत्य यह है कि मुझे कई एलर्जी है गंधों से, धूल से—जहां तक गंध का सवाल है बंबई की स्त्रियां सबसे बदतर हैं। आप अपनी देह जो बदबू भरी है, सुगंध से ढक रहे हैं मेरे लिए यह भी एलर्जी है। तो यह भी एक समस्या है। अतः वे लोग मुझे दमे के आक्रमण से बचाने भर के लिए प्रयास कर रहे थे, अन्यथा पूरी रात मैं सो नहीं सकता।
अब आप फिर भारत में हैं, क्या आप यहां ठहरेंगे? और क्या आप केवल निरंतर अंग्रेजी में बोलते रहेंगे अथवा आप हिंदी में भी बोलेंगे।
मैं निरंतर अंग्रेजी बोलता रहूंगा, क्योंकि मुझे पूरे संसार पर चोट करनी है। हिंदी मुझे एक छोटे से कुएं का मेंढक बना देगी। वह मैं नहीं कर सकता। अब यह मेरे वश के बाहर है।
क्या आप उन युवा लोगों के संबंध में, जो बिना मुकदमें के जेलों में बंद हैं, इंटरनेशनल एमेन्स्टी को लिखेंगे।
मैं केवल बोला हूं मैं लिखता नहीं हूं। आपको लिखना होगा मेरे लिए।

(सुनाई नहीं दिया)
मैं कहीं भी जाने को तैयार हूं, अगर वे मुझे अनुमति दें। मैंने प्रत्येक देश से आवेद न किया है। आप जरा मेरा पासपोर्ट को तो देखें। प्रत्येक देश इनकार करता है कि मैं खतरनाक हूं, उनके देश में प्रवेश की कोई संभावना नहीं। और विशेषकर श्री लंका मुझसे नाराज, क्योंकि मैंने कुछ डिस्को दुनिया भर में खोले हैं, जिन्हें जोरबा दि बुद्धा नाम दिया है। यह मेरा मौलिक प्रयास है। जोरबा भौतिकवादी का प्रतिनि ध्त्वि करता है और बुद्धा आध्यात्मवादी का। और मैं चाहता हूं कि मनुष्य दोनों ह ो, अन्यथा वह अधूरा होगा। और एक अधूरा आदमी कभी संतुष्ट नहीं हो सकता। जोरबा दि बुद्धा प्रतीक रूप है।
श्रीलंका के राजदूत ने मुझे पत्र लिखा कि अगर आप श्रीलंका जाएंगे तो आप पर पत्थर फेंके जाएंगे, क्योंकि आप गौतम बुद्ध को घसीट कर जोरबा के स्तर पर ला रहे हैं।
मैंने उसे लिखा कि जरा इसे दूसरे ढंग से देखें कि मैं जोरबा को गौतम बुद्ध तक उठाने का प्रयास कर रहा हूं। वे नाराज हैं कि मैंने गौतम बुद्ध का संबंध जोरबा से जोड़ दिया है। और यही मेरा पूरा योगदान है।
मैं साधारण जीवन को बिना किसी त्याग के असाधारण जीवन बनाना चाहता हूं: संसार में होना और फिर भी संसार का न होना। और जब तक हम ऐसी स्थिति पैदा नहीं करते, यह संसार रुग्ण बना रहेगा।
31 जुलाई 1986 प्रातः सुमिला, जुहू बंबई
मैं जीवन सिखाता हूं
मैंने आज के लिए भेजे गए प्रश्न देखे; और उन्हें देखकर मुझे बड़ी शर्म आई। शर्म इस बात की कि भारत की प्रतिभा इतने नीचे गिर गई है कि यह कोई अर्थपूर्ण प्रश्न भी नहीं पूछ सकती। फिर अर्थपूर्ण उत्तरों की खोज करने का तो सवाल ही पै दा नहीं होता। जो भी प्रश्न मुझे दिखाए गए वे सब सड़े गले हैं। पीली पत्रकारिता, जो तीसरे दर्जे की मनुष्यता की जरूरत पूरी करती है। उसमें मुझे कोई रस नहीं है।
यह अत्यंत प्रतिभा का देश है। मनुष्यता के इतिहास में यह देश उत्तुंग शिखर पर पहुंचा है-- चेतना के हिमालय के शिखर। और अब लगता है कि हम इतने नीचे ि गर गए हैं कि जब तक कोई प्रश्न किसी अमानवीय, कुरूप तत्व से संबंधित नहीं होता, तब तक किसी का उत्तर में रस नहीं होता।
मैं कोई राजनैतिक नहीं हूं। इसलिए जब कोई मुझसे प्रश्न पूछने की हिम्मत करे, तो ख्याल रखे कि मैं यहां कोई तुम्हें सांत्वना देने के लिए, या तुम्हारे मनचाहे उ त्तर देने के लिए नहीं हूं। तुम्हारे सिर पर हथौड़ों की चोट पड़ सकती है, क्योंकि मुझे बदले में तुमसे कुछ नहीं पाना है। मेरी सारी कोशिश यही है कि थोड़ी प्रज्ञा की ज्योति जगाऊं, थोड़ी मनुष्यता की सुगंध पैदा कर दूं।

इसलिए अपना प्रश्न पूछने के पहले सचेत रहो। मैं सिर्फ तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर न हीं दे रहा हूं—मैं इस सातत्य के संपूर्ण चित्त को उत्तर दे रहा हूं। यह सातत्य गौत म बुद्ध, कबीर, नानक का है।

और तुम्हारे सारे सवाल कचरा हैं। तुम्हें ये प्रश्न राजनीतिज्ञों से पूछने चाहिए। मेर ा समय बरबाद मत करो। यह सिर्फ तुम्हें इशारा करने के लिए है कि अगर तुम्हें बुरी तरह से न पिटना हो तो सचेत हो जाओ।

प्रश्नकर्ता अपने परिचय में कहता है कि वह मेरा पुराना प्रेमी है। और वह बरसों से मेरे विरोध में लिख रहा है। मैं समझ सकता हूं। पुराने प्रेमी खतरनाक होते हैं। प्रेम बड़ी आसानी से घृणा में बदल सकता है। और तुम्हारा प्रेम किस तरह का थ ा? तुमने मेरे लिए पक्ष में एक शब्द भी नहीं लिखा। तुम मेरा और मेरे नाम का शोषण करते रहे—और वह भी इतने कुरूप ढंग से। मैं तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर देना अपने लिए अपमानजनक मानता हूं।

तो इसे ख्याल रखो और अपने प्रश्न पूछो।

अत्यंत विनम्रतापूर्ण मेरा पहला प्रश्न है : आपके रजनीशपुरम के प्रयोग के संबंध में हमें बड़ी उत्सुकता है। दुर्भाग्यवश वह असफल रहा। हम अमेरिकन सरकार और ईसाई विश्वास को एक ओर रखें, तो उसकी असफलता के लिए कौन जिम्मेदार है ?

तुम! और तुम्हारे जैसे अन्य लोग।

पहली बात, वह प्रयोग कभी असफल नहीं हुआ। वह प्रयोग बेहद सफल रहा है। अ ौर उसकी सफलता ही मुसीबत की जड़ थी। जो प्रयोग असफल होते हैं, उनकी फि क्र कौन करता है? अमेरिकन सरकार या ईसाइयत या कोई भी उस प्रयोग में क्यों उत्सुक हो, जो असफल हो गया है? वह नितांत सफल रहा है। यह बात उनकी समझ के बाहर थी। उसकी सफलता ही उनकी समस्या थी।

तो 'असफलता' शब्द को छोड़ ही दो। मेरे शब्दकोश में उसके लिए कोई स्थान न हीं है। हमें जो करना था, हमने कर लिया। पांच हजार युवा लोगों का एक छोटा-सा कम्यून आज तक के इतिहास में, जगत की सबसे बड़ी ताकत से संघर्ष करते हुए, पांच साल तक कम्यून को निर्मित करता रहा। और वह कम्यून ऐसे रेगिस्तान में निर्मित किया गया था, जिसका कभी उपयोग नहीं किया गया था जिसे कभी उर्वरित नहीं बनाया गया या, जिसने कभी फूल नहीं देखे थे और न कभी एक भी पक्षी देखा था। पांच साल के भीतर वह एक मरूद्यान बन गया। हमने पांच हजार लोगों के लिए खुद मकान बनाए जिसमें सब आधुनिक सुविधा थी। हमने जो सड़ कें बनायीं, वे किसी भी सरकारी सड़कों से बेहतर थीं—इसमें अमेरिका भी शामिल है।

वह मरुस्थल फलने फूलने लगा। उसमें हरियाली छा गई। हमने उसे उपजाऊ बनाय ा। उसमें नहरें खोदीं, बांध बांधे। वहां हजारों पक्षी आने लगे। यह देखने योग्य चम त्कार था कि 126 वर्ग मील के उस मरुस्थल में ओरेगान से हजारों हिरण इकट्ठे ह

ो गए थे। बिना कुछ कहे उन्होंने बहुत कुछ कह दिया। क्योंकि रजनीशपुरम को छ ोड़कर और सब जगह उनका जीवन खतरे में था। वे गोलियों के शिकार हो जाते। और विशेष रूप से अमेरिका में हर साल दस दिन के लिए हिरणों का शिकार क रने के लिए पूरी छूट दी जाती है। रजनीशपुरम में वे रास्ते पर खड़े हो जाते। तुम कितना ही हार्न बजाओ, वे रास्ते से नहीं हटते थे। वे जानते थे कि तुमसे उन्हें कोई खतरा नहीं है। तुम्हें कार से नीचे उतरकर उन्हें रास्ते से दूर हटाना पड़ता। उस मरुस्थल में हंस भी प्रगट हो गए। पूरे अमरीका से तीन सौ मोर वहां आ गए थे। लगता है, पत्रकारों की अपेक्षा पशु पक्षी ज्यादा समझदार होते हैं। और वहां के पक्षियों पशुओं, वृक्षों, और फूलों के बीच एक अदभुत समस्वरता थी। हमने एक इकोलाजी पर्यावरण सम्मत विज्ञान व्यवस्था निर्मित की थी। हम आत्मनिर्भर थे अ ौर हमने अमेरिका से एक डालर भी नहीं मांगा। और न ही अमेरिका से कोई मद द मांगी। तुम एक देश होकर भी अमेरिका की मदद के बिना नहीं जी सकते। तुम असफल हुए हो। तुम भिखमंगे हो। और तुम्हारा यह देश कभी सोने की चिड़िया था। और तुमने उसकी यह हालत बनाई है।

अमेरिकन राजनीतिकों को भारी चोट पहुंची कि उनकी मदद की हमें कोई जरूरत नहीं थी। क्योंकि दूसरों को गुलाम बनाने का उनका यह तरीका है। मदद तो सि र्फ एक आवरण है। अगर तुम आर्थिक सहायता लेते हो तो अनजाने तुम गुलाम ह ो जाते हो। हमने कभी उनसे किसी चीज की मांग नहीं की। हमारे लोग दुनिया भ र से अपनी चीजें लाए थे। और ऐसा कम्यून बनाया जो विश्व में सर्वाधिक संपन्न शहर था।

पांच हजार लोगों के कम्यून में पांच सौ कारें थीं जिन पर किसी की मालकियत न हीं थी लेकिन जो भी उपयोग करना चाहे उनके लिए उपलब्ध थीं। पांच हवाई जह ाज थे जो कम्यून के थे, कसी और के नहीं थे। दुनिया भर के संन्यासियों ने कई प्र कार से अपना प्रेम भेजा था। उन्होंने मुझे 93 रोल्स रायस कारें भेंट की थीं, जिन पर मेरी मालकियत नहीं थी। क्योंकि मैं किसी चीज का संग्रह नहीं करता। वे सब कारें कम्यून की थीं। दुनिया में ऐसी कोई जगह नहीं है जिसमें पांच हजार लोग रहते हों। और उनके पास 93 रोल्स रायस कारें हों।

हमारी यह सफलता अमेरिकन राजनीतिकों को बहुत चोट पहुंचा रही थी। और ह र साल एक विश्व उत्सव होता था। सारी दुनिया से बीस हजार संन्यासी चले आते थे। वह समय ऐसा था जैसे कोई सुनहरा सपना सकार हुआ हो। बीस हजार लोग ध्यान करते, गीत गाते, अपने-अपने वाद्यों पर संगीत छेड़ते, नाचते, आनंदित हो ते। बीस हजार लोगों के लिए एक ही रसोईघर था। जरा कल्पना करो कि बीस ह जार लोग एक साथ खाना खा रहे हैं और बाकी लोग नाच रहे हैं, गीत गा रहे हैं , आनंदमग्न हैं—क्योंकि यही मेरा मूल संदेश है : त्याग नहीं—आनंद।

संन्यास का इसलिए पतन हुआ क्योंकि वह त्याग से जुड़ गया। पहले ऐसा नहीं था । उपनिषदों के जमाने में, वेदों के जमाने में संन्यास त्याग नहीं था। तुम्हारे सब

ऋषियों के गुरुकुल जंगल मग हुआ करते थे। और वे सब संपन्न कम्यून थे। वेदों में या उपनिषदों में गरीबी का कभी भी सम्मान नहीं किया गया है।

और त्याग ईश्वर के विपरीत जाता है। गाड, गाड शब्द के लिए संस्कृत शब्द है, ईश्वर। और ईश्वर का अर्थ होता है, ऐश्वर्य, धनाढ्यता, समृद्धि। जरा सीता के ब गैर राम को देखो, तो तुम्हें लगेगा कि किसी चीज की कमी है, कुछ अति महत्वपू र्ण बात का अभाव है। शायद हृदय का अभाव है। जैसे राम का सिर्फ निष्प्राण शर ीर पड़ा है। जरा कृष्ण के चारों ओर रासलीला गोपियों के बगैर कृष्ण की कल्पना करो, उनकी बांसुरी का गीत खो जाएगा।

मैं कम्यून में उस मौलिक संन्यास को वापिस लाने की कोशिश कर रहा था—जो सं सार का त्याग करने वाला नहीं, बल्कि इस संसार को ऐसे जीना जैसे, वह परमात मा की भेंट है। यह एक भेंट है।

और यही मुसीबत हो गई। क्योंकि प्रतिदिन अमेरिकन दर्शक, अमेरिकन टेलीविजन अमेरिकन प्रसार माध्यम आने लगे। हवाई जहाज भरकर लोग कम्यून देखने के ि लए आने लगे कि यहां क्या हो रहा है। और पूरे अमेरिका में चर्चा थी कि इन लो गों ने रेगिस्तान को स्वर्ग में बदल दिया है।

और हम कोई राजनीतिक नहीं थे। हमारी कोई राजनीतिक पार्टी नहीं थी। न कोई राजनीतिक विचारधारा नहीं थी। हम न समाजवादी थे, न पूंजीवादी थे। और फि र भी हर श्रेष्ठतम श्रेणी का जीवन जी रहे थे, जो प्रेम और मित्रता से परिपूर्ण था । अमेरिका के लोग अपनी सरका से पूछने लगे, तुम क्या कर रहे हो।

तुम्हारा ख्याल होगा कि अमेरिका में हर कोई अमीर है। तुम भ्रांति में हो। वहां त ीन करोड़ लोग भिखारी हैं, जिनके पास न खाना है, न कपड़ा है न मकान है। औ र कैसी मूढ़ता है। ठीक उतने ही—तीन करोड़ लोग अधिक खाने के कारण अस्पता ल में पड़े हैं।

थोड़ी सी बुद्धिमानी की जरूरत है। ये लोग ज्यादा खाने के कारण मर रहे हैं और वे लोग मर रहे हैं क्योंकि उनके पास खाने को कुछ नहीं है। छह करोड़ लोगों क ी जिंदगी बचायी जा सकती है। बस थोड़ी सी बुद्धिमत्ता की जरूरत है।

हम अमेरिकन राजनीतिकों के लिए एक घाव बन गए थे। वे कोई जवाब नहीं दे सके। इसलिए उनके सामने एक ही रास्ता था। कम्यून को नष्ट कर दें तो प्रश्न ही गिर गया और उत्तर देने की कोई जरूरत न रही।

कम्यून को अमेरिकन सरकार ने और धर्मांध ईसाइयों ने नष्ट किया है। क्योंकि ऐस ा पहली बार हुआ है कि ईसाई उनके संप्रदाय से बाहर निकले बिना किसी अन्य सं प्रदाय में नहीं उलझे।

कोई हिंदू ईसाई बनता है: वह एक कैद छोड़ता है और दूसरी कैद में प्रवेश करत ा है। एक ईसाई हिंदू बनता है तो एक बंधन को छोड़कर दूसरे बंधन को स्वीकार करता है। पहली बार उन्होंने देखा कि तुम एक कैद को छोड़ सकते हो और दूसर ी कैद में प्रवेश करने की कोई जरूरत नहीं है। तुम एक स्वतंत्र मनुष्य हो सकते ह

ो। संन्यासी धार्मिक है, लेकिन उसका कोई धर्म नहीं है। संन्यासी आध्यात्मिक है, लेकिन वह हिंदू मुसलमान या ईसाई नहीं है।

और संयोगवश अमेरिका का प्रेसीडेंट रोनाल्ड रीगन दोनों है : एक तीसरे दर्जे का राजनीतिक भी और रूढ़िवादी ईसाई भी। उन्होंने हमें नष्ट करने के सभी उपाय ि कए।

बेचारी शीला का इसमें कोई हाथ नहीं है। वह निश्चित ही शिकार हो गई । मेरे मन में उसके लिए पूरी करुणा है तुम उनके शिकंजे में किस तरह फंस सकते हो इसे समझ लेना जरूरी है।

कम्यून के सब टेलीफोन्स को ध्वनिमुद्रित किया जाता था। मैं एकांत और मौन में था। शीला मेरी सचिव और कम्यून की प्रेसीडेंट थी। यह देखकर कि हमारे सारे टे लीफोन ध्वनिमुद्रित किए जाते हैं, उसने बाहर से ओन वाले सब टेलीफोन ध्वनिमु द्रत करने शुरू कर दिए। यह जानने के लिए कि क्या सरकार--एफ बी आई सी अ ाई ए और अन्य सरकारी संस्थाएं--के दूत कम्यून में संन्यासी बनकर छिपे हैं और सूचनाएं बाहर भेजते रहते हैं?

वह अपराधी नहीं थी। जब मैंने उसे कम्यून का प्रेसीडेंट बनाने के लिए चुना था, तब वह निर्दोष महिला थी, और बहुत बुद्धिमान थी। लेकिन अमेरिकन राजनीतिज्ञों ने उसकी निर्दोषता को नष्ट कर दिया। वे जो भी कर रहे थे, उसके जवाब में अ ब और अपने बचाव के लिए, वह सब करना जरूरी था। उसके सार अपराध मौलि क रूप से अमेरिकन राजनीतिकों के अपराध थे, जो उसने सिर्फ दोहराए--सिर्फ कम्यून को बचाने के लिए। उसके प्रति मेरे मन में केवल एक करुणा और दुख का भ ाव है, और कुछ भी नहीं। वह अपराधी नहीं है। और उसने जो भी किया उसमें उ द्देश्य बुरा नहीं था।

उसने मेरे अपने कमरे में भी गुप्त रूप से बातचीत सुनने के यंत्र लगाए। उसने दो सौ मकानों में भी गुप्तरूप से बातचीत सुनने के यंत्र लगाए। स्वभावतः तर्क यही कहता है कि वह जानने की कोशिश कर रही थी कि मैं एकांत में क्या करता हूं, मैं एकांत में क्या करता हूं। लेकिन यह सच नहीं है। सच तो यह है कि वह सचे त रहना चाहती थी, क्योंकि उस निवास स्थान में मैं अकेला रहता था। यदि रात में कोई उसके दरवाजे खोलता, जो कि कांच के थे, तो उसके उपकरण उसे तत्क्ष ण खबर कर देते और वह वहां पहुंच सकती थी। वह मेरी सुरक्षा के लिए था, मे रे अहित में नहीं था। उसने मेरे या मेरे कम्यून के अहित में कभी कुछ नहीं किया ।

लेकिन अब उसकी व्याख्या की जा सकती है। और इन व्याख्याकारों के कारण वह इनको और पत्रकारों को उन्हीं की भाषा में जवाब देने लगी। उसके पास इतनी प्रतिभा नहीं थी कि वह सच कह दे कि हां, मैंने भगवान की सुरक्षा के लिए उनके निवास स्थान में गुप्त रूप से बातचीत सुनने के यंत्र लगाए थे। लेकिन मैं जानता

हूं वह मेरे लिए अपनी जान भी दे देती। वह मुझसे प्रेम करती थी—उस तरह का नहीं, जैसा तुम मुझसे करते हो।

तुम्हारा प्रेम तो एक धोखा है। तुम कहते जरूर हो कि तुम मेरे प्रेमी हो—पुराने प्रेमी। और इतने समय तक तुम मेरे बारे में इतने घिनौने और अश्लील लेख लिखते आए हो कि तुम्हें तो सींखचों के पीछे होना चाहिए, यहां मुझसे प्रश्न पूछते हुए नहीं।

तो पहली बात, इस असफलता के ख्याल को छोड़ दो। हम सफल हुए हैं। मनुष्य के पूरे इतिहास में यह पहला कम्यून था, जो सफल हुआ। और मनुष्य की ईर्ष्या के संबंध में एक बात का ख्याल रखो : यह असफलता से ईर्ष्या कभी नहीं करती। तुमने कभी किसी को असफलता से ईर्ष्या करते हुए देखा है? ईर्ष्या सदा सफलता से होती है।

रास्ते पर भिखारी देखकर कभी तुम्हें उससे ईर्ष्या हुई है? लेकिन धनी आदमी की गगनचुंबी अट्टालिका देखकर तुम ईर्ष्या से भर जाते हो। यह मन बड़ा विचित्र है, विकृत है, अविकसित है। हां उसी अट्टालिका में यदि आग लगती है, तो तुम्हें सहानुभूति होती है। तुम उस आदमी के पास जाकर कहोगे, मुझे तुमसे पूरी हमदर्दी है। बहुत बुरा हुआ। ऐसा नहीं होना चाहिए था। और पूरे समय जब तक वह भवन वहां पर था, प्रतिदिन तुम्हारे मन में उस भवन के खिलाफ और उसके मालिक के खिलाफ विचार आते थे।

भारत में कौन ईर्ष्या करता है? मैं विश्व भर में घूमा हूं। मैंने किसी भारत से ईर्ष्या करते हुए नहीं पाया। लेकिन मैंने ऐसे लोग पाए जो गौतम बुद्ध से ईर्ष्या करते हैं, जो कृष्ण से ईर्ष्या करते हैं,जो नानक से ईर्ष्या करते हैं,जो कबीर से ईर्ष्या करते हैं। ये हीरे, जो हमने पैदा किए हैं, उनके देश नहीं पैदा कर सके—नकली भी नहीं। दुनिया की किसी भी भाषा में ऐसे वचन नहीं हैं, जिनकी तुलना नानक या कबीर के वचनों से हो सके; ऐसे शास्त्र नहीं है, जिनकी तुलना धम्मपद या गीता से हो सके। पश्चिम जिस ग्रंथ को'पवित्र बाइबिल' कहे चला जाता है, वह पूरा अश्लीलता से भरा हुआ है—पांच सौ पृष्ठ अश्लीलता के, नितांत अश्लीलता के। उस पवित्र ग्रंथ पर हर देश प्रतिबंध लगाना चाहिए। पूरी दुनिया में आज उसे जला देना चाहिए। लेकिन ईसाई भी उसकी अश्लीलता को पहचान नहीं पाते।

जब मैं कारागृह में था, तब वहां का कार्डिनल मुझसे मिलने आया। हम इन लोगों को कम्यून में आने का निमंत्रण देते रहे हैं। लेकिन कम्यून बहुत सफल हो रहा था। वे लोग ईर्ष्या से भरे थे। कोई कभी नहीं आया। जब मैं जेल में था, तब यह कार्डिनल बिना किसी निमंत्रण के चला आया। अब उसे मुझे सहानुभूति दिखाने का एक अवसर मिला था। अब मुझे पवित्र बाइबिल भेंट करने का अवसर था। अब मुझसे यह कहने का मौका था कि चिंता मत करो, जीसस तुम्हारी रक्षा करेंगे।

मैंने कहा, वे खुद अपनी रक्षा नहीं कर सके, मेरी रक्षा कैसे करेंगे? और मैं इस बाइबिल को छू नहीं सकता, क्योंकि यह अस्तित्व में सबसे अपवित्र किताब है। उसने कहा, क्या?

मैंने बाइबिल से पांच सौ पन्ने निकाल लिए थे जो कि अश्लील थे। उन्हें तुम अपने बेटे के सामने नहीं पढ़ सकते, तुम्हारी बेटी के सामने नहीं पढ़ सकते, तुम्हारे परिवार के सामने नहीं पढ़ सकते। कोरी अश्लीलता है। उसके सामने प्ले बॉय या पैंट हाउस पत्रिका या भारत की 'इलस्ट्रेटड वीकली' कुछ भी नहीं है। उसमें एक ही बात की कमी है कि वह चित्रमय नहीं । तो मैं एक चित्रमय बाइबिल बनाने की सोच रहा हूं। तो तुम्हें पता लगेगा कि उसमें क्या लिखा हुआ है। अत्यंत कुरूप। अगर कम्यून असफल होता तो अभी तक बना रहता। लेकिन वह सफल हो गया। और सफलता को कोई बर्दाश्त नहीं कर सकता। अब वे लोग प्रसन्न हैं। अभी दो दिन पहले अमेरिका के अटर्नी जनरल ने एक पत्रकार परिषद में पत्रकारों के उत्तर देते हुए, एक प्रश्न के जवाब में कहा, कि शीला और उसके साथियों को साढ़े तीन साल की कैद हुई लेकिन भगवान को क्यों रिहा किया गया? और अमेरिकन न्यायालय के सर्वोच्च अधिकारी ने उत्तर में तीन बातें कहीं। एक—हमारे पास इस बात का कोई सबूत नहीं है कि भगवान ने कोई जुर्म किया है। दूसरा—हमारी योजना भगवान के खिलाफ नहीं थी, हमारी योजना कम्यून नष्ट करने की थी। तीसरा—अगर हम भगवान को कैद करते या उनको कुछ हो जाता, तो वे शहीद बन जाते। और हम वह कभी नहीं चाहते थे। उससे तो उनके अनुयायी और भी बढ़ जाते। उनके प्रेमियों की संख्या में वृद्धि हो जाती।

अब कानून का सर्वोच्च अधिकारी इस बात को स्वीकार करता है कि मैंने कोई अपराध नहीं किया है। फिर बिना किसी गिरफ्तारी के वारंट के मुझे क्यों गिरफ्तार किया गया? मुझे व्यर्थ कारागृह में बारह दिन तक बंद क्यों रखा गया? मैं बार-बार आग्रह कर रहा था कि मुझे अदालत में ले चलो। क्योंकि वहां मैं जज से बात कर सकता हूं, इन मूढ़ों से नहीं कर सकता। और उन्हें यह साफ था कि जज के खिलाफ उनके पास कुछ भी नहीं है सिद्ध करने को। तुम अदालत से यह नहीं कह सकते कि यह आदमी सफल हुआ है इसलिए हमने इसे कैद किया है। यह तो कोई जुर्म न हुआ। तुम अदालत से यह भी नहीं कह सकते थे कि हम कम्यून को नष्ट करना चाहते थे? कम्यून ने किसी को कोई भी नुकसान नहीं पहुंचाया है। उसका निकटतम पड़ोसी कम्यून से बीस मील दूरी पर था। वह कम्यून बिलकुल ही अलग थलग था—एक परिपूर्ण जगत। हमारे पास पांच सौ कारें और हवाई जहाज थे और जाना कहीं भी नहीं था।

दूसरी बात, शीला, महज अमेरिकन राजनीति की शिकार बन गई। उसने उनकी नकल करनी शुरू कर दी। ऐसा होता है। यह मनोवैज्ञानिक है। मैं हमेशा ऐसा कहता आया हूं कि तुम अपने मित्र को बिना किसी दिक्कत के चुन सकते हो, लेकिन तुम्हें अपना शत्रु चुनना हो तो तुम्हें बड़ी सावधानी बरतनी होगी। क्योंकि तुम्हारा

शत्रु नीचे तुम्हें अपने तल पर खींच लाएगा। उससे लड़ने के लिए भी तुम्हें उन्हीं हथियारों का, उसी भाषा का, उसी कुरूपता का उपयोग करना पड़ेगा। मित्रों को झेलना आसान है। तुम्हारा मित्र कोई भी बन सकता है। लेकिन शत्रुओं के संबंध में बहुत सावधान रहना और बड़ी सजगता से चुनना। शत्रु ऐसा चुनना जो तुमसे श्रेष्ठतर हो। तब तुम्हें ऊंचा होना सीखना होगा—अपने शत्रु से ऊंचा।

शीला इस घिनौनी राजनीति का शिकार बनी। उन्होंने जो भी किया उसने उसकी नकल की। और वे यही चाहते थे। कानून उनके हाथ में हैं, अदालतें उनके हाथ में हैं। यह भ्रांति है कि कानून राजनीति से स्वतंत्र है। क्योंकि मुझे ऐसा ज्ञात हुआ है कि ऐसा नहीं है।

जब उन्होंने मुझे पकड़ा तो बारह भरी हुई बंदूकें मेरी ओर तानकर उन्होंने मुझे गिरफ्तार किया। मैंने उनसे कहा कि यह तो पागलपन है। आधी रात में बारह भरी हुई बंदूकें और बारह आदमियों को क्या नाहक कष्ट दे रहे हो? मेरे पास कोई शस्त्र नहीं हैं। सिर्फ एक कागज के पर्चे की जरूरत है—मेरा गिरफ्तारी वारंट। मेरी गिरफ्तारी का वारंट कहां है?

उनके पास कोई गिरफ्तारी का वारंट नहीं था। क्योंकि गिरफ्तारी के वारंट को प्राप्त करने के लिए उन्हें मजिस्ट्रेट के पास जाना पड़ता है और बताना पड़ता है कि मैंने क्या अपराध किया है। मैंने उनसे कहा कि अमेरिका के संविधान के अनुसार मुझे अपने अटर्नी से बात करने का पूरा अधिकार है। उन्होंने इनकार कर दिया। तब मैंने उनसे कहा कि तुम अपने संविधान का ही अनादर कर रहे हो। वे बोले, हम कुछ नहीं कर सकते। हमें ऊपर से आदेश आए हैं कि उन्हें किसी अटर्नी से मिलने दिया जाए। क्योंकि अटर्नी इस मुकदमें को तत्क्षण अदालत में खींच ले जाता।

उन्होंने मुझे शुक्रवार की रात गिरफ्तार किया, ताकि कम से कम शनिवार और रविवार के दिन तो अदालत बंद होने के कारण मुझे जमानत मिलना असंभव था। और सोमवार को उन्होंने मुझे एक अदालत में मजिस्ट्रेट महिला के सामने पेश किया, जो कि जज नहीं थी। और वह तरक्की पाकर जज बनने की प्रतीक्षा कर रही थी। और उसे धमकाया गया। क्योंकि वहां के जेलर ने मुझसे कहा कि यह सरासर धमकाना है। उससे कहा गया कि अगर मुझे जमानत दी जाती है तो उसकी तरक्की खत्म।वह अंत तक मजिस्ट्रेट ही बनी रहेगी। वह कभी भी जज नहीं बन सकेगी। इसलिए मेरी जमानत मंजूर नहीं की जानी चाहिए। मेरा कोई अपराध नहीं, अटर्नी की कोई सुविधा नहीं, कोई गिरफ्तारी का वारंट नहीं, और फिर भी उस महिला ने जमानत से इनकार कर दिया।

मैंने उनसे पूछा किस आधार पर? और तुम्हें वे आधार सुनकर आश्चर्य होगा, जिस पर जमानत मंजूर की गई। मेरी जमानत इसलिए नामंजूर की गई क्योंकि मैं अत्यंत प्रतिभाशाली व्यक्ति हूं। मैंने कहा, क्या यह कोई गुनाह है कि सारी दुनिया में मेरे लाखों अनुयायी हैं? मैंने कहा, तुम्हारा मतलब है कि यदि जीसस यहां होते

तो उनका कारागृह में रखा जाता बौर उन्हें जमानत न मिलती? क्या बुद्ध इसलिए कैद किए जाते कि उनके लाखों अनुयायी हैं? यह कोई अपराध हुआ? मुझे तो यह पहली बार पता चल रहा है।

और उसने कहा कि अलिखित धनराशि के स्रोतों तक आपकी पहुंच है। मैंने कहा, तो इसका मतलब हुआ कि सिर्फ भिखारियों को जमानत मिल सकती है। जिन लोगों के पास पैसा है, उनका जमानत नहीं मिल सकती। यह तो बड़ी विचित्र बात है। क्योंकि जमानत के लिए पैसा चाहिए। और मैं तैयार हूं--पचास लाख डालर, एक करोड़ डालर, एक करोड़ पचास लाख डालर--अमेरिका में आज तक जितनी जमानतें दी गई हैं, उनमें सर्वाधिक बड़ी जमानत देने को मैं तैयार हूं।

लेकिन उनके कारण ये थे कि आपके पास बुद्धि है; आपके पास अनुयायी हैं जो आपके लिए कुछ भी कर सकते हैं; आपके पास धन के स्रोत हैं; आप जमानत से बचकर अमेरिका से निकल भाग सकते हैं। मैंने कहा, यह तो एक तरह से स्वीकार करना हुआ कि दुनिया की महानतम आणविक ताकत से एक आदमी अधिक शक्तिशाली है। लेकिन इस तरह मुझे कब तक कैद में रख सकते हो? तुम्हें आज या कल में तय करना होगा। और बारह दिन तक निरंतर यह झूठ बोलने के बाद कि हम आपको अदालत में ले जा रहे हैं, मैं बस एक जेल से दूसरी जेल में घूमता रहा। मैंने कहा, यह तो अजीब है, अदालत कहां है? उन्होंने कहा, हम तो सिर्फ आदेशों का पालन कर रहे हैं।

लेकिन तुम किसके आदेशों का पालन कर रहे हो? बारह दिन बाद मुझे अदालत में हाजिर किया गया और उसी वक्त जमानत दी गई। क्योंकि मुझे कैद में रखने का कोई कारण नहीं था।

लेकिन वह एक बढ़िया अनुभव था। उन बारह दिनों में मैंने अमेरिका के कारागृहों में हजारों युवक कैद देखे। वे सब काले थे, उनमें से एक भी गोरा नहीं था। और सब युवा थे, एक भी बूढ़ा नहीं था। और किसी अदालत ने उन्हें कारावास की सजा नहीं दी थी, वे अदालत में हाजिर किए जाने का इंतजार कर रहे थे। एक आदमी तो नौ महीने से प्रतीक्षा कर रहा था। उसने मुझे बताया कि मैंने कोई गुनाह नहीं किया है। और ये लोग कहे चले जाते हैं कि हम तुम्हें अगले सप्ताह अदालत के सामने पेश करेंगे। और नौ महीने अनावश्यक ही सजा पायी है जेल में। वे अच्छी तरह जानते हैं कि एक बार मैं अदालत में उपस्थित हुआ तो मैं मुक्त हो जाऊंगा।

क्यों ये काले लोग हजारों की संख्या में अमेरिकन जेलों में हैं? उन्होंने कोई अपराध नहीं किया है। लेकिन यह भय है--अमेरिका में एक काले आंदोलन का! एक भय कि तुमने जो काले लोगों के साथ किया है तीन सौ साल तक तुमने उन पर अत्याचार किया, स्त्रियों पर बलात्कार किया, उनका शोषण किया, उनका खून चूसा। अब वह आखिरी बिंदु पर आ गया है। युवक अब और गुलाम रहने को तैयार नहीं है। उसे आजादी चाहिए। उसे बाकी मनुष्यों के साथ समानता चाहिए। यह था

उनका अपराध। विश्व में किसी को इस बात की जानकारी नहीं है क्योंकि वे सी खचों में बंद हैं। और ये तो सिर्फ पांच कारागृह थे। न जाने ऐसे और कितने कारा गृह काले लोगों से भरे पड़े हैं।

शीला के प्रति मुझे शिकायत नहीं है। और यह पत्रकार मेरे खिलाफ लिखता रहा है—सरासर झूठ, जो कि निराधार थे। इस तरह के लोगों को सजा मिलनी चाहिए। लेकिन लोगों को झूठ में मजा आता है। किसी भी प्रकार के आरोपों में लोगों को बड़ा रस आता है। और इसकी हिम्मत तो देखो कि वह खुद को मेरा पुराना प्रेमी कहता है। बेहतर होता कि तुम मुझसे घृणा करते। तुम्हारा प्रेम विषाक्त है। और ध्यान रहे, तुम्हारे लेख में मेरा एक भी शब्द छोड़ना मत। यह तुम्हारे खिलाफ है, शीला के खिलाफ नहीं।

ऐसी कितनी ही मंहगी किताबों में आपके बचपन के संबंध में कई झूठी बातें लि खी गई हैं। क्या वास्तव में अंबालाल आपके दत्तक पिता थे? क्या आप सचमुच जि न्ना से से मिले थे? क्या आप अंबालाल के साथ रहे थे आपके दत्तक विधान के दस् तावेज का किस्सा क्या शीला ने गढ़ा था? क्या इन किताबों में अलिखित गलत त थ्यों को आप सुधारकर उन किताबों में से हटा सकते हैं?

मैं अपनी किताबों कभी भी नहीं पढ़ता। और इन सात सालों में मैंने किसी और की कोई भी किताब नहीं पढ़ी। तो मैं नहीं जानता तुम क्या बात कर रहे हो। मु झे कभी किसी ने दत्तक नहीं लिया। जहां तक मैं जानता हूं। अगर इस तरह के झू ठों से भरी हुई कोई किताब हो, तो किसी ने वे बातें किताब में लिख दी होंगी। क योंकि न तो मैं किताबें लिखता हूं, न मैं किताबों के प्रूफ पढ़ता हूं—और न ही मैं प्रकाशित होने पर किताबें पढ़ता हूं। प्रूफ पढ़ने वाले लोग हैं, संपादक हैं—तुम जैसे ही लोग, जो मुझे प्रेम करते हैं। यह तुम्हारी ही जाति की किसी व्यक्ति की करतू त रही होगी। यदि ऐसी बातें किताबों में होंगी, तो वे हटा दी जाएंगी। लेकिन मैं कुछ कह नहीं सकता।

लेकिन यह सरासर झूठ है। मैं किसी जिन्ना से कभी नहीं मिला। और न ही मैं इस अंबालाल पटेल को जानता हूं। मैं केवल स्वयं को जानता हूं। लेकिन चूंकि तुमने अंगुलि निर्देश किया है, तो मैं ऐसे किसी व्यक्ति को उस किताब में यह बात ढूंढने को कहूंगा, जो मुझे जानता है, और मेरे जीवन को जानता है कि कहीं उसमें कि सी ने कोई बात डाल तो नहीं दी!और एक बात ख्याल रखो, मैं गड़े मुर्दे उखाड़ने में विश्वास नहीं करता। मुझे अतीत में कोई विशेष रख नहीं है—जिन्ना या महात् मा गांधी, या जवाहरलाल नेहरू, या मौलाना आजाद—मुझे मृत लोगों में कोई रस नहीं है। और मैं जिन्ना से क्यों मलूंगा? अब तक यह भूत बन चुका होगा।

आपने कल अपनी परिषद में कहा कि आपका भ्रम टूट गया है और आप तीसरा ि वश्वयुद्ध चाहते हैं। लेकिन आप और हमारे जैसे व्यक्ति, या और भी हजारों-लाखों लोग हैं, जो दुराचारी नहीं हैं। हम जीना चाहते हैं। तो फिर रास्ता क्या है? मान लीजिए सब विनिष्ट हो गया—जैसा कि आप चाहते हैं—उसके बाद क्या? अस्तित्व

में उसके बाद की रचना किस तरह की होगी? क्या आप ऐसा नहीं सोचते कि य
ह सब फिर पुनरावृत होगा?

पहली बात, तुम वही सुनते हो, जो तुम सुनना चाहते हो; तुम मुझे नहीं सुनते। मैंने दुराचारी शब्द का प्रयोग ही नहीं किया। मैंने 'बुराई' शब्द का उपयोग किया ही नहीं, तुमने कैसे सुन लिया? मैंने यह भी नहीं कहा कि मैं दुराचारी नहीं हूं। अ ौर मैंने निश्चित ही, यह नहीं कहा कि तुम दुराचारी नहीं हो। तुम जरूर होओगे। यह ख्याल तुम्हारे हृदय से उठ रहा है।

मैंने ऐसा कहा कि ध्यानी, संन्यासी—वे लोग जो अपनी चेतना का विकास करना च ाहते हैं—कड़ी मेहनत करें, इससे पहले कि यह जगत आणविक संहार में विलीन ह ो जाए। तुम केवल शरीर नहीं हो। तुम्हारा शरीर नष्ट हो जाएगा, लेकिन तुम्हारी चेतना किसी अन्य ग्रह में बीजारोपित हो जाएगी। विश्व के ब्रह्माण्ड के विस्तार में पचास हजार ग्रह हैं, जहां जीवन पाया जाता है। यह छोटी-सी पृथ्वी कुछ भी न हीं है। लेकिन तुमने यह सब तो सुना ही नहीं। यह प्रश्न तुम्हारे अपने दिमाग की उपज है।

जहां तक तुम्हारे प्रश्न के दूसरे हिस्से का सवाल है, जब तुम पैदा नहीं हुए थे तब क्या तुम्हें इस जगत की चिंता थी? दुनिया में क्या हो रहा है, लोग शांति से,प्रेम से जी रहे हैं या नहीं! यदि पैदा होने के पहले तुम्हें इस जगत की कोई चिंता न हीं थी,तो मरने के बाद भी तुम्हें कोई चिंता नहीं होगी।

तुम पैदा होने के पहले कहां थे? कहीं तो रहे होओगे। क्योंकि यहां कुछ भी नष्ट नहीं होता। तो सारी पृथ्वी भी नष्ट हो जाए तो भी तुम कहीं तो रहोगे। मुझे उस से कोई लेना-देना नहीं है। मेरी फिक्र है कि जब तक तुम यहां हो, इस समय का सदुपयोग करो, जो कि बहुत अल्प समय है—शायद पांच साल, दस साल, या ज्याद ा से ज्यादा पंद्रह साल। इस जगत को बचाया नहीं जा सकता। लेकिन तुम्हें तो ब चाया जा सकता है। और वह बिलकुल ही भिन्न बात है। अगर तुम अपने चैतन्य स वरूप को जान लो तो तुम बच गए। फिर तुम जहां कहीं भी हो, जिस किसी ग्रह पर—तुम आनंदित रहोगे।

वस्तुतः सदियों-सदियों से सबका यही अनुभव रहा है कि बुद्ध, महावीर, बोधिधर्म जो भी बुद्धत्व को उपलब्ध हुए हैं वे फिर वहीं पैदा नहीं हुए। उनकी आत्मा विश्व आत्म से तदाकार हो जाती है। तुम उसे ईश्वर कहो, तुम उसे ब्रह्म कहो, परात्प र कहो, आत्यांतिक कहो।

इस देश की यही खोज रही है। नब्बे हजार साल से एक तीव्र खोज रही है कि कै से शरीर के कारागृह में फर से बंदी न हुआ जाए। क्योंकि शरीर कारागृह है। बड़ा अजीब कारागृह। यह तुम्हारे साथ चलता-फिरता है। तुम जहां भी जाते हो, अपन ा कारागृह अपने साथ लिए रहते हो। हमारा सारा आध्यात्मिक विकास यही रहा है कि इस कारागृह से कैसे मुक्त हुआ जाए। और उस आलोकमय, सर्वव्यापकता

की स्थिति में कैसे रहा जाए। इस अस्तित्व के साथ एक कैसे हों—यही जीवन का वास्तविक उद्देश्य है।

तो मैंने इतनी ही बात कही कि जिन लोगों को सचमुच अपनी चेतना की चिंता है, उन पर ही मैं काम करूंगा। मैं अपनी ऊर्जा मनुष्यता के उस मुर्दा, अंधे, अचेतन अंश के साथ व्यर्थ नहीं गवाऊंगा। वे सिर्फ अपने आत्माघात का रास्ता तय कर रहे हैं। ठीक है, करने दो। वे फिर किसी अन्य ग्रह पर, किसी दूसरे रूप में जन्म लेंगे। आज जैसे वे हैं उससे तो बदतर नहीं हो सकते।

क्या तुम अपने से बदतर किसी चीज की कल्पना कर सकते हो? एक गुलाब का पौधा तुमसे कहीं ज्यादा बेहतर है। कम से कम उसके पास अपनी सुगंध तो है। आकाश में उड़ता हुआ पक्षी भी तुमसे कई गुना अच्छा है। उसके पास पूरे आकाश की स्वतंत्रता तो है। न किसी पासपोर्ट की जरूरत है, न प्रवेश के लिए वीसा की जरूरत है। वह किसी चर्च का सदस्य नहीं है—ईसाई नहीं है, हिंदू नहीं है। तुम कहीं भी रहो, अभी तुम जितने गिरे हुए हो उससे नीचे तो गिर नहीं सकते।

मैंने जो बात कही थी, वह बिलकुल ही भिन्न थी। मैंने कहा था, दुनिया में चारों तरफ देखने के बाद, लोगों के नकाबों के पीछे छिपे असली चेहरे के बाद, अब मुझे मनुष्यता में कोई रस नहीं है। और पृथ्वी नाम के इस ग्रह में भी मेरा कोई रस नहीं है। मेरा रस सिर्फ उन गिने-चुने लोगों में है जो अपनी विश्वव्यापी आत्मा को जानना चाहते हैं। जहां शरीर खो जाता है, तुम सिर्फ चैतन्य रह जाते हो—विशुद्ध चैतन्य—सच्चिदानंद—तुम सत्य हो तुम चैतन्य हो, तुम आनंद हो।

मैंने तुमसे कहा कि नब्बे हजार सालों से यह देश निरंतर एक ही लक्ष्य खोजता रहा है। वह तो ईसाइयत ने इस देश के शिक्षित लोगों के दिमाग में गलत ख्याल डाल दिया है। अशिक्षित लोग इस ख्याल से मुक्त रहे हैं। लेकिन शिक्षित लोगों से कहा गया है कि तुम्हारे वेद सिर्फ पांच हजार साल पुराने हैं। यह सरासर झूठ है। क्योंकि ईसाइयत की यह मान्यता है कि ईश्वर ने यह संसार सिर्फ छह हजार साल पहले बनाया। तो पूरे विकास को उन्हें छह हजार वर्ष के चौखटे में किसी तरह बिठाना है। उन्हें सब कुछ छह हजार वर्ष के चौखटे में किसी तरह बिठाना है। उन्हें सब कुछ छह हजार वर्षों के भीतर बिठाना है।

यह तो निपट मूढ़ता है। क्योंकि ऋग्वेद में हमें प्रमाण मिलता है—और एक ऐसा प्रमाण जिसे असिद्ध नहीं किया जा सकता कि नब्बे हजार साल पहले आकाश में ऐसे नक्षत्र प्रकट हुए थे, वे विस्तारपूर्वक वेदों के वर्णित किए गए हैं। उस समय के बाद वे वैसे फिर प्रकट नहीं हुए। अब विज्ञान भी स्वीकार करता है कि हां, नब्बे हजार साल पहले ऐसे सितारे रहे थे। अब पांच हजार सा पहले पैदा हुआ कोई आदमी किन्हीं वैज्ञानिक उपकरणों की मदद के बिना इतनी सूक्ष्मता से, इन नक्षत्रों के संबंध में कैसे लिख सकता है जब तक कि वे देखे न गए हों? ऋग्वेद कम से कम नब्बे हजार साल पुराना है; ज्यादा भी हो सकता है। और इन नब्बे हजार सालों में हमारी एक ही खोज रही है :कैसे इस कैद से छुटकारा पाएं? तुम अपने श

रीर में क्या हो? तुम्हें अपनी चमड़ी के पीछे छिपी हुई हड्डियों को देखना हो तो ि कसी भी मेडिकल कालेज में जाओ। चमड़ी तो सिर्फ एक आवरण है। चमड़ी के पी छे सिर्फ हड्डियां ही हड्डियां हैं।

यहां तक कि एक डाक्टर, मेरे एक मित्र, पूरे आंतरिक हड्डी के ढांचे को अपने दव ाखाने में रखने से डरते हैं। वे बोले, उसकी वजह से लाग आने से डरते हैं।तो वे उसे घर के अंदर छिपाकर रखते थे। उससे और एक समस्या खड़ी हो गई। उसकी पत्नी उसके खिलाफ थी तो मैंने उनसे कहा कि तुम इसे घर में रखो या न रखो , तुम इसे अपने शरीर के भीतर तो रखे ही हुए हो। तुम्हारी पत्नी इसे रखे हुए है, तुम इसे रखे हुए हो, सब कोई रखे हुए है।

हमें उसमें कोई रस नहीं रहा है। हमारा रस बिलकुल ही भिन्न है। हमारा रस यह है कि कौन छिपा है इन हड्डियों के पीछे—बुद्धि चेतना। तो अगर यह जगत आणि वक युद्ध के धुएं में विलीन हो जाता है, फिर भी कुछ खोएगा नहीं—हड्डी चमड़ी; ये सब तो वैसे भी खोने ही वाले हैं। अभी तुम उन्हें व्यक्तिगत रूप से खोते हो। लेकिन अब राजनीतिक करुणावश एक सामूहिक मृत्यु की तैयारी कर रहे हैं। जब हम इकट्ठे मर सकते हैं, तो अलग-अलग मरने की क्यों परेशानी लेनी!

अभी इस समय इतने आणविक अस्त्र हैं कि प्रत्येक आदमी सात बार मारा जा स कता है। और फिर भी उसके अंबार रचे जा रहे हैं। देर-अबेर इसका विस्फोट होने वाला है। इससे बचा जा सकता। मैं जीवन भर इसी कोशिश में लगा रहा कि इ ससे बचा जाए, लेकिन अब विश्व के सब राजनीतिज्ञों को देखने के बाद मैंने अपन ी भूमिका बदल ली है। मैं कहता हूं, इससे बचना नहीं चाहिए। इससे गुजर जाना ही अच्छा होगा। एक बार में ही सदा के लिए इससे छुटकारा हो जाए। जो लोग अपनी अंतरात्मा को जान सकते हैं वे विश्वात्मा में विलीन हो जाएंगे। जो ऐसा न हीं कर सकते वे पचास हजार ग्रहों में ही न कहीं कोई और पिंजरा, कोई और क ारागृह खोज लेंगे। इससे मुझे कोई अड़चन नहीं दिखाई देती।

कैद एक भयानक अनुभव है। अपने कारागृह के मनोविज्ञान के संबंध में कभी कुछ नहीं कहा है। वहां आपको कैसा लगा—मानसिक रूप से प्रीतिकर या दुःखद? कृपा कर अपने अनुभवों पर कुछ प्रकाश डालें।

हर व्यक्ति कारागृह में है। एक ही नहीं, कई कारागृहों में। पहले, तुम्हारा शरीर एक कारागृह है। वहां आपको कैसा लगा—मानसिक रूप से प्रीतिकर या दुःखद? कृ पा कर अपने अनुभवों पर कुछ प्रकाश डालें।

अमेरिका के कारावास के बारह दिन, और इंग्लैण्ड के कारावास का एक दिन, ग्री क के कारावास का एक दिन—मुझे बहुत प्रीतिकर लगा। प्रीतिकर इसलिए लगा क योंकि उसका मेरे ऊपर कोई असर ही नहीं हो रहा था। मैं सदा की तरह आनंदित था। उससे मुझे बहुत प्रगाढ़ परिपुष्टि मिली कि मेरा आनंद मुझसे छीना नहीं जा सकता। अगर अमरीकी जेल मुझसे नहीं छीन सकती तो कोई भी नर्क उसे मुझसे नहीं छीन सकता।

यही बात मैंने अमेरिकन जेलर ने कही, जिसकी जेल में मैं पहले तीन दिन था। क योंकि उसे आश्चर्य हुआ यह देखकर कि मैं बिलकुल निश्चिंत हूं। बल्कि सच बात तो यह थी कि मेरा ऐसा समय कभी नहीं बीता था—चौबीस घंटे ध्यान! कोई बाध ा नहीं। उस जेलर ने कहा कि मैं बस अवकाश ग्रहण करने ही वाला हूं—दो महीने के अंदर मैं अवकाश प्राप्त कर लूंगा। मुझे खुशी है कि मैंने कभी अवकाश नहीं ि लया है। आप मेरे पहले कैदी हैं जो कि बिलकुल अलग हैं—उन हजारों कैदियों से जो आए और गए। आप जरा भी विचलित नहीं हुए। मैंने कहा, मैं क्यों विचलित होऊं? इसलिए क्योंकि मेरे हाथों पर हथकड़ियां हैं, मेरे पैरों पर बेड़ियां हैं, मेरी कमर पर जंजीरें हैं—मैं किसलिए बेचैन होऊं?मेरी देह खुद पर कैद है। उस कैद क ो तुमने कुछ और आभूषणों से सजाया है। मैं बहुत आनंद में हूं। और मुझे इससे बल मिला है। क्योंकि अमेरिकन कारागृह लोगों को पीड़ित करने की एक बहुत ही परिशुद्ध जगह है।

मैंने उनसे कहा कि तुमने मुझे इस कल्पना से मुक्ति दिला दी कि यदि मैं नर्क में गिरा...कोई अड़चन नहीं, मैं निपट सकता हूं। अगर मैं अमेरिकन कारागृह बर्दाश्त कर सकता हूं तो कोई कारण नहीं है कि मैं क्यों नहीं निपट सकता एक पुरातन, तिथिबाह्य बैलगाड़ी के जमाने का नरक जहां कभी कोई सुधार नहीं हुआ है; अनाि द काल से वह वैसा का वैसा ही है। मैं वहां जाना पसंद करूंगा। और जब तक तुम्हारा स्वर्ग तुम्हारे नर्क से अछूता नहीं रह सकता तब तक वह तुम्हारे पास है ही नहीं।

जहां तक मेरा सवाल है, मैं बिलकुल आनंदित हूं। लेकिन उन लाखों लोगों के लि ए मैं कतई खुश नहीं हूं जो अकारण कैद में पड़े यातना भुगत रहे हैं—सिर्फ इस व जह से कि वे काले हैं। अब काले आदमी में और गोरे आदमी में जो फर्क है वह इतना कम है कि जानकर तुम्हें हैरानी होगी। वह फर्क, पुराने हिसाब से, सिर्फ चा र आने का है। अब चीजें मंहगी हो गई हैं तो वह फर्क एक रुपए का होगा। और ख्याल रखना, वह फर्क अब काले आदमी के पक्ष में है। काले आदमी में जो रंगों का पिगमेंट है वह गोरे आदमी से एक रुपया अधिक है। वह काले रंग का पिगमेंट सूरज से उसकी रक्षा करता है। गोरा आदमी असुरक्षित है। शायद परमात्मा भी गोरे आदमी से काले की रक्षा करने में अधिक उत्सुक है।

गोरे आदमी का शरीर ज्यादा कमजोर है। काले आदमी का शरीर ज्यादा ताकतवर है।

यह मेरे लिए आश्चर्य था कि जब मैंने अमेरिका में किसी जेल में प्रवेश किया, सीं खचों के पीछे काले लोग जिन्होंने मुझे टेलीविजन पर देखा था—क्योंकि वहां हर जे ल में टेलीविजन हैं—वे मुझे विजय की दो उंगलियां दिखाते थे। वे अपनी भाषा में कुछ कहते थे जो मैं नहीं समझता, पर यह भाषण मैं समझ सकता था, वे कह र हे थे आपकी विजय हमारी विजय है, और हम विजयी होने वाले हैं।

क्योंकि सारे पाप गोरे आदमी के सिर पर हैं। उसने पृथ्वी पर सारी मनुष्यता को तीन सौ साल सताया है, उसका खून चूसा है, वह परजीवी रहा है। उसे यह ठीक से समझ लेना चाहिए, अपना अपराध कबूल कर लेना चाहिए और विनम्र होकर इन लोगों की मदद करनी चाहिए जिन्हें उसने गरीब बनाया है। लेकिन ऐसा, ऐसा नहीं हो रहा है।

अमेरिका प्रतिवर्ष अरबों-खरबों रुपए का अनाज सागर में डुबो रहा है। यूरोप हर छह महीने बाद इतना अनाज सागर में डुबो रहा है कि गत वर्ष सिर्फ डुबोने के लिए उन्हें चार करोड़ डालर खर्च करने पड़े। यह अनाज की कीमत नहीं है, इसे डुबोने की कीमत है। और हजारों लोग नाइजीरिया में मर रहे थे, इथोपिया में मर रहे थे, और भारत में मर रहे हैं—और वे समुद्र में अनाज डुबो रहे हैं! क्यों? क्योंकि वे चाहते हैं कि उनकी कीमतें स्थिर रहें, उनकी अर्थव्यवस्था स्थिर रहे। उन्हें मनुष्य में कोई रुचि नहीं है। उन्हें फिक्र है सिर्फ उतनी अर्थव्यवस्था की। अन्यथा हमारे पास पृथ्वी के लिए काफी भोजन है। किसी को भूखे रहने की कोई जरूरत नहीं है, या भीख मांगने की।

लेकिन पश्चिम अपना अपराधी कृत्य करना जारी रखता है। और पूर्वीय राजनीतिक भी इस पर कोई आपत्ति नहीं उठाते। लगता है कि पूरब ने अपनी हिम्मत खो दी है। वह सीधी-साफ दिखाई देने वाली बात भी नहीं कर सकता, कि तुम अनाज पानी में क्यों डुबो रहे हो? उसे इथोपिया क्यों नहीं भेज देते, जहां एक हजार लोग रोज मर रहे हैं। नहीं इथोपिया की किसी को फिक्र नहीं है। न मरणासन्न बच्चों की किसी को फिक्र नहीं है। भूखे लोगों की किसी को फिक्र नहीं है। उन्हें सिर्फ फिक्र है अपने उच्च जीवनमान की कि वह कहीं कम न हो जाए।

अमेरिका के कारागृहों बंद इन काले लोगों को देखकर मेरी आंखों में आंसू आ गए। ये आंसू उनकी स्वतंत्रता के थे। हमने उन पर काफी अत्याचार कर लिया, अब हमें उसकी क्षतिपूर्ति करनी चाहिए।

किंतु जहां तक मेरा सवाल है, मैं अत्यंत आनंदित था। जैसे मैं यहां आनंदित हूं, वैसे ही मैं वहां भी आनंदित था। तुम्हारी चेतना की दशा में स्थान कोई फर्क नहीं नहीं लाता। न समय उसमें कोई परिवर्तन लाता है। न जन्म और न मृत्यु।

यह मेरा आखिर प्रश्न है। मेरे अन्य सवाल मैं छोड़ देता हूं। मान लीजिए लोग आपसे भारत में फिर से आश्रम शुरू करने का अनुरोध करते हैं,तो आप क्या मान योग लक्ष्मी को अपना सचिव नियुक्त करेंगे।

नहीं।

चारों ओर एक संत्रास की स्थिति है। कृष्णमूर्ति और उनके वही-वही पुनरावृत होने वाले प्रवचनों से, महर्षि महेश योगी के मंत्रों से लोग ऊब गए हैं। मुक्तानंद चल बसे। सत्य साईंबाबा तो मदारीगिरी करते रहते हैं। लेकिन अब भी आपकी ओर आशा से देखते हैं। इस सद्यास्थिति को सुलझाने के लिए आपके क्या सुझाव हैं?

मेरा सुझाव बिलकुल सीधा-सा है। एक : लोगों को उन मुर्दा विचारों से मुक्त होना होगा जो वे सदियों सदियों से ढोए चले आ रहे हैं—मूढ़ कल्पनाएं, अंधविश्वास। उदाहरण के लिए भारत गरीब से गरीब होता चला जा रहा है क्योंकि तुम अधिक से अधिक बच्चे पैदा कर रहे हो। तुम उत्पादन की एक ही कला जानते हो : बच चे पैदा करना।

लेकिन तुम्हारे सब धर्मगुरू सिखाते रहे हैं कि बच्चे परमात्मा की भेंट हैं। वह बकवास है। बच्चा केवल एक जैविक प्रक्रिया है। यह चुनाव तुम्हारे हाथ में है कि तुम्हारे देश की जनसंख्या कितनी हो। तुम्हारी देश कितनी आबादी को सुविधा से, शिक्षा देकर और गरिमा से रख सकता है? और अगर परमात्मा बच्चे को पैदा कर रहा है तो हम जानते हैं कि सब शास्त्र कहते हैं कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है, सर्वज्ञ है,सर्वव्यापी है। चिंता की कोई बात नहीं अगर ईश्वर बच्चा चाहता है तो वह ग ोली बाहर निकाल लेगा। जो सर्वशक्तिमान ईश्वर पूरे जगत को बना सकता है, व ह कंडोम में छेद कर सकता है। एक बच्चा भी यह बात कर सकता है। इसमें को ई सर्वशक्तिमान होने की जरूरत नहीं है।

तो हमें अपने अंधविश्वासों का त्याग करना है और हमें तथ्यपूर्ण जीना सीखना है— पहली बात।

दूसरी बात, गौतम बुद्ध और महावीर के बाद भारत, अधोगति की ओर अग्रसर हु आ है। गौतम बुद्ध और महावीर से पहले भारत दुनिया का सबसे समृद्ध देश था। अन्यथा इतने आक्रमणकारी सदियों तक इस देश में आते रहे, तुम सोचते हो कि वे यहां भिखारियों के लिए आ रहे थे? वे संपत्ति के लिए यहां आ रहे थे, इस दे श को गरीब बनाने के लिए उन्हें सदियां लग गईं। महावीर और बुद्ध दोनों तुम्हें ि सखाने के लिए जिम्मेदार हैं कि गरीबी कोई धार्मिक गुण है। ऐसा बिलकुल नहीं है । गरीबी एक रोग है। मनुष्य को सुविधा से जीने का पूरा हक है। गरीबी के इस ख्याल को हमें छोड़ देना चाहिए।

महात्मा गांधी ने फिर से इसका प्रचार किया। इसीलिए आजादी के चालीस वर्ष बि लकुल व्यर्थ गए। महात्मा गांधी फिर इस बात की चर्चा करने लगे कि चरखे पर ि वकास खत्म होना चाहिए। कोई नहीं जानता कब चरखे का अविष्कार हुआ था। शायद तीस हजार साल पहले, या पचास हजार साल पहले। चरखे के साथ तुम स मृद्ध और सब सुविधाओं से युक्त नहीं हो सकते। चरखा तुम्हारा दुश्मन है। जिस तरह एक दिन महात्मा गांधी ने सारे देश को विदेशी वस्त्र जलाने के लिए कहा थ ा, उसी तरह मैं तुमसे कहता हूं—सब चरखे जला दो। हमें नई टेक्नालाजी की जरू रत है।

इस देश को एक टेक्नालाजिकल, तंत्रज्ञान की विकास की सख्त जरूर)रत है। जो ि क बहुत सरल है। यह सिर्फ उचित शिक्षा का सवाल है। लेकिन ब्रिटिश राज ने ऐ सी शिक्षा प्रणाली के बीज बोए हैं जो सिर्फ क्लर्क पैदा करना जानती है। वह वैज्ञा िनक, तकनिशियन या प्रतिभाशाली लोग पैदा नहीं करती। हमें सारी शिक्षा प्राणाली

बदलनी है। अब बच्चों को नादिर शाह, तैमूल लंग, चंगेज खान के बारे में पढ़ाना निहायत बेवकूफी है। उन्हें आइंसटीन के बारे में पढ़ाओ। सापेक्षता के सिद्धांत के बारे में पढ़ाओ। उन्हें नवीनतम यंत्र ज्ञान और हस्तकलाओं की शिक्षा दो। और यह देश फिर से अपना खोया हुआ सम्मान और आत्मगौरव पा लेगा। कोई कारण नह ीं है। हमारे पास क्षमता है। हम उसका उपयोग नहीं कर रहे हैं।
हमें हिंदू, मुसलमान, ईसाई, जैन होकर जीना बंद करना चाहिए। क्योंकि ये ही वे दीवालें हैं जो समग्र अस्तित्व को विभक्त कर रही हैं। फिर भी हम सब जगह ल. डे जा रहे हैं। हमारी पूरी ऊर्जा दंगों में और फसादों में व्यय हो रही है। और व्य र्थ की बातों के लिए—कि पंजाब स्वतंत्र होना चाहिए; कि तमिलनाडु स्वतंत्र होना चाहिए : कि आसाम स्वतंत्र होना चाहिए। तुमने चालीस साल की स्वतंत्रता में क्या पाया? तुम तो अपनी गुलामी के दिनों से भी बुरी हालत में हो। लेकिन हम एक दूसरे की जान लेने को तैयार बैठे हैं। हमारा पूरा प्रयास ही असृजनात्मक है।
सारी दीवालें गिरा दो। कोई गुरुद्वारे में प्रार्थना करना चाहे तो बिलकुल ठीक है। कोई हर्ज नहीं है। उससे किसी का कोई नुकसान नहीं। कोई मसजिद में प्रार्थना क रना चाहेगा, एकदम ठीक है। उसका सम्मान करो। कोई किसी खास मंदिर में जा ना चाहता है तो वह उसकी मौज है। लेकिन इसके लिए एक-दूसरे की गर्दन काट ने की कोई जरूरत नहीं है—और वह भी धर्म के नाम पर, भाषा के नाम पर।
हमें एक बात को आग्रहपूर्वक कहना चाहिए कि यह देश एक मनुष्यता है। और ह म हमारी सब दीवालें गिरा देते हैं। और हम हमारी सारी ऊर्जाएं एक साथ लगाते हैं इसे अधिक से अधिक संपन्न बनाने में। लेकिन तुम अब भी शंकराचार्यों, जैन मुनियों को सुन रहे हो जो कहते हैं—त्याग करो, अपनी पत्नी छोड़ो, बच्चे छोड़ो, घर-द्वार छोड़ो।
तुमने कभी इस तरह से सोचा है कि जिन लोगों ने संसार का त्याग किया है उन्ह ोंने इस संसार को बदतर बनाया है? क्योंकि तुम्हारी पत्नी वेश्या हो जाएगी। तुम ने उसे शिक्षित नहीं किया, तुमने उसे आर्थिक रूप से स्वतंत्र नहीं बनाया है। या त ो वह भीख मांगेगी या वेश्या बनेगी। और तुम एक बोझ बन जाओगे। यह देश गर ीब है और उस पर लाखों लोग बोझ बने बैठे हैं। हमें अपने तथाकथित पुराने ढब के संन्यासियों से कहना चाहिए :संसार में लौट आओ। धन निर्मित करने में, नए अवसर निर्मित करने में योगदान दो। हम असृजनात्मक लोगों को पूजते आए हैं। जरा सोचो, इस देश में हमने लाखों की पूजा की है, उनके पैर छुए हैं—अकारण ह ी, उन्होंने कुछ किया ही नहीं है।
मैं एक गांव से गुजर रहा था। एक जगह मैंने भीड़ देखी तो मैंने गाड़ी रुकवायी अ ौर पूछा कि मामला क्या है? एक आदमी दस साल से खड़ा था। उसके पैर हाथी के पैर जैसे हो गए थे। उसके ऊपरी हिस्से में कोई खून नहीं बचा था। वही खून पै रों में पहुंच गया था। वह दस साल तक एक लकड़ी के सहारे खड़ा था। उस आद मी के चेहरे पर प्रतिभा का कोई चिन्ह नहीं था। और उसके हजारों अनुयायी थे।

मैंने उनसे पूछा, तुम इसके शिष्य किसलिए बने हो? वह अपने पैरों पर खड़ा है, ि सर्फ इसलिए? कुछ सृजनात्मक हैं? क्या इससे देश का कोई लाभ होगा?
कोई कांटों की शैया पर लेटा है और लोग उसकी पूजा कर रहे हैं।
सृजनात्मक की पूजा करो। उनकी पूजा करो जो इस दुनिया को और अधिक सुंदर कर रहे हैं। उनकी पूजा करो जो इसे और अधिक संगीत से भर रहे हैं--अधिक गीत से, अधिक नृत्य से।
मैं संन्यास की परिभाषा त्याग से आनंद में बदल देना चाहता हूं। हम तो हंसना भ ी भूल गए हैं। क्योंकि कोई संत हंसता नहीं। तुमने कभी बुद्ध या महावीर की कि सी प्रतिमा को की हंसते हुए देखा है? नहीं, संतों को हंसना मना है। सारा देश उ दास हो गया है।
मैं जीवन सिखाता हूं। मैं प्रेम सिखाता हूं। मैं हंसना सिखाता हूं। और मैं सृजनात्म कता सिखाता हूं। मैं किसी भी प्रकार के त्याग के खिलाफ हूं--मूढ़ताएं और अंधवि श्वास के त्याग छोड़कर। मैं एक मनुष्यता की शिक्षा देता हूं। हम सब मिलकर इस देश को फिर से उसकी आत्मा वापिस दे सकते हैं। हमें यह करना ही होगा। नहीं तो इस सदी के अंत तक तुम लोगों में से पचास प्रतिशत लोग तुम्हारे चारों तर फ भूखे मर रहे होंगे। और तुम एक कब्रिस्तान में होओगे, किसी देश में नहीं। औ र जरा सोचो, तुम्हारे आसपास पचास प्रतिशत लोग मर रहे हों तो तुम्हारा जीवन कैसा होगा?
समाधान तो बिलकुल सरल है। सिर्फ तुम्हारे मस्तिष्क पुराने हैं, वे समसामयिक न हीं हैं। तो मैं अपने उत्तर के अंत में कहता हूं :मैं चाहता हूं कि तुम समसामयिक बनो।

एक नया ध्रुवतारा

मैं अभी-अभी आपके प्रश्नों को देख रहा था। यह जानकर दुखा होता है कि भारत की प्रतिभा ऐसी कीचड़ में गिरी है कि प्रश्न भी नहीं पूछ सकती। और जो प्रश्न पूछती भी है, वे सड़े-गले हैं, उनसे दुर्गंध उठती है। यदि तुम चाहते हो तो मैं जव ाब दूंगा, लेकिन छाती पर हाथ रख लो, चोट पड़े तो परेशान मत होना। और जो मैं कहूं उसमें से एक भी शब्द काटा न जाए और जो मैं कहूं उसमें एक भी शब्द जोड़ा न जाए। ताकि तुम्हारी तस्वीर न केवल भारत के सामने बल्कि दुनिया के सामने स्पष्ट हो सके। प्रश्न भी पूछना मुश्किल है तो उत्तर तो तुम क्या समझ पा ओगे। लेकिन मैं कोशिश करूंगा। शुरू करो।

दुनिया का सबसे अच्छा राष्ट्र कौन-सा है? और सबसे खराब राष्ट्र आप किसे मान ते हैं?

भारत दोनों है, क्योंकि यहां मैं भी हूं और तुम भी हो। और भारत ने इस संसार में चेतना की ऊंचाइयां छुई हैं और अब मैं तुम्हें नालियों में पड़ा हुआ भी देख रहा हूं। और नालियों के तुम इतने आदी हो गए हो, तुमने उन्हें मंदिर बना लिया है। तुम उनसे निकलना भी नहीं चाहते!

फ्रांस में क्रांति हुई। वहां एक केंद्रीय जेल था बेस्तिले, जहां केवल आजीवन सजा प ाए हुए लोगों को रखा जाता था। उनकी हथकड़ियां, उनकी बेड़ियां उनके मरने में पर ही तोड़ी जाती थीं। एक बार उनके ताले बंद हो जाने पर चाबियां कुओं में फेंक दी जाती थीं। अंधेरी कोठरियों में भारी जंजीरों में बेस्तिले के हजारों कैदी रह रहे हैं। जब क्रांति हुई तो स्वभावतः क्रांतिकारियों के मन में उठा कि इन कैदियों को मुक्ति देना सबसे पहला काम है। उन्होंने सबसे ज्यादा दुख सहा है।

उन्होंने बेस्तिले के द्वार तोड़ें। लेकिन बेस्तिले के कैदी कारागृह से बाहर जाने को र ाजी नहीं थे। क्योंकि कोई साठ वर्ष से वहां था, कोई पचास वर्ष से वहां था। न क ोई जिम्मेदारी; समय पर भोजन—कूड़ा-कचरा ही सही। और वे बेड़ियां अब तक उ नके शरीर का अंग बन चुकी थीं।

लेकिन क्रांतिकारी जिद्दी होते हैं। उन्होंने जबरदस्ती बेड़ियां और जंजीरें तोड़ दीं औ र बेस्तिले के लोगों को मुक्त कर दिया। रोते हुए बेस्तिले के कैदी बाहर निकले, यह कहते हुए कि हम जाएंगे कहां? अब तो हम भूल गए वे नाम और पते भी। अब तो हम भूल गए वे लोग जो हमें जानते थे। शायद वे अब इस दुनिया में भी न हों। हमारी पत्नियां, हमारे बच्चे—उनको क्या हुआ, कहां गए कोई पता नहीं। सोने के छप्पर नहीं है, खाने को भोजन नहीं है, बिछाने को बिस्तर नहीं है। जबरद स्ती क्रांति!

दुनिया में एक चीज मुश्किल है। जबरदस्ती क्रांति मुश्किल है।

क्रांति तो फूल है, जो तुम्हारे भीतर खिले तो खिले, कोई उसे जबरदस्ती नहीं खि ला सकता।

सांझ होते-होते करीब-करीब आधे से ज्यादा कैदी वापस आ गए। उन्होंने कहा, हम दिन भर भूखे रहे, न कोई नौकरी देने को राजी है, न अब हमारी क्षमता रही है कि हम कोई काम कर सकें। न हमें कोई सम्मान मनुष्य होने का उपलब्ध हो स कता है। और सबसे बड़ी मुसीबत यह है कि वे जंजीरें जो हमारे हाथों पर सदा के लिए डाल दी गई थीं, बेड़ियां जो हमारे पैरों में सदा के लिए डाल दी गई थीं—तीस साल, चालीस साल, पचास साल—हम उनके बिना सो नहीं सकते। उनका व जन हमारी नींद का हिस्सा बन गया है। क्षमा करो, हमें हमारी अंधेरी कोठरियों में जाने दो। बाहर की रोशनी हमें भाती नहीं है।

तुम पूछते हो कौन-सा देश सबसे अच्छा है। और कौन-सा देश सबसे बुरा है। देश तो होते ही नहीं। देश तो झूठ हैं। राष्ट्र तो मनुष्य की ईजाद हैं। असलियत है व्यि क्त की। इस देश ने गौतम बुद्ध, उपनिषद के ऋषि, महावीर, आदिनाथ—आकाश

की ऊंची से ऊंची ऊंचाई छुई है। वह भी एक भारत है। वही पूरा भारत होना चा हिए।
और एक भारत और भी है। राजनीतिज्ञों का, चोरों का, कालाबाजारियों का। भार त के भीतर भारत है।
इसलिए यह सवाल नहीं है कि कौन देश श्रेष्ठ है और कौन देश अश्रेष्ठ है? सवाल यह है कि किस देश में अधिकतम श्रेष्ठ लोगों का निवास है और किस दिश में अधिकतम निकृष्ट लोगों का निवास है। भारत में दोनों मौजूद हैं।
तो एक हाथ से मैं भारत के झंडे को ऊंचा भी करना चाहता हूं और एक हाथ से भारत में झंडे को गिरा भी देना चाहता हूं। मैं भारत को कोई एक इकाई नहीं मानता। इसलिए मेरे लिए प्रश्न निरर्थक है। यह तुम पर है।
मैं सारी दुनिया में चक्कर लगा आया हूं। सभी जगह अच्छे लोग हैं और सभी जग ह बुरे लोग हैं। लेकिन बुरे लोग ताकत में है हर जगह। और अच्छे लोग शक्तिही न हैं हर जगह। अच्छाई की एक मजबूरी है। अच्छाई आक्रामक नहीं होती। हिंसात मक नहीं होती। बुराई आक्रामक होती है। हिंसक होती है। स्वभावतः बुराई छाती पर चढ़ जाती है। और अच्छाई को कोई मौका भी नहीं मिलता।
दूसरी खूबी : अच्छाई को कोई आकांक्षा भी नहीं होती कि उसे स्वीकार मिले। अच छाई अपने आप में ऐसा सुखद अनुभव है कि अब और कुछ और नहीं चाहिए, न जोड़ा जा सकता है। बुराई महत्वाकांक्षी है। तो अगर बुरे लोगों को देखना हो तो राजनीति। और अगर अच्छे लोगों को देखना हो तो शांत, मौन, ध्यान में संलग्न लोग। दुनिया दो हिस्सों में बंटी है, दो देशों में नहीं। बुरे लोग छाती पर सवार हैं और अच्छे लोग, इतने अच्छे लोग हैं कि उनसे यह भी नहीं कहते कि अब उतरो भी। उनके छाती पर सवार होने से भी फर्क नहीं पड़ता। क्योंकि उनकी आनंद की , उनके प्रेम की, उनके अमृत की वर्षा उनके भीतर हो रही है।
प्रश्न तुम्हारा गलत है। और गलत प्रश्न का सही उत्तर नहीं हो सकता।

आपने अभी कहा कि दुनिया दो हिस्सों में बंटी है : अच्छाई और बुराई। आप हिंदुस् तान से अच्छाई की तलाश में बाहर गए थे। आपको पिछली यात्रा के दौरान कित नी अच्छाई और कितनी बुराई मिली देखने को?

यह किस बेवकूफ ने तुमसे कहा कि मैं अच्छाई की तलाश में बाहर गया था या ि क यह तुम्हारी खुद की ईजाद है?

यदि अच्छाई और बुराई दोनों हिंदुस्तान में थीं...

पहले मेरे प्रश्न का उत्तर...। यह कोई साधारण राजनीति की पत्रकार परिषद नहीं है। यहां से तुम अच्छी तरह पिट कर बाहर निकलोगे। तुमसे किसने कहा कि मैं अच्छाई की तलाश में बाहर गया था?
मैं अच्छाई के प्रचार के लिए बाहर गया था। और मैंने अच्छे लोग पाए। और मैंने बुरे लोग भी पाए। और मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम कहां रहते हो, इससे फर्क पड़ता कि तुम कौन हो। जमीन से कोई अच्छा और बुरा नहीं होता, जमीर से कोई अच्छा और बुरा होता है।

आपने पिछले 32 वर्षों में जो अनुभव किया है हिंदुस्तान में और बाहर रहकर, उसके बाद भारत, अमरीका, धर्म, सेक्स, भारत की समस्याएं और उनके समाधान के बारे में आपके जो अब तक विचार रहे हैं, इनमें कोई खास बदलाव आया है क्या?
बहुत बदलाव आया है। क्योंकि मैं कोई सड़ता हुआ बंद तालाब नहीं हूं। मैं एक बहती हुई गंगा हूं। हर क्षण मैं आगे बढ़ रहा हूं। यूनान के प्रसिद्ध विचारक हैराक्लाइटस ने कहा है: एक ही नदी में तुम दुबारा नहीं उतर सकते। कभी न कभी, किसी न किसी नक्षत्र पर अनंत काल में हैराक्लाइटस से मेरी मुलाकात होगी ही। तो मैं भी उसको कहना चाहता हूं कि तुम एक ही नदी में एक बार भी नहीं उतर सकते। क्योंकि नदी बही जा रही है। जब तुम नदी का ऊपर का तल छू रहे हो, तब नीचे का तल बह रहा है। और जब तक तुम नीचे के तल पर पहुंचते हो, ऊपर का तल जा चुका है।
बीज तो वही है—वृक्ष बना है, पत्तों से भरा है, फूल खिले हैं। मैंने अपने जीवन में किसी चीज के विरोध में विकास नहीं किया है। जो मैंने कहा है, उसे और परिष्कृत किया है। इसलिए निश्चित ही मैं वही नहीं कहूंगा जो मैंने तीस साल पहले कहा था। तीस साल पहले मैं बीजों की बात कर रहा था, अब मैं फूलों की वर्षा कर रहा हूं।

जिस अभियान को लेकर मनुष्य की आत्मा मुक्त नहीं हुई और वह धर्म और परंपरा से उपजी वर्जनाओं के कारण भयाक्रांत-सी हो गई है। इस संदर्भ में मानव मुक्ति के आपके कार्यक्रम में क्या योजना बनाई है?

मानव मुक्ति मनुष्य के स्वास्थ्य जैसी है। बीमारियां अलग-अलग हो सकती है। कोई क्षयरोग से बीमार है, कोई सर्दी-जुकाम से, कोई बुखार से, कोई कैंसर से। बीमारियां हजारों हो सकती हैं, लेकिन स्वास्थ्य एक ही होता है। स्वास्थ्य बहुत प्रकार के नहीं होते। मानव मुक्ति मनुष्य का अंतिम स्वास्थ्य है। उसकी अंतिम खिलावट। उसके जीवन से सुवास का उठना।

हजारों वर्षों की निरंतर खोज से आदमी ने वह विज्ञान भी खोज लिया है। उस वि ज्ञान को मैं ध्यान कहता हूं। ध्यान के अतिरिक्त कोई मनुष्य कभी मुक्ति का अनुभ व नहीं करता। न तो प्रार्थना तुम्हें मुक्ति की तरफ ले जा सकती है, क्योंकि प्रार्थन ा में तुमने प्रारंभ से एक झूठ स्वीकार कर लिया, विश्वास कर लिया--ईश्वर है। ज ानते नहीं हो, पहचानते नहीं हो, मिल जाए तो भी पहचान न सकोगे। और प्रार्थन ा बहिर्गामी है इसलिए सांसारिक है। एक और यात्रा है--ध्यान की, अंतर्गामी--कि तुम अपनी खोज में निकलते हो। तुम स्वयं की पहचान को अपना अभियान बनाते हो और जिस दिन कोई व्यक्ति स्वयं को पहचान लेता है, उसकी दिन उसके जी वन में कल्याण की वर्षा हो जाती है। और वह वर्षा एक जैसी है। वह वर्षा न तो देखती है कि यह छत मुसलमान की है, कि हिंदू की है, कि जैन की है। वर्षा के बादल को क्या लेना। तुम्हारी तैयारी चाहिए।

और ध्यान का सूत्र छोटा-सा है। सभी सूत्र छोटे होते हैं। ध्यान को छोटा-सा सूत्र है: अपने भीतर इतनी शांति, कि विचार की कोई तरंग भी न उठे। कोई लहर न हो ऐसा सन्नाटा; ऐसा शून्य, जहां बस तुम हो और कुछ भी नहीं है। जहां यह भ ाव भी नहीं है कि मैं हूं। उसी क्षण यह सारा विश्व तुम्हारे ऊपर ईश्वर बन कर बरस पड़ता है।

ईश्वर को खोजना नहीं पड़ता। जो लोग ईश्वर को खोजने निकलते हैं, वे भ्रांति में हैं। तुम क्या ईश्वर को खोजोगे? कोई पहचान नहीं, कोई नाम नहीं, कोई रूप न हीं, कोई रंग नहीं। ईश्वर तुम्हें खोजता है। पुरानी मिस्र की कहावत है कि जब भ ी शिष्य राजी होता है, गुरु प्रकट होता है। इसे थोड़ा बदल कर यूं कहें की जब भ ी तुम शांत, शून्य और मौन होते हो, तुम्हारी अंतरात्मा ईश्वर के आनंद और सौं दर्य से भर जाती है। तुम अमृत हो जाते हो। इसके सिवाय कोई उपाय न कभी थ ा, न कभी होगा।

आपने कहा है कि आप जीवन भर झूठ नहीं बोले, किंतु शिष्यों की खातिर आपको झूठ भी बोलना पड़ा और अपने को रिहा करवाना पड़ा। भगवानों, संतों को अग्नि परीक्षाओं के दौर से गुजरना पड़ता है। क्या वैसा ही आपको नहीं करना था?

मैंने जीवन में तीन बार झूठ बोला है। किसने तुमसे कहा कि मैंने कभी झूठ नहीं बोला?

आपने जो धर्मयुग को एक इंटरव्यू दिया है, उसमें कहा है।

धर्मयुग की कोई भूल होगी। मैंने तीन बार झूठ बोला है।

कब?

क्योंकि मेरे लिए प्रेम और करुणा ज्यादा मूल्यवान है। एक बार मैं झूठ बोला मा आनंद शीला को बचाने के लिए। उसे मैंने लाख समझाया कि मेरा कभी कोई अडा प्शन नहीं हुआ है। मैं किसी की गोद नहीं लिया गया हूं। उसने झूठे कागजात तैया र किए, ताकि अमरीका में मुझे रहने के लिए आधार बनाया जा सके। उसके पित ा ने झूठे दस्तावेज तैयार किए। मेरे सामने सवाल था एक बुजुर्ग, शीला और हजा रों संन्यासियों के कम्यून का। झूठ सिर्फ इतना मैं बोला कि मुझे कोई पता नहीं है बचपन में अगर मुझे गोद ले लिया गया हो, लेकिन मुझे कभी कहा नहीं गया।

दूसरी बार मैं झूठ बोला अमरीका की जेल में, 12 दिनों तक हर तरह से परेशान किए जाने के बाद। अमरीकी सरकार ने मेरे वकीलों को कहा कि दो ही उपाय हैं। एक तो उपाय है कि ये मुकदमा वर्षों तक चले। हम जानते हैं कि हम मुकदम ा हार जाएंगे। क्योंकि मैंने कोई पाप नहीं किया है। लेकिन मुकदमा 10 साल चले, 15 साल चले, 20 साल चले। इस बीच हम कम्यून को नष्ट कर देंगे। मेरे बिना कम्यून के प्राण निकल जाएंगे। और सारी दुनिया में संन्यासियों का ध्यान का आंदो लन नष्ट हो जाएगा। अगर मैंने दो—और उन्होंने लिस्ट बनाई हुई थी 136 जुर्म मे रे खिलाफ—सब झूठ—अब अगर मैं दो जुर्म स्वीकार कर लूं तो आंदोलन बच सकत ा है, कम्यून बच सकता है, सारे विश्व में फैले हुए संन्यासी बच सकते है।

यह ब्लैकमेल था। मेरे अटर्नियों की आंखों में आंसू थे। उन्होंने कहा कि हम जानते हैं कि यह सब झूठ है। लेकिन दो छोटे से अपराध स्वीकार कर लेने से यह सारा का सारा उपद्रव शांत हो सकता है। तो मैंने दो अपराध...सिर्फ दो शब्द मैं अमरी का की अदालत में बोला हूं, दोनों झूठ। और जज से कहकर यह बोला हूं कि यह मैं सत्य की शपथ खाकर बोल रहा हूं कि मैंने अमरीका में प्रवेश पाने लिए झूठे दस्तावेज पेश किए और मेरे संन्यासी अमरीका में रह सकें, इसलिए उनकी झूठी शादियां कीं।

न तो मैंने किसी की शादी की, न मैंने कोई झूठे दस्तावेज पेश किए।

इन तीनों मौकों को छोड़कर मैंने कोई झूठ नहीं बोला। और इन तीनों झूठों के लि ए मैं शर्मिंदा नहीं हूं, गौरवान्वित हूं। क्योंकि ये झूठ किसी बड़े आदर्श के लिए बो ले गए थे। और ये झूठ मेरे किसी स्वार्थ के लिए नहीं थे। लेकिन इन तीन झूठों के सिवाय मेरा जीवन सिवाय सत्य के, चाहे वह कितना ही महंगा पड़ा हो, चाहे मैं ने अपनी जान खतरे में डाली हो, मैं तैयार रहा हूं।

मेरे जीवन पर बहुत हमले किए गए हैं—हिंदुस्तान में, अमरीका में। और अब अमर ीका चाहता है—आधा करोड़ रुपया देने को तैयार है, कोई आदमी, अगर मुझे मार डाले। मैंने खबर भेजी है रोनाल्ड रीगन को, क्यों बेचारे दूसरे आदमी को फंसाते हो, क्योंकि वह मुझे मारेगा तो अदालत में फंसेगा। आधा करोड़ रुपया मेरे काम के लिए दे दो, ध्यान के लिए दे दो, मैं मरने के लिए तैयार हूं। सीधा सौदा है।

मेरी दृष्टि में झूठ और सत्य में निर्णायक बात झूठ और सत्य नहीं होते। निर्णायक बात होती है—कारण। मैंने तीनों बार झूठ दूसरों के लिए बोला है। अपने लिए न हीं। अपने लिए तो मैं मरने को भी तैयार हूं। झूठ बोलने का कोई सवाल नहीं है।

आपने कहा कि तीनों बार झूठ आपने दूसरों के लिए बोला है। और जिस आंदोलन को लेकर आप पिछले 32 सालों से चल रहे हैं, जिस पूरे समुदाय को लेकर आप चले रहे हैं, जो विचार और दर्शन आप लेकर चल रहे हैं, उस पूरे समुदाय में क या कोई ऐसी शख्सियत अब तक नहीं बन पाई है कि आपको यह सोचना पड़ रहा है कि आपके बाद मेरे कम्यून का क्या होगा, पूरे विचार दर्शन का क्या होगा। क या आप अब भी इस दिशा में कुछ सोचेंगे कि आपके बाद पूरे विचार और दर्शन को देश और विदेश में फैलाने के लिए कोई ऐसी शख्सियत तैयार की जाए या ब नाई जाए?

मैं आदमी नहीं बनाता, क्योंकि बनाए हुए आदमी काम के नहीं होते। सिखाए हुए आदमी जीवन के मंदिर में प्रवेश नहीं पा सकते। अनेक मित्र हैं, जो तैयार हो रहे हैं, मगर मैं उन्हें बना नहीं रहा हूं। मैं सिर्फ वातावरण बना रहा हूं। माली गुलाब के फूल बनाता नहीं है। सिर्फ जमीन तैयार करता है, बीज बोता है, खाद देता है—फूल तो अपने से आते हैं। मुझे कोई व्यक्ति के ऊपर अपने को थोपने का आग्रह नहीं है। उसे मैं आध्यात्मिक गुलामी कहता हूं। मैं जो कर सकता हूं जमीन तैयार करने का काम, वह मैं कर रहा हूं। उसमें जिनके भीतर भी थोड़ी आत्मा है, उन के फूल खिलेंगे—इस जन्म में, अगले जन्म में, किसी और जन्म में।

लेकिन इस जमीन को बनाने के लिए अगर मुझे तीन बार झूठ बोलना पड़ा है तो मैं शर्मिंदा नहीं हूं। शर्मिंदा होना चाहिए अमरीका की सरकार को। यह न्याय नहीं है। मैं अदालत में मुकदमा लड़ने को राजी था। यह पहला मौका है कि एक अकेल ा आदमी विश्व की सबसे बड़ी ताकत के खिलाफ खड़ा था। मेरे मुकदमे को उन्हों ने नाम दिया था, मैंने नहीं—यूनाइटेड स्टेटस आफ अमरीका वर्सस भगवान श्री रज नीश। मैं तो वैसे ही जीत गया। और फिर भी उन्हें झूठ बोलना पड़ा और इस तर कीब से झूठ को पेश करना पड़ा कि मेरे वकीलों को कहना पड़ा—पैर छूकर, टपक ते हुए आंसुओं से कि हमने अपने जीवन में इस तरह नहीं देखा। वे जो दो विकल्प दे रहे हैं, वे दोनों शरारत से भरे हुए हैं। मुकदमे को लंबाया जा सकता है, तुम्ह ारे काम को रोका जा सकता है।

मैं अगर झूठ बोलकर नरक में भी पड़ जाऊं तो मुझे कोई एतराज नहीं है। लेकिन मैं चाहूंगा कि जो जमीन मैं तैयार कर रहा हूं, वह तैयार हो जाए, कुछ फूल खि ल उठें, कुछ झरने जाग जाएं, कुछ तारे उग आएं।

यह पहला मौका था कि अमरीकी सरकार ने नेगोसिएशन के लिए मेरे वकीलों को निमंत्रित किया। अन्यथा वकील सरकार से प्रार्थना करते हैं कि कोई समझौता क

र लिए जाए। अमरीकी सरकार समझौता करने को राजी थी और समझौता करने को क्यों राजी थी—कल मैंने कहा।

दो दिन पहले अमरीका के अटार्नी जनरल के मुंह से सच निकल गया। पत्रकारों की एक काफ्रेंस में उनसे पूछा गया कि भगवान को सजा क्यों नहीं दी गई। तो उसने तीन कारण बताए। एक, कि हम भगवान के आंदोलन को नष्ट करना चाहते हैं। उनके कम्यून को नष्ट करना चाहते हैं। वह हमारी प्राथमिक दृष्टि है। दूसरा, हमारे पास भगवान के खिलाफ कोई भी सबूत नहीं है कि उन्होंने कोई जुर्म किया हो।

यह बड़ी मजेदार दुनिया है। मैंने कोई जुर्म नहीं किया, लेकिन साठ लाख रुपया जुर्माना मेरे ऊपर किया गया है, सारी दुनिया को यह दिखाने के लिए कि जुर्म जरूर किया गया होगा, नहीं तो साठ लाख रुपया क्यों जुर्माना किया जाए। और तीसरी बात और भी महत्वपूर्ण है। अमरीका के अटार्नी जनरल ने, जो कि वहां की सबसे बड़ी सरकारी कानूनी व्यवस्था का प्रमुख है, उसने कहा कि हम भगवान को एक मसीहा, एक शहीद नहीं बनाना चाहते थे। क्योंकि यह भूल पहले हो चुकी है। सुकरात को जहर देकर मारा नहीं जा सका। ढाई हजार साल बीत गए, सुकरात ज्यादा जिंदा है, मारने वालों का कोई पता भी नहीं, नाम का भी पता नहीं। जीसस को सूली दी, तब तक जीसस के पास केवल 10-12 शिष्य थे। सूली के बाद संख्या बढ़ती गई। अलहिल्लाज मंसूर को बोटी-बोटी काट डाला गया, लेकिन इससे कोई आत्माएं नहीं कटतीं। और भी सूफी हुए हैं उसी कोटि के, लेकिन अलहिल्लाज मंसूर ध्रुव तारे की तरह चमकता है।

हम नहीं चाहते थे कि भगवान को एक शहीद, एक ध्रुव तारा बना दें। और हमारा काम पूरा हो गया है। लेकिन फिर भी उन्होंने आखिरी कोशिश की, क्योंकि जैसे ही मैं जेल से बाहर निकला, अदालत ने मुझे छोड़ दिया, क्योंकि कोई मेरे खिलाफ कानून नहीं था और मेरे ऊपर कोई जुर्म न था, लेकिन मुझे जेल तक जाना जरूरी था। अपना सामान, अपने कपड़े—मैं चकित हुआ वहां देखकर कि जेल में सन्नाटा है। जो आधारभूत आफिस की जगह है, वहां कोई भी नहीं है। मैंने पूछा भी कि मैं कई बार यहां से आया गया; यहां तो बड़ी धूम, बड़े आफिसर्स, जेलर, आज सब क्या हुआ, क्या मेरी खुशी में छुट्टी मनाई जा रही है? जो आदमी मुझे ले जा रहा था, एयरकंडीशंड जेल में, उसके माथे से पीसना बह रहा था। मैंने पूछा कि पसीना पोंछ डालो, क्योंकि पसीना भी बहुत कुछ कहता है। उसने मुझे उस जगह पहुंचाया आफिस में, जहां मुझे मेरा सामान वापस देना है। वहां भी एक ही आदमी था, इसके पहले वहां 12 आदमी से कम कभी भी नहीं थे। और उस आदमी ने कहा कि मुझे अपने ऊपर के अधिकारी से दस्तखत लेने होंगे, इसलिए मैं जरा बाहर जाता हूं, आप आराम से बैठें।

पांच मिनट, दस मिनट, पंद्रह मिनट बीते, उस आदमी का कोई पता नहीं और वह बाहर से ताला लगा गया! मैं कोठरी में अकेला हूं। जेल से बाहर आने पर पता

चला कि जिस कुर्सी पर मुझे बिठाया गया था, उस के नीचे टाइम बम था। लेकिन वह टाइम बम ठीक से व्यवस्थित न कर सके, क्योंकि पता नहीं अदालत में कितनी देर हो। और जज के सामने साफ था कि मामले में कुछ भी नहीं है, इसलिए पांच मिनट में मुकदमा समाप्त हो गया। उन्होंने सोचा होगा पांच बजे मैं आऊंगा। मैं बहुत जल्दी पहुंच गया। उस जेल के अंदरूनी कमरे में सिवाय सरकार के और कोई आदमी टाइम बम नहीं रख सकता था, पहुंच नहीं सकता था।

क्या घबराहट थी? मुझे मार डालने की क्या घबराहट थी?

और यही मेरे अटर्नीज का कहना था कि अगर मैं ये दो छोटे से जुर्म स्वीकार नहीं कर लेता हूं तो हम आशा नहीं करते कि जेल से तुम वापस आ सकोगे। मुकदमा लंबाया जाएगा। जेल में बहाने खोजे जाएंगे। और जेल में बहाने खोजे गए।

मुझे एक जेल में रखा गया एक आदमी के साथ, जो मर रहा था और जिसको ऐसी छूत की बीमारी है कि उसका कोई इलाज नहीं। और उसकी कोठरी में छह महीने से किसी को भी नहीं रखा गया था। उस आदमी ने एक कागज पर लिख कर मुझे दिया कि इससे पहले कि आप कोई चीज छुएं, डाक्टर और जेलर को बुलाएं और पूछें कि मुझे क्यों यहां रखा गया है। मैं मर रहा हूं और यह एक अपरोक्ष तरकीब है आपको मार डालने की--शहीद भी न बनो, मसीहा भी न बनो और बीमारी से मर जाओ। जरा सोचो जीसस अगर खाट पर मरते, जैसा कि निन्यानबे आदमी चुनते हैं मरने के लिए, दुनिया में कोई क्रिश्चिएनिटी न होती।

एक घंटा लगा मुझे दरवाजे को पीटने में, तब डाक्टर आया और मैंने डाक्टर से पूछा कि छह महीने से जब कोई आदमी इस सेल में नहीं रखा गया और तुम विरोध करते रहे हो, तो आज तुम मौजूद थे, तुम्हारे सामने मुझे इस जेल में रखा गया है, इस सेल में रखा गया है और तुमने कोई विरोध नहीं किया? तुम डाक्टर हो या हत्यारे हो?

दूसरी जेल में मुझसे कहा गया कि मैं अपना नाम न लिखूं, जब फार्म भरता हूं प्रवेश का तो अपने नाम की जगह लिखूं डेविड वाशिंगटन। मैंने कहा, सेविड वाशिंगटन मेरा नाम नहीं है। मैं रात भर यहां आफिस में बैठा रह सकता हूं, लेकिन डेविड वाशिंगटन मेरा नाम नहीं है और मैं नहीं लिखूंगा और मेरे साथ तुम्हें भी बैठना पड़ेगा। बारह बजे रात, यू. एस. मार्शल खुद, कोट पर लिखा है: डिपार्टमेंट आफ जस्टिस। मैंने कहा कि कम से कम इस कोट को तो निकाल दो। और तुम फार्म भर सकते हो, दस्तखत मैं कर दूंगा। उसने समझा कि चलो यह भी समझौता ठीक है। उसने फार्म भर दिया अपने हैंडराइटिंग में और मैंने दस्तखत किए हिंदी में।

उसने कागज को सब तरफ से घुमा कर देखा और कहा कि यह क्या है? मैंने कहा, डेविड कूपर फील्ड, डेविड वाशिंगटन, जो बनाना चाहो, इससे बना सकते हो। ये मेरे दस्तखत हैं। और तुम डिपार्टमेंट आफ जस्टिस को संभालते हो कि क्या तुम फार्म पर नहीं भरना चाहते क्योंकि अगर तुम मुझे मार डालो जल में तो मेरा नाम तुम फार्म पर नहीं भरना चाहते क्योंकि अगर तुम मुझे मार डालो जेल में तो

मेरा कोई पता भी नहीं चल सकेगा कि मैं कहां खो गया। इसलिए हैंडराइटिंग तुम्हारे हैं और दस्तखत मेरे हैं। तुमने अपनी फांसी का इंतजाम खुद कर लिया है। ठीक पांच बजे सुबह मुझे बदलकर दूसरी जेल में भेज दिया गया, क्योंकि वह फार्म नष्ट करना था।

मुझे इस बात की चिंता नहीं है, क्योंकि जीवन से जो मुझे मिल सकता था, वह मुझे मिल चुका है। अब और जीवन से कुछ पाने का कोई सवाल नहीं है। लेकिन लाखों लोग हैं दुनिया में जो तैयार हो रहे हैं। मैं उनकी तैयारी के लिए जीना चाहता हूं। मैंने झूठ बोला सत्य की सेवा के लिए।

दिसंबर में इंडिया टुडे के इंटरव्यू में आने कहा था, दिसंबर महीने में अमरीकी घटना के बाद कि राजीव गांधी चूंकि एक गैर राजनीतिक व्यक्तित्व हैं, इसलिए उनसे उम्मीद की जा सकती है कि वे कुछ अच्छा करेंगे। परसों के इंटरव्यू में आने कुछ नाउम्मीदी जाहिर की है राजीव गांधी के काम करने के तरीके के बारे में। इस पर अगर आप इलैबरेट करें तो कृपा होगी।

मैं कोई राजनीतिज्ञ नहीं हूं लेकिन इतना मैं जानता हूं, कौन चमार है और अच्छे जूते बना सकता है। राजीव एक अच्छे पायलट हैं। लेकिन अच्छा पायलट होना प्रधानमंत्री होने के लिए कोई सर्टिफिकेट नहीं है। और आने वाला चुनाव निर्णय करेगा इस बात का।

सच में इंदिरा गांधी की हत्या का राजीव ने पूरी तरह शोषण किया है। मां के खून पर राजीव गांधी हिंदुस्तान का प्रधानमंत्री है। हम यहां खून देने वाले चाहते हैं, मां के खून को भी बेच देने वाले नहीं। राजीव की अपनी क्षमताएं हैं, अपनी प्रतिभा है, वह उसका उपयोग करे।

और इंदिरा गांधी के जिंदा रहते समय, मैंने राजीव को संदेश दिया था कि अगर तुम्हें कभी राजनीति में आना है तो अभी से अपनी मां के चरणों में बैठकर शिक्षण शुरू करो। जो उत्तर मुझे मिला था, वह यह था कि मैं ही अकेला घर में कमाने वाला हूं। संजय मर चुका था और अगर इंदिरा अपनी सत्ता खो देती है तो मेरे सिवाय परिवार को भोजन भी देने वाला कोई भी नहीं है। फिर मेरी राजनीति में कोई उत्सुकता भी नहीं है। क्या तुमने कभी सुना है कि इंदिरा गांधी और उसके जिंदा रहते समय राजीव ने कोई उत्सुकता राजनीति में ली हो? कोई अ ब स भी राजनीति का सीखा हो। छोकरों की एक जमात मुल्क की छाती पर सवार हो गई है। आने वाले इलेक्शन तक उनकी धज्जियां उड़ जाएंगी। और झूठ-फरेब लंबा अभ्यास चाहते हैं।

विरोधी पार्टी के नेता ने पार्लियामेंट में पूछा कि भगवान को भारत से बाहर क्यों जाना पड़ा, जब मैं वापिस आया था। क्या उन पर ये शर्तें लादी गई थीं कि आप भारत के बाहर नहीं जा सकते और भारत से बाहर के संन्यासी आपसे मिलने नहीं आ सकते; और खासकर भारत के बाहर से पत्रकार, न्यूज मीडिया को आप तक

नहीं पहुंचने दिया जाएगा? मैंने कहा, तो अमरीका की जेल में और भारत की जेल में क्या फर्क होगा?

कम से कम अमरीका की पहली जेल में जेलर मुझे पढ़ता था, सुनता रहा था, वह इतना उत्सुक था कि उसे सारे कानून को एकतरफा रखकर जेल के भीतर वर्ल्ड प्रैस कांफ्रेंस बुलाई। अमरीका में मैं जेल के भीतर, वर्ल्ड कांफ्रेंस के भीतर पत्रकारों से बात कर सकता हूं अमरीका की गवर्नमेंट के खिलाफ।

और भारत में मैं स्वतंत्र रहकर भी पत्रकारों से नहीं मिल सकूंगा और जो मुझे प्रेम करते हैं, वे मेरे पास न आ सकेंगे, तो मेरे रहने, न रहने का कोई उपयोग नहीं है।

मेरे छोड़ दिए जाने पर भारत से विरोधी पार्टी के नेता ने यह प्रश्न पूछा कि क्या ये शर्तें लगाई गई थीं कि उनके शिष्य उनके मिलने नहीं आ सकते? और राजीव गांधी की सरकार ने उत्तर दिया कि यह बात झूठ है, उनके शिष्य मिलने आ सकते हैं। तो मैंने अपने बहुत से संन्यासियों को अलग-अलग देशों में, अलग अलग एंबेसीज में वीसा लेने के लिए भेजा। हर जगह से इंकार मिला। यह आश्चर्यजनक है। यहां सरकार कह सकती है कि वे आ सकते हैं और एंबेसीज को खबर करते हैं कि उनका कोई भी व्यक्ति भारत न आने पाए। ये झूठ और फरेब इस देश को ऊंचा नहीं उठा सकते।

और ये व्यक्ति जो आज सत्ता में हैं, इतना नपुंसक हैं कि देश से वह भी नहीं कह सकते, जिससे देश का भला हो सकता है कि अपनी संख्या कम करो, कि संतति नियमन करो। ये देश को मौत की तरफ ढकेल रहे हैं। यह जानकर तुम्हें आश्चर्य होगा कि भारत में भूख और भारत का गेहूं भारत के बाहर बेचा जा रहा है। क्योंकि उसी धन के बल पर न्यूक्लियर एनर्जी और उनके प्रसाधन खरीदे जा सकते हैं। तुम्हारे पेट से किसी को मतलब नहीं है।

मैं सोचता था कि राजीव चूंकि राजनीतिज्ञ नहीं हैं, बल्कि अनायास एक गैर-राजनीतिज्ञ राजनीति में पहुंच गया है। इसलिए मैंने तारीफ की थी कि शायद उससे हम आशा बांध सकते हैं। लेकिन अब कोई आशा बांधने की जरूरत नहीं है।

यह देश मरेगा गरीबी से और जिम्मेवार राजीव गांधी होंगे। आज पंजाब में तुम लोगों को मारोगे, लेकिन कहां-कहां तुम लोगों को मारोगे?

राजीव के पास कोई व्यक्तित्व नहीं है, न ही कोई वक्तव्य है, न ही कोई करिश्मा है, कि इस सारे देश को इकट्ठा रख सकें। आसाम अलग होना चाहता है। तमिलनाडु कल अगल होना चाहेगा। इस देश में तीस भाषाएं हैं, वे तीस देशों में बंट जाना चाहती हैं।

यह मैं आपको स्मरण दिला दूं कि हजारों सालों से भारत एक राष्ट्र नहीं रहा है। बुद्ध के जमाने में, ढाई हजार साल पहले इस देश में पांच हजार राज्य थे। यह तो मुसलमानों, मुगलों, तुर्कों, हूंणों और अंग्रेजों की जबरदस्ती के कारण तुम्हें बांध कर रखा गया है। लेकिन अब तुम्हें बांध कर नहीं रखा जा सकता। अब तो तुम्हें

प्रेम से ही एक रखा जा सकता है। अब तो सिर्फ एक ही बंधन इस देश को राष्ट्र बनाए रख सकता है—और वह प्रेम का है। न तो भाषा का, न धर्म का, न प्रांत का, वरन सिर्फ प्रेम का।
राजीव के पास प्रेम का क्या संदेश है? ध्यान का क्या संदेश है?
हिंदुस्तान की पार्लियामेंट रिटार्डिस है। इनमें से किसी के भी मस्तिष्क की जांच की जा सकती है, 14 साल से ज्यादा निकल आए, बहुत मुश्किल है। इस देश को ना समझ छोकरों के हाथ में छोड़ दिया गया है। यह सारी स्थिति बदलनी होगी।
इस देश में विचारशील लोग भी हैं। बुद्धिमान लोग भी हैं। ऐसे लोग भी हैं जिन्हें राजनीतिक महत्वाकांक्षा नहीं है, लेकिन फिर भी जिनके दिल में देश के लिए करुणा है। लेकिन एक मुसीबत है जो महत्वाकांक्षी हैं, अनिवार्य रूप से हीनता-ग्रंथि से पीड़ित होते हैं। अपनी हीनता को दबाने के लिए बड़े पदों पर पहुंचने की कोशिश करते हैं। और जो हीनता-ग्रंथि से पीड़ित नहीं हैं—संतुष्ट हैं, मग्न हैं अपने में—वे कोई भीख नहीं मांगते फिरते वोटों की। तुम भिखारियों के द्वारा आशा छोड़ दो कि यह देश ऊपर उठ सकेगा। हमें रास्ता बदलना पड़ेगा। हमें जाना पड़ेगा उन लोगों से प्रार्थना करने जो इस देश को संभाल सकते हैं। वे तुम्हारे पास वोट मांगने नहीं आएंगे। और उनकी कोई कमी नहीं है।
इसलिए मैंने अपने दृष्टिकोण में पूरा परिवर्तन किया है। मैं 12 दिन तक अमरीका की जेल में था। राजीव ने कोई भी उपाय नहीं किया भारतीय राजदूत के द्वारा कि कम से कम इतना तो पूछे कि मेरा जुर्म क्या है? और बिना कारण अरैस्ट वारंट के मुझे क्यों पकड़ा गया है। और बिना अदालत में लिए जाए, मुझे क्यों जबरदस्ती एक जेल से दूसरी जेल में घसीटा जा रहा है।
न, अमरीका को कोई नाराज नहीं करना चाहता। सब भिखारी हैं। अमरीका से वे चाहिए जो नाइट्रोजन बम पैदा कर सकें, जो मृत्यु की किरणें पैदा कर सकें। जीवन में किसी का रस नहीं है।
यह कर्तव्य था राजीव गांधी का कि एक भारतीय के ऊपर बिना किसी जुर्म के, बिना किसी कारण के जबरदस्ती अत्याचार ढाया जा रहा हो, तो वह आवाज उठाए। दुनिया के दूसरे देशों से आवाजें उठीं, सिर्फ भारत चुप रहा। और जिस दिन मैं जेल से छूट कर आया, उस दिन भारतीय राजदूतावास का एक आदमी पूछने आया कि हम आपकी क्या सेवा कर सकते हैं? मैंने कहा, 12 दिन तुम कहां थे? अफीम लेते हो? चरस पीते हो? 12 दिन तुम कहां थे? तुम्हारी सरकार कहां थी? तुम्हारा राजदूत कहां था? उस आदमी ने जो उत्तर दिया वह यह था कि हम निरीक्षण कर रहे थे कि क्या हो रहा है। मैंने कहा, तुम निरीक्षण करते जब तक कि मैं मर जाता। तुम मेरी लाश से पूछने आते कि हम क्या सेवा कर सकते हैं। जाओ और कह दो अपने राजदूत से और कह दो अपने प्रधानमंत्री से कि तुम्हारी सेवा की मुझे कोई जरूरत नहीं है। हां, तुम्हें कभी कोई जरूरत पड़े मेरी सेवा की तो मैं हमेशा तैयार हूं।

मैं इस सरकार को एक बचकानी, अप्रौढ़, अपरिपक्व सरकार कहने को मजबूर हूं। इतने बड़े राष्ट्र को, जहां नब्बे करोड़ की आबादी हो, इन बच्चों के हाथ में छोड़ देना खतरे से खाली नहीं है। ये कोई दीवाली के पटाखे नहीं हैं। यहां पूरे देश की जिंदगी और मौत का सवाल है। मैं चाहता हूं, देश समझदार लोगों के हाथ में जाए। मैं चाहता हूं, देश में कोई राजनैतिक पार्टी न हों, कोई जरूरत नहीं है राजनैतिक पार्टी की। जरूरत है समझदार लोगों की जिनको हम चुन कर भेजें और जो सामूहिक रूप से निर्णय ले सकें इस देश के भविष्य के लिए।
मैं अराजकवादी हूं।
राजनैतिक पार्टियां सिर्फ शोषण करती हैं। पांच साल एक पार्टी शोषण करती है, तब तक लोग दूसरी पार्टी के संबंध में भूल जाते हैं। फिर दूसरी पार्टी सत्ता में आ जाती है, पांच साल तक वह शोषण करती है, तब तक लोग पहली पार्टी के संबंध में भूल जाते हैं। यह एक बहुत मजेदार खेल है। कबड्डी खेल रहे हैं बेटे और रैफरी भी कोई नहीं है।

आपकी योग-साधना का जो तरीका रहा है, उसमें शारीरिक संपर्क का एक खास महत्व रहा है। जैसा कि पहले भारत में आप चलाते थे, रजनीशपुरम के बारे में मुझे पता नहीं। अगर वह तरीका फिर रहेगा तो जो नया खतरा पैदा हो गया है एड्स का, उसको देखते हुए योग-साधना के तरीके में कोई बदलाव आप लाने की सोच रहे हैं?
एड्स की बीमारी धार्मिक बीमारी है। इसका जन्म मोनेस्टरीज में और उन स्थानों पर हुआ, जहां धार्मिक गुरु लोगों को समझा रहे थे ब्रह्मचर्य। ब्रह्मचर्य बिलकुल ही अस्वाभाविक है। सिर्फ ब्रह्मचर्य होने का एक ही उपाय है और वह है प्लास्टिक सर्जरी। सिर्फ नपुंसक ब्रह्मचारी हो सकता है और कोई भी नहीं। और अब भी ब्रह्मचर्य का शिक्षण जारी है। महात्मा गांधी जैसे लोग लिखते हैं, ब्रह्मचर्य ही जीवन है और जीवन के अंत में, सत्तर साल की उम्र में समझ में आता है कि नहीं, ब्रह्मचर्य ही जीवन नहीं है और एक नग्न स्त्री के साथ सोना शुरू कर देते हैं।
शारीरिक संबंध स्वाभाविक है अगर उन्हें स्वाभाविक रखा जाए तो एड्स का कोई खतरा नहीं है। जंगलों में अब तक किसी जानवर में एड्स नहीं पाई गई। लेकिन अजायबघरों में जानवरों में भी एड्स की बीमारी पैदा हो जाती है। क्योंकि अगर नर ही नर हैं, मादा नहीं है तो बंदरों में इतनी अक्ल है, जितनी तुम्हारे भिक्षुओं में है, तुम्हारे संन्यासियों में है। कोई रास्ता खोजना ही पड़ेगा। भोजन तुम करोगे... और तुमसे कोई अगर कहे कि पेशाब करना मना है तो तुम मुश्किल में पड़ोगे। पानी तुम पीओगे, पेशाब का क्या करोगे? चोरी छिपे कोई रास्ता खोजोगे अपने को धोखा दोगे और समाज को धोखा दोगे।
भारत में एड्स की बीमारी अगर फैलेगी तो तुम्हारे धर्मगुरुओं के द्वारा। पश्चिम में भी उन्हीं के द्वारा फैल रही है, जोर से फैल रही है।

स्त्रियों और पुरुषों को अलग कर दो, लेकिन तुम्हारे भीतर जो वीर्य ऊर्जा पैदा हो
ती है, उसका क्या करोगे? तुम्हारे वीर्य की थैली एक सीमा रखती है, उसके बाद
...उसके बाद कोई भी अप्राकृतिक, काई भी विकृत रूप लेगी या तो स्वप्नदोष होग
ा तुम्हें।

महात्मा गांधी को सत्तर साल की उम्र में भी स्वप्न दोष होते थे, लेकिन हम ऐसे
अंधे हैं कि सोच भी नहीं सकते। महात्मा गांधी ईमानदार आदमी थे। मुझे उनकी
ईमानदारी पर कोई भी शक नहीं है। लेकिन सत्तर साल में भी अगर स्वप्नदोष हो
ता है तो इसका अर्थ है कि तुम्हारे हाथ में नहीं है बात। भूख लगती है, तुम्हारे ह
ाथ में नहीं है। प्रकृति में जो भी जरूरी है, उसे तुम्हारे हाथ में नहीं छोड़ा है। नहीं
तो तुम कभी के खत्म हो गए होते। सांस लेते हो—तुम्हारे हाथ में नहीं है। नहीं
तो रात में भूल जाते कि सांस लेना कि नहीं। सड़क की भीड़-भाड़ में भूल जाते ि
क सांस लेना कि नहीं।

तुम्हारे भीतर जो वीर्य की ऊर्जा स्त्री या पुरुषों के भीतर पैदा होती है, वह तुम्हारे
खून से पैदा होती है। अगर तुम चाहते हो कि वह पैदा न हो तो खून पैदा नहीं
होना चाहिए। जड़ों तक जाना पड़ेगा। और खून पैदा न हो तो भोजन बंद करना ह
ोगा। तो ब्रह्मचारी ही होना है तो जाओ और लटक जाओ किसी झाड़ से बांध कर
रस्सी अपनी गर्दन में और लिख लेना एक तख्ती कि मैं ब्रह्मचारी हूं।

एड्स को रोकने का एकमात्र उपाय है कि स्त्री और पुरुष के बीच हमने जो वैमनस्
य, जो दुश्मनी हजारों साल में पैदा की है, उसे अलग करना। अगर हम इसे अल
ग कर सकते हैं तो एड्स का कोई सवाल नहीं है। पुरुष और स्त्री के संभोग से ए
ड्स पैदा नहीं होता। पुरुष और पुरुष के संभोग से एड्स पैदा होता है। और वैसा
पुरुष अगर स्त्री से संभोग करे तो स्त्री को भी एड्स की बीमारी दे देता है।

और एड्स की बीमारी आखिरी बीमारी है। अब तक ऐसी कोई बीमारी जानी नहीं
गई, क्योंकि इसका कोई इलाज नहीं है। वैज्ञानिक कहते हैं कि दस वर्षों तक तो
हम नहीं सोच सकते कि कोई इलाज खोजा जा सकता है। और इतने जोर से फै
ल रही है बीमारी, कि न तो तुम किसी से कह सकते हो कि तुम एड्स के बीमा
र हो, न तुम डाक्टर के पास जा सकते हो, न डाक्टर चाहता है कि तुम उसके प
ास जाओ। कृपा करो, फीस ले लो और घर जाओ। न कोई अस्पताल भर्ती करने
को राजी है, क्योंकि केवल शारीरिक संबंध से ही एड्स एक दूसरे में नहीं फैलती।
पसीने से भी फैलती है। थूक से भी फैलती है। आंसुओं से भी फैलती है।

सिर्फ दुनिया में एक कौम है एस्किमोज की, जिन्होंने कभी प्रारंभ से ही चुंबन नहीं
लिया। और जब पहली दफा ईसाई मिशनरी एस्किमोज को बदलने पहुंचे तो उनकी
हंसी का ठिकाना न रहा। वे सोच भी न सके कि ये कैसी गंदी हरकत कर रहे हैं
। यह गंदी हरकत है। एक दूसरे के मुंह में जीभ डालना, एक दूसरे के थूक में थू
क मिलाना, जरा सोचो तो। शरीर से जो भी चीज बाहर निकलती है, उसमें एड्स
की वायरस होते हैं।

एक ही उपाय है—सेलीबेसी, ब्रह्मचर्य गैर-कानूनी करार दिया जाए और पकड़-पकड़ कर एक-एक संन्यासी की शादी की जाए कि चलो...। अन्यथा यह भी हो सकता है कि न्युक्लियर युद्ध के पहले एड्स आदमी को मार डाले। और एड्स के बीमार को अगर पूर्ण सुरक्षित रखा जाए तो वह दो साल से ज्यादा नहीं जी सकता। यह लंबी से लंबी अवधि है। और पूर्ण सुरक्षित कैसे रखोगे? आखिर उसे काम करना पड़ेगा, लोगों से मिलना पड़ेगा।

और एड्स के बीमार की क्षमता किसी भी बीमारी से लड़ने की शून्य हो जाती है। अगर उसको सर्दी पकड़ जाए तो सर्दी भी फिर ठीक नहीं होती। बुखार आ जाए तो बुखार ठीक नहीं होता। उस पर कोई दवा काम नहीं करती। क्योंकि दवा के काम करने का ढंग है। जब हम दवा देते हैं किसी आदमी को तो उसका शरीर उस दवा का साथ देता है। उन दोनों की संयुक्त शक्ति से बीमारी अलग की जाती है। एड्स के मरीज का शरीर साथ नहीं देता। वह खोखला है। तुम दवा डालते जाओ, वह बेमानी है। तुमने नाली में डाल दी होती तो भी उतना ही असर होता, जितना तुमने इंजेक्शन लगा कर किया है।

मगर दुनिया के धार्मिक अभी भी समझाए जा रहे हैं कि ब्रह्मचर्य के बिना कोई ब्रह्म तक नहीं पहुंच सकता—ब्रह्मचर्य बिलकुल अनिवार्य है। ये देश के दुश्मन हैं और समाज के दुश्मन हैं। इन्हें रोकना जरूरी है, और स्त्री और पुरुष को करीब लाना जरूरी है। ताकि पुरुष और पुरुष संभोग न करने लगें, ताकि स्त्रियां और स्त्रियां संभोग न करने लगें।

मैं अमरीका में था तो टैक्सस की गवर्नमेंट ने पार्लियामेंट में यह कानून पास किया कि समलिंगी संभोग गैर-कानूनी है। और दस साल की सजा कम सक कम सजा है। तुम विश्वास न कर सकोगे। दस लाख लोगों के जुलूस ने विरोध किया कि यह हमारी स्वतंत्रता पर हमला है।

ब्रह्मचर्य को गैर-कानूनी करार देने की बजाय, उन्होंने होमो-सेक्सुअलिटी को गैर-कानूनी करार दिया। इसके परिणाम बहुत खतरनाक हैं। इसका मतलब हुआ कि होमो-सेक्सुअलिटी, समलिंगी व्यवहार अंतर्गत, भूमि के भीतर छिप जाएगा और तुम्हें पता भी नहीं चलेगा। तुम्हें यह भी पता नहीं चलेगा कि एक छोटा बच्चा रो रहा था और तुमने उसके आंसू पोंछ दिए तो तुमने करुणा का काम किया या हत्या का, क्योंकि हो सकता है कि तुम्हारे हाथ और उसके आंसू एड्स की बीमारी को पैदा कर दें।

और नवीनतम खबरें है कि अब बच्चे भी पैदाइश के साथ एड्स लेकर आ रहे हैं। तीन बच्चे पैदा होते ही एड्स के बीमार थे। यह सबसे भयंकर बीमारी है, जो आदमी ने मनुष्य के इतिहास में देखी है।

मेरे विचार और भी परिपक्व हो गए हैं कि मनुष्य को सहज, सरल स्वाभाविक जीवन जीना चाहिए। अन्यथा विकृति बिलकुल स्वाभाविक है।

मैंने सुना है एक शानदार हथिनी जंगल से गुजर रही थी और एक मुंडा संन्यासी उसके पीछे भाग रहा था। हथिनी ने पूछा कि हे मुंडे, तू क्यों मेरा पीछा कर रहा है? उस संन्यासी ने कहा, माई, अब तुम इतनी बड़ी हो कि माई ही कहना पड़ेगा। एक ही वासना रह गई है जीवन में, उसी की वजह से संसार में भटक रहा हूं। अगर तुम जरा सहायता कर दो तो मोक्ष में आनंद लूं। हथिनी ने कहा, मैं बिल कुल तैयार हूं, क्या सहायता चाहिए। उसने कहा, कहने में शर्म आती है। मगर य हां कोई भी नहीं है और किसी को पता भी नहीं चलेगा। न मालूम क्यों मेरे दिमा ग में बार-बार यह खयाल उठता है कि हथिनी को प्रेम करने से कैसा होगा? हथि नी ने कहा प्रेम? तुम प्रेम करोगे मुझसे? ठीक है। नसैनी वगैरह लाए हो? उसने कहा, मैं ले आया हूं, म्युनिसिपल की नसैनी, उसी को लेकर तो दौड़ रहा हूं और हांफ रहा हूं। तुम मेरी यह छोटी-सी इच्छा पूरी कर दो तो जन्म-जन्मांतर का च क्र छूट जाए। यह मेरे भाव से नहीं छूटता, सब देख लिया, मगर हथिनी से प्रेम न हीं किया।

और अब मैं समझता हूं कि क्यों आश्रमों में हाथ और हथिनियां रखे जाते हैं। उसने कहा, तू जल्दी कर भैया, क्योंकि मेरी भी डेट है, मेरा बॉय फ्रेंड रास्ता देख ता होगा। हे मुंडे, चढ़ अपनी नसैनी पर। मुंडा प्रेम करने में संलग्न हो गया। प्रेम क या था, एक तरह की कसरत समझो। दंड लगा रहा था, पसीना-पसीना हुआ जा रहा था। और तभी झाड़ के ऊपर से एक नारियल गिरा, जो हथिनी के सिर पर पड़ा। हथिनी ने कहा, आह! मुंडे ने कहा, माफ करना प्रियतमे, क्या मैं तकलीफ तो नहीं दे रहा हूं? हथिनी ने कहा, आह! मुंडे ने कहा, माफ करना प्रियतमे, क्या मैं तकलीफ तो नहीं दे रहा हूं? हथिनी ने कहा, तुम्हारा तो मुझे पता ही नहीं च ल रहा है, तुमने शुरू भी किया या नहीं। मुंडा बोला, मैं तो बहुत पहले खत्म हो चुका। यह तो मेरे गुरु हैं, जिनका नाम गुंडा है, वे ऊपर बैठे हैं, झाड़ पर। हमारे संप्रदाय में शिष्य को मुंडा कहते हैं। और गुरु को गुंडा कहते हैं। हालांकि वे ब्रह्मच र्य के बिलकुल पक्ष में हैं, लेकिन यह अदभुत दृश्य देखकर जो कि हिंदी फिल्मों में भी नहीं दिखाई पड़ सता, वे भी जोश में आ गए। भूल गए सब ब्रह्मचर्य, और कुछ न सूझा तो जोर से वृक्ष को ही हिलाने लगे। नारियल उनकी कृपा से तुम्हारे सिर पर गिरा।

यह गुंडों और मुंडों का समाज, इसने तुम्हें हजार तरह की बीमारियां दी हैं और मैं चाहता हूं सहज, स्वाभाविक, नैसर्गिक जीवन। जितने तुम स्वाभाविक होओगे, उ तने ही ज्यादा तुम्हारे जीवन में शांति होगी। उतनी ही संभावना है तुम्हारे लिए उ स अमृत को पा लेने की, जिसकी हम सदियों से प्रतीक्षा करते रहे हैं जन्मों-जन्मों से।

तो सिवाय मेरे—और मैं दोहराता हूं सिवाय मेरे—न तो तुम्हारा पोप, न अयातुल्ला खोमेनी, न तुम्हारे शंकराचार्य, न तुम्हारे आचार्य तुलसी, कोई भी तुम्हें एड्स से नहीं बचा सकते। एड्स से बचाने का एक ही उपाय है: सरल बनो, सीधे बनो, न

ाहक सिर के बल खड़े होने की कोशिश न करो। पैर दिए हैं प्रकृति ने, उनसे ही चलो।

भारत में अभी भी एड्स का कोई बहुत प्रचार नहीं है, सिवाय सैनिकों के कालेजों में जहां लड़के और लड़कियों को अलग-अलग होस्टलों में रहने के लिए मजबूर ि कया जा रहा है, आश्रमों में जहां स्त्री और पुरुषों के बीच दीवाल खड़ी की जा र ही है। बड़े आश्चर्य की बात है कि प्रकृति तुम्हें जो देती है, तुम उसका विरोध क रते हो? फिर परिणाम भी भोगने के लिए मर रहे हैं। और रोज लाखों लोग एड्स के चक्कर में आ रहे हैं। वह ईसाइयत की देन है। अभी भारत को बचाया जा स कता है। अभी बात आगे नहीं बढ़ी और पैर पीछे खींचा जा सकता है।

लेकिन यह मेरी तकलीफ है कि मैं सच को सच कह देता हूं तो पत्थर खाने की तैयारी अपने हाथ से कर लेता हूं। तुम सच नहीं सुनना चाहते। तुम चाहते हो कि राम-राम जपता रहूं और ब्रह्मचर्य सध जाए। खुद रामचंद्र जी से नहीं सधा, तुम से क्या सधेगा? थोड़ा सोचो तो जिनकी तुमने पूजा की है कृष्ण की, वे 16000 स्ि त्रयों को अपने घर में बंद किए थे। अनाचार है, मगर कम से कम एड्स तो नहीं फैला।

मेरा अंतिम प्रश्न है, इसे स्पैस्फिक जवाब की अपेक्षा है कि भारत आने के बाद अ ब आपका क्या कार्यक्रम है? आप कहां रहेंगे और कार्यशैली क्या होगी?

यह प्रश्न तुम्हें सूरज प्रकाश से पूछना चाहिए, जिनके घर में मैं हूं। मैं जरा जिद्दी ि कस्म का आदमी हूं। तय कर लूं तो इस घर को छोड़ूंगा ही नहीं। सूरज प्रकाश ढूं ढ लें कोई घर नया।

2 अगस्त 1986, प्रातः सुमिला, जुहू, बंबई

मेरी दृष्टि सृजनात्मक है

मोरारजी सरकार से लेकर राजीव सरकार तक के आप केवल आलोचक ही बने र हे है। किंतु इस देश की समस्याओं को झुलझाने के लिए आपके पास कोई विशेष दृष्टिकोण या उत्तर है?

इस देश की समस्याएं इस देश से बड़ी है। और आलोचन नकारात्मक नहीं है। वह समस्याओं को सुलझाने का विधायक रूप है। जैसे कि कोई सर्जन किसी के कैंसर का आपरेशन करे, तो क्या तुम उस आपरेशन को नकारात्मक कहोगे? दिखता तो नकारात्मक है, लेकिन वस्तुतः विधायक है। और इसके पहले कि कोई पुरानी इम ारत गिरानी हो, नई इमारत खड़ी करनी हो, तो लोगों को सजग करना जरूरी है कि अब पुरानी इमारत के नीचे रहना खतरनाक है। वह जीवन को नष्ट कर सक ती है।

मैंने अपने जीवन में किसी को कोई आलोचना नहीं की। लेकिन मजबूरी नहीं हूं। मेरी दृष्टि सृजनात्मक है। लेकिन बनाने के पहले मिटाना पड़ेगा ही। और हजारों व र्षों की सड़ी गली परंपराएं, अंध विश्वास, जो हमारी छाती पर सवार हैं और इस

देश को आगे नहीं बढ़ने देते, जब तक हम उन्हें अलग नहीं कर देते तब तक दे
श में कोई विधायक, कोई सृजनात्मक, कोई निर्माण नहीं हो सकता।
समस्याएं इतनी है कि उनकी गिनती करनी भी मुश्किल है। मूल समस्याओं पर मैं
चर्चा करूंगा। लेकिन ध्यान रहे, वह आलोचना नहीं है, नकारात्मक नहीं है। नहीं
में मेरा विश्वास नहीं है। मैं तो हां को आस्तिकता कहता हूं।
पहली समस्या है इस देश के सामने, और वह : इसके अतीत से इसे मुक्त करना।
और तुम्हारे राजनेता यह नहीं कर सकते। क्योंकि राजनेता को उन लोगों से भी
ख मांगनी है, वोट की, जिनका कि यह अतीत है। यूं समझो, बच्चा पैदा होता है
तो उसका भविष्य होता है, कोई अतीत नहीं होता। जवान होता है तो उसका वर्त
न होता है। बूढ़ा होता है तो उसका केवल अतीत होता है। जिस कौन का केवल
अतीत शेष रह गया हो, वह बूढ़ी हो गयी है, मरणासन्न है; उसकी अर्थी किसी भ
ी दिन उठ सकती है।
उदाहरण के लिए—महात्मा गांधी चाहते थे देश में रेलगाड़ियां न हों, टेलीफोन न
हों, टेलिग्राफ न हों, बिजली न हो, मशीनें न हो : टेकनालोजी का कोई भी आया
म न हो। उनके लिए दुनिया का इतिहास चरखे पर रुक गया था। और चरखे से
यह कौम जी नहीं सकती। अगर एक आदमी आठ घंटे रोज, सतत चरखे पर सूत
काते, तो केवल अपने लिए—पत्नी के लिए नहीं, बच्चों के लिए नहीं, मां बाप के
लिए नहीं, सिर्फ अपने लिए—साल भर के लिए कपड़े पैदा कर सकता है। लेकिन
कपड़े तुम खान ही सकते, और न कपड़े तुम पी सकते हो। और आठ घंटे केवल
चरखा ही कातना पड़े, तो तुम घन चक्कर हो। भोजन कहां से जुटाओगे? पत्नी
और बच्चों के लिए वस्त्र कहां से लाओगे? मकान कैसे बनाओगे? तो मैंने आलोच
ना की, कि जब तक यह देश गांधी के फांसी के फंदे से मुक्त नहीं होता, इसका
कोई भविष्य नहीं है। दुनिया बहुत आगे जा चुकी है। एक छोटी सी मशीन उतना
काम करती है, जितना हजार लोग नहीं कर सकते। और मशीन की खूबी है, कि
थकती नहीं। शिफ्ट भी बदलनी नहीं पड़ती। चौबीस घंटे भी उसे काम में लगाया
जा सकता है। और मशीन की और में खूबी है कि वह मरती नहीं। अगर कोई अं
ग खराब हो जाए तो बदला जा सकता है।
लेकिन गांधी हठा ग्रही थे। और उनके शिष्य, जिनके हाथ में यह देश आजादी के
बाद इन चालीस सालों में रहा है, इतनी छाती नहीं रखते कि जब गांधी ही चले
गए, तो उनके इस बचकाने दृष्टिकोण को भी विदा देने की जरूरत है।
पहली बात है कि इस मुल्क को बड़ी से बड़ी, नवीन, टेक्नोलाजी, तकनीकी ज्ञान
में विकसित करना है। जो कि कठिन नहीं है। जो कि बहुत आसान है। मगर दुवि
धा यह है कि पूजा गांधी की होगी तो टेकनोलाजी को लाना इस देश में मुश्किल
है।
जब गांधी मरे, तो इस देश की आबादी केवल चालीस करोड़ थी। हालात बिगड़ते
ही चले गए हैं। लेकिन कोई मई का लाल यह हिम्मत भी नहीं करता, कि इस

बात को साफ करे मुल्क के सामने, कि ब्रह्मचर्य से इस देश की आबादी को रोका नहीं जा सकता।

एक तरफ टेकनोलाजी है, जो हाथों में जंजीर है; और दूसरी तरफ बढ़ती हुई आबादी है, जो मौत का पैगाम है। जो लोग विशेषज्ञ हैं आबादी के बढ़ने और गणित के, उनको खयाल था कि इस सदी के पूरे होते-होते भारत की आबादी सौ करोड़ होगी। लेकिन नवीनतम खोजें ये हैं कि आबादी सौ करोड़ नहीं होगी, एक सौ अस्सी करोड़ होगी। जो देश चालीस करोड़ की आबादी से भूखा रहा है, परेशान रहा है, तुम कल्पना कर सकते हो कि एक सौ अस्सी करोड़ की आबादी मौत को निमंत्रण है। लेकिन राजनीतिज्ञ यह बोल नहीं सकता। जानता भी हो तो भी बोल नहीं सकता। राजनीतिज्ञ को मुखौटे ओढ़ने पड़ते हैं—मुखौटों पर मुखौटे। क्योंकि उन्हें जिन लोगों से वोट लेनी है, उनके विश्वासों को कोई चोट न पहुंचे।

भारत सदियों से सोचता है कि बच्चे भगवान की देन हैं। अब यह धारणा छोड़नी होगी। बच्चे तुम्हारी करतूत हैं, किसी भगवान की देन नहीं हैं। जरा सोचो, अगर बच्चे भगवान की देन होते, उसकी अनुकंपा और प्रेम होते, तो बढ़ती आबादी जीवन को और भी प्रेम, और भी सौहर्द, और भी आनंद से भर देती। दो ही निर्णय लेने होंगे :या तो भगवान तुम्हारा शैतान है, और भगवान त्रिकालज्ञ हैं, वे तीनों काल को जानते हैं, उनका यह दिखायी नहीं पड़ता कि एक सौ अस्सी करोड़...सड़कें लाशों से पट जाएंगी। उनको मरघट तक पहुंचाने वाले लोगों की कमी हो जाएगी। उनके लिए कफन जुटाना भी मुश्किल हो जाएगा। क्योंकि गांधीवाद में अगर चरखा चलता रहा तो कफन को पैदा करने की कोई जगह नहीं है।

तो पहली बात मैं यह कहना चाहता हूं कि भारत को अपने अतीत से मुक्त होना है उसको अपनी आंखें भविष्य की और लगानी है। अगर भगवान या प्रकृति को अतीत में इतना मोह था, तो उसने तुम्हारी आंखें आगे की तरफ नहीं, खोपड़ी के पीछे की तरफ दी होतीं, ताकि तुम पीछे की तरफ देख सको। उसने तुम्हें आंखें आगे की तरफ दी हैं।

राजनैतिक विचारक क्यों हिम्मत नहीं कर पाते यह कहने की, कि देश में संतति नियमन होना चाहिए? डर, भय। यह जनता मानती है कि बच्चे भगवान की देन हैं, तो फिर उस राजनीतिज्ञ को वोट नहीं मिलने वाले हैं, जो इस देश में संतति निग्रह के लिए आग्रह करे। इसलिए सब देख रहे हैं और चुप है।

कम से कम तीस वर्षों तक भारत में संतति निग्रह की अनिवार्यता होनी चाहिए। आखिर फायदा भी क्या है इस दुनिया में उन बच्चे को लाने का, जिनको तुम भोजन न दे सकोगे, कपड़े न दे सकोगे, शिक्षा न दे सकोगे? बीमार होंगे तो दवा न दे सकोगे।

लेकिन मुसलमान कुरान की तरफ देखता है। मोहम्मद ने नौ शादियां कीं, तो कम से कम मुसलमान को चार शादियों का हक दिया, गौरव दिया। यह समझ लेने जैसा है, कि एक औरत के अगर नौ पति हों तो कोई हर्ज नहीं क्योंकि बच्चा वह

एक ही पैदा कर सकेगी। लेकिन अगर एक आदमी की नौ औरतें हों तो खतरा है। वह बच्चे पैदा कर सकती है। लेकिन मुसलमान इस जिन पर है, कि यह उसक ा धार्मिक उसूल है।

और मोहम्मद ने इस उसूल को किसी धार्मिकता के कारण कुरान में जगह न दी थी। मोहम्मद की सारी जिंदगी तलवार, नंगी तलवार को हाथ में लेकर गुजरी। स्वभावतः आदमी मर जाते थे, स्त्रियां बच जाती थीं। अनुपात बिगड़ गया। स्त्रियां चार गुनी ज्यादा थीं। और अगर यह नियम पाला रखा जाता, कि एक व्यक्ति एक ही स्त्री से विवाह करे, तो तीन स्त्रियां क्या करेंगी? शिक्षा तो दूर रही, बुरका भी नहीं उठा सकती। ये तीन औरतें वेश्याएं बन जाएगी। तो अच्छा है कि एक-एक आदमी को चार चार औरतों की सहूलियत दी जाए। और जब तुम सहूलियत देते हो, तो अजीब खतरे पैदा होते हैं।

अभी इस सर्दी में जब, भारत स्वतंत्र हुआ, तो निजाम हैदराबाद की पांच सौ औरतें थीं—जब कि दुनिया में आदमी और औरतों को संतुलन बराबर है। और एक आदमी पांच सौ औरतों पर कब्जा कर ले, तो वे जो चार सौ निन्यानबे आदमी बिना औरतों के रह गए, वे क्या करेंगे? विकसित फैलेगी, अनैतिकता फैलेगी, दुराचार फैलेगा।

मगर निजाम हैदराबाद पर बहुत नाराज मत होना। जिन्होंने दुनिया के सब रिकार्ड तोड़ दिए हैं, वे हैं तुम्हारे पूर्ण अवतार कृष्ण। उनकी सोलह हजार स्त्रियां थीं। और इन सोलह हजार स्त्रियों में सिर्फ एक स्त्री विवाहित स्त्री थी—रुक्मणी। बाकी दूसरों की स्त्रियां थी। जो स्त्री पसंद आ गयी, स्त्री जबरदस्ती कृष्ण के घर पहुंचा दी गयी। अंग्रेजी में कहावत है: माइट इज राइट। कृष्ण के पास ताकत थी। वह किसी गरीब आदमी की और को ले जाए, तो वह इंकार भी नहीं कर सकता। उस औरत के बच्चे थे छोटे, पति भी था, बुजुर्ग भी थे, वे घर सूने हो गए। उस घर में अंधेरा हो गया। और फिर भी तुम कृष्ण को पूर्णवतार कहे चले जाओगे? और जिस आदमी में इतनी भी आदमियत नहीं है...पूर्ण अवतार होना तो बहुत दूर।

भारत को अपने अतीत से मुक्त होना है, यह पहली बात है तो हम न एक कदम उठा सकते हैं। नए आदमी में पहला कदम होगा: संतति निग्रह। और इस सड़ी गली दुनिया में, जहां आदमी सिवाय हत्या करने और कुछ भी नहीं करता...तीन हजार वर्षों में पांच हजार युद्ध आदमी ने किए हैं। और अब अंतिम युद्ध की तैयारी है। अगर तुम्हें जरा भी प्रेम है, तो तुम ऐसी दुनिया में अपने बच्चे को नहीं लाना चाहोगे।

अगर तीस वर्षों तक भारत संपूर्ण संतति नियम कर ले, तो इसकी आबादी उस सीमा पर आ जाएगी, जहां हम खुशहाल हो सकते हैं। मगर यह मैं तुमसे कह सकता हूं क्योंकि मैं कोई राजनीतिज्ञ नहीं हूं। और मुझे तुमसे कोई वोट नहीं लेते हैं। हां, तुम चाहो तो मुझे पत्थर मार सकते हो। वह मेरा सौभाग्य है। लेकिन राजनीतिज्ञ धंधे में है। उसे वही कहना पड़ता है, जो तुम पसंद करते हो। और तुम्हारी

पसंदगियां बड़ी सड़ी गली हैं, बहुत पुरानी हैं, बहुत जरा जीर्ण हैं। तुमने उन पर कभी पुनर्विचार भी नहीं किया है।

गौतम बुद्ध के जमाने में सारी दुनिया की आबादी दो करोड़ थी—सारी दुनिया की आबादी दो करोड़ थी। और अगर लोग खुशहाल थे, और अगर लोग अपने मकानों पर ताले नहीं लगते थे, समझ में आती है बात। क्या ताला लगाना। इतनी संपन्नता थी। खास कर इस देश में, जो कि देश कम है और एक महाद्वीप ज्यादा है। हम मौसम है। हर तरह की सुविधा है। ठंडी से ठंडी जगह पा सकते हो, गर्म से गर्म जगह पा सकते हो। सूखे रेगिस्तान हैं, और चेरापूंजी जैसी जगह है : जहां पांच सौ इंच वर्षा होती है, घर बाहर भी नहीं निकल सकते।

भारत अपने आप में एक पूरी दुनिया है। इसकी संपन्नता का कोई हिस्सा न था। गलत नहीं थे वे लोग, जिन्होंने इसे सोने की चिड़ियां कहा। लोग खुश थे, लोग प्रसन्न थे। यह तो सिर्फ एक उपमा है कि यहां दूध और दही की नदिया बहती थीं। दूध और दही की नदियां भी बहाते, तो कोई हर्ज न होता, कोई नुकसान न होता। लेकिन मूल कारण था, आबादी का बहुत थोड़ा होना। बड़ा देश, बड़ी भूमि, उपजाऊ भूमि।

अगर इस देश के भाग्य को फिर से सोने की चमक देनी है, और अगर इस देश के पत्थरों को फिर हीरों में बदलता है, तो हमें थोड़ी हिम्मत बरतनी होगी। लेकिन मजा यह है कि ईसाई पादरी, कार्डिनल, पोप इस देश में आएगा और लोगों को समझाएगा कि संतति नियमन पाप है। और इस देश के शंकराचार्य, इस देश के जैनाचार्य उससे सहमत हैं। क्योंकि उन सब की चिंता कुछ और है। ईसाई चाहता है, यह देश और भी गरीब होता जाए।

क्योंकि जितने ही लोग गरीब होते हैं, उतने ही लोग ईसाई होते हैं। उन्हें ईसाई होना ही पड़ता है। और शंकराचार्य और जैनाचार्य भी भयभीत है, कि अगर यूं ही चलता रहा, तो हमारी संख्या कम हो जाएगी। यह देश कल ईसाइयों का देश बन सकता है। तो बच्चे पैदा करो।

तो पहली बात मैं कहना चाहता हूं, कि अगर तुम्हें बच्चों से प्रेम है, तो बच्चे पैदा मत करो। एक तीस साल के संतति नियमन कर लो। जो लोग आबादी को काम करना चाहते हैं—जैसे महात्मा गांधी, विनोबा भावे, वे भी संतति नियमन के खिलाफ थे। वे कहते हैं, ब्रह्मचर्य धारण करो। और क्या कोई बता सकता है कि महात्मा गांधी ने कितने लोगों को ब्रह्मचारी बना दिया? खुद महात्मा गांधी का व्यक्तिगत निजी सचिव एक लड़की को ले भागा।

ब्रह्मचर्य अप्राकृतिक है। और जो काम एक छोटी सी गोली कर देती हो, उस काम के लिए नाहक सिर के बल खड़े होना, और शीर्षासन करना निहायत बेवकूफी है। और कितनी ही कोशिश करो, प्रकृति के नियमों के विपरीत तुम जा नहीं सकते, जब तक कि विज्ञान का सहारा न हो। और आज विज्ञान का पूरा सहारा उपलब्ध

ध है। कल तक तो सिर्फ औरतों के लिए, संतति नियमन के लिए गोलियां उपलब्ध थीं, आज आदमी के लिए भी उपलब्ध हैं।

इस देश की आबादी इस देश की दुश्मन है। जो कि बड़ी सरलता से हल की जा सकती है। जरा सी बुद्धिमत्ता।

अमरीका में जिस कम्यून को मैंने निर्मित किया था, उसमें पांच हजार संन्यासी थे। ढाई हजार जोड़े। लेकिन पांच वर्षों में एक बच्चा नहीं हुआ। और न तो बंदूकें इस्तेमाल की गयी, और न जबरदस्ती पुलिस खड़ी की गयी, सिर्फ समझाने की बात थी।

दूसरी बात, भारत दो हजार सालों से गुलाम रहा है। कभी मुगल, कभी तुर्क, कभी हूण, कभी मुसलमान, कभी अंग्रेज—दो हजार वर्ष लंबा समय है। दो हजार साल की गुलामी ऐसी बैठ गयी है दिमाग में, कि हटाए भी नहीं हटती। इस गुलामी को दिमाग से हटा देना जरूरी है। क्योंकि वह गुलामी ही नहीं, इस गुलामी ने बहुत कुछ तुम्हारे दिमाग में कूड़ा कचरा भर दिया है, जो कि इस गुलामी के गिरने के साथ ही जाएगा। यूं देखने को तो तुम आजाद हो गए हो—बस देखने को। भीतर की गुलामी में कोई फर्क नहीं है।

गुलामी एक जंजीर है, जो मनुष्य की प्रतिभा को रोकती है।

अंग्रेजों ने तीन सौ वर्षों में इस देश में स्कूल खड़े किए, कालेज बनाए, यूनिवर्सिटियां बनायी। इसलिए नहीं कि तुम शिक्षित हो जाओ; बल्कि इसलिए कि तुम शिक्षित होने से रह जाओ। और सारी शिक्षा की व्यवस्था यूं की, कि ये स्कूल, कालेज और युनिवर्सिटियां केवल फैक्ट्रियां बन गयी क्लर्कों को पैदा करने की। क्या तुम सोचे सकते हो, भारत जैसा विशाल देश, जो इस सदी के अंत में दुनिया का सबसे बड़ा देश होगा—संख्या की दृष्टि से—वहां केवल अब तक तीन नोबल प्राइज मिले हैं? और यहूदी, जिनकी संख्या बहुत नहीं है—भारत में न तो के बराबर हैं—वे हर वर्ष चालीस प्रतिशत नोबल प्राइज उपलब्ध करते हैं।

क्या होगी बात? क्या हमारे मस्तिष्क बिलकुल खाली हो गए है, खोखले हो गए हैं? उन्हें खोखला किया गया है। और खोखला करने की बड़ी वैज्ञानिक विधियां उपयोग की गयी हैं। कोई हिंदू है, कोई मुसलमान है, कोई जैन है, कोई सिक्ख है। और अंग्रेजों की हमेशा यही चेष्टा रही कि यह देश कभी एक न हो पाए। वह आपस में ही लड़ता रहे। इसकी सारी ऊर्जा आपस में लड़ने में ही नष्ट होती हरे।

पहला हमला हुआ, कि जिन्ना न तो कभी जेल गया, न कभी उस पर कोई लाठी पड़ी और फिर भी इस मुल्क को तीन हिस्सों में बांटने का कारण बन गया।क्योंकि अंग्रेजों ने एक बात इस देश के मन में बहुत गहराई से भर दी है, जो इसके पहले नहीं थी। सिक्खों का गुरुग्रंथ देखो: उसमें हिंदू फकीरों के वचन हैं, उसमें मुसलमान फरीद के वचन हैं। हमारी निष्ठा थी अब तक सत्य के प्रति। एक ही गुरुग्रंथ में, सारे धर्मों के लोगों ने, जिन्होंने भी सत्य वचन बोला है, संगृहीत है। लेकिन अंग्रेजों ने धीरे-धीरे दिवाले खड़ी कीं।

हिंदुस्तान की आजादी के पहले विंसटन चर्चिल ने कहा था—तब तक वे प्रधानमंत्री नहीं थे—कि एटली भूल कर रहे हैं। भारत की आजादी भारत को छिन्न-छिन्न कर देगी, और भारत की आजादी एक अराजकता बन जाएगी। और चर्चिल कितना भ ी चोर रहा हो राजनीति में, लेकिन उसका यह वक्तव्य तो सही है। आजादी क्या आयी, मुसीबत आयी। करोड़ों लोग घर बेघर हो गए। उनकी पत्नियों पर बलात्का र किए गए। हजारों लोगों को जिंदा जलाया गया,काटा गया। और यह थी गांधी की अहिंसा की लंबी शिक्षा, जिसका अंतिम परिणाम हिंसा में हुआ। न केवल मुल्क के साथ हिंसा में हुआ, बल्कि एक हिंदू ने ही गांधी को भी गोली मारी।

तो मैं चाहूंगा कि इस देश में मनुष्य रहें। हिंदू, मुसलमान, ईसाई, और सिक्ख—ये तुम्हारी व्यक्तिगत और निजी बातें हैं। तुम गुरुद्वारा जाओ, यह तुम्हारी मौज है। और तुम मस्जिद जाओ, यह तुम्हारी मौज है। लेकिन इसमें झगड़ा क्या है? तुम कुरान पढ़ो, यह तुम्हारी मौज है। तुम गीता में रस लो, तुम उपनिषद में डुबकी लगाओ—इसमें हर्ज क्या है? लेकिन इसमें झगड़ा कहां है?

इस देश के युवक को कम से कम समझ लेना चाहिए कि वह सिर्फ आदमी है। आ दमी पहले है फिर कुछ और है। फिर तो उसकी निजी बातें हैं कि तुम कौन सी मार्का सिगरेट पीते हो, इसमें कोई झगड़ा नहीं होता। तुम किस फिल्म स्टार को प संद करते हो, यह तुम्हारी पसंदगी है।

धर्म बिलकुल निजी व्यक्तिगत बात है। इसका समूह से कोई संबंध नहीं। तुम्हें जहां रस मिलता है, तुम्हें जहां प्राण मिलते हज, जहां तुम्हें शांति मिलती है, वह तुम्ह ारा द्वार है। लेकिन दूसरे को उस द्वार से मत घसीटो।

इस देश की अधिक ऊर्जा और शक्ति आपस में लड़ने में व्यतीत हो जाती है। य ही शक्ति इस देश को लहलहाते खेतों से भर सकती है। लेकिन वही शक्ति इस दे श को खून से भर देती है। जो अपने थे, जो अपने हैं, हम उन्हें भी काटने में फिर चिंता नहीं करते हैं। और हम भूल जाते हैं कि हम आदमी हैं, हम जानवर की तरह व्यवहार करते हैं।

मेरे सुझाव सीधे और साफ है। धर्म को व्यक्तिगत घोषित किया जाना चाहिए। धर्म कोई संगठन नहीं होना चाहिए, हर आदमी की मौज होनी चाहिए। और यह भी हो सकता है कि आज तुम्हें गुरुद्वारा जाना पसंद हो, और कल तुम्हें मस्जिद की अ जान पढ़ना आनंद देने लगे, तो कोई हर्ज तो नहीं है। सब मकान है: गुरुद्वारे भी, मस्जिदें भी, मंदिर भी, चर्च भी। सब हमारे हैं। और जहां से तुम्हें हीरे मिल सकें , चुन लो। और जहां से तुम्हें सत्य की थोड़ी सी भी झलक मिलती हो, आत्मसात कर लो। लेकिन बजाए इसके हम एक दूसरे की गर्दन के प्यासे हैं। यह थोड़ी सी ही समझ की बात है। मत पूछना कभी किसी से, कि तुम्हारा धर्म क्या है?

धर्म तो एक ही है: और वह धर्म है, अपने को इस विराट विश्व की चेतना के स ाथ एक कर लेना। तुम कैसे करते हो एक, यह तुम्हारी मर्जी है। तुम किसी राह चलते हो, किन सीढ़ियों पर चढ़ते हो, यह तुम्हारी मर्जी। मत कहना भूल कर भी

कि मेरा धर्म। तुम धर्म के हो सकते हो, धर्म तुम्हारा नहीं हो सकता। धर्म कोई चीज नहीं है, कि तुम उस पर ठप लगा दो, और अपने नाक का निशान लगा दो, और हस्ताक्षर कर दो, कि यह मेरा धर्म है। और जिस दिन तुम यह करते हो—यह मेरा धर्म, उस दिन स्वभावतः तुम्हारा अहंकार कहता है, कि मेरा धर्म ही एकमात्र असली धर्म है।

नहीं, धर्म के तुम हो जाओ। धर्म को अपना मत बनाओ। इस धर्म के गौरीशंकर पर न मालूम कितने मार्गों से लोग चढ़े हैं। तुम्हें जो मार्ग पसंद हो तुम पसंद कर लो। यह भी जरूरी नहीं है कि तुम्हारी पत्नी तुम्हारे मार्ग पर तुम्हारे साथ चले। और यह भी जरूरी नहीं है कि तुम्हारे बेटे तुम्हारे मार्ग पर चलें।

धर्म एक परम स्वतंत्रता है। उससे बड़ी कोई आजादी नहीं है। तो यह हो सकता है। कि पत्नी जैन मंदिर जाती हो, पति गुरुद्वार जाता हो, बेटे मस्जिद में नमाज पढ़ते हों। यह बड़ी प्यारी बात होगी। एक घर में अगर सारे धर्मों को अंगीकार करने वाले लोग हों तो इस देश से धर्मों के झगड़े मिटाए जा सकते हैं—जो कि व्यर्थ हमारी ताकत, हमारी शक्ति, निर्माण करने की हमारी ऊर्जा कि फिजूल कर देती हैं, मिट्टी कर देते हैं।

मैं तुमसे यह भी कहना चाहूंगा, कि सदियों से तुम्हें यह समझाया गया है, कि गरीबी में कोई आध्यात्मक है। अगर गरीबी में कोई अध्यात्म है, तो हमने परमात्मा को ईश्वर न कहा होता। ईश्वर का अर्थ है: ऐश्वर्य। वह परम धनी है। क्या तुम सोचते हो, किसी दिन तुम ईश्वर को मिला तो वह नंग धड़ंग धूप में कहीं खड़े होंगे? या कि कांटों की किसी सेज पर लेटे होंगे? धर्म दरिद्रता नहीं है, धर्म जीवन की परम समृद्धि है—बाहर की और भीतर की भी। और उन दोनों में कोई विरोध नहीं है। रेगिस्तान में बैठ कर ध्यान करना, और अपन घर की शांति, मौन में ध्यान करना—मैं तुमसे कहूंगा, घर ही चुनना। क्योंकि रेगिस्तान में ध्यान मुश्किल होगा। यह घर की शांति तुम्हें ज्यादा मौन देगी।

हमें यह भी कहा गया है कि धार्मिक व्यक्ति संसार को छोड़ दे। भाग जाता है पहाड़ों में, गुफाओं में, रेगिस्तान में। इसका दुष्परिणाम हुआ। इसका दुष्परिणाम हुआ, कि करोड़ों लोग सदियों में भागते रहे संसार से। छोड़गे पत्नियों को, बच्चे को, बूढ़े मां बाप को, विधवा बहन को—बिना यह सोचे कि इनका क्या होगा? ये बच्चे भीख मांगेंगे। और कल या परसों से ही मदर टेरेसा इनको ईसाई बनाएगी। ये लाखों संन्यासी, जो भाग गए हैं घर छोड़ कर—भगोड़े हैं। इनकी पत्नियों का क्या होगा? या तो वे भीख मांगें, और या वेश्याएं हो जाए। दोनों ही बातें अशोभनीय हैं।

मैं चाहता हूं तुमसे कहना कि धर्म कोई संसार को छोड़ना नहीं है। धर्म है संसार को सुंदर बनाना। एक तरफ तो तुम कहते हो कि ईश्वर ने जगत को बनाया और दूसरी तरफ तुम्हारे महात्मा कहते हैं कि जगत को छोड़ो। गणित साफ है: तुम्हारे महात्मा, परमात्मा के विरोध में हैं। अगर यूं जगत को ही छोड़ना था तो बनाने

की क्या जरूरत थी? और अगर जगत में होना ही पाप था, तो सारी जिम्मेवारी ईश्वर की है, तुम्हारी नहीं। और नर्क में अगर कोई भी एक आदमी पड़ेगा तो तुम्हारा ईश्वर पड़ेगा। क्योंकि उसने ही जगत बनाया, तुम्हें वासनाएं दीं। अगर सजा भी मिलेगी तो उसी को मिलनी चाहिए।

जार्ज गुरजिएफ इस सदी का एक बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति था। ठीक-ठीक उसने यही वचन लिखा है कि सारे महात्मा, परमात्मा के विरोध में हैं। जब पहली दफा मैंने पढ़ा एक झटका लगा : यह आदमी क्या कह रहा है? लेकिन जब मैंने समझा, तो पाया कि वह बात तो ठीक ही कह रहा है। परमात्मा को बनाए, और महात्मा जगत को छोड़ने की बातें करें। निश्चित ही विरोध है।

अगर मानना ही है तो परमात्मा को मानना। जगत का और सुंदर बनाओ। जैसे तुम पैदा हुए थे, मरते वक्त जगत को उससे ज्यादा सुंदर छोड़ना है; तो तुमने परमात्मा की सेवा की। भला तुम किसी मंदिर गए या नहीं गए, कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन तुमने परमात्मा के मंदिर में दो नए फूल उगा दिए, तुमने परमात्मा के संसार में थोड़ी सुगंध ला दी, तुमने परमात्मा के संसार को अपने जीवन की प्रतिभा दान कर दी।

इस देश को बदलना बहुत कठिन नहीं है। इस देश को केवल दस वर्षों के भीतर इसकी पुरानी गरिमा वापस दिलायी जा सकती है। क्योंकि इस देश ने अपनी प्रतिभा खो नहीं दी है, सिर्फ राख उसके अंगारों पर जम गयी है, जो उड़ा देनी है।

अननोएबल (अज्ञेय)की ओर आपकी यात्रा कैसी होगी? आप कुछ नए स्कूल, कम्यून स्थापित करना चाहोगे क्या?

नहीं। जो कम्यून, जो स्कूल मैंने कायम किए थे, वे केवल प्रयोग थे इस बात को जानने के कि मैं जो कह रहा हूं वह असलियत बन सकता है या नहीं। सपने साकार हो सकते हैं या नहीं। मैंने उन सपनों को सकार होते देख लिया। अब तो मैं चाहूंगा कि यह पूरी दुनिया मेरा कम्यून बने। यह पूरी दुनिया ही उस रहस्य, उस विस्मय के जगत में प्रवेश करे, जिसके लिए कि हम पैदा हुए हैं, जो कि हमारी नियति है। इसलिए अब अलग-अलग कम्यून और स्कूल...।

वे प्राथमिक प्रयोग थे, वे सफल हुए हैं। उनसे मैंने वे सूत्र पा लिए हैं कि कैसे सारी दुनिया को बदला जा सकता है। अगर मैं कम्यून और स्कूल ही बनाता रहूं, तो छोटी बात होगी। क्यों न हम इस सारी दुनिया को एक विश्वविद्यालय बना दें, जहां हर आदमी रहस्य की यात्रा करे और हर आदमी उस अज्ञात की ओर बढ़े। अब तो मैं सारे संसार को ही अपना कम्यून बनाना चाहता हूं। अब मेरे पास ठीक-ठीक सूत्र हैं, जिन्हें मैंने ठीक कसौटी पर परख लिया है, कि वह खरा, चौबीस कैरेट सोना है।

मुझे याद आती है, मैं यूनान में था—एक छोटा सा द्वीप यूनान का, उस पर ठहरा हुआ था। उसके बगीचे में हजारों संन्यासी पूरे युरोप से इकट्ठे हो गए थे। लेकिन जिस वृक्ष के नीचे मैं बैठा था, मैंने वैसा वृक्ष पहले कभी देखा नहीं था। मैंने पूछा,

कि यह वृक्ष क्या है? नाम क्या है? और मैं चकित हुआ कि मुझे बताया गया कि ग्रीक में इसका नाम कैरब है। लेकिन यह वृक्ष इस जगत में अनूठा है। क्योंकि इसका हर छोटा सा फूल एक ही वजन का होता है। कैरब का फूल कहीं भी पैदा हो उन फूलों के वजन में कोई फर्क नहीं होता। और इसलिए कैरब दूसरी भाषाओं में कैरेट बन गया, क्योंकि सोने का तौलने का इससे ज्यादा सुंदर उपाय अतीत में नहीं था। कैरब कभी धोखा नहीं देता। इसका वजन हमेशा एक है।

इसलिए हम कहते हैं, चौबीस कैरेट सोना। वह कैरेट, कैरब वृक्ष के फलों का इस अनूठी बात से पैदा हुआ है, कि उनका वजन हमेशा एक होता है। चाहे वे किसी भी देश में पैदा हों और किसी भी हवा में पैदा हो।

मैंने चौबीस कैरेट वे सिद्धांत परख लिए हैं। स्वभावतः परखने के लिए छोटे स्कूल, छोटे कम्यून जरूरी थे। आदमी सब एक जैसे हैं। उनकी चमड़ियों के रंग अलग हो सकते हैं, इससे कुछ फर्क नहीं पड़ता। उनकी ऊंचाइयां, लंबाइयां भिन्न हो सकती हैं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन उसके भीतर, हर आदमी के भीतर चौबीस कैरेट सोना है। और अब मैं चाहूंगा कि सारी दुनिया को ही वे सारे सूत्र उपलब्ध करा दिए जाए। क्यों भारत ही संपन्न हो? क्यों भारत ही महिमा से मंडित हो? क्यों न सारा मनुष्य मंडित हो महिमा से?

मेरी यह चेष्टा कि सारी दुनिया के ही मैं अब सपना घर समझता हूं, और हर आदमी को सिर्फ आदमी समझता हूं, मुझे एक अजीब स्थिति में खड़ा करती है। सारी दुनिया के धर्म और सारी दुनिया के राजनैतिक इस षड्यंत्र में शामिल हो गए हैं कि मुझे काम करने दें। क्योंकि ईसाई डरता है कि अगर मेरी बात ईसाई सुनेगा, तो आदमी तो बन जाएगा लेकिन ईसाई न रहेगा। और हिंदू डरता है कि अगर हिंदू मेरी बात सुनेगा, आदमी तो बन जाएगा लेकिन हिंदू न रहेगा।

अब तो एक अकेला आदमी सारी दुनिया को बदलने के सूत्र देने की तैयारी...और स्वभावतः दुनिया इतने खंडों में बंटी है--तीन सौ धर्म हैं सारी दुनिया में। और हम धर्म समझता है कि वही एकमात्र सच्चा धर्म है, बाकी सब थोथे हैं। और मैं यह कह रहा हूं कि आदमी सच्चा है, उसकी आदमियत सच्ची है, और उसकी आदमियत के भीतर ही परमात्मा का निवास है। वह कौन सी किताब पढ़ता है और कौन से मंदिर में जाता है, यह उसकी मौज है, यह उसका मनोरंजन है।

शायद कभी भी इसके पहले ऐसा न हुआ हो कि एक आदमी के खिलाफ सारी दुनिया हो। लेकिन मैं इसे गौरव समझता हूं। क्योंकि जब कभी एक आदमी के खिलाफ सारी दुनिया हो, तो एक बात निश्चित है कि सारी दुनिया सही नहीं हो सकती। अगर सही होती तो आज दुनिया की स्थिति और होती। और एक आदमी के खिलाफ सारी दुनिया का विरोध में होना इस बात का सबूत है कि मेरी विजय की यात्रा शुरू हो गयी है। उन्होंने हार भीतर-भीतर स्वीकार कर ली है, अब वे उसे ढांकने की कोशिश में लगे हैं।

वर्तमान स्थिति में पुनः एक बार रजनीशवाद दुनिया को अपनी लपेट में ले लेगा, या आप केवल चार्वाक बनकर रह जाएंगे?

इस प्रश्न में दो प्रश्न छिपे हैं। पहला : कि क्या रजनीशवाद दुनिया को फिर अपनी लपेट में लेगा?

रजशनीश जैसी चीज न कभी थी, न होगी। मैं वादों का दुश्मन हूं। इन्हीं वादों ने दुनिया को बरबाद किया है। आखिर इस्लाम क्या है? आखिर ईसाइयत क्या है? आखिर जैनिज्म क्या है? ये किन्हीं व्यक्तियों की चेष्टाएं हैं सारी दुनिया को अपनी लपेट में लेने की। ये सब हार गए। और अपनी हार में सारी दुनिया को ेदेगी में पटक गए।

मैं कोई ऐसा पाप करने को राजी नहीं हूं। मैंने दुनिया को अपने घेरे में नहीं लेना चाहता। मैं चाहता हूं कि दुनिया मुझे अपने घेरे में ले ले। भूल जाए मेरा नाम, भूल जाए मेरा पता, अपनी याद करे। मैं अपन पीछे कोई धर्म नहीं छोड़ जाना चा हता हूं।

मेरी एक ही प्रार्थना है उन लोगों से जो मुझे प्रेम करते हैं, कि उनके प्रेम का एक ही सबूत होगा, कि वे मुझे क्षमा कर दें और मुझे सदा के लिए भूल जाए। हां, अगर कोई सत्य मुझसे प्रकट हुआ हो, तो उस सत्य को पी लें—जी भरकर पी लें। लेकिन वह सत्य मेरा नहीं है। सत्य किसी का भी नहीं है। सत्य तो बस अपना है। उस पर कोई लेबल नहीं है, कोई विशेषण नहीं है।

इसलिए मैं तो धूल जाना चाहता हूं, मिल जाना चाहता हूं मिट जाना चाहता हूं। यूं कि मेरे पैरा के निशान भी जमीन पर न रह जाए कि कोई उनका अनुसरण क रे। जैसे पक्षी आकाश में उड़ते हैं, लेकिन उनके पैरों के कोई चिह्न आकाश में नह ीं छूटते। मैं भी कोई चिह्न अपने पीछे नहीं छोड़ना जाना चाहता हूं।

मैं चाहता हूं कि मनुष्यता सत्य को प्रेम को, करुणा को, ध्यान को, अस्तित्व को—इनको प्रेम करे। मैं तो कल नहीं था, कल नहीं हो जाऊंगा। इस अस्थिपंजर को मूर्ि त मत बना लेना।

और मैं किसी को अपनी लपेट में नहीं लेना चाहता हूं। इस संबंध में यह भी तुम्हें कह दूं कि जो लोग दुनिया में इस चेष्टा में संलग्न होते हैं कि लोग उनके अनुया यी हो जाए, लोग उनकी लपेट में आ जाए, ये कोई भले लोग नहीं होते। ये अहं कारी हैं। ये अपने अहंकार के शिखर को बड़े से बड़े करना चाहते हैं। ये तुम्हारे कंधों पर खड़े होकर आकाश के तारे छूना चाहते हैं।

मैं तो यूं मिट जाना चाहता हूं कि जैसे कभी था ही नहीं। सिर्फ वही रह जाए जो सदा था, सदा है और सदा रहेगा। और उसकी ही तुम लपेट में रहो। मुझसे क्या लेना देना है? मेरा क्या मूल्य है।

दूसरी बात तुम्हारे प्रश्न में है, कि क्या आप एक चार्वाक ही होकर रह जाएंगे? शायद तुम्हें पता नहीं है कि चार्वाक शब्द का क्या अर्थ है। और शायद यह भी प ता नहीं है कि चार्वाक कभी कोई व्यक्ति नहीं था। चार्वाक एक परंपरा थी—एक

जीवन दृष्टि थी। जो लोग उस जीवन दृष्टि के विरोध में थे, उन्होंने यह नाम चाव
कि दिया है। चार्वाक शब्द का अर्थ है : जो चरने में विश्वास करता है—खाओ, पी
ओ, मौज करो, चरे जाओ। लेकिन यह असली नाम नहीं है उस परंपरा का। उस
परंपरा का अपना नाम था : चारु वाक। चार्वाक नहीं, चारु वाक। और चारु वाक
का अर्थ होता है मीठे वचन। चारु : मीठे; वाक : वचन।
आदमी ने आदमी के साथ क्या किया है, यह बड़ी हैरानी की बात है। ऐसी बेईमा
नी कि उसके असली नाम को, परंपरा को—जो कि सिर्फ इतना ही कहती थी कि
जीवन में एक मिठास हो, तुम्हारे वचन-वचन में फूल झरें—उसको विकृत किया।
निश्चित ही चारुवाक कहता था कि जीवन में तुम्हें जो कुछ किया है, उसका जित
ना आनंद ले सको, लो। वह कोई त्यागी नहीं है, वह कोई भगोड़ा नहीं है, वह क
ोई जीवन विरोधी नहीं है।चारुवाक की परंपरा है कि जीवन को जितने मधुर रस
से भर सके भर दे, यह उसकी आकांक्षा है।
यह जानकर तुम्हें आश्चर्य हो गा कि चारुवाक की लंबी परंपरा का एक ग्रंथ मौ
जूद नहीं है। सारे ग्रंथ हिंदुओं ने जला डालें। क्योंकि बात ही उसकी इतनी मीठी
थी कि खतरा था। और बात उसकी इतनी तर्क युक्त थी, कि पुरोहित को खतरा
था। क्योंकि चारुवाक कह रहा था मत कार फिकर परलोक की। अगर तुमने इस
लो का आनंद, सौंदर्य और मधुरिमा में जीया है, तो अगर कोई परलोक है...खया
ल करें उस शब्दों पर : अगर कोई परलोक है, तो वह इसी लोक का ही विस्तार
होगा।
और ईमानदारी उसकी कि उसने कहा कि जब तक कि मैं मर न जाऊं, मैं कैसे
जानूं कि परलोक है? क्योंकि कोई भी तो कभी लौटा नहीं यह खबर देने कि हां,
परलोक है।
इसलिए मैं तुमसे इतना ही कह सकता हूं कि जो है, उसको जितनी प्रीति और ि
जतने आनंद से जी सको, तुम्हारा जीवन जितना नृत्य बन सके और तुम्हारे घुंघरु
ओं की आवाज जितनी मधुर हो, उतना अच्छा है। क्योंकि अगर कोई परलोक है
तो उस की आधारशिला इसी लोक में रखी जाएगी। तुम ही तो परलोक में होओ
गे। और अगर तुम यहां आनंदित हो, तो वहां परम आनंदित होओगे। और अगर
परलोक नहीं है, तो कोई प्रश्न नहीं।न तुम होओगे, न कोई अनुभव होगा।
एक ईमानदार दार्शनिक परंपरा।
लेकिन सारे तथाकथित धर्म परलोक के सहारे जीते हैं। वे तुम्हारे को नष्ट करते
हैं और तुम्हें आश्वासन देते हैं, कि परलोक में तुम्हें इसका पुरस्कार मिलो। और
उनका पुरस्कार अगर तुम देखो, तो बड़ी हैरानी में पड़ जाओगे।
मुसलमान कहते हैं कि इस लोक में जो शराब पीएगा, वह सबसे बड़ा पापी है। लि
कन परलोक में शराब की नदियां बहती हैं। क्या तुम इसमें कोई तर्क संगति देखते
हो? अगर यहां साधु होना है तो शराब मत पीना, छूना मत। मधुशाला के पास
से भी न गुजरना। और यह थोड़े ही दिन की बात है। क्योंकि मुसलमान और ईसा

ई और यहूदी एक ही जन्म को मानते हैं। बहुत तो निकल गयी, थोड़ी बची है य
ह भी निकल जाएगी। जरा गुजार दो, फिर परलोक है। और वहां आनंद ही आनंद
है।

हिंदू कहते हैं कि यहां अगर तुमने स्त्री को प्रेम दिया, तो नर्क में पड़ोगे। लेकिन
अगर सच में चाहते हो सुंदरतम अप्सराओं का प्रेम, तो जरा रुको, जरा धीरज र
खो। परलोक में अप्सराएं ही अप्सराएं हैं। और उनका वर्णन भी थोड़ा समझने जैसा
है। सदियों पर सदियां बीत गयी, अनंत काल बीत गया, वे परलोक की जो अप्स
राएं हैं, अब भी सोलह साल की हैं। उनकी उम्र नहीं बढ़ती। ऐसा लगता है, चमड़
ी कम, प्लास्टिक की ज्यादा बनी हैं। और यह भी मजा है कि वे कोई पतिव्रता न
हीं है। और न मालूम कितने ऋषि मुनि आते रहे, जाते रहे, अपने पुण्य का फल
पाते रहे। मगर बड़े आश्चर्य की बात है कि यहां स्त्री को छूना भी पाप है, और व
हां स्त्रियों का मरघट है, जो ऋषि मुनियों की प्रतीक्षा कर रहा है।

मुझे इसमें गणित की भूल मालूम पड़ती है। अगर यह सच है कि वहां स्त्रियां प्रती
क्षा कर रही हैं, तो कम से कम थोड़ा अभ्यास यहां तो करने दो। यहां तो तुम्हारा
ऋषि मुनि सूख-सूख कर मरा जा रहा है। और जीवन भर ब्रह्मचर्य को साधने क
ी कोशिश में करीब-करीब मुरदों हो गया है। इस गरीब को अप्सराएं घेर लेगी, य
ह कि माई, यह क्या करती हो?

मैंने सुना है कि एक बड़ा हिंदू महात्मा मरा, जिसका एक ही उपदेश था, कि ब्र
ह्मचर्य ही ब्रह्म को पाने का उपाय है। उसकी बड़ी प्रतिष्ठा थी। उसके मर जाने के
बाद, जो उसका निकटतम शिष्य था, वह विरह न सह सका। दूसरे दिन उसका
भी हार्ट फेल हो गया। वह चला स्वर्ग के मार्ग पर, बड़ा आनंदित कि गुरु के दर्शन
होंगे। और बड़ा आनंदित कि गुरु आनंद भोग रहे होंगे।

और जब स्वर्ग पहुंचा तो देखा, एक वृक्ष के नीचे सूख गयी हड्डियों वाला बूढ़ा गु
रु नग्न पड़ा है। और अमरीका की तभी-तभी मरी हुए मर्लिन मनरो, वहां की बड़
ी अभिनेत्री, जिससे प्रेसिडेंट केनेडी भी चोरी छिपे मिला करते थे, वह उसके गुरु
से लिपटी हुई है। उसने कहा, हे भगवान! आंख खोलूं कि बंद रखूं? रखना तो बंद
ही चाहिए शास्त्र के अनुसार, लेकिन दिल तो आंख खोलकर देखने का होता है।
और हर आदमी तरकीब निकाल लेता है। वह झट से गुरु के चरणों से गिर पड़ा।
और उसने कहा, हे मेरे गुरु, मुझे मालूम ही था कि तुमने ऐसा ब्रह्मचर्य साधा है,
कि तुम्हें इसका परम फल मिलेगा।

इसके पहले कि गुरु कुछ बोलते, मर्लिन मनरो ने कहा, अरे नालायक, यह तेरे गु
रु को पुरस्कार नहीं मिल रहा है, यह मुझे दंड मिल रहा है। यह कम्बख्त न मालू
म कब से नहाया भी नहीं है।

सारे धर्मों की यही व्यवस्था है। इस लोक को विकृत करो, ताकि परलोक में तुम्हा
रे पुरस्कार मिले। मगर यह बिलकुल ही तर्क के विरुद्ध है, गणित के विरुद्ध है। अ
गर परलोक में सुख मिलना है, तो उसका अभ्यास इस लोक में हो जाना जरूरी है

। यह तो एक छोटी-छोटी पाठशाला है, जहां थोड़ा अभ्यास कर लो, फिर परलोक में...।

चार्वाक को चार्वाक मत कहो, चारुवाक कहो। उसके वचन बड़े मीठे हैं। उसकी तो सारी किताबें जला दी गई। उप परंपरा को पूरी की पूरी तरह नष्ट कर दिया गया। लेकिन विरोधों की किताब के चारुवाक का खंडन करने के लिए कुछ-कुछ उद्धरण उपलब्ध होते हैं।

वे उद्धरण भी काफी है कि जिसने भी इस परंपरा को शुरू किया होगा, वह अति प्रतिभा संपन्न व्यक्ति होगा। वह परलोक को और इस लोक को जोड़ रहा है, तोड़ नहीं रहा है। वह जीवन को बांट नहीं रहा है, अखंड बना रहा है। और वह तुम से कह रहा है कि यह लोक भी उसी परमात्मा का है; परलोक भी उसी परमात्मा का है, इन दोनों के बीच विरोधी की खाई बंद होनी चाहिए।

तुम पूछते हो, क्या आप चार्वाक ही होकर रह जाएंगे?

शायद तुम्हें मेरी पूरी जीवन दृष्टि का कोई पता हनीं है। मेरी पूरी जीवन दृष्टि है चार्वाक और गौतम बुद्ध का जोड़ देना। गौतम बुद्ध परलोक है, चार्वाक यही लोक है। चार्वाक भी अधूरा है, अगर परलोक की कोई धारणा न हो। और गौतम बुद्ध भी अधूरे हैं, अगर इस जीवन के प्रति निषेध हो।

मैं जीवन को उसकी सर्वांगीणता में स्वीकार करता हूं। मैं चार्वाक हूं और मैं बुद्धत्व की उस ऊंचाई को भी छुआ है। और मैंने कोई अनुभव नहीं किया है कि उन दोनों में कोई विरोध है। संसार में विरोध हो ही नहीं कसता, क्योंकि यह एक इकट्ठी इकाई है। यहां दो नहीं है। यह एक ही परमात्मा का विस्तार है। परमात्मा के पैर उतने ही जरूरी हैं, जितना कि परमात्मा का सिर। मत काटो परमात्मा को दो हिस्सों में। अन्यथा पैर भी मर जाएंगे और सिर भी मर जाएगा। मैं दोनों को एक साथ दो हिस्सों में। अन्यथा पैर भी मर जाएंगे और सिर भी मर जाएगा। मैं दोनों को एक साथ देखना चाहता हूं। मैं देखना चाहता हूं बुद्ध को जीवन के सारे आनंद, सारी संभावनाओं के साथ और मैं देखना चाहता हूं चारुवाक को स्वर्ग की सारी ऊंचाइयों के साथ।

क्या यह नहीं हो सकता? मैंने तो इसे अपने भीतर होते देखा है, इसलिए अधिकारपूर्वक कहता हूं कि अगर यह मेरे भीतर हो सकता है, यह तुम्हारे भीतर भी हो सकता है।

जीवन को एक अखंड इकाई की तरह स्वीकार कर लेना मनुष्य की प्रतिभा का सबसे महत्वपूर्ण अंग है।

4 अगस्त, 1986, प्रातः, सुमिला, जूहू, बंबई

जीवन बहती गंगा है

मेरे प्राण को आप स्वीकार करें। मेरा प्रश्न ज्योतिष के संवंध में है। ज्योतिष के संबंध में आपके विचार क्या है? क्या इसमें कोई सत्यांश है? क्या आप इसमें विश्वास करते है? क्या यह सच है कि एक ज्योतिषी ने आपके पिताजी से यह भविष्यव

ाणी की थी कि आप सात साल से अधिक जीवित नहीं रहेंगे और यदि जीवित रहे तो आप बुद्ध हो जाएंगे?

मैं जीवित रहा, यह पर्याप्त सबूत है कि ज्योतिष में कोई सत्यांश नहीं है। ज्योतिष मनुष्य की कमजोरी है। मनुष्य की कमजोरी है, क्योंकि वह भविष्य के झांक नहीं सकता और वह देखना चाहता है। वह पथभ्रष्ट होने से सदा भयभीत रहता है। वह आश्वस्त होना चाहता है कि वह ठीक रास्ते पर है। और भविष्य बिलकुल ही अज्ञात है, इसके बारे में कुछ अनुमान नहीं लगाया जा सकता। लेकिन ऐसे लोग हैं जो मनुष्य की कमजोरियां का फायदा उठाने को सदा तत्पर हैं।

जीवन में सिर्फ एक बात निश्चित है, और वह है मृत्यु। सब कुछ अनिश्चित है, संयोगिक है। मनुष्य तो यही चाहेगा कि मृत्यु अनिश्चित हो और बाकी सब सुनिश्चित हो। ज्योतिष जीवन को सुनिश्चित बनाने का मनुष्य का एक प्रयास है।

मुझे एक पुरानी कहानी याद आती है। एक महान सम्राट को स्वप्न आया कि उसके सामने एक काली छाया खड़ी है। यहां तक कि स्वप्न में भी वह भय से कांप उठा। उसने छाया से पूछा, मेरी नींद में मुझे इतना भयभीत करने में क्या सार है? छाया बोली, यह तुम्हारे ही हित में है। मैं तुम्हारी मौत हूं। और कल शाम जब सूरज डूबने लगेगा तब मैं फिर तुमसे मिलने आऊंगी। केवल करुणावश मैं तुम्हें आगाह करने आयी हूं। तुम भले आदमी हो, इसलिए तुम्हारे लिए यह अपवाद किया गया है। मैं लोगों को यह कभी नहीं बताती कि वे कब मरने वाले हैं। तो यदि तुम कुछ करना चाहते हो, तो तुम्हारे पास अब भी बारह घंटे का समय है। तुम्हारी कुछ करने की इच्छा रह गई हो तो कर लो। यह तुम्हारा आखिरी दिन है।

वह इतना घबड़ा गया कि उस घबराहट में उसकी नींद खुल गई। वह स्वप्न खो गया। वह पसीने से तर बतर था। वह स्वप्न नहीं, दुःस्वप्न था और उसके मन में ब. डा संभ्रम था कि इसमें कोई तथ्य है या नहीं? उस आधी रात में उसने राजधानी के सारे ज्योतिषियों को बुलाया--यह जानने के लिए कि उस स्वप्न का मतलब क्या है। वे सब ज्योतिष शास्त्र के विभिन्न मतों के ग्रंथ लेकर आए। और आपसे में चर्चा करने लगे लड़ने लगे।

जब सूर्यो होने के करीब था, उसका बूढ़ा नौकर, जो उसके पिता तुल्य था...क्योंकि जब उसके पिता की मृत्यु हुई थी तब वह बिलकुल छोटा था, और इस बूढ़े नौकर ने उसकी सब तरह से देखभाल की थी, उसकी सुरक्षा की, उसके साम्राज्य का संरक्षण किया, उसका राज्याभिषेक किया। उस बूढ़े आदमी का वह सम्राट बहुत समादर करता था। उस बूढ़े आदमी ने उसके कानों में धीरे से कहा मेरा सुझाव मानें तो...आपने ये जो मूढ़ इकट्ठे किए हैं यहां पर, वे समय के अंत तक किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचे। वे सदियों-सदियों से चर्चा करते रहे हैं। उनकी चर्चा शालीन है। चर्चा करने में उनकी निपुणता वर्णनातीत है। लेकिन अभी आपको उनके प्रकांड पांडित्य की जरूरत नहीं है। इस समय आपको जरूरत है एक खास निर्णय की। और हमारे पास ज्यादा समय नहीं है। मेरा सुझाव तो यह है कि आपके पास विश्व

का श्रेष्ठतम घोड़ा है। यह घोड़ा लो, और कम से कम इस महल से और इस रा जधानी से जितना दूर भाग सको, उतना भाग सको, उतना भाग जाओ।
यह बात राजा को जंच गई। उसने उन ज्योतिषियों को उसी तरह चर्चा करते हु ए छोड़ दिया और वह उस महल से भाग गया। जब तुम्हारे सामने मौत खड़ी हो तो न तुम्हें भूख लगती है, न प्यास लगती है और न ही विश्राम करने की जरूरत महसूस होती है। वह राजधानी से जितना दूर हो सके उतनी दूर भागना चाहता था। उसने अपने राज्य की सीमाएं पार कर लीं। सूरज डूबते डूबते वह एक सुंदर बगीचे में, राज्य से सैकड़ों मील दूर पहुंच गया था। जब वह अपना घोड़ा एक वृक्ष से बांध रहा था, तो उसने घोड़े को धन्यवाद देते हुए कहा, मैं जानता था कि तु म दुनिया के श्रेष्ठतम घोड़े हो, लेकिन आज तुमने इसे सिद्ध कर दिया है। तुम ह वा की गति से दौड़े हो और तुमने मुझे सारे भय से बाहर कर दिया है। जो ये ज योतिषी नहीं कर सके, तह तुमने कर दिखाया।
और ठीक उसी क्षण सूरज डूबा, और अचानक उसने अपने कंधे पर किसी हाथ क ा अनुभव किया। उसने पीछे देखा। वही पुरानी काली छाया, जिसे उसने स्वप्न में देखा था। वहां खड़ी थी। उसने कहा, तुम्हारा घोड़ा तो सचमुच सर्व श्रेष्ठ है। न के वल तुम्हें बल्कि मुझे भी उसे धन्यवाद देना चाहिए। क्योंकि मुझे बड़ी फिकर थी। क्योंकि इसी स्थान में, इसी समय तुम्हें करना था। तुझे चिंता थी कि तुम यहां कि स तरह पहुंचोगे। लेकिन तुम्हारा घोड़ा एक चमत्कार है। वह तुम्हें ठीक जगह, ठी क समय पर ले आया।
तुम्हारे जीवन भर तुम मृत्यु से डरते हो। तुम अपन को उलझाए रखते हो। तुम इ स तथ्य को स्वीकार करना नहीं चाहते कि मौत छाया की तरह तुम्हारा पीछा कर रही है। और कोई नहीं जानता, अगले क्षण क्या होने वाला है। लोग इस तरह जगत में जीते हैं जैसे वे यहां सदा रहने वाले हैं। और वे अच्छी तरह जानते हैं ि क यहां कोई सदा के लिए नहीं है। लेकिन ये सारे भयभीत लोग--मृत्यु से भयभीत , बीमारी से भयभीत, असफलता से भयभीत--धूर्त लोगों के शिकार हो जाते हैं।
ज्योतिष एक शोषण है। और वह तुम्हारा शोषण नहीं करता, तुम्हें एक अहंकारपू र्ण खयाल भी पकड़ाता है। जैसे लाखों करोड़ों प्रकाश वर्ष पूरी के सितारे तुम में र स लेते हों! जैसे उनकी गति तुम्हारे भाग्य को तय करती है आर दिशा देती है। इस भांति एक छोटा सा आदमी भी पूरे विश्व का केंद्र बन जाता है।
ज्योतिषी तुम्हारे अहंकार को तृप्त करते हैं, तुम्हारे भय दूर करते हैं। लेकिन यह विज्ञान नितांत मिथ्या है। इससे तो यह स्मरण रखना बेहतर होगा, उत्साहजनक और आध्यात्मिक भी होगा, कि हम बहुत छोटे हैं। इतने छोटे, जितना कि घास का एक तिनका। और इस तथ्य को ठीक से जान लेना कि यह अच्छा है कि भविष य पूर्व निर्धारित नहीं है; नहीं तो तुम्हें कोई स्वतंत्रता नहीं मिलेगी।
ज्योतिष स्वतंत्रता के विपरीत है। शायद तुमने कभी इन बातों का मेल नहीं किया होगा। यदि कल सुनिर्धारित है तो मैं एक यंत्र हो गया, मानव नहीं। केवल यंत्रों

को ही ज्योतिषियों की सलाह लेनी चाहिए, मनुष्य को नहीं। मनुष्य का भविष्य तो मुक्त है। और मुक्त भविष्य ही स्वतंत्रता देता है—स्वयं का निर्माण करने की स्वतंत्रता। ज्योतिष तुम्हें स्वतंत्रता नहीं देता। वह बड़ी से बड़ी गुलामी है। उसमें हर सूक्ष्म घटना लिखी है। और उसे बदलने का कोई उपाय नहीं है। घटनाएं उसी तरह घटेंगी जैसी कि तय है। उसने आदमी को एक कठपुतली बना रखा है—अंधी शक्तियों के हाथ की कठपुतली।

मैं ज्योतिष की सार्थकता को पूर्णतः अस्वीकार करता हूं क्योंकि मैं हर प्रकार की गुलामी के खिलाफ हूं। मेरा पूरा प्रयास यह है कि तुम्हें तुम्हारी स्वतंत्रता के बोध से भर दूं। यदि ज्योतिष सही है तो गौतम बुद्ध, कबीर, दादू, सम्मान के पात्र नहीं हैं। यह तो पहले से तय था। वे जो हुए, वैसा उन्हें होना था। इसमें उनकी महिमा क्या है? और हत्यारों की भी निद्रा करने की कोई जरूरत नहीं है। जैसे बुद्ध एक कठपुतली हैं, वैसे ही हत्यारा भी एक कठपुतली है। और उन दोनों को नचाने वाले जो हाथ हैं, उनको कोई नहीं जानता। उन हाथों से हमारा कोई परिचय नहीं है।

नहीं, मैं इस निर्धारण को इंकार करता हूं। मैं तुमसे कहना चाहता हूं कि बुद्ध, कबीर और नानक की उपलब्धियां अपनी उपलब्धियां हैं। यह उनका निर्माण है, उनका प्रयास है, उनका संघर्ष है। और इसलिए वे पूरे सम्मान के पात्र है। और हत्यारे, बलात्कारी, अपराधी, ये लोग भी अपने को निर्मित कर रहे हैं। वे स्वयं को बुद्ध भी बना सकते थे लेकिन उन्होंने स्वयं को हत्यारे बनाने का तय किया। पूरी जिम्मेदारी उन्हीं की है। ज्योतिष तुम्हारी सब जिम्मेदारी छीन लेता है। और आदमी से जो भी उसकी जिम्मेदारी छीन लेता है वह चीज खतरनाक है। क्योंकि जिम्मेदारी हमारी हत्या है। जिम्मेदारी हमारी गरिमा है। जिम्मेदारी के बगैर हम सिर्फ यंत्र मानव बनकर रह जाएंगे। जिम्मेदारी के साथ मनुष्य की स्वतंत्रता का उदय होता है।

ज्योतिष का कोई विज्ञान नहीं है, और न कभी हो सकता है। वह मनुष्य के आध्यात्मिक विकास के खिलाफ है, मनुष्य की स्वतंत्रता के खिलाफ है, मनुष्य की मनुष्यता के खिलाफ है।

हस्तरेखा विज्ञान के संबंध में आपका क्या खयाल है? इन रेखाओं का क्या मतलब होता है?

इन रेखाओं का भविष्य से कोई संबंध नहीं है। हम तुम्हारे दोनों हाथ काट सकते हैं, फिर भी तुम्हारा भविष्य होगा। हम प्लास्टिक सर्जरी करके तुम्हारी पूरी चमड़ी बदल सकते हैं, फिर भी भविष्य होगा। ये रेखाएं केवल तुम्हारे हाथ में मोड़ने के कारण बने हुए निशान हैं। लेकिन हम गैर जिम्मेदार होना चाहते हैं गहरे में हम नाचते हैं कि कोई हमारी जिम्मेदारी ले, कोई परमात्मा तुम्हारी जिम्मेदारी ले और तुम्हारी तकदीर लिखे।

भारत में तुम हाथ की रेखाएं पढ़ते हो लेकिन कभी तुमने पैर की रेखाएं पढ़ी हैं? तुम उनकी उपेक्षा क्यों करते हो? लेकिन इस पृथ्वी पर कुछ ऐसे आदिवासी भी हैं हो हाथ की रेखाएं नहीं पढ़ते, बल्कि पैर की रेखाएं पहुंचते हैं। और उससे वे स ोचते हैं कि वे अंधेरे में अपना भविष्य टटोलने की कोशिश कर रहे हैं। और ये सि र्फ मूढ़ मान्यताएं हैं। और तुम इसे सब कहीं घटता हुआ देख सकते हो। कई तरह से तुम इसके उपाय करते हो।

हम कुंडली तैयार करते हैं, और उस कुंडली के अनुसार हम तय करते हैं कि कौ न सा पुरुष उपयुक्त है किस स्त्री से शादी के लिए। तुम्हारी सारी कुड़लियां गलत सिद्ध हुई है क्योंकि किसी का किसी से मेल होता दिखाई नहीं पड़ता।

मुझे आज तक ऐसा पति नहीं मिला जो पत्नी से खुश है। वह दूसरे की पत्नी के साथ खुश हो सकता है, लेकिन उन दूसरों की पत्नियों से उसकी कुंडली मेल नहीं खाती। मुझे ऐसी एक भी स्त्री हनीं दिखाई दी जो अपने स्वयं के पति से खुश हो । लेकिन बड़े बड़े ज्योतिषी पंडित हस्तरेखा शास्त्री, इन लोगों ने तय किया था।

मैं कुछ दिनों तक रायपुर में रहा। ठीक मेरे सामने ही एक ज्योतिष था, जो रायपु र में सर्वश्रेष्ठ था। उसकी फीस बहुत महंगी थी। और प्रतिदिन उसके पास लोगों की भीड़ आती जो अपने बेटों की, बेटियों की शादियों के बार में पूछती थी। एक दिन मैंने उससे कहा कि तुम बाकी लोगों के भविष्य तय करते हो, तुम्हारा अपने बार में क्या खयाल है? क्योंकि उसकी पत्नी उसे पीटती थी। उसने कहा, यह सब व्यवस्था है। मैं नहीं जानता कि इन रेखाओं का क्या अर्थ होता है। उनका कोई अर्थ ही नहीं होता। क्योंकि मैं अपने जीवन भर मेल करता रहा, कोई मेल नहीं ह ोता।

लेकिन इस सो खेल के पीछे एक गहन प्यास है–कि अपनी जिम्मेदारी न लेनी पड़े। और जो आदमी अपनी जिम्मेदारी उठाने के लिए तैयार नहीं है, उसने आदमी हो ने से ही इनकार कर दिया। वह मनुष्य की गरिमा से नीचे गिर गया।

मैं रायपुर से कुछ दूर, बिलासपुर में था। एक ज्योतिषी मेरा हाथ रखने के लिए, मेरी कुंडली देखने के लिए बड़ा उत्सुक था। मैंने कहा, मेरे पास कोई कुंडली नहीं है लेकिन मेरे हाथ तुम देख सकते हो। लेकिन इससे पहले कि तुम मेरा हाथ देख ो, अपना हाथ ठीक से देख लो। उसने पूछा, क्यों? मैंने कहा, वह बाद में तय करें गे। उसने काफी मेहनत की, अपने शास्त्रों मग देखा और फिर कई बातें कहीं। मैंने कहा : धन्यवाद। उसने पूछा, मेरी फीस का क्या? मैंने कहा, मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि मेरा हाथ देखने से पहले अपना स्वयं का हाथ देखो–यह आदमी मेरी फीस देने वाला नहीं है। अगर तुम इतनी छोटी सी और इतनी जरूरी बात की भविष्यवाणी नहीं कर सकते, तो फिर बाकी सब अर्थहीन हो जाता है।

मनुष्य एक कोरे कागज की तरह पैदा होता है–एक साफ, अलिखित स्वतंत्रता। औ र यही उसकी गरिमा है।

कुत्ता सिर्फ कुत्ता हो सकता है और कुछ भी नहीं—यह निर्धारित है। कुत्ते की नियति होती है। तुम्हारे सब ज्योतिषी को कुत्ते, बल्लियां और सभी तरह के प्राणियों की ओर ध्यान देना चाहिए। उनका एक सुनिश्चित स्वभाव होता है। यदि तुम भैंस का अध्ययन करो, तो तुम्हें दिखाई देगी कि वह सब तरह की घास भी नहीं खाएगी...एक खास तरह की घास।

मनुष्य जानवरों से ऊपर उठ गया है। और मनुष्य का मूलभूत विकास यह है कि उसने तमाम अंधी बेड़ियों से स्वयं को मुक्त कर लिया है। वह जैसा चाहे जैसा अपने को निर्मित करने के लिए स्वतंत्र है। उसे हर तरह का अवसर उपलब्ध है। वह चेतना के उच्चतम शिखर को छू सकती है। और वह अंधकार की निम्रतम खाई में गिर सकता है। वह स्वर्ग और नर्क, दोनों ही अपने में लिए रहता है। लेकिन उसको छोड़कर, दूसरा कोई भी उसके संबंध में निर्णय नहीं ले सकता : और न ही उसके संबंध में कोई भविष्यवाणी कर सकता है।

अभी बंबई में कुछ मित्र एक महान और प्रसिद्ध ज्योतिषी को ले आए। मैंने उस ज्योतिषी से कहा कि तुम आज से लेकर सिर्फ एक वर्ष तक की भविष्यवाणी कर सकते हो। और मैं तुम्हें लिख कर देता हूं कि तुम जो भी भविष्य बनाओगे, मैं उसके बिलकुल ही खिलाफ वर्तन करूंगा। यहां तक कि यदि कहोगे कि मैं पूरा जीवन जीऊंगा, तो मैं मर जाऊंगा। लेकिन मैं किसी तरह की गुलामी को सहारा नहीं दूंगा।

वह आदमी उन लोगों की तरफ देखने लगा, जो उसको ले आए थे। और उनसे कहा, तुम मुझे कहां ले आए हो? यह आदमी खतरनाक है। अगर इससे आत्महत्या कर ली तो मैं पकड़ा जाऊंगा, कि जब इन्होंने कहा था कि तुम जो लिखोगे मैं उसने ठीक उल्टा कर दिखाऊंगा, तो तुमने ऐसा लिखा ही क्यों?

मैंने कहा, एक छोटे से प्रयोग के लिए तुम कह सकते हो कि आप मुझे चांटा नहीं मारेंगे, और मैं तुम्हें अभी चांटा मारता हूं। और उससे मामला तय हो जाएगा। वह आगबबुला हो गया। मैंने कहा, इसका कोई सवाल नहीं है। सवाल इस बात का है कि मेरे कृत्य हैं। और मैं अपने कृत्यों की पूरी जिम्मेदारी लेता हूं। अच्छे हों या बुरे, लेकिन मैं उन्हें ईश्वर या किस्मत या नियति के कंधों पर डालना नहीं चाहता हूं। यह सब बकवास है। अब समय आ गया है। कि हम इनसे मुक्त हो जाएं। इसी तरह से यह देश गरीब रहा है। क्योंकि तुम क्या कर सकते हो, तुम्हारी गरीबी तुम्हारे सितारों में लिखी है। तुम बढ़ती हुई आबादी को रोक नहीं सकते। तुम कर ही क्या कसते हो—बच्चे तो परमात्मा की भेंट हैं।

तुम किसी भी बात के लिए किसी तरह की जिम्मेदारी नहीं लेते। और जिम्मेदारी के बिना कोई स्वतंत्रता नहीं है। और जिम्मेदारी के बिना तुम जानवरों के तल पर आ गिरते हो, मनुष्य के नहीं। ज्योतिष जानवरों के लिए है, मनुष्य के लिए नहीं।

आपकी दृष्टि हमेशा बदलती रहती है, स्थिर नहीं है। तो आज इस क्षण में, महाव ीर और कृष्ण, मोहम्मद और क्राइस्ट इनके बारे में आपके क्या विचार हैं, क्या दृष्टि ट हैं?

जीवन स्थिर नहीं है। अस्तित्व में सिर्फ एक चीज है जो कभी परिवर्तित नहीं होता , और वह है : परिवर्तन। मैं कोई पत्थर नहीं हूं। मैं गतिमान हूं, मैं बदलता हूं—ये जीवंतता के लक्षण हैं। लेकिन मैं हमेशा श्रेष्ठतर के लिए बदलता हूं।

मैं बुद्ध, महावीर, कृष्ण, इन लोगों से प्रेम करता हूं। लेकिन मेरा प्रेम अंधा नहीं है। मैं भी देख सकता हूं कि इन लोगों ने चेतना के उत्तुंग शिखर छुए हैं। लेकिन इन लोगों ने बहुत गंभीर गलतियां भी की हैं। और जब छोड़ा आदमी एक गलती करता है तो वह गलती भी छोटी होती है। और जब महावीर, बुद्ध और कृष्ण की ऊंचाई के लोग गलतियां करते हैं, तो वह गलती भी उस व्यक्ति जितनी ही बड़ी होती है।

मैं उनसे प्रेम करता हूं क्योंकि उन्होंने बहुत महान प्रयास किया, बहुत भारी प्रयास किया, अचेतन के अंधकार से बाहर आने का—प्रकाश की ओर जाने का। लेकिन उस मार्ग में उन्होंने कुछ गलतियां भी कीं। और मुश्किल यह है कि उनके पीछे च लने वाले ये लाखों लोग, उनकी चेतना की ऊंचाई तक तो नहीं पहुंच सकते, लेकि कन उनकी गलतियों के शिकार आसानी से हो सकते हैं। क्योंकि गिरना सरल है, चढ़ना बहुत मुश्किल है। यह किसी दुर्गम पर्वतारोहण की तरह है। लोग सोचते हैं कि आदमी या तो अच्छा है या बुरा। लोग हमेशा यह या यह की भाषा में सोचते हैं। यह ठीक नहीं है। एक बुरे आदमी में कुछ महान और सुंदर बात हो सकती है। और एक अच्छे आदमी में कोई कुरूप और निंदनीय बात हो सकती है। लेकिन उससे कोई फर्क नहीं पड़ता है।

तो पहले तो बात स्पष्ट हो जाए कि मैं यह या वह की भाषा में नहीं सोचा। मैं समग्र व्यक्ति को देखता हूं। उसमें जो अच्छा है, उसकी मैं प्रशंसा करता हूं। लेकि न इसका यह मतलब नहीं है कि उसकी बुराई के प्रति मैं अंधा हो जाता हैं।

कृष्ण का उदाहरण लें। पृथ्वी ने आज तक जितने लोग पैदा किए हैं, उनमें वे सब से प्यारे व्यक्ति हैं। वे अकेले व्यक्ति हैं जिनका धर्म संगीत, नृत्य और प्रेम से भरपू र है। मैं इस बात का प्रशंसक हूं। लेकिन वे भारत के सबसे बड़े युद्ध—महाभारत— के कारण भी बने। इससे मैं राजी नहीं हो सकता। और कभी-कभी तो महात्मा अ ांधी जैसे लोग भी बिलकुल अंधे हो सकते हैं। तुम इसे देख सकते हो, यह इतना स्पष्ट है।

महात्मा गांधी अहिंसा की शिक्षा देते हैं और गीता को अपनी माता कहते हैं। और गीता एकमात्र शास्त्र है, जो हिंसा सिखाता है। और गांधी को उनके पूरे जीवन में किसी ने नहीं कहा कि बात बिलकुल असंगत है। यदि तुम कृष्ण के साथ हो, तो तुम अहिंसा के प्रवर्तक नहीं हो सकते। वस्तुतः अर्जुन अहिंसा होने की कोशिश कर रहा था। वह युद्ध भूमि छोड़ देना चाहता था यह देखकर कि लाखों लोग मारे

जाएंगे। और इन लाखों लोगों की कब्रों पर यदि मैं स्वर्ण सिंहासन पर भी विराज मान हो जाऊं, तो उसमें कौन सा आनंद होगा? वह एक कब्रिस्तान होगा उससे त ो बेहतर होगा कि मैं हिमालय चला जाऊं, ध्यान करूं और असली स्वर्ण सिंहासन पा लूं, तो लोगों की हत्या पर निर्भर नहीं करता।

गीता में, कृष्ण से कहीं अर्जुन ज्यादा धार्मिक प्रतीत होता है। वह तो कृष्ण ही है, जो उसे फुसलाए जाते हैं, उसे लड़ने के लिए प्रेरित करने के तर्क दिए जाते हैं। पूरी गीता और कुछ नहीं है सिवाय इसके कि अर्जुन युद्ध से प्रेरित करने के तर्क ि दए जाते हैं। पूरी गीता और कुछ नहीं है सिवाय इसके कि अर्जुन युद्ध से बचने क ी कोशिश करता है और कृष्ण हर तरह से उसे लड़ने के लिए राजी करते हैं। अ ौर अंततः जब वह बौद्धिक रूप से अर्जुन को मना नहीं सके तब वे अतार्किक ढंग से कोशिश करते है कि यह परमात्मा की इच्छा है। क्योंकि परमात्मा की इच्छा के बिना पता भी नहीं हिलता। तो तुम इस जिम्मेदारी को इतनी गंभीरता से मत ल ो। परमात्मा चाहता है कि युद्ध हो। यह उसका निर्णय है।

अगर मैं अर्जुन की जगह होता तो मैं तत्क्षण छोड़ देता और कृष्ण से कहा कि मु झे परमात्मा कह रहा है कि युद्ध करना छोड़ दो; यह उसका निर्णय है। और मैं आपकी क्यों सुनूं? आप कोई परमात्मा के और मेरे बीच मध्यस्थ नहीं है। मुझे को ई मध्यस्थ नहीं चाहिए। मुझे लड़ना नहीं है। आप सिर्फ सारथी हैं। परमात्मा मुझ से भी बोल रहा है।

और मैं तुमसे कहता हूं, अर्जुन जो कह रहा था वह कृष्ण के वक्तव्य से, परमात्मा के अधिक करीब था। लेकिन कृष्ण ज्यादा तार्किक थे, ज्यादा बौद्धिक थे। और अ र्जुन उनका सम्मान करता था। और जब उन्होंने कहा, यह परमात्मा की इच्छा है, उसको समर्पण करो, तो उस बेचारे ने समर्पण कर दिया। और करोड़ों लोग मारे गए।

और महाभारत के युद्ध के बाद भारत ने अपनी सारी गरिमा खो दी। इसकी पूरी जिम्मेदारी कृष्ण की है। भारत की रीढ़ ही टूट गई। वह बौनों का देश हो गया। अ ौर महाभारत का अनुभव इतना भीषण था कि उसकी प्रतिक्रिया के बतौर, अन्यथा भारत एक था, उसकी प्रतिक्रिया के रूप में, जैन और बौद्ध धर्म पैदा हुए, जिन्हों ने अहिंसा की शिक्षा दी। क्योंकि हिंसा हमने देख ली थी। उसने सारे देश को, उस की गरिमा को नष्ट कर दिया। स्वभावतः मन घड़ी के पेंडुलम की तरह एक अति से दूसरी अति पर घूमता है।

मैं कोई अतिवादी नहीं हूं। मैं गौतम बुद्ध की प्रशंसा करता हूं, महावीर का प्रशं सा करा हूं, लेकिन उनकी अतियों का प्रशंसक नहीं हूं। क्योंकि पहले कृष्ण ने देश को विनाश की आंधी में ढकेला, फिर उन लोगों ने अहिंसा के नाम पर एक तरह की नपुंसकता पैदा की। दो हजार साल तक तुम गुलाम बने रहे। कौन जिम्मेदार है ? तना विशाल देश—छोटी छोटी जातियां आईं और तुम पर शासन किया! क्योंकि अहिंसा तुम्हारा अभीप्सित लक्ष्य बन गया। प्रज्ञावान पुरुष मध्य में ठहरता है। वह

किसी की हिंसा नहीं करता, लेकिन किसी को स्वयं की हिंसा भी नहीं करने देता। क्योंकि दोनों हालत में वह हिंसा को सहारा दे रहा है।
इस घटना के फल स्वरूप सिक्ख धर्म पैदा हो गया, जो ठीक मध्य में। केवल हिंसा को या अहिंसा को आदर्श मानकर ऊंचा उठाने का कोई सवाल ही नहीं था। लेकिन उसने मनुष्य को एक अंतदृष्टि दी विध्वंसक होना बुरा है; जीवन को नष्ट करना बुरा है। लेकिन दूसरे को तुम्हें नष्ट करने देना भी उतना ही बुरा है। तो दूसरों के साथ हिंसक मत होओ, लेकिन अगर कोई तुम्हारे साथ हिंसक हो रहा है तो तुम्हारी तलवार तैयार रहे। उसे साथ रखे रहो। सिक्ख धर्म ने इस बात की फिकर की कि जो पांच चीजें सिक्ख धर्म की आधारभूत साधन हैं, उनमें तलवार एक रहे। यह तलवार किसी को काटने के लिए नहीं है बल्कि लोगों को इस बात की चेतावनी देने के लिए हैं, कि हम घास पात नहीं हैं, कि तुम हमें काटते जाओ और हम कुछ न कहेंगे।
मैं महावीर का प्रशंसक हूं। आत्मा की खोज में उनकी बराबरी का आदमी खोजना मुश्किल है... असीम शक्तिशाली व्यक्ति थे। लेकिन फिर वे दूसरी अति पर चले गए। अपरिग्रह अच्छी बात है, क्योंकि तुम्हारा सब संग्रह अंततः तुम्हारी चिंता का कारण बन जाता है। और उसका कोई अंत नहीं है। तुम इकट्ठा किए जाते हो, और मन अधिक और अधिक की मांग करता रहता है।
महावीर राजकुमार थे। उनका राज्यारोहण होने वाला था। उत्तराधिकारी बनने वाले थे। उन्होंने राज्य दौड़ दिया। मुझे उस पर कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन चीजों को अति पर मत ले जाओ। अगर तुम कोई चिंता या तनाव नहीं चाहते हो, तो राज्य त्याग बिलकुल उचित है। और राज्य का अनुशासन निरंतर चिंता, तनाव और पीड़ा का कारण बनता है। तुम्हें शांति और मौन की खोज है, और तुम अपनी समस्त ऊर्जा आंतरिक विकास में लगाना चाहते हो, यह बात समझ में आती है। लेकिन उसके लिए नग्न रहना... मैं इसका पक्ष नहीं ले सकता।
कपड़े कोई इतनी चिंता का कारण नहीं हैं। मैं कपड़ों का उपयोग करता रहा हूं और मुझे उससे कोई अड़चन नहीं आई। तो मैं नहीं सोचता, तुम भी कपड़ों का उपयोग करते आए हो, लेकिन मैं नहीं सोचता कि तुम्हारी आध्यात्मिक प्रगति में बाधा डालते हैं। उल्टे, ठंड में तुम कपड़े न पहनो तो उससे तुम्हारी साधना में रुकावट आ सकती है क्योंकि तुम्हारे भीतर तनाव पैदा होगा।
लेकिन महावीर इतनी अति पर चले गए कि वे कोई उपकरण काम में नहीं लाएंगे। यहां तक की अपनी दाढ़ी या बाल बनाने के लिए उस्तरे का उपयोग भी नहीं करेंगे। अब उस्तरा कोई अणु बम तो नहीं है। उन्होंने आपने बाल उखाड़ने शुरू किए। अब यह मूढ़ता है। और मैं यह सैद्धांतिक रूप से कहना चाहता हूं कि प्रतिभाशाली व्यक्ति में भी ऐसा अंश हो सकता है, जो मूढ़तापूर्ण है। प्रति वर्ष वे अपने बाल हाथ से उखाड़ेंगे क्योंकि वे किसी उपकरण का उपयोग नहीं कर सकते। और मुझे उसमें कोई आध्यात्मिक नहीं दिखाई देती।

जब भी मैं कोई ऐसी बात देखता हूं जो चेतना कि विकास में सहयोगी हो, तो मैं उसके पक्ष में होता हूं। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह मोहम्मद से आती है या मोजेस से, या महावीर से। आदमी गौण है, चेतना का विकास महत्वपूर्ण है। लेकिन एक संतुलन होना चाहिए। अन्यथा पेंडुलम स्वाभाविक रूप से दूसरी अति पर जाता है।

मोहम्मद ने अपने धर्म को नाम दिया इस्लाम। इस्लाम शानी शांति। और दुनिया में इस्लाम ने जितना उपद्रव पैदा किया है, उतना किसी धर्म ने नहीं किया। निश्चित ही, मोहम्मद उसके लिए जिम्मेदारी होंगे। उन्होंने अपनी तलवार पर लिख रखा था, शांति मेरा संदेश है—यह कोई तलवार पर लिखने की बात नहीं है। क्योंकि तलवार शांति का संदेश नहीं है। ज्यादा से ज्यादा वह सुरक्षा बन सकती है, लेकिन संदेश नहीं बन सकती। वे आदमी बड़े प्यारे थे। बहुत व्यावहारिक और प्रयोगत्मक थे। और अगर देशों में उन्होंने देखा कि वहां निरंतर युद्ध चलते थे और वे स्वयं सतत युद्ध में उलझे रहते थे, तो पुरुष मारे जाते थे, और पुरुषों और स्त्रियों का अनुपात बड़ा विचित्र हो गया था।

प्रकृति एक संतुलन बनाए रखती है। प्रकृति में स्त्रियों की और पुरुषों की संख्या करीब-करीब समान होती है। यह इस बात का निदर्शक है कि प्रकृति एक प्रतीक है। तुम बच्चों की जन्म दर की चांज करो तो तुम्हें आश्चर्य होगा। 110 लड़के पैदा होते हैं और 100 लड़कियां पैदा होती हैं। तुम कहोगे, यह बात जरा अजीब मालूम पड़ती है। शायद तुम सोचोगे कि पुरुष श्रेष्ठ है इसलिए 110 लड़के पैदा होते हैं और स्त्री कनिष्ठ है इसलिए 100 लड़कियां पैदा होती हैं। लेकिन ऐसा नहीं है। तथ्य तो इससे बिलकुल उल्टा है। पुरुष कमजोर होते है और स्त्री ताकतवर होती है—मांसपोशियों की दृष्टि से नहीं कह रहा हूं। तो जब तक ये लड़के विवाह की उम्र के योग्य बनते हैं तब तक ये लड़के विवाह की उम्र के योग्य बनते हैं तब तक वे अतिरिक्त 10 लड़के मर चुके होते हैं। लेकिन 100 लड़कियां अभी भी जिंदा होती हैं। तो विवाह के समय ठीक 100 लड़के और 100 लड़कियां होती हैं।

प्रकृति की अपनी प्रज्ञा है। स्त्रियां पुरुषों से पांच साल अधिक जाती हैं। लेकिन पुरुष का अहंकार बड़ी विचित्र है। कोई पुरुष अपने से पांच साल बड़ी स्त्री से विवाह करने को राजी नहीं होता। हर देश में लोग चाहते हैं कि लड़कियां लड़कों से कुछ साल छोटी हों। अगर लड़का 25 साल का है तो लड़की 20 की होनी चाहिए। पर यह पूर्णतः प्रकृति के खिलाफ हैं। 5 साल लड़की ज्यादा जीने वाली है लड़के से। तो जब लड़का 75 साल का होगा तब वह मरेगा, और उसकी पत्नी सिर्फ 70 साल की होगी। और वह व्यर्थ ही बुढ़ापे के दस साल पीड़ा और एकाकीपन से भरे हुए बिताएगी।

अपने से चौदह साल बड़ी स्त्री से शादी करके मोहम्मद ने बहुत हिम्मत का काम किया। बात थोड़ी विचित्र लगती है लेकिन प्रकृति से अधिक मेल खाती है। और चूंकि स्त्रियां चार गुना ज्यादा थी, परिस्थिति बहुत खतरनाक थी। अगर प्रत्येक पुरुष

एक ही स्त्री से शादी करता तो बाकी जो 3 स्त्रियां बचतीं, उनका क्या होता? वे वेश्या बनेंगी। क्योंकि तुमने उन्हें कोई और शिक्षा नहीं दी है। तुमने उन्हें कोई आर्थिक स्थिरता नहीं दी है। तो मोहम्मद ने यह तय किया कि हर पुरुष 4 या 5 स्त्रियों से शादी कर सकता है। यह बड़ी सुंदर व्यवस्था थी। उन्होंने खुद नौ स्त्रियों से शादी की। लेकिन उससे उनके अनुयायियों को जैसे अनुज्ञा मिल गई। हैदराबाद के निजाम की पांच सौ पत्नियां थी। क्योंकि चार या चार से ज्यादा...फिर उसकी कोई सीमा नहीं है।

मोहम्मद पढ़े लिखे नहीं थे। उनके पास यह समझ नहीं थी कि वे जो कर रहे हैं, उसकी गलत ढंग से व्याख्या की जा सकती है। उन्होंने सोचा भी नहीं होगा कि उ नके अनुयायी पांच सौ औरतों से शादी करने लगेंगे। और अब जब अनुपात बराबर हैं, स्त्रियों और पुरुषों की संख्या समान है, इसलिए मोहम्मद के खयाल का निषेध होना चाहिए और उसे स्वीकृति किया जाना चाहिए। वह उस समय, चौदह सौ स ाल पहले ठीक था, लेकिन आज नहीं।

ये सारे महापुरुष, जो इस पृथ्वी पर हुए, उनके प्रति मेरा दृष्टिकोण इतना ही है: उनमें हमारे लिए जो संगत है उसे चुनें और असंगत है उसे छोड़ दें।

इस्लाम धर्म उस दंश में पैदा हुआ था जो ज्यादा सुसंस्कृत नहीं था। उसे सिर्फ एक ही तर्क मालूम था--तलवार का तर्क। और तलवार कोई तर्क नहीं है। और इस्ला म धर्म ठीक उसी बिंदु पर अटका रह गया है, जहां मोहम्मद छोड़ गए थे। क्योंकि कहा है, और मैं उसका निषेध करता हूं, कि मैं अल्लाह का आखिरी पैगंबर हूं; ि क अल्लाह के पूर्ववर्ती संदेशों में कुरान अंतिम सुधार है। अब इसके बाद कोई औ र पैगंबर नहीं होगा और अन्य कोई परिवर्तन नहीं होंगे।

अब यह धर्मांधता है। और यह किसने कहा है कि इसको कोई सवाल नहीं है--बात ही गलत है। जीवन विकसित होता रहेगा और लोगों को नए संदेशों की जरूरत पड़ेगी और नए लोगों की जरूरत पड़ेगी जो नई समस्याओं का हल खोजेंगे। और कुरान कोई बहुत बड़ा धर्म ग्रंथ नहीं है। उसमें उपनिषद की वह उड़ान नहीं है। उ समें गौतम बुद्ध की विचार संपदा नहीं है। लेकिन यह स्वाभाविक भी था क्योंकि मोहम्मद अशिक्षित लोगों से बोल रहे थे। लेकिन वे अशिक्षित लोग अब भी वही ढ ोए चले जा रहे हैं। एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ में कुरान। या तो कुरान को स्वीकार करो या तलवार को।

भारत में जो मुस्लिम रहते हैं, जिन मुस्लिम लोगों ने पाकिस्तान निर्मित किया है, उन्हें बौद्धिक रूप से यह बात स्वीकृत नहीं है कि वे जिस धर्म को छोड़ रहे हैं, उ ससे इस्लाम धर्म कोई अधिक श्रेष्ठ धर्म है। उनसे जबरदस्ती की जा रही है। और कम से कम धर्म के मामले में जोर जबरदस्ती नहीं की जा सकती है, नहीं होनी चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को अपना दर्शन अभिव्यक्त करने की छूट होनी चाहिए। औ र प्रत्येक व्यक्ति को उसे स्वीकार या अस्वीकार करने की छूट होनी चाहिए। उसक

ा अस्वीकार करना उसका अपमान नहीं है। धर्म केवल स्वतंत्रता की आबोहवा में ि वकसित होता है। इस्लाम ने खुद मुस्लिमों को भी यह स्वतंत्रता नहीं दी है।

मेरी बातों से लोग पशो पेश में पड़ जाते हैं क्योंकि मैंने जो कल कहा था वह मैं शायद आज नहीं कहूंगा। और जो मैं आज कह रहा हूं शायद वह कल नहीं कहूंगा। क्योंकि मैं जीवित व्यक्ति हूं। मैं मुर्दा नहीं हूं। जब मैं मर जाऊं तभी तुम्हें मेरे साथ सुविधा हो सकती है, अन्यथा नहीं। तुम्हारी हाथ में जो भी आता है उसे जल दी से पकड़ लेना चाहते हो। और फिर तुम उसे बदलना नहीं चाहते। भय! लेकिन जीवन बहती गंगा है। वह बहता रहता है। और प्रामाणिक आदमी सदा नदी की भांति होता है। सिर्फ मृत लोग तालाब की भांति होते हैं। उनका पानी भाप बन ज ाता है, वे ज्यादा से ज्यादा कीचड़ से भर जाते हैं। और वे मुर्दा हैं क्योंकि वे बहते नहीं है।

लेकिन आज मैं जो भी कह रहा हूं वे कल असंगत होनेवाला नहीं है। वह आज से कहीं अधिक बेहतर और श्रेष्ठतर होगा। लेकिन उस श्रेष्ठतर और बेहतर को सम झने के लिए तुम्हें उस ऊंचाई तक उठना होगा, नहीं तो वह असंगत मालूम पड़ेगा।

मैं एक सरल सहज आदमी हूं। मेरे पास कोई सिद्धांत नहीं है, न कोई मत है। मेरे पास सिर्फ एक स्पष्टता है। और मेरे पास देखने की आंखें है। और जब मैं देखता हूं कि परिवर्तन जरूरी है, तब मैं फिकर नहीं करता कि इसके मेरे लिए क्या पि रणाम होंगे। इसीलिए सारी दुनिया में व्यर्थ ही मेरी निंदा हो रही है। क्योंकि अगर मैं जीसस के खिलाफ कुछ कहता हूं तो ईसाई क्रोधित हो उठते हैं।

तुम्हें आश्चर्य होगा, मैं कुछ पहले जीसस पर बोला, तब यूरोप और अमेरिका के बहुत से ईसाई प्रकाशन उसे प्रकाशित करने को उत्सुक थे। उन्होंने उसे प्रकाशित भी किया। इंग्लैंड की एक ईसाई प्रकाशन संस्था ने दस किताबें प्रकाशित कीं।और अभी कुछ दिन पहले मुझे उनका पत्र मिला, कि आप जो कह रहे हैं उसे अब हम प्रकाशित नहीं कर सकते। मैंने कहा, मैं जो कह रहा हूं उसे तो तुमने कभी प्रका शित किया ही हनीं। तुम केवल इसलिए प्रकाशित कर रहे थे, क्योंकि मैंने जीसस क्राइस्ट के उज्जवल पक्ष को उजागर किया। अब मैं उस चित्र को पूरा कर रहा हूं। उनका दूसरा पहलू भी तुम्हें दिखाना है। और तुम्हारे पास वह दूसरा पहलू देखने का साहस नहीं है।

मेरी आलोचना में किसी की निंदा नहीं होती। सवाल यह है कि वह सत्य के निक ट आता है या नहीं। और सत्य पर किसी का एकाधिकार नहीं है। सत्य इतना वि राट है और हम इतने क्षुद्र है। सत्य के इतने पहलू होते हैं, और एक समय हम ि सर्फ एक ही पहलू देख सकते हैं, तुम जब दूसरा पहलू देखते हो, तो यदि तुम डर पोक होगे तो तुम चुप रह जाओगे। क्योंकि लोग कहेंगे कि तुम अपना दृष्टिकोण ब दल रहे हो। मैं किसी दृष्टिकोण से, किसी सिद्धांत से बंधा नहीं हूं। मेरे दर्शन में जो भी आता है उसे मैं तुम्हें बांटना चाहूंगा।

मैं नहीं चाहता कि तुम मुझसे सहमत होओ। मैं यह भी नहीं चाहता कि तुम मुझ से असहमत होओ। मैं केवल इतना ही चाहता हूं कि तुम खुले रहो, उपलब्ध रहो, मेरी बात सुनने के लिए तैयार रहो, यदि उसमें कोई सत्य है तो वह तुम्हारे हृदय तक पहुंचेगा। यदि उसमें कोई सत्य नहीं है तो वह अपने आप गिर जाएगा, तुम्हारे हृदय तक नहीं पहुंचेगा।

आप महाविद्यालय में प्राध्यापक थे, और आज भी आप शिक्षक हैं गुरु। आप हमारे विद्यालयों और महाविद्यालयों में किस तरह की शिक्षा प्रणाली लाना चाहेंगे?

मैं अध्यापक रहा हूं। और विश्वविद्यालय में मैंने पढ़ना छोड़ दिया है क्योंकि मैं अपनी अंतरात्मा के विपरीत कुछ भी नहीं कर सकता। और तुम्हारी पूरी शिक्षा प्रणाली मनुष्य की सहायता करने के लिए नहीं है, उसे पंगु बनाने के लिए है। तुम्हारी शिक्षा प्रणाली न्यस्त स्वार्थी को मजबूत करने के लिए बनी है। मैं यह करने मैं असमर्थ था। मैंने इसे करने से इनकार कर दिया।

वास्तविक शिक्षा विद्रोही होगी, क्योंकि उसकी भविष्य की ओर होंगी, अतीत की ओर नहीं। प्रकृति ने तुम्हारे सिर में पीछे की और आंखें नहीं दी है। अगर प्रकृति यही चाहती कि तुम पीछे की ओर देखते रहो तो उसने तुम्हें आगे की ओर देखने के लिए व्यर्थ ही आंखें दीं।

भारत की शिक्षा प्रणाली वही है, जो अंग्रेज सरकार ने भारत के मन पर थोपी है। उनका उददेश्य केवल क्लर्क और गुलाम पैदा करने का था। और वही शिक्षा प्रणाली चलती है क्योंकि आज जो ताकत में हैं, अब वे क्लर्क और गुलाम तैयार करना चाहते हैं। कोई नहीं चाहता कि सत्य बोला जाए। भविष्य का निर्माण करने में किसी का रस नहीं है, बल्कि सभी अतीत का शोषण करना चाहते हैं।

मैं चाहता हूं कि शिक्षा सरकार की अनुगामिनी न हो। शिक्षा इस सड़े हुए समाज की परिपुष्टि न करे बल्कि मनुष्य के प्रति, विकासमान बच्चों के प्रति समर्पित हो।

मनुष्य का शरीर है, लेकिन शिक्षा मनुष्य के शरीर के लिए कुछ नहीं करती। जब कि हम जानते हैं कि मनुष्य का शरीर शक्तिशाली, स्वस्थ और युवा बना रहने के लिए प्रशिक्षित किया जा सकता है। लेकिन शरीर की किसी को फिक्र ही नहीं है। शिक्षा में ऐसा कोई कार्यक्रम नहीं है।

मनुष्य का मन है, लेकिन शिक्षा सिर्फ इसकी फिकर करती है कि सत्ताधारीयों की सेवा करने के लिए मन को संस्कारित किया जाए, ताकि वह वह उनकी खिदमत कर सके। यह मनुष्यता के खिलाफ है। मन को स्वच्छ, पैना और बुद्धिमान बनाना चाहिए। लेकिन बुद्धिमान मन कोई नहीं चाहता। प्रखर चेतना कोई नहीं चाहता। ये खतरनाक बातें है। क्योंकि वे किसी भी मूढ़ता के आगे सिर नहीं झुकाएंगे। शिक्षा को इस अर्थ में विद्रोही होना चाहिए कि आदमी के पास अपने बल पर हां या ना कहने का ताकत होनी चाहिए।

तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगी कि दक्षिण अमेरिका की एक सरकार—उरुग्वे—मु
झे वहां स्थायी निवास देने के लिए राजी थी। वे मुझे वहां नागरिकता देना चाहते
थे। क्योंकि उस देश का राष्ट्रपति एक बुद्धिमान आदमी है।जिस दिन वह कागजात
पर दस्तखत करने वाला था, उस दिन अमेरिकन राष्ट्रपति से उसे संदेश मिला ि
क छत्तीस घंटे के भीतर इस आदमी को ऊरुग्वे से बाहर किया जाए; क्योंकि यह
आदमी अति बुद्धिमान है। उन्होंने जो कारण बताया वह बड़ा हैरानी का था: वह
आदमी अति बुद्धिमान है, और वह तुम्हारी युवा पीढ़ी और उसका मन बदल देग
ा। वह तुम्हारा धर्म, तुम्हारा अतीत नष्ट कर सकता है। और बाद में शायद तुम
पछताओगे कि तुमने उस प्रवेश करने दिया। क्योंकि तुम्हारे राजनीतिक दल केवल
कचरे के आधार पर जी रहे हैं। यह तुम्हारे अपने हित में है कि यह आदमी छत्ती
स घंटे के भीतर यह देश छोड़ दे। और हर एक घंटे बाद अमेरिकन राष्ट्रपति के
सचिव का फोन बार-बार आता रहा: वहां आदमी गया कि नहीं?
मैंने उस राष्ट्रपति से कहा, चिंता की कोई बात नहीं है, मैं खुद छत्तीस घंटों के भ
ीतर चला जाऊंगा। और अमेरिकन राष्ट्रपति ने जो भी कहा है, वह मेरी निंदा नह
ीं है, वह तुम्हारी और तुम्हारे देश की निंदा है। जहां तक मेरा संबंध है, यह मेरी
प्रशंसा है। यदि ज्यादा बुद्धिमत्ता खतरनाक है, तो हर देश, हर सरकार चाहती है
कि लोग मानसिक रूप से अपंग हों। मानसिक अपंग लोग आज्ञाकारी होते हैं।
मैंने सुना है, प्रथम विश्वयुद्ध के बाद मनोवैज्ञानिक ने पहली बार आदमी की बुद्धि
नापने की कोशिश की। इस काम के लिए सेना बहुत अच्छी जगह थी। और यह दे
खकर बहुत धक्का लगा कि सेना में हर सैनिकों की औसतन मानसिक आयु केवल
तेरह साल है। आदमी चाहे सत्तर साल का हो, लेकिन उसके मन ने तेरह साल
के बाद विकसित होना बंद कर दिया है। लेकिन सेना में वे बुद्धिमान लोग नहीं चा
हते हैं।
दूसरे विश्वयुद्ध में एक प्राध्यापक को सेना में भरती किया गया, क्योंकि सैनिकों क
ी कमी थी। वह प्राध्यापक बार-बार कह रहा था, कि मैं बिलकुल भी सैनिक बन
ने के योग्य नहीं हूं, लेकिन किसी ने उसकी न सुनी।
पहले दिन उसे मैदान पर भेजा गया। कप्तान आदेश देने लगा, बाएं घूम, दाएं घूम
, पीछे घूम। और वह आदमी जैसे का वैसा खड़ा रहा। कप्तान बड़ा हैरान हुआ।
वह जानता था कि यह आदमी एक विख्यात प्राध्यापक था। जब दाएं घूम बाएं घू
म, पीछे घूम, कुछ कदम आगे चलो, फिर पीछे जाओ, यह सारी कवायद खत्म हु
ई और जब वे फिर से अपनी मूल स्थिति में वापिस आए, तब वह उस प्राध्यापक
के पास आया, जो पूरे वक्त उसी स्थिति में खड़ा था।
उसने पूछा, आपको हो क्या गया है? क्या आप मेरे आदेश नहीं सुन सकते?
वह बोला, मैं आपके आदेश सुन सकता हूं लेकिन इसमें क्या मतलब है? ये मूढ़ द
ाएं गए, बाएं गए, वहां गए, और अंततः उसी स्थिति में आ गए, जिसमें मैं पूरे स
मय से खड़ा था। और जब तुम कहते हो, दाएं घूम, तो मैं एकदम से दाएं नहीं घू

म सकता। मुझे अपने आपको समझाना पड़ता है कि क्यों, क्यों दाएं घूमूं।—बाएं क
यों नहीं? किसी तर्कपूर्ण आधार के बिना मैं दाएं या बाएं नहीं घूम सकता। तुम मु
झे बुद्धू नहीं बना सकते। दाएं घूमने से मतलब क्या है?

यह बात उस कप्तान से किसी ने कभी पूछी नहीं थी। मुझे अपने ऊपर के अधिक
ारियों से पूछना पड़ेगा कि इस आदमी का क्या करें! अगर यह दाएं घूम सकता,
और इसे पहले तर्कपूर्ण स्पष्टीकरण चाहिए...और मैं उसे क्या कारण बताऊं? यह
महज एक कवायद है। प्राध्यापक बोला, कवायद मैं अपने घर में भी कर सकता हूं
। इतनी ठंड में यहां आकर यह मूढ़तापूर्ण कवायद करने की कोई जरूरत नहीं है।
उच्चतर अधिकारियों ने कहा, वह एक प्रसिद्ध प्राध्यापक है। वह कोई भी काम बौ
द्धिक तार्किक आधार के बिना नहीं करता। तुम उसे मेरे पास भेज दो, मैं उसे कु
छ और काम देता हूं।

वह उसे सेना के भोजनालय में ले गया, और हरे मटर का एक ढेर दिखाया और
कहा, तुम बैठकर बड़े दाने एक तरफ करो और छोटे दाने एक तरफ करो। एक
घंटे के बाद मैं आकर देखूंगा कि तुमने क्या किया है।

एक घंटे बाद जब वह वापिस लौटा, तो उसने देखा कि प्राध्यापक बैठा है और मट
र का ढेर वासा का वैसा उसके सामने पड़ा है। एक दाना भी उसने छुआ नहीं है।

उसने पूछा, तुमने कुछ किया नहीं? वह बोला, इसमें इतनी सारी समस्याएं थीं अ
ौर उसके इतने परिणाम थे। उसने पूछा, इतने छोटे से काम में क्या समस्याएं हो
सकती है? वह बोला, पहली समस्या तो यह है कि कुछ मटर छोटे हैं और कुछ
बड़े हैं, लेकिन कुछ दाने ऐसे हैं, जो बीच में हैं। उन्हीं कहां रखूं? और इस सारी
मूढ़ता में सार क्या है? ये सारे मटर—छोटे और बड़े, एक ही पात्र में रहेंगे, तो मु
झे क्यों तकलीफ दे रहे हो?

उसे छोड़ दिया गया। वह किसी काम का नहीं था।

हर सेना सुबह शाम लोगों को प्रशिक्षण देती रहती है तुम सोचते हो, यह प्रशिक्षण
है—यह प्रशिक्षण नहीं है। यह उनकी बुद्धि को नष्ट करने का आयोजन है। यह उ
स बात की तैयारी है, जब वे आदेश देंगे, बंदूक चलाओ, तो वे यह नहीं सोचने,
क्यों? वे सब गोली चला देता हैं। वे यह नहीं सोचते कि इस आदमी आदमी ने मे
रा कुछ नहीं बिगाड़ा है, मैं इस पर क्यों गोली चलाऊं? इस अनुशासन में उनका
क्यों खो जाता है। अनुशासन की अपनी वजह है।

लेकिन यह अनुशासन सिर्फ सेना में नहीं होता, यह समाज मग सब जगह पाया जा
ता है। अगर तुम अपने माता-पिता से परमात्मा के संबंध में पूछो तो, उनके पास
कोई उत्तर नहीं है। क्योंकि उनके माता पिता ने उन्हें कोई उत्तर नहीं दिया था।
वे कहते हैं, रुको, जब तुम बड़े हो जाओगे। तब जान जाओगे।

मेरे पिता के एक मित्र शहर के सबसे ज्ञानी व्यक्ति माने जाते थे। और मैं उनसे पू
छता था, और वे हर बात में कहते, जरा रुको। जब तुम बड़े हो जाओगे, जरा प्रौ.
ढ हो जाओगे तब तुम समझोगे। बात इसी तरह चलती रही। फिर मैं विश्वविद्याल

य से वापिस आया। विश्वविद्यालय में मैं प्रथम आया था। मैं उनके पास गया, कि सब समय आ गया है। मैं पूरे विश्वविद्यालय में प्रथम आया हूं। मेरे सवालों का क या? वे बोले, तुम जरा ठहरो। मैंने कहा, बस अब बहुत ज्यादा हो गया। मैंने बहु त प्रतीक्षा कर ली। ईमानदारी से कहो, आप इनके उत्तर जानते हैं या नहीं? वे ई मानदार आदमी थे। उन्होंने कहा, सच कहूं, तो मैं नहीं इनके उत्तर जानते हैं या नहीं? वे ईमानदार आदमी थे। उन्होंने कहा, सच कहूं, तो मैं नहीं जानता। यह सि र्फ एक चाल थी, जो सदियों तक इस्तेमाल की गई थी। तुम्हारे साथ मुश्किल यह है कि तुम पूछते ही चले जाते हो। अधिकतर लोग जब बड़े हो जाते हैं, तब अन्य बातों में उलझ जाते हैं। और इन बातों को उन्हें कोई परवाह नहीं होता, वे भूल ही जाते हैं। और अधिकतर तो उनकी शादी हो जाती है। उनके बच्चे उनसे पूछ ने लगते हैं और वे कहने लगते हैं, रुको, जब तुम बड़े हो जाओगे तब तुम्हें उत्तर मिल जाएगा। तुम्हारे साथ मुश्किल यह है कि तुम अविवाहित हो।

मैंने कहा, यह तो बड़ी अजीब बात हुई। आप सोचते हैं कि शादी सब समस्याएं सु लझा देगी। मुझे तो इसमें कोई तुक नहीं दिखाई देती कि विवाह करने से ही मैं ई श्वर को जान लूंगा। अन्यथा जो विवाहित हैं, उस ने जान लिया होता। आपने ती न बार शादी की है, आप सब रहस्य जान गए होंगे।

वे बोले, मैं कुछ नहीं जानता। लेकिन बच्चों से छुटकारा पाने का यही उपाय है, नहीं तो वे तुम्हारा सिर खा जाएंगे।

लेकिन इससे उनकी बुद्धि का विकास नहीं होगा। बेहतर होता यदि वे कहते, हमें पता नहीं है, हम खुद खोज रहे हैं तो उसमें ज्यादा प्रामाणिकता होती; उसमें अधि क धार्मिकता होती। यह तो धूर्तता हुई। और यह धार्मिक नहीं है। और सारा समा ज इस पाखंड में जी रहा है। तुम ईश्वर को नहीं जानते, फिर भी उसकी पूजा क रते हो। तुम कुछ नहीं जानते, फिर भी उत्तर देने के लिए तैयार हो चूंकि वे उत्त र तुम्हें दिए गए हैं, तुम उन्हें तोतों की तरह दोहराते रहते हो।

मैं एक ऐसी शिक्षा प्रणाली चाहूंगा, जो तुम्हें उत्तर ने दे बल्कि तुम्हारे प्रश्न अधि क तीव्र करे, तुम्हारी बुद्धि अधिक पैनी करे और तुम्हें एक अखंडता प्रदान करे। तुम्हारी शरीर की समुचित देखभाल की जाए, तुम्हारे मन में एक स्वच्छता हो औ र तुम्हारी आत्मा जो कि पूरी तरह से उपेक्षित है; उसका कोई उल्लेख ही नहीं करता। तुम्हें ध्यान के अनुकूल वातावरण मिलना चाहिए। तुम्हें मौन होने की कला सिखायी जानी चाहिए। और मौन न हिंदू होता है, न मुसलमान होता है, न ईसा ई। मौन सिर्फ मौन होता है। शांति की गहन झीन बनने में तुम्हारी मदद करनी च ाहिए, ताकि तुम अपनी आत्मा को पहचान सको। यह तुम्हें यह धार्मिक व्यक्ति ब नाएगा—बिना तुम्हें ईश्वर की जानकारी दिए, बिना तुम्हें ऐसी बातें सिखाए जिन प र मूढ़ से मूढ़ व्यक्ति को भी संदेह होगा। तुम मुसलमान नहीं बनाए जाओगे, ईसा ई या जैन या सिख नहीं बनाए जाओगे, बल्कि तुम एक संगठित, स्वस्थ, सचेतन,

आत्मवान, दृढ़मूल व्यक्ति बनोगे। लेकिन यह बस सभी शक्ति के खिलाफ जाती हैं। क्योंकि तब फिर वे तुम्हें गुलाम नहीं बना सकते।

बाकी सब बातें जो सिखायी जा रही है, सिखायी जा सकती है, लेकिन उनमें ये बात और जोड़ देनी चाहिए। जो शिक्षा तुम्हारे भीतर वैयक्तिकता विकसित नहीं करती वह शिक्षा नहीं है, वह अशिक्षा है।

आपकी दृष्टि में आपका धर्म या अध्यात्म क्या है?

कृपा कर दो बातें समझाएं: क्या इसमें कोई अध्यात्म है...लोगों के मन में इस बात के संबंध में बड़ा संभ्रम है, और वे जानना चाहते हैं कि आपको 93 रोल्स रायस, हीरे और इस तरह की अन्य बातों की जरूरत क्या है? क्या इसमें कोई अध्यात्म है?

और दूसरा प्रश्न: लोग वास्तव में जानना चाहते हैं, कि क्या इसमें कोई धार्मिकता है कि स्त्रियां पुरुषों के सामने नग्न हो जाएं? इसमें कौन सा अध्यात्म है? क्या वह जरूरी है, आवश्यक हैं?

अस्तित्व में सिर्फ आध्यात्मिक है, कोई धर्म नहीं है। धर्म उसी का दूसरा नाम है। उसे आध्यात्मिक कहना अधिक उचित होगा क्योंकि यह शब्द उतना प्रदूषित नहीं है। धर्म शब्द बहुत प्रदूषित हुआ है। धर्म शब्द के उच्चारण मात्र से ही हिंदू धर्म मुसलमान धर्म या ईसाई धर्म का खयाल उठता है--यही प्रदूषण है। यह शब्द बड़ा सुंदर है लेकिन यह बहुत प्रदूषित हो गया है। आध्यात्मिकता अब भी प्रदूषण से मुक्त है। जब तुम आध्यात्मिकता--इस शब्द को सुनते हो तो उसके साथ कोई विशेषण नहीं जुड़े होते। हालांकि दोनों का मूलभूत अनुभव एक जैसा है।

आध्यात्मिकता का अर्थ होता है, तुम जानते हो कि केवल शरीर नहीं हो, तुम केवल मन नहीं हो; कि शरीर और मन मरेंगे क्योंकि वे पैदा हुए थे। तुम अपने जन्म के पहले थे, और तुम अपनी मृत्यु के बाद भी रहोगे। और यह अनुभव तुम्हें जीते जी होता है--अगर तुम अपने भीतर प्रवेश कर सको। और यही मैं मौन में, ध्यान में कह रहा था।

आध्यात्मिकता त्याग नहीं है, यह संसार का त्याग नहीं है--यह संसार का रूपांतरण है। आध्यात्मिकता मतलब गरीबी नहीं है। आध्यात्मिकता का मतलब है, तुम्हारे पास एक आंतरिक समृद्धि है, और इस बात की पूरी कोशिश करनी चाहिए कि तुम बाहर से भी समृद्ध हो जाओ। क्योंकि इन दोनों में कोई विरोधाभास नहीं है। हिमालय जाकर किसी गुफा में बैठकर ध्यान करने की कोई जरूरत नहीं है जब कि तुम अपने घर में ही एक छोटा सा एयर कंडीशंड, साउंड प्रूफ कक्ष बना सकते हो--जो हिमालय की किसी भी गुफा से कहीं बेहतर होगा। पुराने जमाने में ऐसा स्थान खोजने का कोई उपाय नहीं था, जहां कोई आवाज न हो: लेकिन अब तुम अपने घर में इसे बना सकते हो। हर घर में एक छोटी सी ध्यान गुफा होनी चाहिए। यह साउंड प्रूफ होनी चाहिए। वह एयर कंडीशंड होनी चाहिए ताकि तुम उसमें आराम से बैठ सको। आध्यात्मिकता का अर्थ स्वयं को सताना नहीं होता--कि अप

न सिरे के बल खड़े हैं या शरीर को विकृत कर रहे हैं। ये सब बातें जादूगरों पर छोड़ दो।

आध्यात्मिकता का अर्थ है, शांति—इतनी गहन कि तुम्हारी भीतर बहती हुई वैश्विक शांति की अंतधार्रा के साथ तुम एक हो जाओ। और उसमें कोई कारण नहीं है कि तुम संपन्न क्यों न हो। वस्तुतः आध्यात्मिक व्यक्ति अधिक बुद्धिमान, अधिक रचनात्मक और अधिक समझदार होता है। वह दुनिया का सबसे संपन्न व्यक्ति हो सकता है। और उसकी संपन्नता के दो आयाम होंगे—एक आंतरिक और एक बाह्य। मेरा योगदान यह है कि तुम इसे अच्छी तरह से समझ लो कि बाह्य समृद्धि तुम्हारी आंतरिक आध्यात्मिकता को नष्ट नहीं करती। और न बाह्य दरिद्रता उसमें सहयोग करती है। भूखा आदमी शांत बैठ ही नहीं सकता। ठंड से ठिठुरता हुआ नंगा आदमी भी शांत नहीं बैठ सकता। और तुम भूखे या नंगे न भी होओ, लेकिन तुम चारों ओर भिखारियों से धीरे होओ, तो भी तुम शांति से बैठे नहीं सकते। क्योंकि तुम्हारे पास हृदय है।

मैं इस जगत को दोनों प्रकार से समृद्ध से समृद्ध चाहूंगा। और जब जगत दोनों प्रकार से समृद्ध हो सकता है, तब एक ही दिशा क्यों चुनें? अब तक यही स्थिति रही है। पश्चिम ने बाह्य समृद्धि चुन ली और पूरब ने आंतरिक समृद्धि चुन ली। दूसरे शब्दों में, पूरब ने बाह्य दरिद्रता चुनी और परिचित ने आंतरिक दरिद्रता चुनी। दोनों मुसीबत में पड़ गए। उनके पास सब कुछ है और कुछ भी नहीं है। तुम्हारे पास आंतरिक समृद्धि पाने का पूरा विज्ञान और कला है, लेकिन तुम इतने गरीब हो कि इस घोर गरीबी में अंतर्जगत की बात सोचना भी कठिन है।

सुविख्यात अंग्रेज कवि, रुडयार्ड किपलिंग ने लिखा है, पूरब पूरब है, पश्चिम पश्चिम है : और दोनों मिल नहीं सकते। और मैं तुमसे कहना चाहता हूं, वह सरासर गलत है। न पश्चिम पश्चिम है, न पूरब पूरब है। पृथ्वी एक है। और इन दोनों का मिलन भौगोलिक रूप से नहीं बल्कि आध्यात्मिक रूप से होने वाला है।

यदि हम स्वीकार करें कि बाह्य समृद्धि और आंतरिक समृद्धि एक दूसरे की सहयोगी हैं—जो कि वे हैं ही—तो पूरब और पश्चिम के बीच किसी द्वंद्व की कोई जरूरत नहीं है।

मैंने एक अमेरिकन करोड़पति के बारे में सुना है, जो अपने अरबों-अरबों डालरों से थक गया था। इतना सारा धन और जरा भी शांति नहीं। शांति की खोज में वह दुनिया में भटका लेकिन कोई सदगुरु नहीं मिला। किसी ने कहा, हिमालय पर बहुत ऊपर एक आदमी रहता है। शायद सिर्फ वही तुम्हारी सहायता कर सकता है। थका मंदा वह किसी तरह उस सर्वोच्च शिखर पर पहुंचा। और बात सच थी। वहां एक बूढ़ा आदमी बैठा हुआ था। और इससे पहले कि वह कुछ कहे, वह बूढ़ा आदमी बोला, तुम्हारे पास सिगरेट है? बहुत समय से यहां कोई आया हनीं। और आध्यात्मिक व्यक्ति होने के नाते मैं सिगरेट लाने के लिए नीचे नहीं जा सकता। पह

ली बात पहले : तुम्हारे पास सिगरेट है? उसके बाद तुम अपने आध्यात्मिक सवाल पूछना। मुझे सिगरेट का मजा लेने दो, तुम दर्शन का मजा लेना।

उस आदमी को बड़ा धक्का लगा। वह सारी दुनिया में शांति की खोज में घूमता र हा, और अंततः वह इस बूढ़े मूढ़ के पास आ पहुंचा है, जैसे जिसे एक सिगरेट की तलाश है। उसने अपना सिगरेट का पैक निकालकर उसे दिया। वह बूढ़ा बाला, ब हुत खूब। अब कहो, तुम्हारी समस्या क्या है? वह आदमी बोला, मेरी समस्या यह है कि मुझे आत्मा की शांति चाहिए। बूढ़े ने कहा, बात बड़ी सरल है। घर जाओ। यहां आने की जरूरत नहीं है। तुम मुझे देख सकते हो, मैं किसी तरह यहां फंस गया हूं। तुम्हारे पास सब कुछ है। वह सब वहीं रहने दो, उसका मजा लो। लेकि न उसका बोझ अपने सिर पर मत ढोओ। मैं भी धनवान था, लेकिन इन मूढ़ संतों ने मुझे त्याग की शिक्षा दी। मैंने सब छोड़ दिया और सब कुछ है; अब यही सम य है जब तुम विश्राम कर सकते हो। अब बाह्य जगत में पाने के लिए तुम्हारे पा स कुछ नहीं है। तुम्हारी सारी महत्वाकांक्षाएं पूरी हो चुकी हैं। अब विश्राम करो और शांत बैठो और तुम्हारे पास समय है, आर्थिक सुविधा है। सिर्फ इतना खयाल कि अगली बार तुम जब आओ तो सिगरेट के कुछ और पैक ले आना। क्योंकि यह ां सिगरेट बिलकुल नहीं मिलती। और मुझे मन की शांति के बारे में कुछ मत पूछ ना; क्योंकि मैं सिगरेट के अतिरिक्त और कुछ सोचता ही नहीं। वह पुरानी आदत...मैंने सब छोड़ दिया लेकिन पुरानी आदत कैसे छोड़ी जाए।

जीवन में थोड़ी बुद्धिमानी से कम लो। तुम्हारे पास जो भी है उसका उपयोग अपने लिए ऐसा वातावरण बनाने के लिए करो, जिसमें तुम विश्रामपूर्ण ढंग से रह सक ो। एक सुंदर मकान बनाओ, उसमें जो भी सुंदर है उसे ले आओ : चित्र, संगती, कला। वे तुम्हें आध्यात्मिक बनने में कोई बाधा नहीं डालते। और सौंदर्य, कला, ि चत्र--इन सबके बीच शांत होकर बैठने के लिए समय निकला लो। तुम निकाल स कते हो। अब तुम्हारे पास उतनी क्षमता है। दूसरे शब्दों में : बाह्य समृद्धि को राह का रोड़ा नहीं, सीढ़ी का पत्थर समझना चाहिए। तो तुम्हारे पास जो भी है, यदि वह तुम्हारी जरूरतों के लिए काफी है, तो और अधिक के पीछे मत दौड़ो। तुम उस बिंदु पर आ रहे हो जहां से नई यात्रा की शुरुआत होती है। वह पुराना द्विभा जन, जो तुम्हें बार-बार सदियों से सिखाया गया है, कि अगर तुम बाह्य जगत में समृद्ध हो तो तुम आंतरिक समृद्ध नहीं हो सकते, वह एकदम बकवास है। वस्तुतः तुम बाहर से जितने समृद्ध होओगे, उतनी ही तुम्हारी आंतरिक दृष्टि से शांत औ र मौन होने की संभावना बढ़ेगी। इसी संश्लेषण उतनी ही तुम्हारी आंतरिक दृष्टि से शांत और मौन होने की संभावना बढ़ेगी। इसी संश्लेषण को मैं मेरा धर्म कहता हूं, मेरा अध्यात्म कहता हूं।

6 अगस्त, 1986, प्रातः सुमिला, जुहू, बंबई

मैं तुम्हें इक्कीसवीं सदी में ले जा सकता हूं

आजकल हमारे देश में नीति निर्माण बार-बार देश को इक्कीसवीं शताब्दी में ले ज
ाने की बात कर रहा है। खासकर के पिछले डेढ़ दो वर्षों में यह बहस काफी बढ़
गयी है कि देश को इक्कीसवीं शताब्दी में ले जाना है। क्या आप समझते हैं कि म
ौजूदा हालातों में यह संभव होगा?

पहली बात यह है कि देश बीसवीं सदी में भी है या नहीं! इक्कीस में ले जाना है,
 वह तो समझ में आ गया, मगर किसको ले जाओगे? यहां लोग हजारों वर्ष पीछे
 जी रहे हैं। इस देश के नेता—महात्मा गांधी जैसे लोग भी सोचते हैं कि चरखे के
 बाद जो भी वैज्ञानिक अनुसंधान आविष्कार हुए हैं, वे सब नष्ट कर दिए जाने चा
हिए। चरखा आखिरी विज्ञान है। महात्मा गांधी रेलगाड़ी के खिलाफ थे, टेलीफोन
के खिलाफ थे, टेलीग्राम के खिलाफ थे! अगर उनकी बात मान ली जाए...और उ
नकी बात मान कर इस देश के नेता चलते रहे हैं। कम से कम दिखाते तो रहे हैं
, कम से कम गांधी की टोपी तो लगाए रहते हैं, कम से कम गांधी की खादी तो
 पहन रखी है। अगर उनकी बात मान ली जाए तो यह देश कम से कम दो हजा
र साल पीछे पहुंच जाएगा। इक्कीसवीं। इक्कीसवीं सदी की तो छोड़ दो, अगर यह
 पहली सदी में भी पहुंच जाए तो धन्यवादी। जो लोग इसे इक्कीसवीं सदी में पहुंच
ने की बात कर रहे हैं, उनकी खुद की बुद्धि इतने सड़े गले विचारों से भरी है कि
 वे विचार सारी दुनिया में कभी के रद्द हो चुके, अगर भारत में अभी जिंदा हैं।
बात तो बड़ी प्यारी है कि इक्कीसवीं सदी में चले चलें और दूसरों से भी पहले च
ले खेलें—अगर बैठे हैं बैलगाड़ी पर। दूसरे चांद पर पहुंच गए हैं। हां, कहानियों में
कभी-कभी हम भी चांद पर पहुंच जाते हैं। मगर चांद पर भी पहुंच जाएंगे तो भी
 रहेंगे तो हम ही।

मैंने सुना है कि जब पहली बार पहला अमरीकी चांद पर उतरा तो वह देख कर
हैरान हुआ कि एक हिंदू साधु धूनी रमाए वहां बैठा है! उसने कहा, हद्द हो गयी,
हम मर गए मेहनत कर करके अरबों खरबों डालरों का खर्च और यह भैया धूनी
लगाए यहां पहले ही से बैठे हैं! आध्यात्मिक चमत्कार ही है। सो उस अमरीकन ने
 जाकर उनके पैर छुए, जब उन्होंने पैर छुए तो साधु ने आंखें खोलीं और अमरीक
ी से बोला, सिगरेट है? बहुत दिन हो गए, अमरीकी सिगरेट का मजा नहीं मिला।
 उसने कहा, सिगरेट तो तुम ले लो, मगर यह तो बताओ यहां पहुंचे कैसे?
साधु ने कहा, इसमें भी क्या अड़चन है! हमारे देश की आबादी जानते हो? आजा
द हुआ था, तब चार सौ मिलियन थी। अब, नौ सौ मिलियन है। और इस सदी
के पूर होते-होते हजार मिलियन को पार कर जाएगी। तुम्हारे सब ढोंग धतूरों की
 हम सुनते थे कि तुम यह आयोजन कर रहे हो, वह आयोजन कर रहे हो। हमने
 कहा, क्यों फिजूल की बातों में पड़ते हो अरे, एक के ऊपर एक खड़े होने लगो—
एक के ऊपर एक! जैसे बंबई में मकान खड़े करते हैं ऐसे आदमियों को एक के
ऊपर एक खड़ा करते चलेंगे और चूंकि हम साधु थे, इसलिए हम सब के ऊपर।

मगर सब नालायक, यहां मुझे अकेला छोड़कर अपने-अपने काम धंधे पर चले गए हैं?

कहानियों में इक्कीसवीं सदी में पहुंच जाना आसान है। और भोली-भाली जनता क ो, नासमझ जनता को, जिसे इक्कीस तक गिनती भी पढ़नी नहीं आती, जिसके लि ए दस यानी बस—उसको तुम इक्कीसवीं सदी की बात करो, कि इकतीसवीं सदी की बात करो, कोई फर्क नहीं पड़ता। सोचती है जब तुम कह रहे हो तो ठीक ही कह रहे होओगे।

और फिर तुम्हारी किसी बात का कोई भरोसा नहीं रहा है, क्योंकि चालीस साल से तुमने हर बार धोखा दिया। चालीस साल से भारत के नेता धोखे पर धोखा दे रहे हैं। जनता के मन में एक समादर की भावना थी चालीस साल पहले। इन्हीं लो गों के प्रति, इनके बाप दादों के प्रति। आज भारत के बेपढ़े लोगों के मन में भी र ाजनीतिज्ञों के प्रति कोई सम्मान नहीं है, सिर्फ अपमान है। इनकी गिनती भी लुच्चे लफंगों के सिवाय और किन्हीं में की जाती नहीं—की भी नहीं जा सकती। लुच्चे लफंगे तो किसी एकाध आदमी को इधर-उधर थोड़ा बहुत लूट खसोट लेते हैं, कि सी की जेब काट ली—ये सारे देश की संभावनाओं को नष्ट कर करे हैं। सारे देश के आने वाले भविष्य को खराब कर रहे हैं। लेकिन लफ्फाजी की बातें तो इन्हें करनी ही पड़ेंगी। बातों के सिवाय इनके पास कुछ और है भी नहीं। इक्कीसवीं सद ी। और चारों और चारों तरफ भारत के लोगों को देखो!

इक्कीसवीं सदी को लाने का अर्थ होगा, जीवन के सारे मूल्य बदने जाए।

अभी भी हरिजनों के साथ वही व्यवहार हो रहा है, जो पांच हजार साल पहले हो ता था। और झूठ ऐसा हमारी आत्माओं में घुसा है कि साधारण आदमी को हम छोड़ दें, साधारण आदमी की मैं बात ही नहीं करता—महात्मा गांधी का यह निरंत र कहना था कि भारत का पहला राष्ट्रपति एक औरत होगी और हरिजन औरत होगी। न तो डाक्टर राजेंद्र प्रसाद औरत थे, जहां तक मैं समझता हूं, और न ही हरिजन थे—और गांधी ने ही उनको चुना! क्या हुआ उप पुराने वायदों का? कहां गयी वे ऊंची ऊंची बातें? जो जहर तुमने हरिजनों को पिलाया, वह कहां गया? वह भी सब राजनीति थी। क्योंकि घबड़ाहट वही की वही थी, अंबेडकर के नेतृत व में हरिजन भी अलग हो जाना चाहते थे। अगर मुसलमान अपना देश अलग मां ग रहे हैं और उनकी मांग जायज समझी जा रही हैं। और हिंदू अपना देश अलग मांग रहे हैं तो हरिजन जो कि हिंदुओं का चौथा हिस्सा हैं। और हजारों साल से स ताए गए लोग हैं। इस दुनिया में उनसे ज्यादा सताया गया और कोई भी हनीं है। अगर वे भी चाहे कि हमें अपना अलग देश दे दो, गांधी उपवास पर बैठ गए! आ मरण उपवास! आमरण उपवास एक का भी नहीं हुआ, क्योंकि मरने के पहले ही संतरे का रस—उस सब का आयोजन पहले से होता है। डाक्टर जांच कर रहे हैं। और सारे देश में उथल पुथल...कि महात्मा गांधी कहीं मर जाएं—बात का रुख ही बदल दिया। हरिजनों की तो बात ही समाप्त हो गयी। अंबेडकर की जान पर बन

आयी। लोग उसकी गर्दन दबाने लगे कि तुम माफी मांगों महात्मा गांधी से और कहो कि हम अलग देश या अलग होने की मांग नहीं करेंगे। उसकी मांग जायज थी। लेकिन यहां जायज और नाजायज की कौन फिकर करता है! और उसको भी लगा कि अगर महात्मा गांधी मर गए...तो मैं मर जाऊं यह तो कोई बड़ी बात नहीं है,इस देश में हरिजनों को जला कर खाक कर दिया जाएगा—एक कोने से दू सरे कोने तक। उनके झोपड़ों में आग लग जाएगी, उनकी स्त्रियों पर बलात्कार हों गे, गांधी के मरने का बदला लिया जाएगा। यह बात ही खत्म हो गयी कि वह ज ो कह रहा था, ठीक कह रहा था या गलत कह रहा था—यह बात का रुख ही ब दल गया।

मामला यह हो गया कि इतने हरिजनों को इतने उपद्रव में डालना उचित है या न हीं। यूं ही बेचारे बहुत परेशान रहे हैं। अब और यह आखिरी परेशानी है। तो अंबे डकर खुद ही संतरे का रस ले कर हाजिर हो गए, माफी भी मांग ली—जानते हुए कि यह आदमी धोखा दे रहा है हरिजनों को, यह आदमी इस देश का धोखा दे रहा है। लेकिन हरिजनों को न तो अलग होने का हक है, न अलग मताधिकार क ा हक है। उतनी छोटी सी मांग थी कि या तो अलग देश दे दो या कम से कम अ लग मताधिकारी दे दो, ताकि इनकी आवाज भी तुम्हारी संसद में पहुंच सके कि इन पर क्या गुजरती है—इसकी खबर भी नहीं छपती, इसकी खबर भी तुम तक नहीं पहुंचती।

और आश्वासन दिया है गांधी ने कि चिंता न करो, पहला राष्ट्रपति हरिजन होगा। और न केवल हरिजन, बल्कि, स्त्री। क्योंकि स्त्री को बहुत सताया है। हरिजन को भी बहुत सताया गया है। स्वतंत्रता में यह सब न चलेगा।

स्वतंत्रता आ भी गयी—न कोई हरिजन, न कोई स्त्री! स्वतंत्रता आयी और करोड़ों लोग मरे, लुटे, न मालूम कितने बच्चों की जाने गयी, कितनी स्त्रियों की इज्जत गयी, कितने लोगों को जबरदस्ती जिंदा जलाया गया। गजब की आजादी आयी।

यह प्रेम से हो सकता था। लेकिन महात्मा गांधी और उनके शिष्यों ने यह नहीं हो ने दिया। इसे उस स्थिति तक पहुंचा दिया, जहां दुश्मनी आखिरी जगह पहुंच गयी। जब यह हुआ तो इसका परिणाम हिंसा के सिवाय और कुछ न था। यही पंजाब में हो रहा है। यही आसाम में हो रहा है, यही काश्मीर में हो रहा है। यही दंश के कोने कोने में होगा। और ये छूट भैये देश को इक्कीसवीं सदी में ले चले!

एक ही तरकीब है ले जाने की—इक्कीसवीं सदी के केलैंडर छपा लो और घरों में टांग दो। पहुंच गए इक्कीसवीं सदी में! गिनती करने लगो इक्कीसवें सदी की। कि सी के बाप का हक है कि रोके। केलैंडर हमारा, हम छापते हैं, हमें नहीं रहना बी सवीं सदी में, हमें इक्कीसवीं सदी में रहना है। केलैंडर में पहुंच सकते हो, जिंदगी में नहीं। और जिंदगी में जो तुम्हें पहुंचा सकते हैं, उनकी तुम सुनने को भी राजी नहीं हो।

फिर अमृत की बूंद पड़ी

मैं तुम्हें इक्कीसवीं सदी में पहुंचा सकता हूं, लेकिन तुम मेरी बात भी सुनने को राजी नहीं हो। क्योंकि इक्कीसवीं सदी में पहुंचना दो बातें पर निर्भर है। पहला, तुम्हें अपने अतीत से मुक्त होना होगा ,निर्भार होना होगा।तुम इस बुरी तरह बंधे हो पीछे से कि एक कदम आगे बढ़ते हो और दो कदम पीछे हट जाते हो। हर मामले में तुम तुम पीछे बंधे हो। पीछे से सारे संबंध छोड़ देने होंगे। जरा सोचो, प्रकृति ने भी आंखें तुम्हारी खोपड़ी में पीछे लगायी हैं। आंखें हैं आगे देखने को, जो बीता सो बीता, जो छुटा सो छुटा टूटा सो टूटा। आंखें आगे लगाओ। मगर नहीं, तुम रामलीला देख रहे हो।

इक्कीसवीं सदी में रामलीला नहीं हो सकती। इक्कीसवीं में राम की कोई जगत नहीं है। क्योंकि राम का पूरा व्यवहार अमानवीय है। एक शूद्र के कानों में इसलिए सीसा पिघलकर भरवा दिया क्योंकि उसने ऋग्वेद के वचन सुन लिए थे। इसी राम के राज्य को महात्मा गांधी इस देश में लाना चाहते हैं। यह बेरहमी, यह अमानवीयता और इसके हो जाने के बाद भी राम अब भी ईश्वर के अवतार बने हैं। अब भी तुम्हारे पूज्य हैं। अब तो उनको जय राम जी करो।

थोड़ा पीछे लौट कर देखो कि किन-किन से तुम बंधे हो और कैसे कैसे लोगों से तुम बंध हो!

कृष्ण की सोलह हजार स्त्रियां थीं, जिनमें सिर्फ एक विवाहित स्त्री थी, रुक्मिणि। उसका बहुत नाम भी नहीं आता बेचारी का। विवाहित स्त्रियों को कौन पूछता है? अपनी स्त्रियों को कौन पूछता है? एक को छोड़कर बाकी जो सोलह हजार थी— वे भगायी हुई थीं, वे दूसरों की थी; उनके बच्चे थे, उनके पति थे; उनके बूढ़े सास ससुर होंगे, उनके घर उजड़ गए होंगे। उनका कसूर सिर्फ इतना था कि वे खूबसूरत थी। और कृष्ण जिसको देख लें, और उनकी नजर में किसी की खूबसूरती आ जाए तो फिर इस बात की कोई फिकर नहीं कि इसका परिणाम क्या होगा—वह स्त्री उठवा ली जाती थी। जबरदस्ती सैनिक उसे उठा कर कृष्ण के हरम में पहुंचा देते थे। और फिर भी भारत में एक भी आदमी की हिम्मत नहीं है कि कृष्ण के खिलाफ अंगुली उठाए—कि इस आदमी को हम ईश्वर का पूर्ण अवतार कहते हैं! अगर ये ईश्वर के पूर्णावतार के गुण हैं तो अब हम नहीं चाहते कि ईश्वर दोबारा यहां आएं। अब कहीं और जाए—बहुत-बहुत तारे हैं, बहुत उपग्रह हैं, बहुत नक्षत्र हैं, जहां मर्जी हो, मरें; मगर यहां नहीं।

मैं गुजरात में एक शिविर ले रहा था, छोटी सी सुंदर जगह—तुलसी श्याम। तुलसी श्याम की भगायी हुई पत्नी थी। मंदिर में भगायी हुई पत्नी के साथ उनकी मूर्ति है, जेलखाने में होनी चाहिए, मंदिर में है! घाटी में मंदिर है, मंदिर में तुलसी श्याम की सुंदर मूर्ति है। और घाटी के ऊपर, दूर झाड़ियों में छुपा एक छोटा सा मंदिर है, जिसमें रुक्मिणी की मूर्ति है—बेचारी गरीब वहां बैठ कर छुप कर देख रही है कि भैया क्या खेल कर रहे हैं!

तुम्हें अपने बहुत से मूल्य बदलने होंगे। दुखदायी होगा। क्योंकि उन मूल्यों से बड़ा लगाव रहा है। तुमने कभी उनके अंधेरे पहलुओं को देखा ही नहीं। किसी ने तुमसे उनकी कभी आलोचना ही नहीं की। हम आलोचना करना भूल ही गए। हम तो बस अंधी श्रद्धा, अंधी पूजा, अंधा विश्वास...इक्कीसवीं सदी में जाना हो तो तुम्हें इस अंधेपन को छोड़ना होगा। मशीनें नहीं ले जा सकती, उन्हें आंखें चाहिए, साफ आंखें चाहिए। जो दूर तक देख सकती हों। और विश्वासी की आंखें इतनी अंधी होती हैं कि वह पास तक भी नहीं देख सकती, दूर तक देखने का तो सवाल ही क्या है। तुम्हें संदेह करना सीखना होगा। क्योंकि संदेह की तलवार ही तुम्हारे अंधविश्वासों को काटेगी। और तुम्हें मौका देंगी चिंतन, मनन का, ध्यान का।

यह जो पश्चिम में विज्ञान पैदा हुआ है, तीन सौ वर्षों में ही पैदा हुआ है। और इन तीन सौ वर्षों में ईसाइयत से इंच-इंच पर लड़ कर पैदा हुआ है। क्योंकि छोटी-छोटी बातों पर ईसाइयों का अड़ंगा है। बाइबिल कहती है, जमीन चपटी है। विज्ञान की खोज कहती है, जमीन गोल है। बाइबिल कहती है, सूरज जमीन के चक्कर लगाता है। और विज्ञान ने पाया है कि बात उलटी ही है—जमीन सूरज के चक्कर लगती है।

और जब गेलीलिओ ने पहली दफा अपनी किताब में यह लिखा कि जमीन सूरज के चक्कर लगाती है तो उस बूढ़े आदमी को जो बिलकुल मरणासन्न था, घसीटकर पोप की अदालत में ले जाया गया। और पोप ने उससे कहा कि तुम अपनी किताब में बदलाहट कर लो, अन्यथा जिंदा जला दिए जाओगे। गेलीलिओ ने कहा, मुझे कोई अड़चन नहीं है, मैं किताब में बदलाहट कर लूंगा। जिंदा जलने का मुझे कोई शौक नहीं है, मरकर तो जलना ही है, इतनी जल्दी भी क्या है। रही किताब, सो किताब में बदल दूंगा। मगर एक बात कहे देता हूं, मेरे किताब में बदलने से कोई भी फर्क नहीं होगा जमीन सूरज के चक्कर लगाएगी और लगाएगी। लाख मेरी किताब में मैं कुछ भी लिखूं, न सूरज पढ़ता है मेरी किताब, न जमीन पढ़ती है मेरी किताब। और तुम इतना परेशान क्यों हो? एक छोटी सी लकीर, अगर बाइबिल के खिलाफ चली जाती है तो तुम्हारी इतनी परेशानी क्या है?

और पोप ने जो शब्द कहे, वे खयाल रखने जैसे हैं। पोप ने कहा कि परेशानी यह है कि अगर बाइबिल का एक वचन भी गलत सिद्ध हो जाता है, तो लोगों को संदेह उठने शुरू हो जाएंगे कि कौन जाने, जब एक बात गलत हो गयी तो दूसरी बातें भी गलत हों—कौन जाने! और अब तक वे मानते रहे कि बाइबिल ईश्वर की लिखी हुई किताब है। और अगर ईश्वर भी गलतियां कर सकता है तो पोप की क्या हैसियत है, जो इस बात का दावा करता है कि उससे गलतियां होती ही नहीं हैं। हम बाइबिल में लिखी किसी बात के खिलाफ कुछ भी बर्दाश्त न करेंगे। लेकिन लड़ाई जारी रही। तीन सौ वर्षों में निरंतर विज्ञान इंच-इंच लड़ा।

इस देश मग कोई लड़ाई नहीं हुई है। इस देश में विज्ञान सिर्फ तुमने स्कूल और कालेज में पढ़ा है, सिर्फ ऊपर-ऊपर है। विज्ञान भी पढ़ रहे हैं, हाथ में हनुमान जी

का तावीज भी बांधे हुए बैठे हैं। ये नालायक तुम्हें इक्कीसवीं सदी में ले जाएंगे? ि
वज्ञान की परीक्षा देने जाते हैं, पहले हनुमान जी के मंदिर में नारियल फोड़ आते
हैं! वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैदा नहीं हो पाया। उधार है हमारा सब विज्ञान; पढ़ लिख
लेता हैं, समझ लेते हैं, मगर भीतर-भीतर हम वही के वही हैं। भीतर हमारे विश
वास के आधार वही के वही हैं।

मेरे एक मित्र थे बड़े डाक्टर। न मालूम कितने लोगों का उन्होंने इलाज किया होग
ा। और उनकी बड़ी दूर-दूर तक प्रसिद्धि थी। लेकिन जब उनकी पत्नी बीमार पड़ी
तो एक दिन मुझसे बोले कि सब इलाज कर रहे हैं, लेकिन उसे लाभ नहीं हो र
हा। मेरा नौकर कहता है कि अगर कोई साधु संत आशीर्वाद दे दें, तो ही कुछ हो
सकता है। मैंने कहा, तुम इतने बड़े डाक्टर हो, तुम जानते हो कि बीमारी हो त
ो कारण होता है। उसका निदान करो, कारण को मिटाने की कोशिश करो। तुम्हा
री पत्नी किसी साधु संत के अभिशाप से तो बीमार हुई नहीं है कि वरदान देने से
ठीक हो जाएगी। अगर अभिशाप से बीमार हुई होती शायद वरदान देने से ठीक
भी हो जाती। वे बोले, आप कुछ भी कहें, यह मामला ऐसा है यहां बुद्धि चकराती
है। बात आपकी समझ में आती है, लेकिन अगर आप किसी साधु संत को जानते
हो बताएं। मैंने कहा, ऐसे मैं बहुत से साधु संतों को जानता हूं। तुम्हें ले चलूंगा।
मेरे एक मित्र पास ही दस बार मील दूर पहाड़ियों में रहते थे। साधु संत तो नहीं
थे, मस्त आदमी थे। कमा लिया था अपने लायक, ब्याज मिल जाता था, चल जा
ता था काम। अकेले पहाड़ियों में एक छोटी सी झोपड़ी बना कर मौज से रहते थे।

उनसे मैंने कहा, एक दिन साधु संत होना पड़ेगा। उन्होंने कहा, मतलब? मैंने कहा
, जरा धूनी वगैरह लगा लेना, नंग धड़ंग बैठ जाना, भभूत रमा लेना। अरे, उन्होंने
कहा, यह आप भी क्या बकवास कर रहे हैं? काहे के लिए? कोई फिल्म की शूि
टग हो रही है क्या?

मैंने कहा, एक गरीब डाक्टर है, उसकी पत्नी मर रही है। उसको साधु संतों का अ
ाशीष चाहिए। जरा सी राख उठा कर दे देना, कह देना कि बच्चा, सब ठीक हो
जाएगा, जा। वे कहने लगे, बड़ी मुश्किल में डाल रहे हैं, इस गांव में सब मुझे जा
नते हैं, वह डाक्टर भी मुझे जानते हैं।

तो मैंने कहा कि वह तुम्हें जानता है। उसके पहले मैं नाई को लाऊंगा, ठीक साधु
संत बनाऊंगा--ऐसा कि अगर शूटिंग भी हो जाए उस वक्त तो कोई हर्जा नहीं।
कहने लगे, यह बात जरा ठीक नहीं है। और फिर इसके बाद आप तो चले जाएंगे
--मैं गांव में भी नहीं जा सकता। लोग पूछेंगे, हुआ क्या? पिताजी मर गए? सिर
क्यों मुड़ा लिया है? अरे तुम्हारी मूंछों को क्या हुआ? और मेरी मूंछों की शान है।
सच में उनकी बड़ी शानदार मूंछें थीं। और बड़ा ताव देकर रखते थे। मैंने कहा,
कुछ भी हो, उनकी औरत को तो बचाना होगा। मूंछों तो फिर उग आएंगी। और
त कहां से लाएंगे?

बामुश्किल उनको राजी किया, सिर घुटयाया, मूंछें मुंड़वायीं, वे मुझे गालियां देते रहे, मैं उनका सिर मुंडवाता रहा, दो आदमी उनके हाथ पकड़े रहे। बामुश्किल उनकी मूंछें निकलवायी। कपड़े उतरवाए। लंगोटी पर अटक गए कि लंगोटी छोडूंगा। मैंने कहा कि सच्चा साधु लंगोटी भी छोड़ देता है और मैंने उनसे कह रखा है कि वे बिलकुल सच्चे साधु हैं।

यह अच्छी मुसीबत है, हमें कुछ लेना न देना।

बेचारों को बैठा दिया। ठंड के दिन, अगर आग जल रही है तो थोड़ी रहता रही। डाक्टर आकर साष्टांग गिर पड़े भूमि पर, उन्होंने देखा ही नहीं उठा कर मुंह कि यह है कौन। पैर पकड़ लिए कि अब बस बचाओ। और मेरे मित्र ने सोचा कि अब यहां तक बात आ गयी है तो अब बचा ही लो। कहा, बेटा मत घबरा, उठ, तेरी पत्नी को कोई तकलीफ है? बोले कि बस, आप की ही तलाश थी। मैं भी डाक्टर हूं, मगर पहले आदमी से पूछता हूं कि कौन सी तकलीफ है। और आप यहां मीलों दूर बैठे देख रहे हैं कि मेरी पत्नी बीमार है। बहुत इलाज किया है। साधु महाराज ने कहा, लेकिन कुछ ठीक होता नहीं, होगा भी नहीं; बीमारी आध्यात्मिक है, तू भौतिक चक्कर में पड़ा है। यह ले राख, पहले खुद खा। पर उन्होंने कहा, बीमार मेरी पत्नी है। उन्होंने कहा, तू चुप रह, तेरी ही कम्बख्तियों के कारण तेरी पत्नी बीमार है। पहले तू खा और बाकी पत्नी के लिए ले जा, और बाल बच्चे हों उनका भी बांट देना। सब ठीक हो जाओगे।

मैं भी उनके साथ गया था। खड़ा देख रहा था। डाक्टर को राख भी खाते देखा, राख भी ले जाते देखा। कहीं राख से कोई पत्नी ठीक होती है? उसको तो मरना था सो मर ही गयी। असल में घर पहुंचे, इसके पहले ही वह मर चुकी थी। डाक्टर बोला, कैसा है वह साधु! उस दुष्ट ने मुझे राख भी खिला दी, इधर औरत को भी मार डाला। मैंने कहा, साधुओं के चमत्कार साधु ही जानें, तुम न समझ सकोगे। तुम अपनी डाक्टरी करो। पत्नी मोक्ष गयी। कहने लगे, अजीब मुश्किल है, न मालूम कहां के साधु के पास ले गए! पहले तो मुझे राख खिलायी। वही बात गलत थी, उसी वक्त मुझे कुछ शक हुआ था। और शक सच्चा निकला। और उस दुष्ट ने मुझसे यह भी कहा कि तेरी ही कम्बख्तियों की वजह से तेरी पत्नी मर गयी है। मैंने कहा, अब घबड़ाओ मत, तम ही बहुत साधु संतों की ताश करने में प.डे थे। बामुश्किल तो मैं खोज पाया। कितनी मुसीबतें मैंने उठायी, उसका तुम्हें पता भी नहीं है। पहले तुम्हारी दूसरी शादी हो जाए, फिर बताऊंगा।

यहां इंजीनियर है, डाक्टर हैं, आर्किटेक्ट हैं, वैज्ञानिक हैं, लेकिन यह सब केवल बौद्धिक विचार रह जाता है। उनके भीतर सदियों-सदियों के पड़े हुए संस्कार, ऐसी जंजीरों की तरह जकड़े हुए है। पश्चिम भी चले जाता हैं, जहां से भी शिक्षा ले कर लौट आते हैं, मगर यहां आकर फिर वहीं गोरख धंधा! और वही गोरख धंधा करते हैं तो लोग बड़ी प्रशंसा करते हैं। कहते हैं कि देखा पश्चिम भी हो आया है, पश्चिम के विश्वविद्यालयों में शिक्षा भी पायी, मगर अपने भारतीयत्व को नहीं ख

ोया। अभी भी मंदिर जाता है, अभी भी मस्जिद पहुंच जाता है। अभी भी रोज सुब
ह उठ कर बाइबिल को पहले नमस्कार करता है, फिर दूसरा काम शुरू करता है।

इस देश को इक्कीसवीं सदी में जरूर ले जाया जा सकता है। लेकिन इस देश को इक्कीसवीं सदी में जाने के पहले, ये जो हजारों वर्ष के पुराने संस्कार हैं, इनसे मुक
त करना जरूरी है। और उनसे मुक्त करने का एक ही उपाय है। और मैं उसी उ
पाय की चर्चा कर रहा हूं निरंतर कि तुम किसी तरह ध्यान करना सीख लो, कि तुम किसी तरह उस अवस्था को अपने भीतर पैदा करना सीख लो, जहां विचारों की तरंग बंद हो जाती है। जहां कोई हलचल, कोई ऊहापोह, कुछ भी हनीं होता। जहां तुम निस्तरंग, शांत और मौन हो जाते हो। उस मौन में तुम अतीत से टूट जाते हो, वर्तमान में आ जाते हो। और जो आज आ गया, उसे हम कल की यात्र
ा पर ले चल सकते हैं। मगर पहले से आज तो लाना होगा। आज की छलांग, क
ल तक पहुंचा देगी। लेकिन आज तो आना होगा।

अभी भारत वर्तमान में भी हनीं है। इसकी नहरें पीछे हैं, इसके आराध्य पीछे हैं, इसका स्वर्णयुग पीछे है। ये पूरे हालात बदलने होंगे।

मैंने सुना है, एक रास्ते पर एक दुबला पतला युवक मोटर साइकिल पर तेजी से भागा जा रहा है, हवा बहुत तेज है और उलटी है। सो उसने गाड़ी रोक कर अप
ना कोट उलटा कर लिया, ताकि छाती पर हवा इतने जोर से न लगे, सरदी जुका
म न पकड़ जाए। कोट उलटा कर लिया, बटने पीछे लगा लीं, मफलर गले से ठी
क से बांध लिया। फिर चला अपनी गाड़ी पर।

उधर से आ रहे थे एक सरदार जी, उन्होंने इसको देखा, उन्होंने कहा, मार डाला, यह आदमी उलटा बैठा है और इतनी तेजी से साइकिल चला रहा है। घबराहट में वे टकरा गए। आदमी नीचे गिरा, बेहोश हो गया। सरदार जी ने कहा, अच्छी मुसीबत में हम भी पड़े, यह आदमी है कैसा। अब इसका सिर किसी तरह सीधा करें। यहां तो कोई दिखायी भी नहीं पड़ता कि जिसको बुलाएं सहायता के लिए। सो उन्होंने एक जोर से झटका दिया—सरदारी झटका—वाह गुरु जी की फतह, वाह गुरु जी का खालसा। और दिया जोर से झटका, उसका मुंह दूसरी तरह फेर दिय
ा।

तभी वहां पुलिस की गाड़ी पहुंच गयी, पूछा कि क्या मामला है? सरदार जी ने क
हा, क्या मामला है—यह आदमी बेचारा मोटर साइकिल पर उलटा बैठा था। उन्हों
ने पूछा, जिंदा है? सरदार जी ने कहा, जिंदा था। अजीब किस्म का आदमी है, ज
ब तक उलटी खोपड़ी थी, तब जिंदा था। मैंने मुश्किल इसकी खोपड़ी उलटी की। गुरुजी की दुआ से खोपड़ी तो उलटी से सीधी हो गयी, मगर सांस बंद हो गयी। अब भैया सांस तुम सम्हालो, मुझे दूसरे काम पर जाना है। उन्होंने गौर से देखा ि
क मामला क्या है। बात तो ठीक कहता है। कोट के बंटन सबूत देते हैं। बटन खो

ले कि बात यह थी कि उसने कोट उलटा किया हुआ था, तब तक सरदार जी जा चूके थे। वह आदमी मुक्त मारा गया।

इस भारत की दशा भी कुछ ऐसी ही है। तुम जिस तरफ जा रहे हो, उस तरफ तुम्हारा मुंह नहीं है। जिस तरफ से तुम आ रहे हो, तुम्हारा मुंह अब भी वहीं है! तुम अगर बार-बार गड्ढों में गिरते हो तो कुछ आश्चर्य नहीं है।

भविष्य की तरफ देखो। अतीत के साथ बहुत दिन बंद कर देख लिया, साथ कुछ भी न पाया। हाथ खाली है, पेट खाली है, गरीबी रोज बढ़ती जाती है। भविष्य की तरफ देखा हालात बदलने शुरू हो जाएंगे। प्रतिभा की तुम्हारे पास कोई कमी नह ीं है, मगर प्रतिभा को गलत आयाम, गलत दिशा में उलझा रखा है। प्रतिभा ठीक -ठीक दिशा दो।

और मेरा अनुभव यह है कि अगर तुम ध्यान की चौबीस घंटों में कुछ देर के लिए भी अनुभूति ले लो, नहा जाओ, ताजे हो जाओ, तो तुम वर्तमान में आ जाओगे। वहीं, जहां तुम हो। और यहीं से जाता है रास्ता भविष्य की तरफ। इक्कीसवीं स दी हो या बाइसवीं सदी हो, यहीं से जाता है रास्ता भविष्य की तरफ।

लेकिन जो राजनीतिज्ञ तुमसे कह रहे हैं कि भविष्य...इक्कीसवीं सदी लानी है, वे खुद भी यहां नहीं है। इक्कीसवीं सदी तो बहुत दूर, अभी उनकी बीसवीं सदी भी नहीं आयी। और तुम दिल्ली में जाकर देख सकते हो—सब तरह के ज्योतिषी, सब तरह के हस्तेखाविद, सब तरह के महात्मा; साधु संत अड्डा आ जाए हुए बैठे हैं। हर राजनीतिज्ञ का कोई न कोई महात्मा गुरु है। कोई न कोई हस्तरेखाविद, उस की हाथ की रेखाओं को पढ़ कर बनाता है कि कब किस घड़ी में वह चुनाव का फार्म भरे—तारे कब सहयोगी हैं और कब तारे विरोधी हैं।

मेरे एक मित्र संसार के बहुत पुराने सदस्य थे, उनको संसद का पिता कहा जाता था। मैं उनके घर मेहमान होता था। उनके घर मेहमानी एक मुसीबत थी। मुसीबत यह थी कि वह मेरे पिता के दोस्त थे, बुजुर्ग थे, वह मुझको भी न जाने देते थे, जब तक कि उनका हस्तरेखाविद...अब हस्तरेखाओं का देख कर ट्रेनों के टाइम टे बल नहीं बनते। ट्रेन को जाना है ग्यारह बजे और मुझे छह बजे सुबह से उठा कर वह स्टेशन पहुंचा देते। मैं उनसे कहता, क्या हद कर रहे हो? वह कहते कि छह बजे घर से निष्कासन है। गाड़ी कभी आए, मगर घर छह बजे छूटे तो शुभ होगा , नहीं तो अशुभ हो जाएगी। और मैं तुम्हारे पिता को क्या जवाब दूंगा? मैंने कहा , बड़ी मुसीबत है। और इतना ही होता कि वह मुझे छोड़ कर अपने वापिस चले जाते, वह भी हनीं। वह मेरी खोपड़ी खाते वहीं बैठ कर। सुबह छह बजे से लेकर जब तक ट्रेन न आ जाए।

और कोई ट्रेन इस देश में वक्त पर आती नहीं। सिर्फ एक बार मैंने एक ट्रेन को वक्त पर आते देखा था। हालांकि मैं कोई तीस साल से ट्रेनों में चलता रहा हूं नि रंतर, मुल्क के कोने कोने में, सिर्फ एक बार। तो मैं ड्राइवर को धन्यवाद देने गया कि यह मेरे जीवन का सौभाग्य है कि कम से कम एक बार तुमने ट्रेन को ठीक

मिनिट बा मिनिट...। ड्राइवर ने कहा कि धन्यवाद देने के पहले जरा मेरी भी सुन लो। यह असल में कल की ट्रेन है। चौबीस घंटे लेट। मैंने कहा, सोचा था एक तो अनुभव हो जाता, वह भी न हुआ। उस ड्राइवर से मैंने कहा, तुम क्यों फिजूल टाइम टेबल छापते हो—जब गाड़ियों को जब आना है, तब आना है।

स्टेशन मास्टर पास ही खड़ा था, मुझसे बोला कि टाइम टेबल की बात मत करना। मैंने कहा, क्यों? उसने कहा, टाइम टेबल न छापेंगे तो पता कैसे चलेगा कि कौन ट्रेन कितनी लेट है। तुम और मुसीबत में डाल दोगे। टाइम टेबल का मतलब ही क्या है? यह ही मतलब है कि इससे पता चल जाता है कि यह ट्रेन बारह घंटे लेट है या चौदह घंटे लेट है या चौबीस घंटे लेट है,नहीं तो पता भी नहीं चलेगा कि कौन सी ट्रेन कब आयी, कब गयी; कहां गयी; गयी, कि नहीं गयी। टाइम टेबल छपेगा। मैंने कहा, अच्छा भैया, छपने दो टाइम टेबल।

सत्तर वर्ष के हो गए थे, बड़ी-बड़ी समस्याएं हल करने का मन में खयाल रखते थे। जुगल किशोर बिड़ला से उन्होंने मुझे मिलाया इस आशा में कि अगर जुगल किशोर बिड़ला को मेरी बातों में काई रस और कोई रुचि आ जाए तो मेरे काम को धन की, अर्थ की कोई कमी न रह जाए। मैं कोई भी काम करूं, बिड़ला उस काम को आर्थिक सहारा दे दें। जुगल किशोर बिड़ला ने कहा, सिर्फ दो काम करने योग्य हैं। एक काम तो गौ रक्षा। मैं कहा, मारे गए। गौ रक्षा मुझको नहीं करनी। अपना धन आप अपने पास रखो। इधर आदमी मरने के करीब पहुंच रहा है, लेकिन जिनकी आंखें पीछे बंधी हैं, वे कहते हैं गौ रक्षा! और दूसरी बात कि हिंदू धर्म का प्रचार करो—तो जितना धन चाहिए, खाली चेक बुक देने को तैयार हूं। मैंने कहा, वह चेक बुक आप अपने पास रखो। मैं धर्म का तो प्रचार कर सकता हूं, लेकिन हिंदू धर्म का नहीं। क्योंकि जैसे ही धर्म हिंदू हुआ कि धर्म नहीं रह जाता; मुस्लिम हुआ कि धर्म नहीं रह जाता; ईसाई हुआ कि धर्म नहीं रह जाता।

धर्म तो तभी तक धर्म होता है, जब तक उस पर कोई विशेषण नहीं होता। तब तक वह एक खुले आकाश की सुगंध है, खुले तारों की रोशनी है।

तुम एक पक्षी को आकाश में उड़ते देखते हो—मन गदगद हो जाता है, उसके सौंदर्य को देख कर। इसी पक्षी को तुम पींजड़े में बंद कर लो सोने के और घर में टांग लो। शायद तुम सोचो कि यह वही पक्षी है। तुम गलती में हो। यह वही पक्षी नहीं है। उस पक्षी के पास पूरा आकाश था, इस पक्षी के पास सिवाय जंजीरों के और कुछ भी हनीं है। वह पक्षी जिंदा था, वह पक्षी सिर्फ नाममात्र को जिंदा है—सांसें लेता है। वह पक्षी जिंदा ही क्या, जिसके पंखों को आजादी न हो।

धर्म आकाश में उड़ते हुए पक्षी की तरह मुक्त है।

तो मैंने जुगल किशोर को कहा, धर्म की तो बात जीवन भर मैं करूंगा, जीवन की अंतिम श्वास तक करूंगा, लेकिन कोई विशेषण उस पर नहीं बैठने दूंगा। विशेषण बैठा कि बात मरी। विशेषण आया कि पक्षी पिंजरे में बंद हुआ। उन्होंने कहा, मु

झे धर्म से कुछ नहीं लेना देना—हिंदू धर्म, सनातन धर्म...मैंने कहा, आप अपना सन
ातन धर्म भी अपने आप रखो, अपनी चेक बुक भी सम्हाल कर रखो।
इस देश को जिन चीजों से लगाव हो गया है सदियों में, उस लगाव को कोई भी तोड़ने चलेगा तो लगता है, दुश्मन है। इससे मुझे लोग न मालूम अनजाने में कैसे अपना दुश्मन समझ लेते हैं। मैं चला हूं उनके पिंजड़े से उनको बाहर निकालने, वे मेरे ही हाथों को लहूलुहान कर देते हैं। वे पिंजड़े के बाहर निकलने को राजी नह
ीं हैं।
कौन ले जाएगा इस देश को इक्कीसवीं सदी में। राजनेता? नहीं लेकिन अच्छा अप
ना देते हैं तुम्हें। ये सपनों के सौदागर हैं। तुम्हें सपने देते हैं, तुमसे नगद वोट लेते हैं। न सपने कभी पूरे होते हैं। पांच साल में फिर तुम भूल जाते हो। फिर नए स
पने के सौदागर खड़े हो जाते हैं। फिर तुम इस आशा में कि शायद जो कल नहीं हुआ, अब हो जाए।
मगर राजनीति ने कभी भी मनुष्य को विकसित नहीं होने दिया है। राजनीति चाह
ती नहीं कि मनुष्य विकसित हो। क्योंकि जितना विकसित मनुष्य होगा, उतना ही उसे गुलाम बनाना मुश्किल है, उतना ही उसे स्वतंत्र होने से रोकना मुश्किल है, उतना ही उसे आज्ञाकारी बनाना मुश्किल है।
स्वतंत्रता क्रांति है।
और कांति ही केवल तुम्हें भविष्य में ले जा सकती है। एक आध्यात्मिक क्रांति—औ
र उस क्रांति का सूत्र है : ध्यान।
आप जानते ही हैं कि भारत में क्रिकेट का खेल इस हद तक लोकप्रिय है कि लोग इसके पीछे दीवाने हो जाते हैं। इस विदेशी खेल के चलते भारत के अपने कई खे
ल उभर नहीं पाए। स्थिति यह है कि क्रिकेट के टेस्ट खिलाड़ी—नाम तो मैं लेना न
हीं चाहता—भारत में पूजे जाते हैं, स्टार समझे जाते हैं। यानी राजनीति के बाद, अगर फिल्म के बाद सबसे ज्यादा कोई स्टेज पर हावी हैं तो ये ही खिलाड़ी हैं। लेि
कन इस खेल की वजह से हिंदुस्तान के अपने कई खेल नहीं न पन पाए। इस दीवा
नगी को आप किस रूप से समझाते हैं?
दीवानगी तो दीवानगी है; वह चाहे बाहर की हो, चाहे भारत की हो। सारी दुनिय
ा में अलग-अलग खेल लोगों को, दीवाना बनाते हैं। मगर मकसद एक है। केलिफोर्ि
नया में केलिफोर्निया की यूनिवर्सिटी ने पिछले वर्ष, एक वर्ष तक अध्ययन किया इ
स बात का कि जब भी यहां फुटबाल के मैच होत हैं तो लोग बिलकुल पागल हो जाते हैं। और सात दिनों तक, मैच के समाप्त हो जाने के बाद—अपराधों में चौदह प्रतिशत बढ़ोतरी हो जाती है—ज्यादा हिंसाएं होती हैं, ज्यादा आत्महत्याएं होती है, ज्यादा रेप होते हैं। और फिर भी सरकार उन खेलों को चलने देगी!
उन खेलों को रोका नहीं जा सकता। और मैं भी नहीं कहूंगा कि रोको, क्योंकि उ
न खेलों में लोगों का जो बावलापन निकल जाता है, वह अगर न निकल पाए तो और भी ज्यादा बलात्कार होंगे, और भी ज्यादा हिंसा होगी। खेल चाहे कोई भी हों

—क्रिकेट का हो, कि फुटबाल मैच हो, कि वालीबाल हो, कि हाकी हो, तुम्हारे भी तर की हिंसा को निकालने का सुसंस्कृत रूप है। और जब तक आदमी के भीतर िहसा है, क्रोध है, तब तक कोई बुराई नहीं है। मैं नहीं समझता कि—अगर क्रिकेट के खिलाड़ियों को लोग नेताओं की तरह, फिल्म स्टारों की तरह पूज्य स्थानों पर रखते हों—मुझे कोई एतराज है। मेरा एतराज यही है कि राजनेताओं का नंबर सब से नीचे होना चाहिए।

फिल्मों के अभिनेता लोगों के मनों में दबाए गए प्रेम, दबायी गयी भावनाओं—उन सबका रेचन करने में सहयोगी होते हैं। उन्हें इज्जत मिलनी चाहिए। मगर अभी अभी यह दुर्भाग्य घटा है कि फिल्म के अभिनेताओं को राजनीति में पहुंचने का नशा चढ़ा है। यह गिरावट है। यह उनकी इज्जत की ऊंचाई नहीं है। जब वे फिल्म अभनेता थे तो एक कलाकार थे; अब, अब उनके जीवन में कोई कला नहीं है। उन्हें वापिस लौट आना चाहिए। राजनीति में तो उन लोगों को भेजना चाहिए, जिनसे कुछ और हो नहीं सकता हो। क्योंकि वहां करना ही कुछ नहीं है। क्रिकेट के खिलाड़ी भी, या फुटबाल मैच या और खेलों के खिलाड़ी वे सब भी तुम्हारे भीतर रेचन करते हैं, केथार्सिस करते हैं; उनको खेलते देख कर तुम्हारे भीतर के बहुत से आवेग निकल जाते हैं।

रही भारतीय खेलों की बात, तो भारतीय खेलों में कोई भी ऐसा खेल नहीं है, जो क्रिकेट या फुटबाल या हाकी के मुकाबले खड़ा हो सके। इसमें किसी का कसूर नहीं है। तुम लाख कबड्डी-कबड्डी करो, किसी को कुछ मजा नहीं आता। कबड्डी-कबड्डी तो लोग रोज अपने अपने घरों में कर ही रहे हैं—पति पत्नी के साथ कबड्डी-कबड्डी। पूरा देश कबड्डी खाना बना हुआ है। यहां और अब कबड्डी करवाओगे? और कौन रस लेगा उसमें? यही तो घर में कर रहे हो। अब इसको देखने कौन जाने वाला है? या गिल्ली डंडा! भारतीय खेलों में कोई दम नहीं है। अब यह मजबूरी है, क्या करें? उसका कारण है कि भारतीय खेलों में दम क्यों नहीं है। हर चीज के पीछे वजह तो होती है।

भारतीय खेल बच्चों के खेल थे। भारत में जवानी आ ही नहीं पाती थी, क्योंकि हम जल्दी से विवाह कर देते थे। मेरी मां यहां मौजूद हैं, उनकी शादी सात साल में हो गयी थी। तब मेरे पिता की उम्र बारह साल की रही होगी। बारह साल की उम्र में शादी हो जाए तो अब घर गृहस्थी की फिकर करें कि फुटबाल खेलें, कि क्रिकेट खेलें।

भारतीय खेल छोटे-छोटे बच्चों के खेल हैं।

पाश्चात्य खेल जवानों के खेल हैं।

पश्चिम में जवानी आयी, क्योंकि विवाह की उम्र रेखा ऊपर उठती गयी। अब लोग पच्चीस साल में, छब्बीस साल में, तीस साल की उम्र में विवाह करते हैं। चौदह साल की उम्र में युवक विवाह के योग्य हो जाते हैं। उनके भीतर ऊर्जा और शक्ति का अवतरण होता है। अब वे बच्चों को जन्म दे सकते हैं। तरह साल की उम्र में

लड़कियां मां बनने के योग्य हो जाती हैं। लेकिन उनको रुकना पड़ेगा, अभी पंद्रह साल तक। यह पंद्रह साल की जवानी, कहीं उसका निष्कासन होना चाहिए। इसलिए पश्चिम के खेल जवानों के खेल हैं। और उनका रस और है।

भारत के खेल झुनझुने हैं। अब तुम नाहक झुनझुनो को, सिर्फ भारतीय हैं, इसलिए सिर पर उठाए फिरो तो तुम्हारी मर्जी। भारतीयों के पास कोई जवानी का खेल नहीं है।

और बहुत जल्द इस बात को खयाल में लेना कि खेलों की भी उम्र होती है। जिस देश में लोग ज्यादा जीते हैं, वहां कुछ और खेल भी महत्वपूर्ण हो जाते हैं। जैसे शतरंज है—ये बूढ़ों के खेल हैं, जवानों के नहीं। ये उनके खेल हैं, जिनको अब करने को कुछ बचा नहीं। सब कर चुके। अब एक और नालायकी बची है, यह और कर लें, फिर संसार से छुटकारा है। फिर मोक्ष में—न कबड्डी है, न शतरंज है। खेलों की भी उम्र है। जिस देश में औसत उम्र कम होती है, वहां इस तरह के खेलों की भी कोई बहुत बड़ी प्रशंसा नहीं होती और न प्रसार होता है।

मगर मैं यह कहना चाहूंगा कि खेलों के कारण अगर लोग सम्मान देते हों किसी को, अभिनय के कारण किस को सम्मान देते हों—जैसे बीटलों को सम्मान मिला सारी दुनिया में...। संगीत कोई महान न था, जवानों का था। शास्त्रीय न था, शास्त्रीय संगीत के लिए बुढ़ापा चाहिए। एक उम्र चाहिए, लंबी उम्र कि शास्त्रीय संगीत को समझा जा सके। बीटल और उनके बाद आने वाले दूसरे संगीत पश्चिम में उछल कूद कर रहे थे। वह कोई न तो नाच था, न संगीत था, लेकिन जवानों को उसकी जरूरत थी। उस उछल कूद से उनके भीतर के आवेग निकल जाते थे। नहीं तो यही आवेग अपराध बन जाएंगे।

हर स्कूल में व्यवस्था होनी चाहिए कि लोगों के आवेग निकल जाए। हमारे मुल्क में यह समस्या है कि लड़के हड़ताल करते हैं, पत्थर फेंकते हैं, शिक्षकों को सताते हैं, स्कूलों में आग लगाते हैं। जिम्मेवार हम हैं। हम उनके वेगों को निकलने का कोई समुचित उपाय नहीं देते। इसके पहले कि वे पत्थर मारें—यही हाथ जो पत्थर मारते हैं और पत्थर मार कर एक तरह की शांति अनुभव करते हैं, यही हाथ वालीबाल भी खेल सकते हैं। और बालीबाल भी उनको वही शांति मिल जाएगी। और स्कूल के कांच भी बच जाएंगे। स्कूल भी दीवालें भी बच जाएंगी। स्कूल के शिक्षक भी बच जाएंगे।

खो का मनोविज्ञान है।

और मनोविज्ञान यही है कि हमारे भीतर दबे हुए आवेग उनके माध्यम में बह जाते हैं, हम भीतर थोड़े हलक हो जाते हैं।

पश्चिम के खेल भारत के खेलों को बढ़ने से रोक रहे हैं, ऐसी नहीं है। भारत के पास जवानों के खेल नहीं हैं। क्योंकि भारत में जवानी अभी-अभी आयी है। और वह पश्चिम में जरिए आयी है, उनकी शिक्षण व्यवस्था से आयी है, इसलिए उन्हीं के खेलों को दोहराती है। भारत के पास सिर्फ छोटे बच्चों के खेल हैं। उन खेलों

को कोई इतना बड़ा रूप हनीं दिया जा सकता कि किसी आदमी को तुम एक स्टा र बना दो। क्योंकि यह गिल्ली डंडा खेलने में बड़े होशियार हैं। लोग सिर्फ हंसेंगे उ नको देखकर कि भैया, तुम्हें कुछ और नहीं सूझता करने को? गिल्ली डंड! ये छो टे-छोटे बच्चे खेलने दो, तुम कुछ और करो। इसमें कुछ भारत का सवाल नहीं। इ समें सवाल है उम्र और उम्र की अलग-अलग पीढ़ियों का।

भारत में सदियों से हमने जवानी को कभी आने ही नहीं दिया। इसलिए जवानी क ी बहुत सी चीजें भारत में कभी पैदा ही नहीं हुई। छोटे से बच्चे की शादी कर दी , इसलिए भारत में प्रेम विवाह का सवाल ही न उठा। सवाल कहां से उठे? प्रेम ि ववाह का सवाल तो तब उठे, जब हम बच्चों को शादी न करें, उन्हें जवान होने दें, उनके भीतर प्रेम की ऊर्जा जगने दें और मौका दें उन्हें कि स्त्री और पुरुष मि ल सकें। तो प्रेम विवाह का सवाल उठेगा। यहां तो हम इतने बचपन में शादी कर देते थे कि पत्नी और पति करीब-करीब भाई बहन की तरह बड़े होते थे। संस्कृत का पुराना शब्द है भगिनी। उसके दोनों मतलब हो तो हैं—पत्नी भी और बहन भ ी। वह शब्द बड़ा प्यारा है। वह इस बात का सूचक है कि इतनी जल्दी शादी हो जाती थी कि अभी पता भी नहीं था कि पत्नी और पति इनका भी कोई नाता हो ता है। ज्यादा से ज्यादा भाई बहन। जैसे और भाई बहन थे, वैसी यह भी एक बह न और घर में आ गयी। इसके साथ बड़े होते थे। साथ-साथ जवान होते थे। मौका ही न मिलता था कि इधर-इधर चौपाटी वगैरह पर जाए, क्योंकि यह बहन साथ ही साथ चौपाटी थी। दूसरे भैया भी वहां होते, मगर उनकी बहनें भी होती।

हमने हजारों साल तक जवानी को आने ही हनीं दिया। और साथ ही साथ बच्चों को छह सात साल, आठ साल का बच्चा हुआ कि वह मां बाप के साथ काम में लग जाता। खेत जाने लगता, बढ़ईगिरी करने लगता, जूता सीने लगता, दुकान प र बैठने लगता। कुछ भी करता, मां बाप की सहायता करता। उसे पता ही नहीं चलता कि कभी जवानी के दिन भी आए और गए। उसके बचपन मग और उसके बुढ़ापे के बीच जवानी के दिन भी आए और गए। उसके बचपन में और उसके बु. ढापे के बीच जवानी की कोई जगह न थी, कोई खाली जगह न थी।

यह तो आधुनिक शिक्षा का परिणाम है, जो पश्चिम से आयी। और अच्छा है कि आयी, क्योंकि इसने एक नया वर्ग पैदा किया जवान का, और जवानी के नए रंग, नए रूप पैदा किए। खेल जवानों के अपने होंगे। साहित्य जवानों का अपना होगा। फिल्में जवानों की अपनी होंगी। गीत जवानों के अपने होंगे। एक पूरा आयाम खु ल गया, जो बिलकुल नया है। और चूंकि पश्चिम से आया है, हमारे पास उसे मु कावले में कुछ भी न था, इसलिए यह मत सोचो कि उसने कुछ दबाया है। उसने कुछ भी नहीं दबाया है, उसने सिर्फ एक खाली जगह को पैदा किया है। और खाल ी जगह में वही आया, जो पश्चिम से आना संभव था।

अब जैसा हमने इस देश में कभी विज्ञान की कोई खोज नहीं की। जो भी विज्ञान आ रहा है, पश्चिम से आ रहा है। इस विज्ञान के साथ-साथ जो भी अच्छाई आए

गी, बुराई आएगी, वह भी पश्चिम से आएगी। यह मत कहना कि हमारा कुछ दब
ा कर आया। हमारे पास कुछ था ही नहीं, विज्ञान के नाम पर हम खाली और सू
ने हैं। पश्चिम से विज्ञान आ रहा है।

और हर चीज के पहलू होते हैं। उसके अच्छे पहलू हैं, उसके बुरे पहलू हैं। सब स
मझो कि पश्चिम से बर्थ कंट्रोल आया कि आदमी चाहे तो बच्चे पैदा करे या चाहे
 तो न पैदा करे। अब इसका अच्छा परिणाम हो सकता है कि हम देश की आबाद
ी को कम कर लें और देश की खुशहाली को बूढ़ा लें। और इसका दूसरा परिणाम
 यह भी हो सकता है कि हम देश को वेश्याओं से भर दें, और देश की सारी नैि
तकता को नष्ट कर दें, क्योंकि अब तुम्हारी पत्नी पड़ोसी के साथ मेलजोल रखती
 है, इसका तुम पता नहीं लगा सकते। अब तुम पक्का नहीं कर सकते कि यह बे
टा तुम्हारा ही है। यह हमारे हाथ में हैं। विज्ञान तो तटस्थ है। उसका उपयोग हम
 कैसे करते हैं, यह हम पर निर्भर करेगा।

ये खेल भी तटस्थ है। उनका हम कैसे उपयोग करते हैं, यह भी हम पर निर्भर क
रेगा। और हमें हर चीज का सम्यक उपयोग करने की दृष्टि पैदा करनी चाहिए। ह
र चीज का ऐसा उपयोग किया जा सकता है कि इस देश की अंतरात्मा को, जो
हजारों साल के कूड़े कचरे से दबी है, हम गंगा स्नान करवा सकते हैं।

10 अगस्त, 1986, संध्या, सुमिला, जुहू, बंबई

भारत के पास असली खजाना है

भगवान श्री, धर्मयुग परिवार और धर्मयुग के करोड़ों पाठकों की ओर से भारत में
 आपके आगमन का हार्दिक स्वागत है।

धर्मयुग हिंदी की पत्रिका है। विदेशों में भी हिंदी में ही पढ़ी जाती है। और अंग्रेजी
की इलस्ट्रेटेड वीकली है। जिसकी सर्कुलेशन कम है, धर्मयुग की अधिक है। धर्मयुग
 के डा. धर्मवीर भारती ने आपको नमस्कार भेजा है। और बंबई से उन्होंने भेजा है
 कि मैं अंतरंग बातचीत कुछ कर सकूं और सहयोगी ने कहा कि अंग्रेजी में बातच
ीत होगी। परंतु, यदि आपकी आज्ञा तो तो आप से हिंदी में ही बात हो। मैंने अंग्रे
जी में इनको प्रश्न दे दिए हैं, वही प्रश्न हिंदी में भी हैं।

अंग्रेजी में उन्हें तकलीफ होगी?

जी, हिंदी में लिखना है। हिंदी में हम अधिक स्वाभाविक रूप में आपके चरणों में
बैठकर बातचीत कर सकेंगे। आप ऋषितुल्य है। हमें अच्छा लगेगा। आपकी आज्ञा
हो तो।

बेहतर होगा, अंग्रेजी में ही करें।

जी, जैसा आज्ञा।

भगवान श्री, धर्मयुग आपका एक विस्तृत रेखाचित्र बनाना चाहता है और आपके
महान व्यक्तित्व की अंतरंग बातें प्रस्तुत करना चाहता है। और भारत में सबको इ
स बात का दुख है, कि अमेरिका ने कितनी बुरी पाशविकता हमारे हमारे एक ऋि

ष के साथ की है। मैं संक्षेप में आपसे जन्म, शिक्षा और हिंदू दर्शन के अध्ययन के बारे में पूछना चाहता हूं। यह मेरा पहला प्रश्न है।
भारत के संबंध में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जिस तरह अन्य देशों के अपने तत्व चिंतन होते हैं उस तरह इसका अपना कोई तत्व चिंतन नहीं है। चिंतन शब्द का अर्थ प्रशंसा की है अनुभूति के प्रेम की। ज्ञान उधार हो सकता है, अनुभूति कभी उधार नहीं हो सकती। इसलिए हमारे मार्ग को हमने दर्शन कहा है, चिंतन नहीं।
तो दर्शन को भारतीय तत्व चिंतन कहना मौलिक रूप से गलत है। दर्शन केवल भारत में कहते हैं, और कहीं नहीं। तत्व चिंतन मनोगत बात है, जिसके संबंध में तुम सोचते रहते हो। दर्शन तुम्हारे अंतरतम अस्तित्व का बोध होता है। तुम उसे अनुभव करते हो। तत्व चिंतन में तर्क की जरूरत होती है, दर्शन में मौन की। कोई विचार नहीं: सब कुछ आत्यंतिक शून्यता में...और केवल तभी तुम स्वयं को जान पाते हो। तो मैं दर्शन को भारतीय तत्व चिंतन नहीं कहता।
मैंने यहां दर्शन ही लिखा है। मेरे प्रश्न में फिलासफी तो इसलिए कहा कि और कोई शब्द नहीं है।
तो मैंने अंग्रेजी में दर्शन के लिए एक शब्द गढ़ा है: फिलोसिया। जिसका मतलब होता है, दर्शन का प्रेम। मैं उसे भारतीय फिलोसिया कहता हूं।
फिलोसिया अर्थात दर्शन!
हां, दर्शन।
धन्यवाद, भगवान श्री। मेरा अगला प्रश्न...
आपकी युवावस्था में क्या कोई ऐसी व्यक्ति या कुछ व्यक्ति थे, जिनसे आपको सर्वाधिक प्रेरणा मिली हो?
नहीं? अच्छा, तीसरा प्रश्न: वैदिक संस्कृति, वेद, उपनिषद, गीता और मनुस्मृति, इनके संबंध में आपके क्या विचार हैं?
वेदों मग केवल दो प्रतिशत दर्शन है। उनकी 98 प्रतिशत बातें तो एकदम कचरा है। लेकिन वह दो प्रतिशत हिस्सा इतना कीमती है कि उसके कारण शेष 98 प्रतिशत भी मूल्यवान हो गया है। और उस 98 प्रतिशत को उसमें से निकाल लेना एक महत्वपूर्ण काम होगा; क्योंकि वही हिस्सा ईसाई, मुसलमान और अन्य की आलोचना का लक्ष्य बना हुआ है—उस दो प्रतिशत को छोड़कर। और वह दो प्रतिशत ही असली हिस्सा है, किंतु वह खो गया है। उस 98 प्रतिशत में। और वह 98 प्रतिशत बिलकुल साधारण है, उसका कोई मूल्य ही नहीं है।
और उसका कारण यह है कि वेद कुछ एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका जैसे हैं। उन दिनों जो कुछ उपलब्ध था उसे वेदों में संगृहीत किया गया है। इसलिए उन्हें संहिता कहा जाता है: संग्रह।
अब उन संहिताओं में साधारण बातों काक भी संग्रह है, असाधारण बातों का संग्रह है, और निकट बातों का संग्रह भी है। तो मुझे लगता है कि वे दो प्रतिशत अनूठे

रत्न अलग किए जाएं और 98 प्रतिशत को फेंक दिया जाए। फिर कोई भी वेदों की आलोचना नहीं कर सकता। उसकी संभावना ही नहीं रह जाती।

गाती और उपनिषद?

उपनिषद अत्यंत अदभुत है। मनुष्य के पूरे इतिहास में उनके साथ किसी की तुलन ा नहीं हो सकती।

उपनिषद शब्द का अर्थ है, गुरु के चरणों के पास बैठना। जो बोध को उपलब्ध हो गया है, उसका श्रवण करना।

वह कोई साधारण शिक्षा नहीं है। गुरु कुछ ऐसी बातें नहीं सिखा रहा है, जिन्हें उ सने जानकारी की तरह इकट्ठा कर लिया है। बल्कि वह तो अपने को ही शिष्य में उंडेल रहा है। वह एक स्वार्थ भिन्न प्रकार की शिक्षा है, जो अन्यत्र पायी नहीं जा ती। उसकी मांग यह है कि शिष्य पूरी तरह से खुला, उपलब्ध रहे। जब गुरु बोल रहा हो तो शिष्य बिलकुल ही मौन हो जाए, उसके मन में विचार की छोटी सी लहर भी न उठे। तभी गुरु अपनी परम अनुभूति उसके भीतर उंडेल सकता है।

और विद्यार्थी और शिष्य में यही फर्क है। विद्यार्थी ज्ञान ग्रहण करता है, शिक्षा अ नुभूति का स्वाद लेता है। शिक्षक अपनी जानकारी को बांटता है, जो कि उसका अपना अनुभव नहीं होगा। लेकिन गुरु वही बांटता है, जो प्रामाणिक रूप से उसका अपना है। वह अपने स्वाधिकार से बोलता है।

तो मनुष्य के परे इतिहास में उपनिषद सबसे आध्यात्मिक ग्रंथ है।

और गीता के संबंध में आप क्या सोचते हैं?

मैं कृष्ण से सहमत नहीं हूं। एक सीधे कारण से क्योंकि वे अर्जुन को हिंसा के लिए युद्ध में उतरने के लिए प्रवृत्त कर रहे हैं। मेरा तालमेल अर्जुन के साथ ज्यादा बै ठता है कृष्ण की उपेक्षा।

अर्जुन हर तर्क युद्ध न करने के लिए दे रहा था। यदि हमारे सब प्रियजन मारे जा एंगे तो युद्ध करने में क्या सार है? मैं स्वर्ण सिंहासन पर भी बैठूंगा भी मेरी आंखों में तो आंसू ही होंगे। इस सबका मतलब क्या है। उन्हें राज्य करने दो, मैं हिमाल य चला जाऊंगा। लेकिन मुझे नहीं लगता कि हिंसा में मामला हल होगा।

और कृष्ण निरंतर आग्रह करते हैं। वे अर्जुन के एक भी तर्क का जवाब नहीं देते हैं। फिर अनंत में कृष्ण एक चाल चलते हैं, जो कि उनकी धूर्तता का प्रतीक है। वे कहते हैं, परमात्मा तुमसे जो करवाना चाहता है उसे करना तुम्हारा कर्तव्य है। यदि मैं अर्जुन की जगह होता तो मैं रथ से नीचे उतर जाता और कृष्ण से कहत ा, परमात्मा मुझसे यही करवाना चाहता है। मैं हिमालय जा रहा हूं।

तो मैं कृष्ण से सहमत नहीं हूं। और मुझे हैरानी होती है कि महात्मा गांधी जैसा आदमी भी, जो पूरी जिंदगी अहिंसा का प्रचार करता रहा, गीता को अपनी मां म ानता है।

विनोबा भावे भी?

हां, विनोबा भावे भी। और उन्हें यह विरोधाभास दिखायी नहीं पड़ता। मैं गीता के पक्ष में बिलकुल नहीं हूं।

भगवान श्री, मैं आपके उत्तर से बहुत प्रभावित हुआ हूं। शायद आप ठीक कह रहे हैं। अच्छा, मनुस्मृति के संबंध में क्या कहेंगे?

भारत को जो अभिशाप हैं, मनुस्मृति उनमें से एक है। और वह अभी भी हमें सता रही है। पांच हजार साल बीत गए लेकिन मनु अब भी हमें सता रहा है। उसने हिदू समाज को चार वर्णों में बांट दिया—बहुत कुरूप। उसने स्त्री का अवमूलन किया। उसने समाज के एक चौथाई हिस्से को मनुष्यता से भी नीचे गिरा दिया, उनको गुलाम बनाया। और वह अब भी जारी है।

तो मैं मनुस्मृति के पक्ष में नहीं हूं। मैं तो सिर्फ यही चाहता हूं कि मनुस्मृति की सब किताबें जला दी जाएं। और मन की प्रेतात्मा से हम मुक्त हो जाएं; उसने हमें बहुत सता लिया। और उसका समर्थन करने का कोई उपाय नहीं है। इन मनुस्मृति के कारण पूरा जगत हमारी हंसी उड़ाता है। और हम उससे ही जकड़े हुए हैं।

भगवान श्री, आपके अपने दर्शन से, जिसने मैं रजनीश संस्कृति कहता हूं, जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म बिलकुल भिन्न हैं। फिर आप भगवान बुद्ध और महावीर की प्रशंसा करते हुए उनके शब्दों के उद्धाहरण क्यों देते हैं? और हाल ही में दिल्ली की पत्रकार परिषद में आपने कहा, मैं महावीर और बुद्ध की भूमि में लौट आया हूं।

उसके कई कारण है।

मैं महावीर और बुद्ध, ये शब्द शक्तिगत नामों की तरह नहीं कहता। महावीर का व्यक्तिगत नाम था वर्धमान। सत्य प्राप्ति के लिए उनका संघर्ष देखकर लोगों ने उन्हें महावीर नाम दिया। बुद्ध भी व्यक्तिगत नाम ही नहीं है। उसका कुल अर्थ है, जागा हुआ। उसका नाम तो सिद्धार्थ था।

तो जो भी जाग गया, वह बुद्ध है, महावीर है। मैंने उन मानों का प्रयोग नितांत अव्यक्तिगत रूप से किया है। इसलिए उनके दर्शन से मेरा कोई सरोकार नहीं है।

अगला प्रश्न : मुझे लगता है कि मार्ग के प्रणेता, ऋषि चार्वाक से, आपका दर्शन बहुत मेल खाता है।

हां, दोनों में कुछ समानता है, लेकिन पूरी समानता नहीं है। मुझे इसे थोड़ा स्पष्ट करना पड़ेगा।

यह बड़ी सुंदर बात है कि भारत ने चार्वाक को भी ऋषि कहा है, आचार्य कहा है। यह हमारी उदारता है। और अगर हम इसी दिशा में और आगे बढ़े होता हमने यह सीधा साफ तथ्य देखा होता कि मनुष्य शरीर और आत्मा, दोनों हैं। अस्तित्व पदार्थ भी है और ऊर्जा भी है।

अगर यह सत्य है तो चार्वाक और बुद्ध को दो नहीं होने चाहिए। क्योंकि बुद्ध अधूरे हैं, वे सिर्फ आत्मा की बात करते हैं। चार्वाक अधूरे हैं, वे सिर्फ शरीर की बात करते हैं। कुछ भी चीज जो आधी है, कहीं ज्यादा खतरनाक है उस चीज से, जो पूर्णतः असत्य है। अधूरे सत्य हमेशा खतरनाक होते हैं। सत्य पूरा होता है—ए

क वर्तुल की भांति। वर्तुल सिर्फ पूरा ही हो सकता है।तुम आधा वर्तुल कभी हनीं कह सकते। वह एक कामना होगी, वर्तुल नहीं।

मेरा पूरा प्रणाम यही है; एक ऐसा मनुष्य निर्मित करना जो पूर्णतः शरीर में रहे —चार्वाक से समस्वरित होकर और जो अपनी आत्मा में बसे—उपनिषदों और ऋषियों—सारे बुद्धपुरुषों का समानधर्मी होकर। वही समग्र मनुष्य होगा।

और मैंने उसे एक नया नमा दिया है, क्योंकि चार्वाक को पश्चिम में कोई हनीं जानता किंतु झोरबा दि ग्रीक को सभी जानते हैं। तो मैंने, अपने नए मनुष्य को नाम दिया है: झोरबा दि बुद्ध। मैं उसे चार्वाक दि बुद्ध भी कह सकता हूं। वह मनुष्य का समग्र, परिपूर्ण रूप होगा, जिसमें कुछ भी अस्वीकृत नहीं है, और सभी कुछ एक संगठित इकाई में एकत्व पा गया है।

भगवान, मैं सचमुच बहुत ही अनुगृहीत हूं। मैं कोई लेखक नहीं हूं, मैं इस शब्दों में बयान नहीं कर सकता। मेरे अलग प्रश्न का आंशिक उत्तर आप पिछले प्रश्न में दे चुके हैं, फिर भी पुनश्च—क्या आप अध्यात्म और ऐंद्रित सुख—जैसे सेक्स इत्यादि, इनमें कुछ तालमेल बिठाएंगे?

वस्तुतः उनमें तालमेल बिठाने का कोई सवाल नहीं है; उनमें तालमेल है ही। जो लोग उनमें भेद करते हैं, उनसे यह सवाल पूछना चाहिए कि वे भेद कैसे करते हैं!

मेरी दृष्टि से यह प्राकृतिक घटना है। हम संभोग से पैदा होते हैं, हम बच्चे पैदा करते हैं, और बच्चे पैदा करना किसी धार्मिकता के विपरीत नहीं जाता। स्त्री से मौन होकर, ध्यानस्थ होकर, आदर पूर्वक प्रेम करना पूजा का कृत्य है। इस कृत्य को ओछा समझने की, उनकी निंदा करने की कोई जरूरत नहीं है।

प्रेम हमारी आध्यात्मिकता की श्रेष्ठतम अभिव्यक्ति होनी चाहिए।

जो जहां तक तुम्हारे प्रश्न का संबंध है, मुझे तालमेल बिठाना नहीं पड़ता। प्रकृति में सर्वत्र उनका तालमेल बैठा ही हुआ है। अस्तित्व ने स्वयं इनका समन्वय किया हुआ है।

वह तो पुरोहित और अन्य धार्मिक लोग हैं, जो उनको अलग करने की और मनुष्य के बीच एक दरार पैदा करने की कोशिश करते हैं। वे स्किजोफ्रेनिक, दोहरे व्यक्तित्व वाली मनुष्यता निर्मित कर रहे हैं। वे तुम्हारी कामवासना की निंदा करते हैं। और तुम उसके बारे में कुछ नहीं कर सकते। तुम्हारा शरीर पुरुष की काम ऊर्जा निर्मित करता है। वहां तुम्हारे सोच विचार का कोई नियंत्रण नहीं है। तुम कितनी ही ब्रह्मचर्य का व्रत लो, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता; क्योंकि तुम्हारा शरीर नहीं जानता कि तुम ब्रह्मचारी हो। शरीर प्रकृति का अनुयायी है, तुम्हारी धारणाओं का नहीं।

गांधी जी अपना व्रत निभा नहीं सके।

हां, सत्तर साल के बाद भी वे ब्रह्मचर्य साध नहीं सके।

तो अस्तित्व में दोनों का समन्वय है ही। हमें सिर्फ इतना ही करना है कि उनके भिन्न होने का खयाल छोड़ दें, उन दोनों को स्वीकार करें—और दोनों के बीच वे सेतु फिर बना दें, जो पुरोहितों ने हजारों साल से तोड़ दिए हैं।
मेरे देखे, मनुष्य एक अखंडता की तरह है। फिर वह कैसा भी हो, बिलकुल ठीक है। अगर उसमें कुछ गड़बड़ है, तो इसका इतना ही अर्थ है कि हम खंडों को एक एकात्मता में जोड़ नहीं सके।
यह किसी आर्केस्ट्रा की भांति है। तुम वाद्यों को ऐसे व्यक्ति के हाथ में दे सकते ह ो जो संगीत बिलकुल नहीं जानता : तब केवल एक शोर...और पागल कर देने वा ला शोर पैदा होगा। लोगों को जरा वाद्य बजाना सिखा दो, और दर्जनों वाद्य एक सुर में स्वरित हो उठेंगे।
और मनुष्य एक आर्केस्ट्रा है। प्रकृति ने उसके भीतर सारे वाद्य समाहित किए हैं। और हम एक आर्केस्ट्रा बनाने में असफल रहे हैं इसलिए हमने आत्महत्या, खून, अ पराध और सब तरह की मानसिक बीमारियां पैदा कर ली हैं। उसका कारण यह है कि वह आर्केस्ट्रा अपनी जगह नहीं है और उसको उपयोग करने के लिए मनुष्य को कोई प्रशिक्षण नहीं दिया गया है। उल्टे उसे अपने स्वयं के आर्केस्ट्रा का विरोध करना सिखाया गया है। उसे यह सिखाया गया है कि इसमें से कुछ साज फेंक दो ; वे अशुभ हैं, वे अपवित्र हैं, वे अधार्मिक है। और फिर वह अधूरा सा हो जाता है। और अधूरा अंश कभी तृप्त नहीं होता; वह निरंतर अधिक की मांग करता रह ता है।
यह और अधिक की तृष्णा इसलिए उठती रहती है क्योंकि हम अपना आंतरिक सं गीत निर्मित नहीं कर पाएं, जो हमें समग्ररूपेण संतृप्त करे।
जो व्यक्ति आप्तकाम है वह कभी राजनीतिक नहीं बनेगा, वह धन के पीछे नहीं द ौड़ेगा, नाम और ख्याति के लिए पागल नहीं होगा। उसके लिए ये सब बातें कोई अर्थ ही नहीं रखती। वह इतना आप्तकाम है, इतना धन्यभागी है कि अब वह सारे जगत को आशीष दे सकता है।
तो मेरा पूरा प्रयास यह है कि मनुष्य एक सुरीला, लयबुद्ध संगीत बन जाए।
भगवान श्री, बहुत-बहुत धन्यवाद। मैंने आपकी किताबें पढ़ी हैं लेकिन हमारे धर्मयु ग के पाठकों के लिए मैं आपसे कुछ हिंदी शब्दों की व्याख्या चाहूंगा—भोग, भक्ति और मुक्ति।
वे एक ही मंदिर की तीन सीढ़ियां हैं।
भोग पहली सीढ़ी है। और भोग तुम्हें यह प्रेरणा देता है कि अगर सिर्फ दो शरीरों का मिलन तुम्हें इतनी सुखद अनुभूति देता है तो पूरे अस्तित्व के साथ मिलने होने पर सुख की कैसी पुलक उठती होगी।
और यह दूसरी सीढ़ी का द्वार खोल देते हैं—भक्ति का। भक्ति क्या अर्थ है अस्तित व में जो भी है—वृक्ष, नदियां, पहाड़, चांद तारे उनके प्रति श्रद्धामयी भावपूर्ण मनो दशा। और तुम अगर भोग में बिना किसी अपराध भाव के उतरते हो तो वृक्ष, सू

र्योदय और सूर्यास्त, इनके साथ तादात्म्य बनना इतना आसान हो जाता है! और तब तुम विस्तीर्ण होने लगते हो। जब तुम सूर्यास्त की ओर देखते हो तो सब विच ार रुक जाते हैं। सूर्यास्त वहां क्षितिज पर होता है, लेकिन तुम खो जाते हो; और सारा सौंदर्य चारों ओर से घेर लेता है।

मैं इसे भक्ति कहता हूं। मैं ईश्वर को किसी भी सीढ़ी पर नहीं लाता हूं, क्योंकि ई श्वर को किसी सीढ़ी पर लाने का मतलब है, ऐसी चीज को लाना जिसे तुम्हें मान ना पड़ेगा। और मेरा सारा जोर इस बात पर है कि तुम्हें स्वयं अनुभव करना चा हिए, विश्वास नहीं; क्योंकि विश्राम कोई मदद न देगा।

करोड़ों लोग, करीब-करीब पूरी दुनिया, ईश्वर में विश्वास करती है। लेकिन इससे क्या लाभ हुआ? मुसलमान हिंदुओं को मार रहे हैं, हिंदू मुसलमान को मार रहे हैं; ईसाई यहूदियों की हत्या कर रहे हैं, यहूदी ईसाइयों की हत्या कर रहे हैं; ईश्‍ वर ने कोई मदद नहीं की। विश्वास से निर्मित किया गया ईश्वर एकदम व्यर्थ है। तो जब तुम परम की ओर बढ़ रहे हो तब मैं बीच में किसी भी सीढ़ी पर ईश्वर को नहीं ले आता।

तो भोग के बाद, भक्ति। लेकिन यह भक्ति ईश्वर के प्रति नहीं है। भक्ति अस्तित्व के प्रति एक प्रेम की अनुभूति है। और अस्तित्व तो दृश्य है, संसार इंद्रियों से अनु भव किया जा सकता है, उसमें विश्वास करने की कोई जरूरत नहीं है। ऐसा विश् वास नहीं चाहिए जो तुम जबरदस्ती अपने पर थोपते रहे लेकिन फिर भी भीतर कहीं संदेह छिपा रहे। यह कोई परिकल्पना नहीं है। ऐसा विश्वास नहीं चाहिए जो तुम जबरदस्ती अपने पर थोपते रहो लेकिन फिर भी भीतर कहीं संदेह छिपा रहे। यह कोई परिकल्पना नहीं है। यह तुम्हारे चारों और फैला हुआ है।

और जैसे-जैसे तुम अस्तित्व के साथ तालमेल बनाते हो, वैसे-वैसे तीसरा चरण खु लता है। वह है मुक्ति। जब कोई अस्तित्व के साथ एक समस्वरता में होता है तब धीरे-धीरे उसका अहंकार पिघलने लगता है। शुरू-शुरू में यह कुछ क्षणों के लिए घटेगा सूर्यास्त को देखते हुए, या आकाश में अपने पंख फैलाकर उड़ते हुए पक्षी क ो देखकर, या पल भर को किसी गुलाब के फूल को देखकर ही। क्षणभर के लिए। लेकिन धीरे-धीरे तुम समझने के योग्य बनते हो कि जब भी तुम सच में अस्तित्व के साथ एक हो जाते हो, तब तुम खो जाते हो। अस्तित्व होता है, तुम सिर्फ उ सके एक अंश होते हो—जैसे एक ओस कण कमल के पत्ते से फिसल कर सागर में गिर गया हो।

तो भोग के बाद किसी भी क्षण भक्ति और भक्ति के बाद किसी भी क्षण ओस क ी बूंद सागर में गिर सकती है। और उस अनुभव को मैं भगवत्ता कहता हूं। मैं अ भी भी ईश्वर शब्द का प्रयोग नहीं करता हूं, क्योंकि ईश्वर कहने से वह अनुभव सीमित हो जाता है।

अहम ब्रह्मास्मि : मैं स्वयं ब्रह्म हूं...?

हां, वही है। लेकिन मेरा जोर इस बात पर है कि हम कुछ भी शब्द प्रयोग करें, लेकिन उनको व्यक्ति वाचक नहीं होना चाहिए।

तो मैं भगवान शब्द का उपयोग करता हूं। वहां कोई व्यक्ति नहीं है जिससे तुम्हार ी मुलाकात होगी। लेकिन वहां कुछ है तो तुम अनुभव करते हो—विराट, असीम पू र, विश्व जैसा बृहत। लेकिन उसके कोई हाथ पैर नहीं होते, न कोई चेहरा होता है।

जैसे ही हम ईश्वर जैसे शब्दों का उपयोग करते हैं, वैसे ही हमारे मन में सवाल उठता है : वह कैसा दिखता होगा? और फिर हम मंदिर में उसकी मूर्तियां बनाते हैं, मस्जिदें खड़ी करते हैं, गिरजाघर निर्मित करते हैं। और फिर सारी बात ही ग लत हो जाती है।

तुम भगवान की मूर्ति नहीं बना सकते। और मैं चाहता हूं कि भगवत्ता को किसी आकार में कैद न किया जाए। वह एक निराकार अनुभव है—प्रेम की भांति, सौंदर्य की भांति, सत्य की भांति।

तो मेरी दृष्टि से भोग, भक्ति और मुक्ति इनके बीच कोई विरोधाभास नहीं है। वे उसी मंदिर की तीन सीढ़ियां हैं, जो अंततः भगवत्ता की ओर ले जाती हैं।

धन्यवाद भगवान श्री। बहुत अच्छा, बहुत की अच्छा। फिर एक प्रश्न...

भारत में, मध्य युग में हमारे यहां संत कवियों की एक लंबी शृंखला थी। वे ऋषि तो नहीं हैं लेकिन संत कवि हैं; लेकिन उन्हें ऋषि भी कहा जा सकता है—जैसे : कबीर, सूरदास,मीरा, दादू दयाल और आधुनिक कवि टैगोर। तुलसीदास से मैं बि लकुल भी प्रभावित नहीं हूं। क्योंकि वे पाखंडी थे; इसलिए मैं उनका नाम नहीं ले रहा हूं।

यह अच्छी बात है, क्योंकि तुलसीदास को मैं कोई खास महत्वपूर्ण नहीं मानता। वे मनु स्मृति की श्रेणी में आते हैं।

लेकिन कबीर मुझे बहुत प्यारे लगते हैं। वे उन श्रेष्ठतम संतों में से एक हैं, जो इ स पृथ्वी पर हुए हैं। उनकी रचनाएं उपनिषदों का अंश बननी चाहिए।

इसी तरह टैगोर भी। टैगोर कबीर से बहुत प्रभावित थे। और आधुनिक युग में, भ ारत में टैगोर अनूठे हैं। कबीर जैसे लोगों की सुवास उनमें पायी जाती है। लेकिन हम उन्हें पहचान नहीं सके।

तुम्हें हैरानी होगी यह जानकर कि वे कभी गांधी के साथ राजी नहीं थे—जिंदगी भ र। इसलिए कि उन्हें दिखाई दिया कि गांधी सिर्फ एक राजनीतिक हैं जो संत होने का दिखावा भर कर रहे हैं।

सूरदास और मीरा, दोनों प्यारे हैं; दोनों ने अपूर्व सौंदर्य से भरे गीत गाए हैं। और उनके गीतों मग प्रामाणिक अनुभव की प्रतिध्वनि है।

गुरु नानक और सिक्ख पंथ के दस गुरुओं के संबंध में आपके क्या विचार हैं?

नानक निश्चित ही कबीर की श्रेणी के हैं; लेकिन बाकी नौ गुरु नहीं। नानक की साथ विश्वासघात हुआ है—जैसा कि यह हमेशा होता है। सिक्खों के नौ गुरु नानक

के पास भी कहीं नहीं आते। वे सब राजनीतिक हैं, योद्धा हैं। वे नानक से प्रेरित हुए हैं, इसलिए उनके लेखन मग, उनकी कविता मग नानक का कुछ तत्व प्रवाहित हुआ है, लेकिन वह प्रदूषित है। तो मेरे हिसाब से सिक्खों के दस गुरु नहीं हैं, सिर्फ एक हैं, और वह हैं—नानक और नानक के साथ सारा विकास रुक गया।
धन्यवाद। मेरा अगला प्रश्न : आपको अपने सुस्पष्ट और सीधे साफ दर्शन पर सब तरफ से अभूतपूर्व प्रतिसंवेदन प्राप्त हुआ। आपके इस दर्शन में पाखंड के लिए कोई जगह नहीं है। मुझे लगाता है, इन पुरातन पंथी लोगों के पाखंडी विचारों के कारण ही आपको भारत छोड़ना पड़ा। लेकिन अमेरिका में भी आप मनुष्य की उसी पाखंड के और जिन के दोहरे मानदंड के शिकार बने।
इस पर कुछ प्रकाश डालने की कृपा करें।
यह सच है। वस्तुतः मैंने देखा कि भारतीय पाखंड प्रकट है।
दूसरी बात, वह अति प्राचीन है और अब मरणासन्न होकर पड़ा है। उसकी मृत्यु सुनिश्चित है, वह बच नहीं सकता। मैं इस भारतीय पाखंड का शिकार हुआ हूं। मैं सोचता था कि अमेरिका नया है, सिर्फ 300 साल पुराना है; उसके भीतर शायद इतनी परंपरागत, रूढ़िगत कट्टरता नहीं होगी। लेकिन मैं जब वहां गया तो मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि वे भारत से ज्यादा पाखंडी लोग हैं। उनके पाखंड का रंग रूप कुछ अलग है। एक तो यह कि मूल भूत रूप से वह फासिट शासन है, जो लोकतांत्रिक होने का दिखावा कर रहा है। दूसरे, आधारभूत वह एक ईसाई देश है, जो ऊपर से धर्मनिरपेक्ष होने का दिखावा कर रहा है।
मैं फासिज्म के खिलाफ हूं। मैं किसी भी संगठित धर्म के खिलाफ हूं। मैं चाहता हूं कि लोग धार्मिक हों, लेकिन इसके लिए संगठन बनाने की क्या जरूरत है? धर्म तो एक वैयक्तिक बात है, नितांत वैयक्तिक। तो मैं फिर शिकार हुआ। और अमरीका का पाखंड नया है, और निश्चित ही अधिक बलशाली है। भारतीय पाखंड पुराना और मरणासन्न है और उतना बलशाली नहीं है। अमेरिका का पाखंड आणविक शस्त्रास्त्र और हर तरह के नए तकनीकी साधनों के सहारे सुदृढ़ हुआ है। और अमेरिका पाखंड ने दुनिया के सभी पाखंडों से सीखा है, इसलिए वह अन्य पाखंडों से ज्यादा सघन है। इसी वजह से वह दुनिया के सामने एक नकली नकाब ओढ़कर यह दिखा सकता है कि लोकतंत्र है। वह लोकतंत्र जरा भी हनीं है।
भारतीय संस्कृति बड़ी सहिष्णु संस्कृति रही है। बुद्ध ईश्वर को नहीं मानते थे। पतंजलि ने भी ईश्वर को इनकार किया है। जब आप अमेरिका में पांच वर्ष रहे, तब क्या आपने इस फर्क को देखा?
मैंने फर्क देखा है।
फर्क यह है कि जहां तक चिंतन का सवाल है, भारत बहुत उदार और सहिष्णु है; लेकिन जहां सामाजिक आचरण का सवाल आता है, वहां बड़ा कठोर हो जाता है। सामाजिक जीवन के संबंध में अमेरिका बड़ा उदार है, लेकिन चिंतन आदि के बारे में बहुत हठी और अड़ियल है। उनके विचारों का स्तर देखा जाए, तो अमेरिका

के सर्वाधिक शिक्षित लोगों को मैंने भारत के देहाती लोगों की तरह बात करते हुए पाया है। और उन्हें अपनी मूढ़ता दिखाई नहीं देती।
जब मैं कारागृह में था तो वहां का जेलर मुझमें उत्सुक हुआ। पुरा जेल ही मुझमें उत्सुक था। जेलर मुझसे मिलने आया। काफी पढ़ा लिखा, अनुभवी बूढ़ा आदमी था। वह बोला, मैं आपको यह बाइबल देने आया हूं। ये ईश्वर के वक्तव्य हैं।
मैंने उससे पूछा, तुमने कैसे जाना कि ये ईश्वर के वक्तव्य है?
वह बोला, ईश्वर ने स्वयं कहा है, इस बाइबल में कि मेरे वक्तव्य हैं।
मैंने कहा, मैं भी एक किताब लिख सकता हूं, जिसमें मैं कहूंगा कि ये मेरे वक्तव्य ईश्वर के ही वक्तव्य हैं, कुरान अल्लाह के वचन हैं। यहूदी कहते हैं, तोराह ईश्वर के वचन हैं। फिर फर्क क्या हुआ? इनमें कौन से ईश्वर से सही शब्द हैं और कौन सही ईश्वर है?
वह तो समझ ही नहीं सका कि मैं क्या कह रहा हूं। मैंने कहा, इससे यही सिद्ध होता है कि बौद्धिक रूप से तुम पूरब से बहुत पीछे हो; जहां हमने बुद्ध जैसे आदमी को पूजा की है, जो परमात्मा को नहीं मानता, लेकिन फिर भी हमने उसे भगवान कहा है।
मैंने उसे एच. जी. वेल्स की याद दिलाई। एच. जी. वेल्स ने बुद्ध के बारे में लिखा है: वह सर्वाधिक ईश्वर विहीन आदमी था, लेकिन फिर भी ईश्वर तुल्य।
और ऐसा हो सकता है। कोई आदमी ईश्वर के बिना ईश्वर तुल्य हो सकता है,उसमें कोई अड़चन नहीं है। और मैंने उससे कहा, मैं तुम्हारे सामने हूं: और कोई ईश्वर नहीं है, और न कोई ईश्वर के शब्द हैं। हां, ऐसे लोग हैं जिन्होंने अस्तित्व के परम सत्य को जान लिया है। लेकिन वे भी निरंतर यही कहते आ रहे हैं हम जो भी कहते हैं वह ठीक-ठीक वही नहीं है, जो हमने अनुभव किया है। अनुभव के उस ऊंचे तल से मनुष्य की भाषा में उसे अनुवादित करने में बहुत कुछ खो जाता है। तो इन साधारण शब्दों को ईश्वर के वचन कहना, और वह भी दुनिया के सबसे शक्तिशाली देश के बुद्धिमान और सुशिक्षित व्यक्ति द्वारा, बड़ा मूढ़तापूर्ण लगता है।
लेकिन सामाजिक आचरण के मामले में वे बहुत उदार हैं। तुम कोई भी कपड़े पहन सकते हो, तुम किसी भी प्रकार का काम कर सकते हो, तुम शिक्षित हो सकते हो, किसी भी किताब का अध्ययन कर सकते हो। सामाजिक ढांचे के मामले में वे लोग हमसे अधिक उदार हैं, लेकिन चिंतन के बारे में वे बहुत पुरातन हैं। भारत में चिंतन के बारे में हम हमेशा उदार रहे हैं। हजारों वर्षों से हम बड़े मित्रतापूर्ण ढंग से तार्किक बातचीत करते रहे हैं। उसमें हमारा किसी के साथ कोई संघर्ष नहीं रहा है, कोई शत्रुता नहीं रही है। क्योंकि दोनों पक्ष एक दूसरे से लड़ नहीं रहे थे, बल्कि दोनों ही सत्य के अन्वेषक थे और अगर व्यक्ति उपलब्धि पा लेता है तो दोनों ही एक दूसरे के शिष्य बनने को राजी थे; उसमें वे अपमानित अनुभव नहीं करते थे।

लेकिन सामाजिक जीवन के बारे में हम बहुत ही दकियानूसी रहे हैं। एक शूद्र वेद नहीं पढ़ सकता, एक शूद्र ब्राह्मणों के साथ नहीं बैठ सकता, वह वेदों को सुन भी नहीं सकता। उसे शहर से दूर किसी अलग बस्ती में रहना पड़ता है। वह अपना क ाम धंधा बदल नहीं सकता। जो आदमी जूते बनाता रहा है, वह पीढ़ी दर पीढ़ी जू ते ही बनाता रहता है, हमेशा; वह उसमें कोई बदलाहट नहीं ला सकता, वह डाक टर नहीं बन सकता।

तो हम बड़े कठोर हैं। और उसका सारा श्रेय मनुस्मृति को जाता है। यदि भारतीय मनुस्मृति को भूला सके तो पूरे जगत में हम अधिक उदार और अधिक विशाल हृदय के लोग कहलाए जाएंगे। मनुस्मृति हमारी छाती पर पत्थर की तरह बैठी है।

यद्यपि आप भारत में काफी विवादस्पद रहे तथापि आपके साथ अमेरिकन लोगों ने जो अमानवीय और ओछा व्यवहार किया उसके कारण आपके प्रति लोगों के म न में बहुत सहानुभूति पैदा हुई है। इसका कारण यह था कि शायद जाने अनजाने वे आपको ऋषि समझ रहे थे। इसके बार में आपके भाव क्या हैं?

ऐसा होना ही था। मनुष्य का मन एक विशिष्ट ढंग से काम करता है।

जब मैं भारत से बाहर गया, तो मेरा यहां से जाना—और बहुत से लोग मुझसे उत सुक हुए। जब मैं यहां था तब लोगों ने मेरा उपस्थिति होना इतना सुनिश्चित मान लिया कि उपस्थिति को भुला ही दिया।

जब मैं बहुत दूर चला गया तब ज्यादा किताबें, ज्यादा टेप बिकने लगे और ज्यादा लोग मुझमें उत्सुक हुए।

और जब मुझे अमानवीय ढंग से सताया गया तो निश्चित ही अधिक सहानुभूति पै दा हुई। और लोगों को दो बातें दिखायी पड़ीं कि उन्होंने मुझे यह देश छोड़ने के ि लए बाध्य किया। यदि वे मेरे प्रति थोड़ी अधिक उदारता दिखाते तो ऐसा कभी न हीं होता। तो यह अपराध का भाव भी उनकी सहानुभूति का हिस्सा था। और फिर मेरे साथ मेरे साथ जो घटा वह उन्होंने देखा, तो मैं भारतीय फिलोसिया का प्रती क बन गया। मेरे प्रति उनकी सहानुभूति वस्तुतः भारतीय चिंतन प्रणाली के प्रति सहानुभूति थी। भारतीय चिंतन प्रणाली के साथ इस तरह का व्यवहार किया जाए, यह बात उनके हृदय में कांटे की तरह चुभने लगी।

क्या आप विस्तारपूर्वक बताने की कृपा करेंगे कि आपने अमेरिका में पांच वर्ष कि स प्रकार के हालातों में या मानसिक तनाव में बिताए? और आपके साथ किए ग ए इस अमानवीय और घृणित व्यवहार के लिए कौन जिम्मेदार है—अमेरिकन लोग या अमेरिकन शासन?

नहीं, इसके लिए अमेरिकन लोग जिम्मेदार नहीं हैं; वे बड़े प्यारे लोग हैं।

वह तो अमेरिकन राजनीतिज्ञ थे, जो भयभीत हुए क्योंकि मैंने रेगिस्तान में एक क म्यून निर्मित किया था। वह रेगिस्तान वहां 50 साल से बिकने के लिए पड़ा था। उ से कोई खरीदने के लिए भी तैयार नहीं था, क्योंकि रेगिस्तान को खरीदकर तुम क या करोगे? मेरे 500 संन्यासियों ने उस मरुस्थल को मरूद्यान में बदल दिया था।

उन्हें जो कुछ भी चाहिए था वह सब वहां उपलब्ध था वे। बड़े आराम से जी रहे थे। हमारे पास 5000 लोगों के लिए मकान थे, जो केंद्रीय रूप से वातानुकूलित थे। हम आप भोजन, अपनी सब्जी, अपने फल स्वयं पैदा करते थे। चार सालों में चोरी, हत्या या आत्महत्या की एक भी घटना नहीं हुई। कहीं कोई अपराध नहीं।

और अमेरिका में अपराध, हत्या और चोरी की भरमार है। आर इतना समृद्ध देश, फिर भी तीन करोड़ लोग सड़कों पर भिखारी हैं। और यह इतना भद्दा है कि तीन करोड़ लोग बिना भोजन के, बिना कपड़ों के, बिना मकान के सड़कों पर मर रहे हैं—और ठीक उतने ही—तीन करोड़ लोग भोजन के अतिरेक से मर रहे हैं। मेरे कम्यून में कोई भिखारी नहीं था, कोई बेकार नहीं था। हमें जिस चीज की जरूरत होती, वह सब हम पैदा कर लेते थे। और विशेषतः हमने ऐसी परिस्थिति निर्मित थी कि कम्यून के भीतर रुपए पैसा का कोई उपयोग न हो। कम्यून में तुम्हें जिन चीज की जरूरतें थी, वे सब तुम्हें मिल जाती थी। तो चोरी करने की कोई जरूरत नहीं थी। यदि तुम्हें नया कोट चाहिए हो तो मुख्यालय में जाकर अपना पुराना कोट दे दो और नया कोट ले लो।

तो साहब, उनको आपके समाजवाद ने धक्का दिया क्या?

असली समस्या यह रही कि मैं किसी प्रकार की तानाशाही के बिना समाजवाद निर्मित कर रहा था। यही कुल समस्या थी, इसलिए वे किसी भांति मुझे देश से बाहर करके फिर कम्यून को नष्ट करना चाहते थे। क्योंकि यह कम्यून देर अबेर पूरे देश के लिए सिरदर्द बनने वाला था।

लोग देखने के लिए आ रहे थे, प्रसारण माध्यम उसके संबंध में वार्ताएं प्रसारित कर रहे थे। वे घबरा गए। और यह एक चीज और सिद्ध करता है कि एक अकेला व्यक्ति, जिसके पास कोई ताकत नहीं है, 5000 लोग, जिनके पास कोई आणविक हथियार नहीं है, वे दुनिया की सर्वाधिक शक्तिशाली सत्ता को भयभीत कर सकते हैं। इससे एक बात सिद्ध होती है : सत्य किसी भी ताकत से अधिक ताकतवर है।

और उनका एक ही लक्ष्य बन गया कि किसी भांति वे मुझे देश से निकाल बाहर कर दें। कानूनी तौर से वे ऐसा कुछ नहीं कर सकते थे। क्योंकि वे सैकड़ों मुकदमे हमारे खिलाफ खड़े कर रहे थे। बिलकुल नकली; और हम जीते रहे थे। क्योंकि किसी मुकदमे हमारे खिलाफ खड़े कर रहे थे—बिलकुल नकली; और हम जीत रहे थे। क्योंकि किसी मुकदमे में कोई जान ही नहीं थी। और वे जानते थे कि किसी ठोस मुकदमे के बिना कानूनी रूप से वे मुझे देश के बाहर नहीं निकल सकते थे। उन्हें गैर कानूनी साधन ही अपनाने पड़ते, और उन्होंने तमाम गैर कानूनी साधन प्रयोग किए थे।

तो उन्होंने किसी वारंट के बिना ही मुझे गिरफ्तार कर लिया। उन्होंने न मुझे अपने कृत्य का कोई कारण बनाया, और न ही मुझे अपने एटर्नी को बुलाने का मौका दिया। और एक अकेला व्यक्ति, जिसके पास कोई हथियार नहीं हैं...बारह बंदूकें

मेरे सीने पर तनी हुई, और इस तरह उन्होंने मुझे गिरफ्तार किया। यह तो बिल कुल फासिस्ट होना हुआ।

और उसके बाद उन्होंने मुझे बारह दिन तक हर तरह से सताया। उन्होंने डेविड व ाशिंगटन नाम के नीचे दस्तखत करने के लिए मुझे मजबूर किया। मैं अपना नाम नहीं लिख सकता था।

मैंने पूछा, क्यों, मैं डेविड वाशिंगटन के नाम से क्यों दस्तखत करूं? मैं डेविड वाि शगटन नहीं हूं। वे मेरे साथ जबरदस्ती कर रहे थे ताकि किसी को पता न चले ि क मैं इस कारागृह में हूं: अन्यथा तत्क्षण विश्व से कभी प्रसारण माध्यम उसका प्र सारित करने लगेंगे और तब फिर वे मुझे सता नहीं सकेंगे। मुझे सताने के लिए उ न्होंने यह उपाय किया था—कि यहां कोई नहीं है, यहां सिर्फ वाशिंगटन है। उनकी सूची में मेरे जैसा कोई है ही नहीं तो फिर मुझे सताने का कोई सवाल ही नहीं है ।

तो मैंने उनसे कहा, फिर इस प्रपत्र में आप ही डेविड वाशिंगटन लिखो। मैं नहीं ि लख सकता। मैंने अपने स्वयं के हस्ताक्षर किए, ताकि इस बात का सबूत रहे, कि किसी दिन वे कहें कि यहां कोई नहीं था, तो पूछा जा सकता है कि फिर ये हस् ताक्षर कहां से आए? और डेविड वाशिंगटन भी मैंने उस मार्शल से खुद लिखने के लिए कहा, ताकि इसका भी सबूत रहे कि वह मार्शल गैर कानूनी बातें करने का जुर्म कर रहा है।

उन्होंने हर बात इसी ढंग से की। उन्होंने मुझे ऐसी कोठरी में खा, जो दो कैदियों के लिए थी। और वहां छह महीने से एक कैदी रहता था जिसे हपींज नाम की अत यंत घातक बीमारी थी। इसलिए वह कोठरी दूसरे कैदी को नहीं दी गई थी क्योंकि उसमें खतरा था; वह उसे पकड़ लेती, उससे बचने का कोई उपाय नहीं था। उन लोगों ने मुझे उस रोगी के साथ रखा। मुझे इसका कोई पता नहीं था। तो अप्रत्य क्ष रूप से वे मुझे सताने की हर तरह से कोशिश कर रहे थे।

वे जानते थे कि मेरी पीठ मेरी समस्या है। और वे रात भर मुझे इस्पात की कड़ी बेंच पर बिठा कर रखते। मेरी पीठ के पीछे रखने के लिए वे मुझे एक तकिया भी नहीं देते थे। उन्होंने कहा, हम तकिया नहीं दे सकते; यह हमारे नियम के अनु सार नहीं है।

मैंने कहा, लेकिन तुम्हारे यहां मेरे जैसा आदमी भी तो नहीं आता, उसकी पीठ ऐ सी होती है। तुम्हें और थोड़ा मानवीय होना चाहिए। लेकिन नहीं, मुझे पूरी रात उस बेंच पर बैठना पड़ा। और सुबह होते होते मेरे लिए चलना मुश्किल था—पीठ में इतना भयंकर दर्द हो रहा था।

अब तक आप रूस की आलोचना करते थे, लेकिन अब आप उस देश की कुछ बा तों की प्रशंसा करते हैं।

हां, मेरे पास कुछ बातें हैं कहने को क्योंकि मैंने अमेरिका का नकली चेहरा देख ि लया है। मूलरूप से वह फासिस्ट है, संकीर्ण तावादी है और लोकतांत्रिक होने का ि

दखावा करता है। आज रूस की थोड़ी प्रशंसा मैं कर सकता हूं क्योंकि कम से कम वह सीधी साफ बात तो करता है। यदि वहां तानाशाही है तो वह कह देता है कि वह तानाशाही है। अमेरिका भी ठीक यही कुछ है—शायद उससे बदतर ही लेकिन वह विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र होने का दिखावा करता ही रहता है।

एक और बात पूछनी है। हमने सुना है कि रूस में तथा ईस्टर्न योरोप के देश में आपके अनुयायियों की संख्या बढ़ती जा रही है।

ऐसा ही है। उनकी संख्या बढ़ रही है। और मैं चाहूंगा कि रूस उन्हें परेशान न करे क्योंकि वे साम्यवाद के विरोध में नहीं हैं। साम्यवाद की जो व्यवस्था रूस दे रहा है, वे तो उससे कहीं बेहतर साम्यवाद ला सकते हैं।

और आपने इसे सिद्ध कर दिया है?

मैंने सिद्ध किया है। तो रूस को मेरा यह संदेश दे दो कि मेरे लोगों को सताया न जाए। वे साम्यवाद के विरोध में नहीं हैं। जैसी व्यवस्था तुम जुटाते रहे हो उससे बेहतर साम्यवाद वे ला सकते हैं। और भारत की सरकार से भी कह दो कि अमेरिका में पूरा पाखंड चलता है; मत सोच लेना कि तुम्हें वहां से कितनी तरह की मदद मिल जाएगी।

तो कह देना है भारत सरकार से भी कि अब वह वक्त आ गया है जब कि तुम्हें निर्णय लेना होगा और गिरा देना होगा गुट निरपेक्षता की इस राजनीति को, तुम्हें रूस के साथ मित्रता बढ़ानी होगी। इसका अर्थ यह नहीं है कि तुम रूस के गुलाब बन जाओ, लेकिन इससे इतना ही होगा कि रूस को पक्का हो जाएगा कि तुम उसके साथ हो।

और भूल जाओ अमेरिका को। वह किसी का मित्र नहीं हो सकता है। और देर अबेर ऐसा होने वाला है कि अमेरिका के विरुद्ध पूरे विश्व को लड़ाई लड़नी होगी। पिछली यू. एन. सभा में, सारे नेता मौजूद थे। पाकिस्तान को सहयोग देने का अमेरिका का जो रवैया रहा उसके विरुद्ध बड़ा आक्रोश उत्पन्न हो गया।

वे प्रत्येक वही बात कर रहे हैं जो मनुष्य जाति के लिए बिलकुल हितकर नहीं है। और भारत अकेला होकर विकसित हो नहीं सकता। इतने लंबे समय से गरीबी चली आ रही है कि कोई बड़ा समर्थ मित्र चाहिए और अब रूस ने तो करीब आधे विश्व को ही अपनी मैत्री की ओर बढ़ा दिया है। भारत को यह अवसर नहीं गंवाना चाहिए।

भारत में यह अनुभव किया जा रहा है कि वे भगोड़े गद्दार—अपके कुछ शिष्य——जिम्मेदार हैं उस

षड्यंत्र के, जिसके कारण आपके लिए ऐसी मुसीबत खड़ी हो गयी। क्या यह सच है?

यह संभव है। यह संभव है कि वे अमेरिका के राजनेताओं के साथ षड्यंत्र रचते रहे हों क्योंकि वे भाग निकले और अमेरिका ने उन्हें रोका नहीं, उन्हें जाने दिया। उसकी संभावना है कि उनके बीच षड्यंत्र रचा गया हो। और अमेरिका कुछ भी

कर सकता है...वह लोगों को डरा धमका सकता है, वह लोगों को रिश्वत दे सक ता है।

मेरे जानने में ऐसा आया है कि वह मेरे संन्यासियों को धमकाने की कोशिशें करता रहा है कि तुम्हें यह-यह कहना ही होगा, वरना तुम खत्म कर दिए जाओगे। वे लोगों को रिश्वत देने की कोशिश करते हुए कहते रहे कि अगर तुम भगवान के ि वरोध में बोलो तो हम तुम्हें कुछ भी दे सकते हैं। हम तुममें रहने के लिए वीसा दे सकते हैं, हम तुम्हें नागरिकता दे सकते हैं।

इसलिए ऐसी हर संभावना है कि वे उन्हें कुछ इस तरह के संकेत दे दिए कि तुम अब भाग निकलो ताकि सारी जिम्मेदारी भगवान पर आ जाए।

और मैं तो रोजमारी के कार्यों से पूरी तरह अलग था। मैं कौन और एकांत में था , तो वैसी संभावना मौजूद रही।

क्या उन्होंने आर्थिक रूप से भी कम्यून को धोखा दिया है?

लगता तो यही है।

या कि रजनीश फाउंडेशन?

नहीं, वहां से उन्होंने कोई रुपए नहीं लिए। लेकिन इसकी संभावना है कि युरोप क ी दूसरी फाउंडेशन से जो रुपया इकट्ठा हुआ उसे लेकर उन्होंने स्विटजरलेंड में रख वा दिया। और सरकार के कथनानुसार लगता है कोई बीस लाख डालर्ज मेरे नाम होने की बात वे कहते रहे हैं। और मैंने कहा उनसे कि मेरे पास तो एक भी डाल र नहीं है और मैंने तो इन पांच वर्षों में कोई एक डालर बिल देखा तक नहीं है। और यह संभव है कि यह तुम्हारा उन लोगों के साथ किया षड्यंत्र है कि मेरे ना म बीस लाख डालर जमा कर दिए जाएं, मगर मेरे हस्ताक्षर तो कोई नहीं कर स कता।

भगवान, एक बहुत ही व्यक्तिगत प्रश्न : आपका दर्शन परंपरागत विवाह में विश्वा स नहीं करता है, और उन्होंने आप पर आरोप लगाया है कि आप वहां नकली वि वाह करवा रहे थे।

यह बिलकुल मूढ़तापूर्ण बात है। मैंने कहा था उनसे के मैं लोगों से मिलती नहीं। जब मैं मौन में था तो मैं किसी भी संन्यासी से नहीं मिलता था। मैं कोई प्रवचन नहीं देता था। मुझे तो संन्यासियों के नाम तक नहीं मालूम। मुझे नहीं मालूम कि कौन विवाहित है और कौन विवाहित नहीं है।

और मौलिक रूप से ऐसा ही है कि मैं विवाह के विरोध में हूं। तो तुम केवल बेतु की, मूढ़ता पूर्ण बातें कर रहे हो।

मुझे आपके कुछ लोगों से पता चला है कि आप कभी जोड़ों को आशीर्वाद आदि न हीं देते।

नहीं, कभी नहीं।

क्योंकि इस संस्था में ही विश्वास नहीं रखते?

मैं विश्वास नहीं रखता। मैंने किसी जोड़े को कभी कोई आशीर्वाद नहीं दिया है।

हमें लगता है कि आपके पंथ ने या कि रजनीश संस्कृति ने, या कि आपके संन्यासियों ने ओरेगान की उजाड़, उबाड़ खाबड़ भूमि का विकास करने में बेकार अपनी ऊर्जा लगा दी। अमेरिका के लोगों को चाहिए था...वैसे आपने उसका उत्तर दे ही दिया। भगवान, इस तरह का बैर विरोध निर्मित चीज के प्रति क्यों? बहराहल, मैं आपका समय बरबाद नहीं करना चाहूंगा क्योंकि आपने इस तरह की बातों को पहले ही स्पष्ट कर दिया है।

आगे कृपया यह बताएं कि राजस्थान मग या भारत में कहीं और जगह इतनी बड़ी भूमि का विकास करने की क्या आपकी कोई योजना है? जिससे हमारे लोग भी जान जाएं कि अपनी बंजर भूमि का विकास कैसे करना है, और हमारी सरकार को भी इसकी जानकारी प्राप्त करनी चाहिए।

यदि सरकार चाहती है कि मैं ऐसा करूं—केवल तभी यह होगा, अन्यथा मुझे इसमें कोई रुचि नहीं है, क्योंकि फिर उसी तरह की समस्याएं उठ खड़ी होंगी।

लेकिन यदि सरकार...

हां यदि सरकार तैयार है तो...

कोई राज्य सरकार, भारत की कोई भी सरकार, कोई भी राज्य सरकार?

यदि सरकार मुझे भूमि देने को तैयार है, तो मैं राजी हूं। तब उन्हें यह बात पूरी करनी होगी कि मेरे संन्यासी वहां रह पाएं, उन्हें वीसा दिया जाना चाहिए। मैं वैसा विकास कर सकता हूं। मैं उसी ढंग का कम्यून तीन चार वर्षों के भीतर बना सकता हूं, और एक माडल को, आदर्श प्रतिरूप को देख समझ सकते हैं।

फिर भी अब मैं स्वयं तो यह करूंगा नहीं। इससे एक संघर्ष आ बनता है सरकार और राजनेताओं के साथ, और वह अनावश्यक है, अर्थहीन है।

वैसा अगर आप आदर्श फार्म बनाते हैं...

मैं राजी हूं उसे बनाने के लिए।

और इस प्रकार की चीज यह तो विकास का आदर्श प्रतिरूप है।

मैं कर सकता हूं यह, इसमें कोई अड़चन नहीं है। मेरे लोग बिलकुल तैयार हैं क्योंकि उन्होंने मकान बनाए हैं, बहुत ही सुंदर मकान। उन्होंने अभी कुछ बनाया—अस्पताल, स्कूल, सड़कें।

हमने किसी को कभी आने दिया कम्यून में काम करने को। सभी कुछ हमारे लोग किया करते थे। मेरे जूतों से लेकर मेरी टोपी तक—यह मेरी घड़ी थी—मेरे संन्यासियों द्वारा निर्मित की गयी है। हम सब चीजों का उत्पादन और निर्माण कर रहे थे। हम बदल सकते हैं लोगों को।

लेकिन मैं अपनी ओर से कुछ भी नहीं शुरू करूंगा। अब तो इस संबंध में सरकार को ही पहल करनी होगी, जिससे बीच में झगड़ा झंझट न खड़ा करे कोई। उनके सहयोग से ही यह कार्य हो सकेगा—और कुछ ज्यादा नहीं, बस उनकी हां भर ही।

और भूमि भी तो?

हां, और भूमि भी। कुल इतनी है बात।
दिल्ली के समीप हरियाणा में धीरेंद्र ब्रह्मचारी की जो जगह है, वहां उन्होंने डिजनी लैंड बना लिया है, और उसका प्रयोग अब वे व्यवसायिक कार्यों के लिए कर रहे हैं।
ऐसी बातें में मुझे कोई रुचि नहीं है।
लेकिन एक बात, क्या आप इस बारे में सोच सकते हैं कि दिल्ली क्षेत्र में एक ऐसे क्षेत्र का निर्माण कर लें जो आपका अपना सांस्कृतिक केंद्र हो, ताकि वहां लोग आसानी से पहुंच पाएं कुछ सीखने का।
यह तो मैं भारत में कहीं भी निर्मित कर लूंगा। अब मेरी एकमात्र शर्त यही है कि यह सरकार के सहयोग से ही बने। वरना तो वे इतनी ज्यादा अड़चनें खड़ी कर देते हैं कि अधिकाधिक ऊर्जा उसी में व्यर्थ चली जाती है। मैं यह नहीं होने देना चाहता।
इसलिए सरकार अगर चाहे तो मैं एक सुंदर नगर निर्माण कर सकता हूं। उन्हें यह ी करना है कि साधारण सहयोग होना चाहिए। मैं कर सकता हूं ऐसे स्थान का निर्माण, और वह हो सकता है कि एक तीर्थ पूरे देश के लिए। जहां आकर देखा जा सकते कि लोग कैसे रह रहे हैं, लोग कैसे काम कर रहे हैं, लोग कैसे आनंदित हो रहे हैं।
अमेरिका में जो भी कम्यून में आया, वह हैरान हो गया कि कैसे इतने लोग आनंद मना रहे हैं, नाच रहे हैं, गा रहे हैं। उन्होंने कभी देखी ही न थी ऐसी जगह। वे विश्वास ही न कर सकते थे कि लोग इतने आनंदित भी हो सकते हैं।
तो मैं यहां वैसा निर्माण कर सकता हूं। मेरे लोग विश्व भर में हैं। मैं सब तरह के लोगों को एक साथ आ जुटने को कह सकता हूं। बस, केवल सरकार को मेरे पक्ष में रहना होगा वरना इस सबकी फिकर मैं न लूंगा।
फिर मुझे शांति से रहना है, और सब कुछ जैसे अपने से चल रहा है उसे वैसे ही चलने देना है।
हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री वीरभद्र ने कहा कि अगर भगवान भी कहते हैं कि उन्हें हिमाचल प्रदेश में कोई जगह चाहिए तो...क्या आपके पास कोई योजना है स्थायी रूप से हिमाचल प्रदेश में रहने की? यह मेरी व्यक्तिगत भावना है, वास्तव में अपने भारत के लिए या कहना चाहिए कि विश्व भर के लिए बहुत कुछ किया है और राज्य सरकार को इससे गौरवान्वित होना चाहिए; वह मेजबान है। उन्हें कोई प्रस्ताव सामने रखना चाहिए।
प्रस्ताव उनकी ओर से किया जाना चाहिए। मेरी ओर से उसके लिए नहीं कहा जाएगा। प्रस्ताव या कि सहयोग उनकी ओर से मिलना चाहिए। और उन्हें स्वीकृति देनी है। मेरी आवश्यकताओं को—वे बीच में कोई बाधा न खड़ी करें, तो मैं उपलब्ध हूं।

लेकिन डिजनीलैंड या ऐसी कोई भी चीज बनाने में मेरा भी रस नहीं है। ऐसी कि सी भी मूढ़ता में मेरी कोई रुचि नहीं है।

मेरा कार्य इस भांति संपन्न होगा—यदि उससे पूरे देश को कोई मदद मिल सके कि लोग सीख सकें कि रेगिस्तान भी इतना फल फूल सकता है। और हमारे पास अच छी भूमि है, बस हमें इतना ही पता नहीं कि किस प्रकार ज्यादा तकनीकी मदद से , ज्यादा वैज्ञानिक ढंग से उसे संभावना है।

और मैं हर उस जगह को विश्वविद्यालय भी बना सकता हूं। देश के हर भाग से लोग वहां तीन चार माह के लिए आ सकते हैं कुछ सीखने के लिए और फिर अप ने यहां वापस लौटकर उसी ढंग से, उसी शैली में जीना, कार्य करना शुरू कर स कते हैं। वह अदभुत महत्व का स्थल बन सकता है।

लेकिन प्रस्ताव सरकार द्वारा किया जाना चाहिए। मैं इसके लिए नहीं कहूंगा।

आप कौन सी जगह सबसे अधिक पसंद करते हैं। कोई शुष्क स्थान या कि पहाड़ी इलाका—राजस्थान, कि गुजरात, कि हरियाणा?

कच्छ ठीक है।

कच्छ?

क्योंकि मुझे कम नमी वाला इलाका चाहिए।

या फिर गुजरात में कहीं भी क्योंकि भारत के किसी और प्रांत की तुलना में गुजर ात में मेरे संन्यासी कहीं अधिक हैं। इसलिए वहां इन सभी संन्यासियों का सहयोग साथ रहेगा।

लेकिन जहां कहीं भी वे देना चाहें दें। इससे कुछ फर्क नहीं पड़ता। मेरे संन्यासी क हीं भी रह कर कार्य करना शुरू कर सकते हैं। लेकिन पहल तो उन्हें ही करनी हो गी। मैं कोई प्रस्ताव नहीं रखूंगा—क्योंकि मैंने पूना में अपनी अंतःप्रेरणा से पहले की , उन्होंने उस कार्य को नष्ट किया। मैंने अमेरिका में एक आरंभ का सूत्रपात किया और उसे उन्होंने नष्ट किया। अब यह—बस यह तो बहुत हुआ।

कृपया एक और प्रश्न : कल विद्वेषपूर्ण दृष्टिवाले एक समाचार पत्र ने अपना संपाद कीय लिखा। उसे यहां ला दिखाने की जरूरत नहीं समझता। वह पंजाब का प्रादेशि क समाचार पत्र है, जिसमें कहा गया है कि मनाली और कुल्लू प्रदूषित हैं। इस प र आपकी ही प्रतिक्रिया जानना चाहता हूं क्योंकि मैं उस समाचार पत्र को चुनौती देना चाहता हूं कि कैसे हिप्पियों, नशीले पदार्थ के व्यसनियों और चरस भांग आि द की तस्करी करने वालों के द्वारा क्या कुछ दूषित हो रहा है, तभी उन्हीं खतरा हो गया है।

यह तो बिलकुल असंगत है। क्योंकि मेरे पास एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं जो किसी किस्म का नशीला पदार्थ लेता हो। यह तो संन्यास से जुड़ी प्रतिबद्धताओं में से एक प्रतिबद्धता है कि तुम नशीले पदार्थों का सेवन न करोगे।

हां, इसलिए बात में सारे ही क्या?

तो इसे ठीक से खयाल में ले लेना कि कोई भी संन्यासी नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करता है। और मेरे लोग हिप्पी नहीं है।

और यहां मुझे भी कोई हिप्पी नहीं दिखाई दे रहा।

यहां कोई हिप्पी नहीं है। और मेरे लोगों को चरस से, कि हशीश से या ऐसी ही किसी और चीज से कुछ भी लेना देना नहीं है। ऐसा कुछ नहीं था। बात यही थी कि यह जगह नयी थी।

और अमेरिका में मेरे लोग चाहते थे कि मैं जल्दी से जल्दी अमेरिका छोड़ दूं क्योंकि, वे फिर मुझ किसी और मामले में फंसा सकते थे। इसलिए कोर्ट से छूटना हुआ तो मुझे सीधा एयरपोर्ट ले गए मेरे लोग। उन्होंने कहा, अब अमेरिका में एक मिनट भी नहीं। क्योंकि कोर्ट में ऐसा हुआ कि जिस क्षण उन्होंने मुझे वहां से छोड़ा...

क्या वे फिर आपको किसी दूसरे मामले में उलझाना चाहते थे?

हां, उस कोर्ट से बाहर निकलते-निकलते ही एक और कोर्ट के आदेश—जनवरी में आपको एक दूसरे कोर्ट में स्थिति होना पड़ेगा।

फिर मैं जेल तक लौटा अपनी कुछ चीजें लेने को...मुझे अकेला नहीं छोड़ा जाता था, चाहे मेरे हाथों पैरों और कमर में जंजीरें पड़ी हुई थीं, फिर भी मुझे अकेला नहीं छोड़ा जाता था, दो आदमी अपनी बंदूक ताने हमेशा बैठ ही रहते थे मेरे पास। अब पहली बार ऐसा हुआ कि जेल की पहली मंजिल पूरी तरह खाली थी, एक भी व्यक्ति मौजूद नहीं, केवल एक व्यक्ति वहां था मुझे मेरे कपड़े और चीजें देने के लिए।

मैं बैठ गया वहां। वह कहने लगा, मुझे अपने से ऊंचे अधिकारियों के दस्तखत लेने होंगे, उसके लिए मुझे बाहर जाना पड़ेगा, मैं जल्दी ही आ रहा हूं। पहली बार मुझे कमरे में अकेला छोड़ा गया। उसने बाहर से ताला लगा दिया।

बाद में पता चला कि वहां उस कमरे में बम रखा हुआ था। यानी इतने हताश हो कर इतने क्रोध से भर गए थे।

अब अंत में पूछना चाहता हूं कि क्या यह कोई भीतर घृणा रही होगी, भारतीय लोगों के लिए उनके मन में कोई हीन भावना जैसी चीज या कि विद्वेष?

नहीं, ऐसा कुछ नहीं था।

आपकी सभी बातों की धूम मची हुई थी तो क्या इसीलिए वैसा व्यवहार किया गया?

हां, ये तमाम बातें निश्चित ही उन्हें चोट दे रही थीं। छोटी-छोटी बातें अहंकार को चोट पहुंचा रही थीं।

मजिस्ट्रेट ने कोर्ट में मुझसे टोपी उतार देने को कहा। मैंने कहा हम यह सम्मानदायक मानते हैं। हमें तो मंदिर भी सिर ढांक कर जाना होता है, लेकिन अगर तुम्हें लगता है कि यह तुम्हारे लिए अपमानदायक है तो इसे उतार सकता हूं मैं। लेकिन फिर मेरी ओर से यह बात अपमानदायक हो जाएगी। सिर ढांकना तो प्रतीकात्मक संकेत ही है कि मैं किसी किस्म के विरोध में नहीं हूं, कि मैं विनम्र हूं, कि मैं

अपना सिर अभिवादन में झुका रहा हूं। इसलिए मैंने सिर ढांका हुआ है। लेकिन अगर तुम कहो, तो मैं उतार दूंगा टोपी। मगर ध्यान रहे, मुझे पूरा ध्यान रहेगा कि यह बात कोर्ट के लिए अपमानदायक है। अब तुम खुद ही फैसला कर लो इस बात का।

वे सच में ही हीन भावना महसूस कर रहे थे। तो जितना कुछ वहां घटा वह उन की कल्पना के बाहर था।

भगवान श्री, अब एकदम अंतिम प्रश्न : भारत में और विश्व भर के भारतीय परिवारों के घरों में हर कहीं धर्मयुग पढ़ा जाता है। कृपया देश और विदेश में रहने वाले भारतीयों के लिए धर्मयुग द्वारा कोई संदेश देंगे।

केवल एक संदेश, कि जहां कहीं भी है; भारत की आध्यात्मिक परंपरा को न भूलें। वह तुम्हारा एकदम सच्चा खजाना है। यदि तुमने उसे गंवा दिया, तो तुमने सब कुछ गंवा दिया।

यह जीवन का बहुत ही सुखद और हां आह्लादपूर्ण अनुभव रहा।

जब भी आना चाहें, आ जाएं।

20 नवंबर, 1985, अपराह्न, कुल्लू मनाली

करुणा सत्य से अधिक मूल्यवान है

स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से कोई सुंदर स्थान है; फिर आपने यही जगह और इस तरह का स्थल क्यों चुना?

यह इस तरह का प्रश्न है, जिसका उत्तर नहीं दिया जा सकता। मैं कोई जगह चुनता, तो वहां भी यही प्रश्न उठाया जाता।

क्या आप अपने को भगवान कहना पसंद करते हैं?

भगवान का अर्थ ईश्वर नहीं है। यदि भगवान का अर्थ ईश्वर होता तो तुम बुद्ध को भगवान नहीं कह सकते; क्योंकि वे किसी ईश्वर में विश्वास नहीं करते। तुम महावीर को भगवान नहीं कह कहते। क्योंकि वे किसी ईश्वर में विश्वास नहीं करते। तो एक बात निश्चित है, कि भगवान का ईश्वर से कोई संबंध नहीं है।

भगवान का इतना अर्थ है : चेतना की चरम स्थिति; धन्यभागी—यही इस शब्द का अर्थ है। और निश्चित ही मैं धन्यभागी हूं, यह कोई अहंकार से भरा वक्तव्य नहीं है, लेकिन मैं सिर्फ एक तथ्य की बात कर रहा हूं। मैंने स्वयं को जान लिया है—और यही शब्द का कुल अर्थ है; और कुछ नहीं।

समाचार वार्ताओं के माध्यम से मैंने जो जानकारी पायी है, उसके अनुसार अमेरिका में आपके ऊपर जो इलजाम लगाए गए हैं, उनका प्रत्युत्तर देने के बजाय आपने अपने को अपराधी कबूल किया है।

क्या इससे यह इंगित होता है कि वे सारे इलजाम सच थे?

नहीं, उसमें से एक भी सच नहीं था। मेरी जिंदगी में मैंने पहली बार झूठ बालो है—किसी खास कारणवश।

पूरी दुनिया में मेरे संन्यासी गहन दुख और संताप में थे। कई लोग उपवास कर र हे थे। और जो उपवास नहीं कर रहे थे, वे भी भयंकर मानसिक यातना से गुजर रहे थे। वे सभी चाहते थे कि मैं अमेरिका से बाहर चला जाऊं। उन्हें मेरी जिंदगी का खतरा था; कि यदि मैं यह मुकदमा लड़ता रहा तो उसकी पूरी सुनवाई होने तक वे मुझे कारागृह में रखेंगे।

हर मुद्दे पर मेरा जीतना सुनिश्चित था। क्योंकि वे सारी बातें मन गढ़त थीं। लेकि न मेरे लोगों की ओर देखते हुए...और कम से कम तीन चार साल तक उनको पी. डा झेलनी पड़ती; मुझे लगा कि स्वयं को अपराधी कबूल करके इन लोगों को इस भीषण पीड़ा से बचाना अधिक उचित है।

इस करुणा के कारण मैंने अपने अपराध स्वीकार कर लिए। लेकिन वास्तव में मैं अपराधी नहीं हूं।

समाचार माध्यमों ने कहा है कि अमेरिका ने आपके साथ जो अमानवीय व्यवहार ि कया है, उसके लिए आप उसे कभी माफ नहीं करेंगे। कृपा कर समझाएं कि आप इस दिशा में कौन से कदम उठाने वाले हैं? मेरा मतलब है, अब आपका अमेरिका के प्रति क्या रुख रहेगा?

इस मुकदमे के द्वारा अमेरिका के बारे मग एक बा सिद्ध हुई है। यह उनकी मूढ़ता है कि उन्होंने स्वयं इस मुकदमे का नाम दिया है: भगवान श्री रजनीश विरुद्ध यू नाइटेड स्टेटस आई अमेरिका।

अब एक संदर्भहीन व्यक्ति को, दुनिया की सबसे शक्तिशाली आणविक ताकत के ि खलाफ रखना, निहायत बेवकूफी है। लेकिन उन्होंने जाने अनजाने यह स्वीकार कि या है कि एक अकेला व्यक्ति भी, अपनी निर्दोषता में, अपने मौन में, तुम्हारे सारे आणविक शस्त्रास्त्रों से अधिक ताकतवर हो सकता है।

मेरा रुख वही है। इस घड़ी अमेरिका इस पृथ्वी पर सबसे दृष्टि शक्ति है। और मैं पूरी दुनिया के सामने अमेरिका का भंडाफोड़ करता रहूंगा। यदि तीसरा विश्व युद्ध होने ही वाला है, तो वह सोवियत रूस और अमेरिका के बीच नहीं, बल्कि अमेि रका और शेष विश्व के बीच होगा।

सोवियत रूस कम से कम सीधा सरल है। यदि वहां तानाशाही है, तो वह स्वीकार करता है कि हां, तानाशाही है। अमेरिका नकली है, पाखंडी है। वह लोकतंत्र का ओढ़ा हुआ एक नकाब है। लेकिन पांच साल की कालावधि में मैंने देखा कि उस नकाब के पीछे इतना कुरूप दानव छिपा है कि तुम कल्पना नहीं कर सकते।

और मेरे लोग सही थे कि अगर इस पूरी सुनवाई में कारागृह में रहे...और वे इस मुकदमे को बहुत लंबा चलाएंगे, क्योंकि उनके पास जीतने के लिए कोई आधार नहीं है। लेकिन वे आपको भरपूर सता सकते हैं, आपकी हत्या कर सकते हैं।

और तत्क्षण इस बात का सबूत मिला। क्योंकि जैसे ही मैं अदालत से मुक्त हुआ, मैं अपनी चीजें उठाने जेल में गया। और यह पहला मौका था, जब पूरी निचली मंजिल खाली थी। बात कुछ अजीब लगी। मैंने वहां के आदमी से पूछा, कि बात

क्या है? जब भी मैं इस निचली मंजिल से गुजरता था तब हमेशा लोग टाइप कर ते रहते, काम में व्यस्त रहते थे। हम लोग अंदर गए। वहां सिर्फ एक आदमी था, जो मुझे मेरे कपड़े देने के लिए तैयार खड़ा था।

वह बोला, उसे उसके अधिकारी के दस्तखत चाहिए। तो कृपा कर आप यहां बैठ जाए; मैं जाकर दस्तखत ले आता हूं, उसके बाद आप जा सकते हैं।

वह गया और अपने पीछे दरवाजे को ताला लगा गया। यह पहला मौका था जब उन्होंने मुझे अकेला छोड़ा था। मैं जब बाहर निकल आया, उसके बाद उस कमरे में बम पाया गया। गलती यह हुई कि उनका समय का अंदाज चुक गया था, बस। तो मेरे लोगों का कहना सही था कि वे मुझे मार डालेंगे। यह उनकी जी जान से कोशिश थी। जब अदालत ने मुझे छोड़ दिया है और उनके पास मेरे खिलाफ कोई सबूत नहीं है, तो अब यही एकमात्र उपाय है।

मैंने झूठ बोला है, लेकिन मुझे उसके लिए कोई ग्लानि नहीं होती। बल्कि मुझे उस पर नाज है, क्योंकि वह करुणावश बोला गया है। मेरे लिए सत्य से भी कहीं ज्या दा कारण मूल्यवान है। करुणा की खातिर सत्य की तो बलि दी जा सकती है, लेकिन करुणा की बलि किसी बात के लिए नहीं दी जा सकती।

आपने कहा कि भारत वापस लौटने में आपको खुशी हो रही है क्योंकि यह बुद्ध, महावीर और नार्गाजुन का देश है। अगर वह हकीकत है तो पहले आपने यह देश छोड़ा ही क्यों?

मैंने यह देश स्वास्थ्य के कारण छोड़ा। मैंने कभी इस देश का त्याग नहीं किया। और अमेरिका में मैंने अपने स्वास्थ्य लाभ के लिए जो प्रदेश चुना, वह एक रेगिस्तान था—सूखा, शीत और आर्द्रता से रहित। मेरी सेहत को उसकी जरूरत थी।

लेकिन एक बार मैं वहां पहुंच गया तो संन्यासी आने शुरू हुए। और जब मैं वहां था तब वे अपने लिए मकान बनाने लगे। और दूसरा साल खत्म होते-होते कम्यून वहां निर्मित हो गया था। और वे मुझे यहां वापस आने दे रहे थे। वे चाहते थे, मैं वहीं पर हूं।

और मेरे लिए तो दोनों बातें समान हैं—मैं भारत में रहूं या अमेरिका में रहूं। सारी पृथ्वी एक है। इसलिए मैंने कहा, कोई बात नहीं, मैं यहां रह जाऊंगा।

जिस क्षण मैंने वहां रहने का निर्णय लिया, उस क्षण से मेरा निर्णय अमेरिकन राजनीतिकों के लिए एक सर दर्द बन गया। उनकी आंख के सामने कम्यून विकसित होता गया। वह इतनी सुंदर जगह हो गई कि खुद पर शर्म आने लगी। उनकी असीम सत्ता के बावजूद वे ऐसा आदर्श शहर नहीं बना सके, और हमने बिना किसी सत्ता के, अपने हाथों से एक आदर्श शहर खड़ा कर लिया था, जिसमें पांच हजार लोग रहते थे। वह पूरी से एयर केडीशंड था और उसमें सड़कें, बस, कारें, हवाई जहाज, होटल, अस्पताल, स्कूल, विश्वविद्यालय सब कुछ था। और उसे रेगिस्तान में हम आत्म निर्भर थे—वह रेगिस्तान जो पचास साल तक मर्दा पड़ा था; किसी की उसे खरीदने की हिम्मत नहीं थी। हमने उस मरुस्थल को मरूद्यान बना दिया। अ

ौर उस मरुस्थल में पर्याप्त भोजन पैदा होने लगा—सब्जी, फल, दूध के उत्पादन, ज ो हमारी सारी जरूरतें पूरी करने लगे।

इससे उनके मन में उथल पुथल पैदा हो गई, कि आज नहीं कल यह लोगों के दि माग में सवाल पैदा करने वाला है।

दूसरी बात, कम्यून में पैसे का चलन बिलकुल नहीं था। किसी को किसी भी चीज की जरूरत होती तो कम्यून उसे पूरा करता। वहां कोई तानाशाही नहीं थी, और न ही कोई शासन था। एक प्लंबर और एक प्रोफेसर के बीच कोई फर्क नहीं था। इतिहास में पहली बार पांच हजार लोग एक साथ रह रहे थे और अपनी गरिमा और आत्मसम्मान को जरा भी खोए बिना, सब तरह के काम कर रहे थे। और क ोई उन पर समानता का तत्व आरोपित भी नहीं कर रहा था। वह समानता सहज उनकी समझ की उपज थी।

मेरी दृष्टि से, सोवियत रूस जिस तरह का समाजवाद प्रस्तुत करता है, उससे यह लाख गुना ऊंचे दर्जे का समाजवाद था। क्योंकि उनका समाजवाद जबरदस्ती थोपा गया है और यह एक स्वाभाविक विकास था।

समाजवाद बगैर किसी तानाशाही के खिला है, यह देखकर वे इसकी निंदा भी नहीं कर सके। वे चिंतित हो उठे। वे उसे नष्ट कर देना चाहते थे। और स्वभावतः उ नका पहला लक्ष्य मैं था।

मैंने भारत का त्याग कभी नहीं किया। मेरा कम्यून अब भी यहां कार्यरत है, विकि सत हो रहा है। और यह अभी भी बुद्ध, महावीर और नागार्जुन की भूमि है; इसे कोई इनकार नहीं कर सकता।

और मैं मेरे देश से प्रेम करता हूं। और मैं चाहता हूं कि मेरा देश जीवन की उच्च तम श्रेणी हासिल करे—आंतरिक और बाह्य, दोनों। और उसके लिए मैं निरंतर ती स साल से मेहनत कर रहा हूं। और मैं करता रहूंगा—मैं यहां, विभेद में रहूं या क हीं और रहूं, मेरी आंखें भारत पर लगी रहती हैं।

आपने मां आनंद शीला की जगह मा प्रेम हास्या को अपना सचिव क्यों बनाया?

मैंने मां आनंद शीला को उसके व्यावहारिक, प्रयोगवादी रुख के कारण चुना था। क योंकि कम्यून को किसी ऐसे व्यक्ति की जरूरत थी, जो व्यवहार कुशल हो। उसकी आध्यात्मिक विकास की कोई चाह नहीं थी। लेकिन उसमें काम करने की अदभुत क्षमता थी। और आज नहीं कल, उसकी जगह कोई दूसरा आने ही वाला था, य ह उसे पता था। मैंने उसे साफ-साफ कह दिया था, अगर तुम अपने भीतर कोई आध्यात्मिक शक्ति विकसित नहीं करती, तो मैं मंदिर की सिर्फ बुनियाद के साथ नहीं रह सकता। बुनियाद में पत्थरों की जरूरत होती है—अनगढ़, बिना तराशे हुए , असुंदर। क्योंकि वे भूमिगत रहने वाले हैं, उन्हें कोई देखने वाला नहीं है; लेकिन उनकी जरूरत होती है। मैंने तुम्हें भौतिकवादी मनोवृत्तियों के कारण चुना था, ले किन मैं सिर्फ बुनियाद के साथ नहीं रह सकता। देर अबेर, या तो तुम ध्यान में ि

वकसित होओ, कुछ आध्यात्मिक रुझान दिखाओ, या फिर मुझे तुम्हें बदलना पड़ेगा ।

और मैं उसकी जगह किसी योग्य व्यक्ति तलाश में था।

और वह सचेत हो गई कि इससे पहले कि मैं कुछ बदलाहट करूं, जितना बन सके उतना धन लेकर भाग जाना ठीक रहेगा; क्योंकि तब उसके हाथ में पूरी ताकत थी। तो उसने पर्याप्त धन चुरा लिया, स्विस बैंक के खाते में उसे रेखा, नेपाल में कुछ जमीन खरीदी, नेपाल के बैंक में खाता-खाता, और पता नहीं मेरे अनजाने अ ौर भी क्या-क्या किया।

हास्या, शीला के ठीक विपरीत है। उसके पास कोई भौतिकवादी दृष्टि नहीं है। वह विशुद्ध प्रेम है। और उसकी एकमात्र इच्छा है, वह आंतरिक जगत में अधिकतम गहराई से विकसित हो सके। वह सृजनशील महिला है। उसने अपने पति के साथ एक फिल्म बनाई है, जो बहुत प्रसिद्ध फिल्मों में से एक है : उसका नाम है, गाड फादर। उसके पास अंतदृष्टि है, समझ है और प्रेम है।

शीला जाती या न जाती, हास्या मेरी सचिव होने ही वाली थी।

भगवान, मैंने सुना है कि मनाली के और भारत के भी स्थानीय लोग आपके आग मन से प्रसन्न नहीं हैं। ऐसा क्यों है?

ऐसा हर जगह होगा। लोग मेरे आगमन से प्रसन्न नहीं होंगे। और उसका सीधा स ा कारण यह है कि मैं उन सारे अंधविश्वास के खिलाफ हूं, जो ये लोग बहुत मूल्य समझते हैं। मैं उन सब व्यतीत, मृत परंपराओं के खिलाफ हूं, जिन्हें वे अपनी जी वन समझते हैं। ये परंपराएं, ये अंधविश्वास उन्हें गरीब बना रहे हैं, लेकिन वे इसे देख नहीं पाते।

तो मैं जहां भी जाऊंगा। कहीं भी जाऊं; यह सवाल नहीं है—लोग भयभीत होंगे। और यह अस्वाभाविक नहीं है। लेकिन एक बार मैं यहां रहा तो कुछ दिन के भीत र तुम देखोगे कि उनका भय चला गया। क्योंकि मैं किसी भांति खतरनाक व्यक्ति नहीं हूं। मैं सिर्फ बोलने काम कर सकता हूं। उससे तो मच्छर भी नहीं मरते! कि सी को डरने की कोई जरूरत नहीं है।

और अगर उनके खयाल बेहतर हैं, तो मैं चर्चा करने को तैयार हूं। अगर वे सही हों तो उन्हें स्वीकार करने के लिए मेरे द्वार खुले हैं। भय तभी उठता है, जब गह रे में तुम जानते हो कि तुम्हारी धारणा कहीं पर सही नहीं है।

तो मेरी दृष्टि से यह शुभ लक्षण है कि लोग भयभीत होत हैं। इसका मतलब है, मेरे आगमन मात्र से उनकी जड़ें, हिल जाती है। मैं कुछ करता नहीं हूं।

तो उनसे कहना, मैं इसे अपनी बहुत बड़ी प्रशंसा मानता हूं।

भगवान, क्या यह सच है कि आप यहां पर एक नया आश्रम शुरू करना चाहते हैं ?

नहीं, जब तक यहां पर या कहीं भी आश्रम शुरू करने के लिए सरकार मुझे निमं त्रत नहीं करती, मैं खुद इसकी कोशिश अपने से नहीं करूंगा। क्योंकि इससे मेरे अ

ौर सरकार के बीच तत्क्षण संघर्ष खड़ा हो जाता है। और फिर अवांछनीय परिस्थितयां, घिनौती राजनीति...।
और अभी सारी दुनिया में मेरे अनेक कम्यून कार्यरत हैं, इसलिए मुझे कोई जरूरत भी नहीं है। मैं सिर्फ यहां बैठकर सारी दुनिया में फैले हुए मेरे कम्यून को संदेश भेज सकता हूं।
मेरे मन में यहां कम्यून शुरू करने का कोई विचार नहीं है। लेकिन अगर शासन चाहे और अगर वे लोग बुद्धिमान हैं, तो उन्हें इस बारे में सोचना चाहिए--कि अमेरिका में, ओरेगान में मैंने जो निर्माण कार्य किया था, वह मैं यहां पर पुनर्निर्मित कर सकता हूं; और वह पूरे देश के लिए एक आदर्श स्थान बन सकता है।
क्या यह सच है कि रूस और चीन जैसे कम्युनिस्ट देशों में आपके कई भूमिगत संन्यासी है?
हां, यह सच है। सभी कम्युनिस्ट देशों में कई भूमिगत संन्यासी हैं। और उनमें से अधिकांश संन्यासी में हैं।
और मैं तुमसे कहता हूं कि रूसी सरकार तथा रूसी नागरिकों को यह सूचित कर दो कि मेरे लोग कम्युनिज्म के विरोधी नहीं है। उल्टे मेरे लोग उस कम्युनिज्म से अधिक श्रेष्ठतर कम्युनिज्म के पक्ष में हैं जो उन्होंने अपने देश में लाया है। उन्हें मेरे लोगों को सताना नहीं चाहिए। वे सता रहे हैं। वे इसीलिए सता रहे हैं कि उन्हें शक है कि ये लोग एफ. बी. आइ. के एजंट हैं। अब मेरा यह मुकदमा इस बात का पर्याप्त सबूत है कि वे संन्यासी एफ. बी. आइ. के एजेंट नहीं हैं। उनको सताओ मत। तुम अपने ही लोगों को गलत कारणों के लिए सता रहे हो। उनको स्वतंत्रता दो। वे तुम्हारे समाज का नुकसान नहीं करेंगे, वे उसे समृद्ध करेंगे।
और मैं अपने लोगों से कहूंगा, चाहे कुछ भी हो जाए, तुम काम करते रहो। तुम पूरी मनुष्यता के हित के लिए काम कर रहे हो। इसमें कोई भी कुर्बानी देनी पड़े, उस में आनंद है। आपने जगत के आध्यात्मिक विकास के लिए जो प्रदीर्घ प्रयास किए हैं, उससे भारत और अन्य देश किस प्रकार प्रभावित हुए है?
मेरा प्रभाव जागतिक है, और बहुत वड़ा परिणाम हुआ है। शायद मैं एकमात्र व्यक्ति हूं, जिसका दुनिया के किसी भी कोने में बौद्धिक रूप से कोई खांसन नहीं हुआ है।
मैं खुद आश्चर्य चकित हुआ क्योंकि मैं जो भी कह रहा हूं वह विवादास्पद है; और मैं ऐसे मसलों का समर्थन करता हूं, जो लोकप्रिय नहीं हैं। फिर भी जगत के बुद्धवादीयों में से एक ने भी मेरा खंडन नहीं किया है। यह इस बात का निःसंदिग्ध प्रतीक है कि उनके पास मुझे स्वीकार करने का साहस नहीं है, लेकिन वे इतने कायर भी नहीं हैं कि पूरी तरह से मुझे इनकार कर दें। वे बस मध्य में हैं; मुंडेर पर बैठे हैं।

क्योंकि मैंने जो भी कहा है, वह बाइबल, कुरान या गीता जैसे प्राचीन शास्त्र की दुहाई देकर नहीं कहा है। मैं जो कह रहा हूं वह अपने अधिकार से कह रहा हूं, स्वानुभव से कह रहा हूं।

गीता या वेद की व्याख्याओं की चर्चा करना, उनके साथ असहमति प्रकट करना बहुत सरल है। लेकिन ऐसा व्यक्ति मिलना अति कठिन है जो अपने अधिकार और अनुभव के बल पर बोल रहा हो--हां, तुम्हारे पास अनुभव की वही गुणवत्ता और वही गहराई हो तो बात अलग है।

तो मेरे वक्तव्यों का खंडन नहीं किया गया। और अमेरिका की इस घटना से चीजें और भी स्पष्ट हो गई हैं। सारी दुनिया से हजारों तार, हजारों पत्र, हजारों फोन, हजारों फूल प्रति दिन आते थे। यहां तक कि वहां के जेलर भी आश्चर्य चकित थे।

एक जेलर, जो कि अवकाश लेने ही वाला है, उसने मुझसे कहा, मेरी पूरी जिंदगी में मैंने ऐसा कैदी नहीं देखा। और दुनिया भर से आने वाले फोन के कारण हम परेशान हैं। और यह जो फूलों की वर्षा हो रही है, उसे रखने के लिए हमारे पास जगह भरी नहीं है। लेकिन मैं आपसे माफी मांगना चाहता हूं। क्योंकि आप जब आए थे तो पहले दिन जर्मनी से किसी का फोन आया था। उसने कहा था, पूरे जीवन में इससे अधिक महत्वपूर्ण कैदी तुम्हारे जेल में आया नहीं होगा।

और मैंने उससे कहा था, नहीं, यह सच नहीं है। क्योंकि हमारे जेल में मंत्री मंडल के मंत्री भी रह चुके हैं। लेकिन आज, तीन दिन के बाद, मैं आपस के माफी मांगना चाहता हूं कि मैं गलत साबित हुआ। वे मंत्री मंडल के सदस्य कुछ भी नहीं। सारी दुनिया की आंखें इस जेल पर केंद्रित हुई हैं। और मैं निश्चित रूप से कह सकता हूं कि आप जैसा दूसरा व्यक्ति इस जेल में दुबारा नहीं आएगा।

इस घटना का जबरदस्त प्रभाव पड़ा है कि एक निर्दोष व्यक्ति--सिर्फ इसलिए कि उसे विचार कुछ भिन्न हैं, जो तुम्हारी परंपराओं और अंधविश्वासों के आगे झुकता नहीं है, जिसे तुम किसी ढांचे में बिठा नहीं सकते--वह पीड़ा झेल रहा है। यह हमने किसी तरह की दुनिया बनायी है?

इससे मेरी किताबों की बिक्री बढ़ी है, मेरे टेप्स की बिक्री बढ़ी है। इसके कारण मेरा नाम सारी दुनिया में घर-घर पहुंच गया है। और जो लोग मेरे साथ कभी सहानुभूति नहीं रखते थे, वे भी अब सहानुभूति से भर गए हैं। हजारों पत्र आए हैं जिनमें लिखा है, हम आपके प्रति कभी सहानुभूतिपूर्ण नहीं थे, लेकिन जो घटा है उसे देखकर एक बात बिलकुल साफ हो गई है कि आप सही हैं और हम एक पाखंडी समाज में जी हरे हैं; जो कहता कुछ है, करता बिलकुल उससे उल्टा।

तो यह मेरे आंदोलन के लिए बड़ा उपयोगी रहा है।

बारह दिन का उत्पीड़न कुछ ज्यादा नहीं था। इसका परिणाम अत्यंत लाभ प्रद रहा है। मेरे संन्यासी अधिक शक्तिशाली हो गए हज, अधिक ताकतवर, अधिक एकजुट। और जब यह आंदोलन और तेजी से फैलेगा।

अमेरिका में भी, अमेरिकन संन्यासी उनकी सरकार से बुरी तरह से घृणा से भर ग
ए हैं। वे कभी सोचते भी नहीं थे कि ऐसा कभी हो सकता है। तो इस घटना से
सबकी आंखें खुल गई।

यदि शीला अपनी गलतियां स्वीकार करेगी, फिर से नयी होकर वापस आना चाहेग
ी, तो क्या आप उसको स्वीकार करेंगे?

निश्चित ही। गलतियां तो सभी करते हैं। वह मानवीय है। लेकिन उनको स्वीकार
करना, उन्हें पोंछ डालना है। यदि वह वापस आना चाहे तो उसका स्वागत है।

आपके अनुयायियों में विदेशियों की संख्या इतनी ज्यादा क्यों है? क्या वे भौतिक उ
पलब्धियों से ऊब गए हैं, इसलिए।

कारण तो अनेक हैं। उनमें से एक निश्चित ही, उनकी ऊब भी है।

जब कि पूरब भूखों मर रहा है, रोटी पानी के लिए संघर्ष कर रहा है; पश्चिम ने
वह सब देख लिया है जो संसार दे सकता है। और फिर भी उनका विषाद जहां क
ा तहां है। अब उन्हें कुछ और चाहिए। केवल अच्छा घर, अच्छा भोजन, अच्छे कप.
डे, अच्छी नौकरी काफी नहीं है।

और यह सब बात तभी साफ दिखायी देती है, जब तुम्हारे पास ये सब चीजें होती
 हैं। उनके विरोध में यह दिखाई पड़ता है कि ये सब चीजें जीने के लिए आवश्यक
 हो सकती हैं, लेकिन वे पर्याप्त नहीं है। इससे कुछ श्रेष्ठतर चाहिए, कुछ ऊंचे मू
ल्य चाहिए।

दूसरी बात, वे अधिक उच्च शिक्षित हैं और अधिक बुद्धिमान हैं। अरस्तू से लेकर
बर्ट्रेंड रसल तक उन्होंने सारी बौद्धिक कवायदें देख ली हैं; और उन्हें उससे कुछ न
हीं मिला। क्योंकि अरस्तू या बर्ट्रेंड रसल, इनमें से कोई भी ध्यान नहीं हैं। वे सिर्फ
 विचारक हैं। और लोग मन से पार कुछ चाहते हैं। व मन से ऊब गए हैं। और
मन के पार सिर्फ एक ही रहस्य है, जो पूरब के पास है। और वह है—ध्यान।

तो निश्चित ही वे उत्सुक हैं। और पूरब यदि थोड़ा और सजग रहे तो यह क्षण ब
हुत बड़ी विजय का है और यह विजय उस विजय से अधिक बड़ी होगी, जो पश्चि
म ने पूरब पर पायी थी। उन्होंने तुम्हारी आत्मा को गुलाब बनाया, तुम्हारे शरीर
को गुलाम बनाया; वह बड़ी कुरूप घटना थी। हम उनकी आत्मा को मुक्त कर स
कते हैं, और उन्हें चेतना की स्वतंत्रता का पूरा आकाश प्रदान कर सकते हैं। और
 यह अपूर्व अवसर है, जिसे हमें खोना नहीं चाहिए।

लेकिन पूरब को इसका कोई होश नहीं है। उल्टे जब वे पश्चिम के लोगों को मेरे
पास आते हुए देखते हैं तो वे दुश्मनी की निगाहों से उन्हें देखते हैं। उन्हें और करु
णापूर्ण होना चाहिए। क्योंकि पहली बार पश्चिम का आदमी महसूस कर रहा है ि
क पूरब के पास कुछ है, जिसका पश्चिम में अभाव है। पूरब को इस बात का गर्व
 होना चाहिए। और खुल हृदय से उसे उनका स्वागत करना चाहिए। यही वह क्ष
ण है, जब हम यह सिद्ध कर सकते हैं कि पूरब ने वे ऊंचाइयां जानी हैं, जिसके

पश्चिम ने सपने भी नहीं देखे होंगे। यह पूरब के लिए विजय की एक महिमा मंडि त घड़ी हो सकती है, जो हजारों साल की गुलामी के दाग धो डाल सकती है। मेरी दृष्टि से यह अत्यंत अर्थपूर्ण है।

लेकिन पूरब का मन अभी भी पश्चिम साम्राज्य और उसके शासन के प्रभाव के नी चे दबा पड़ा है। औपचारिक रूप से वे स्वतंत्र हो गए हैं, लेकिन गहरे में वे अभी भी अपने को हीन मानते हैं। मैं चाहता हूं कि वे लोग यह हीनता का भाव छोड़ दें, क्योंकि पहली बार पश्चिम पूरब के आगे हीन अनुभव कर रहा है। और इस अ वसर को खोना बड़ा मूढ़तापूर्ण होगा।

और इससे पूरब और पश्चिम दोनों का लाभ होगा। क्योंकि ध्यान का पूरब या पश्चि चम से कोई संबंध नहीं है। यह पूरी पृथ्वी पर एक बृहत एकात्मता लाएगा।

जवान लड़कियां संन्यास लेती हैं तो आप उन्हें मां क्यों कहते हैं? भारतीय परंपरा के के विश्राम के अनुसार मां के साथ काम संबंध नहीं रखा जाता है। फिर यह ि वरोधाभास कैसा?

कुछ बातें।

तुम परमात्मा को पिता क्यों कहते हो? उसकी कोई पत्नी नहीं है, उसके कोई बच चे नहीं हैं, जो परमात्मा को मां कहते हैं। उसके न कोई बच्चे हैं, न पति है; फिर उसे मां क्यों कहते हो?

ईसाई पादरी को फादर कहते हो, जो कि अविवाहित है, ब्रह्मचारी है। उसको पित ा क्यों कहते हो?

तुमने इन बातों के बार में सोचा नहीं होगा क्योंकि वे सदियों से चलती चली आ रही हैं, और हमने उन्हें स्वीकार कर लिया है।

हकीकत यह है कि पिता सिर्फ एक आदर सूचक शब्द है—श्रेष्ठतम आदर, जो तुम किसी का कर सकते हो।

मेरी दृष्टि से मां और भी आदरणीय है। क्योंकि बच्चे को पैदा करने में पिता को योगदान बिलकुल विनम्रतम होता है। पूरा निर्माण जो है, वह मां का होता है। मां का सर्वाधिक सम्मान होना चाहिए। वह जीवन को निर्मित करती है। स्त्री की उच चतम गुणवत्ता है, उसकी जीवन निर्मित करने की क्षमता। इसलिए मैंने अपनी संन् यासिनियों को मां कहा है। उनको सिर्फ इस बात का अहसास दिलाने के लिए कि मातृत्व बड़े से बड़ा सम्मान है। उन्हें पुरुष से कनिष्ठ होने की कोई जरूरत नहीं है । वस्तुतः इस मामले में वे उनसे श्रेष्ठ हैं।

और जैसा कि तुमने पूछा है कि भारतीय में मां के साथ संभोग स्वीकृत नहीं है, तुम ठीक नहीं कह रहे हो।

वेदों में ऐसे उदाहरण है, जहां नवविवाहित दंपति किसी महान ऋषि के पास आश ीर्वाद लेने आते हैं। और जो आशीर्वाद उन्हें मिलता है, वह सचमुच अनूठा है। सार ी दुनिया में किसी और धर्म में ऐसा आशीर्वाद नहीं है। वह ऋषि पति को आशीर्वा द देता है कि तुम्हारी पत्नी तुम्हारे दस बच्चे की मां बनेगी, और तुम इसके ग्यार

हवें पुत्र बनो—पति से कह रहा है। वह यह कह रहा है कि मां आखिर मां है। वह तुम्हें दस बच्चे देगी, लेकिन सब कुछ ठीक ठाक चलता रहा तो तुम इसके ग्यार वें बच्चे बनोगे।

अब इस तरह का आशीर्वाद मेरे पक्ष में जाता है, तुम्हारे पक्ष में नहीं। और यह आशीर्वाद इस बात का भी समर्थन करता है कि संभोग कोई कुरूप, घृणित कृत्य नहीं है। वह सिर्फ जीवन के बहने की प्रक्रिया है—ठीक वैसे ही, जैसे नदी बहती है। शरीर पुराने हो जाते हैं, जीवन नए शरीरों में प्रवेश करता है, पुराने शरीर छोड़ दिए जाते हैं। लेकिन जीवन सदा-सदा चलता रहता है—शाश्वत की ओर। और स्त्री उसका द्वार है।

पुरुष के बिना काम चल सकता है। सिर्फ एक इंजेक्शन शायद काफी होगा। लेकिन स्त्रियों के बिना रहना बहुत मुश्किल है।

स्त्रियों के बिना हम परखनली में बच्चे पैदा कर सकते हैं, लेकिन वे मानवीय नहीं होंगे; वे यांत्रिक होंगे। क्योंकि स्त्री बच्चे को सिर्फ हड्डी, मांस और खून ही नहीं देती, वह उसे बुद्धि भी देती है, भाव भी देती है, प्रेम भी देती है। बच्चे के पास जो भी होता है, वह सब मां के द्वारा दिया गया होता है। परखनली वह सब नहीं दे सकती। वह बच्चे को एक शाक सब्जी की तरह जिंदा तो रख सकती है, लेकिन उस भाव या बुद्धि नहीं दे सकती।

संन्यास की शुरुआत करने से पहले मुझे इसके बारे में सोचना पड़ा। क्योंकि प्राचीन शास्त्रों में पुरुष को संन्यास दिया जाता था, स्त्री को सदा वंचित रखा गया है। तो पुरुष के लिए तो नाम है, स्वामी, लेकिन स्त्री के लिए कोई नाम नहीं है।

महावीर ने स्त्री को स्वीकार नहीं किया, बुद्ध ने स्वीकार नहीं किया और हिंदुओं के द्वार भी स्त्री के लिए बंद थे। मैं पहला आदमी हूं, जिसने स्त्री को संन्यास में दीक्षित किया है। मुझे कोई नाम खोजना जरूरी था। मेरी दृष्टि से स्वामी बहुत अच्छा नाम है। उसका इतना ही अर्थ होता है : स्वयं के मालिक बन जाना। लेकिन यह खतरनाक भी है, क्योंकि यह तुम्हें एक तरह की ताकत भी देता है। वह तुम्हें विनम्र नहीं बनाता, उल्टे और अहंकारी बनाता है—तुम स्वामी हो!

मैं स्त्रियों को स्वामिन भी कह सकता था, लेकिन मुझे उसमें छिपी हुई शक्ति की ध्वनि अच्छी नहीं लगी। और मैं यह भी चाहता था कि स्त्री कुछ ऐसा देना चाहिए जो उसके लिए स्वाभाविक हो, आंतरिक सुगंध लिए हो। मौलिक रूप से वह एक मां है।

तुम्हें जानकर आश्चर्य होगा कि पुरुष का काम ऊर्जा रोज-रोज निर्मित होती है। वह अपने जन्म के साथ उसे इकट्ठी नहीं ले आता। लेकिन स्त्री के अंडे...एक अलग ही कहानी है। हर लड़की अपने अंडे एक साथ लेकर पैदा होती है। तो वह वास्तविक रूप से मां बने या न बने, बीज रूप से वह मां रहती ही है, क्योंकि उसके पास सब कुछ होता है। वह उसके साथ बाहर से जुड़ने वाला नहीं है, वह उसकी प्रकृति का एक अंश है।

तो मां शब्द मुझे बड़ा प्यारा लगता है।
और उसके और भी अर्थ है। जब तुम किसी स्त्री को मां कहकर समादर करते हो , तो उसके साथ तुम्हारा सारा काम संबंध एक अलग ही अर्थ रखेगा। किसी वेश्या के साथ संभोग करने का और ही मतलब होता है। तुम्हारी प्रेमिका के साथ संभोग करने का कुछ और अर्थ होता है। तुम्हारी पत्नी के साथ संभोग करने का कुछ और अर्थ होता है। लेकिन जिस स्त्री का तुम मां की तरह समादर करते हो, ऐसी स्त्री के साथ संभोग करने से तुम्हारा प्रेम पवित्र हो जाता है, वह कोई अश्लील नृत्य नहीं रह जाता, वह ऐसा कृत्य बनता है, जिसकी अपनी पवित्रता और शुचिता है।
रामकृष्ण के जीवन में ऐसा हुआ। उन्होंने जीवन भर अपनी पत्नी को मां कहा। शादी के पहले जब वे उस लड़की को देखने गए थे, तो जब लड़की उनके सामने कुछ जल पानी की सामग्री रखने आयी, तो उन्होंने उसके पैर छुए। उनकी मां ने उन्हें तीन रुपए दिए थे, उन्होंने वे तीन रुपए भी उसके चरणों में रख दिए। सभी को बड़ा धक्का लगा कि यह क्या कर रहा है? क्या पागल हो गया है? वह उसकी पत्नी बनने वाली है और वह इस तरह रुपए उसके चरणों में रख रहा है, जैसे वह कोई देवी है! और उसके पैर छू रहा है!
उस लड़की को भी धक्का लगा। लड़की के परिवार को भी धक्का लगा। और जब रामकृष्ण से पूछा तो वे बोले, वह इतनी सुंदर थी कि मुझे लगा, वह मेरी मां बन जाए। वह इतनी पवित्र थी। मेरे मन में उसके पैर छूने का भाव उठा। और पूरी जिंदगी मेरे उसके साथ यही संबंध रहने वाले हैं। और उनके संबंध वैसे ही रहे। तो यह कोई मुसीबत नहीं है।
आप हिंदी में क्यों नहीं बोल सकते?
इसलिए, क्योंकि पांच साल तक मैं हिंदी नहीं बोला। अब मुझे फिर से शब्द खोजने पड़ेंगे। इसलिए मैं अंग्रेजी में बोल रहा हूं। एक बार मैंने हिंदी में बोलना शुरू किया तो मुझे ठीक पटरी पर आने में दो तीन महीने लगेंगे।
जब मैंने अंग्रेजी में बोलना शुरू किया था, तो दो तीन महीने तक मैं हिंदी में सोचता था और अंग्रेजी में बोलता था। यह दोहरी मुसीबत थी। अब अगर मैं हिंदी में बोलूं तो अंग्रेजी में सोचूंगा और हिंदी में बोलूंगा। और वह मुसीबत हो जाएगी। इसीलिए अभी मैं अंग्रेजी में बोल रहा हूं। क्योंकि मुझे पता नहीं, मैं यहां रहूंगा या नहीं।
मेरे लोग सारी दुनिया में जगह ढूंढ़ रहे हैं, जहां मैं पूर्णतः स्वतंत्र रह सकूं; जहां मैं किसी सरकार के दबाव के बिना, किसी सत्ता के अवरोध के बिना, या आदेश कि बिना...कि मुझे क्या कहना चाहिए और क्या नहीं कहना चाहिए। मैं यहां अस्थायी रूप से हूं।

यदि मैंने यहां पर स्थायी रूप से रहने का निर्णय लिया, तो मैं हिंदी में बोलना शुरू करूंगा। लेकिन इस अल्पकालीन निवास के लिए मैं बदलाहट नहीं करूंगा। मैं अंग्रेजी में ही बोलता रहूंगा।

23 नवंबर 1985, कुल्लू मनाली

मैं गुणतंत्र में विश्वास करता हूं

आपने यह सूचित किया है कि अब आप कोई नया कम्यून स्थापित करना नहीं चाहते या उसमें रहना नहीं चाहते। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि आप अपने दर्शन का प्रसार नहीं करना चाहते। या फिर, अपना आध्यात्मिक कार्य जारी रखने के लिए क्या आपकी कोई नई योजना है?

मेरी उत्सुकता हमेशा व्यक्ति में रही है, समाज में कभी नहीं। मेरे लिए समाज का कोई अस्तित्व ही नहीं है; वह सिर्फ एक नाम है।जो अस्तित्वगत है वह व्यक्ति है। मैं किसी संगठन का निर्माण किए बिना व्यक्तियों के साथ संपर्क बनाए रखूंगा। यह एक हृदय से हृदय का संवाद होगा।

हमने सुना है कि आप हिमाचल प्रदेश में, मनाली और कुल्लू में कुछ जमीन खरीदना चाहते हैं। इस दिशा में अब तक क्या प्रगति हुई है? क्या आप ऐसा महसूस नहीं करते, कि आपका सारा अतीत इस काम में राह का रोड़ा बनाकर खड़ा है, और शासन तथा आम जनता आपके यहां आने से खुश नहीं है? अगर हिमाचल प्रदेश में जमीन खरीदने के आपके प्रयास असफल रहे, तो आप किस वैकल्पिक स्थान का चुनाव करेंगे?

मैं यहां कोई जगह ढूंढने की कोशिश नहीं कर रहा हूं। मेरे लोग पूरी दुनिया में जगह ढूंढ़ने की कोशिश कर रहे हैं। तो सिर्फ हिमाचल प्रदेश या भारत का सवाल नहीं है। मेरे लिए पूरी पृथ्वी एक है। और अब मेरी हिमाचल सरकार में, या भारत सरकार में कोई उत्सुकता नहीं है। और वे मुझे निमंत्रित करते हैं या नहीं, इसकी मुझे कोई परवाह नहीं है।

आप अमेरिका में जिस अनुभव से गुजरे, क्या वह आपको दुःस्वप्न की भांति लगता है? और क्या उससे आप गहरे में हिल गए हैं? क्या आपको अब अपने देश में वापस लौटने पर ऐसा नहीं लगता कि इस घटना ने, एक आध्यात्मिक नेता की आपकी जो प्रतिमा और विश्वसनीयता थी, उसको धूमिल किया है?

नहीं। अगर सूली पर टांगे जाने भी जीसस अपनी विश्वसनीय नहीं खोते, तो सिर्फ बारह दिन कारावास में रहने से मैं अपनी विश्वनीयता कैसे खो दूंगा? उल्टे इससे वह और बढ़ गई है।

और यह अनुभव मेरे लिए दुःस्वप्न जैसा नहीं था। और न ही उसने मुझे विचलित किया है। बल्कि यह एक अदभुत अनुभव था। मैं इन तथाकथित लोकतांत्रिक सरकारों के असली चेहरे जान पाया हूं। वे वास्तव में लोकतांत्रिक नहीं हैं। उनके मुखौटे लोकतांत्रिक हैं, भीतर से वे सब फास्टि हैं।

आपके जीवन का ध्येय क्या रहा है? अपने स्वयं के जीवन दर्शन से प्रेरित होकर आपने पूरी जिंदगी बितायी है, तो क्या आप सोचते हैं कि आप अपने ध्येय में सफल हो गए हैं। आपकी जो उपलब्धियां रही हैं, उनसे क्या आप संतुष्ट हैं?

परिपूर्ण रूप से संतुष्ट हूं।

आपके मुक्त यौन के सिद्धांत को भारत की जनता ने स्वीकार नहीं किया है। अब भारत लौटने के बाद, क्या आप अभी भी सोचते हैं कि आपके सिद्धांत भारतीय मूल्य तथा संस्कृति के लिए संगत हैं? अगर ऐसा नहीं हैं, तो अपने चिंतन के मूल विषय पर क्या आप एक बार पुनर्विचार करेंगे?

पहली तो बात, मैंने कभी भी मुक्त यौन की शिक्षा नहीं दी। मैं जो सिखा रहा था वह यौन की पवित्रता थी। मैं सिखा रहा था कि संभोग का, प्रेम की ऊंचाई से कानून की गर्त में मूल्यन नहीं होना चाहिए। जिस क्षण तुम्हें स्त्री से इसलिए प्रेम करना पड़ता है कि वह तुम्हारी पत्नी है, इसलिए नहीं कि तुम उसे प्रेम करते हो, उसी क्षण वह वेश्यागीरी हो गयी--कानूनी वेश्यागिरी।

मैं वेश्यागिरी के खिलाफ रहा हूं; फिर वह कानूनी हो या गैर कानूनी हो। मैं प्रेम में विश्वास करता हूं। यदि दो व्यक्तियों के बीच प्रेम हो, तो जब तक प्रेम है, तब तक वे साथ रह सकते हैं। जिस क्षण प्रेम विदा होता है, उस क्षण उन्हें भी एक दूसरे से विदा ले लेनी चाहिए।

मैंने कभी मुक्त यौन के बारे में देशना नहीं दी। यह तो भारत की मूढ़तापूर्ण पीली पत्रकारिता है, जिसने मेरे पूरे दर्शन को इन दो शब्दों में कैद करके रखा है। मैंने 400 किताबें लिखी हैं; उसमें से सिर्फ एक किताब यौन के संबंध में है। बाकी 399 किताबों की कोई फिकर ही नहीं करता। सिर्फ एक किताब, जो यौन के संबंध में है। और वह भी यौन के पक्ष में नहीं है, वह इसका विज्ञान है कि काम ऊर्जा को आध्यात्मिक ऊर्जा में किस तरह रूपांतरिक किया जाए। सच पूछा जाए, तो वह यौन के विपक्ष में है।

मैं यही काम जारी रखूंगा। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि भारतीय लोग, या कोई भी लोग, या पूरी दुनिया उसमें विश्वास करती है या नहीं। उनके पास मेरे विरोध में एक भी दलील नहीं है। उनके पास विश्वास कोई दलील नहीं है। वे जो कहते हैं, वह उन्हें सिद्ध करना होगा। मैंने जो कहा है, उसे मैंने सिद्ध कर दिखाया है। मैं अपना जारी रखूंगा।

वे निरंतर एक ही बात करते आ रहे हैं, और वह है--लोगों को गलत जानकारी देना। और अपनी ही दी हुए गलत जानकारी की वे लोग निंदा कर रहे हैं। उन्होंने कभी मेरा सही प्रतिनिधित्व नहीं किया है। अन्यथा, मैं नहीं समझता कि भारत इतना बुद्धिहीन है।

जिस देश ने तंत्र दर्शन को जन्म दिया है, जिस देश ने खजुराहो, कोणार्क जैसे मंदर बनाए हैं वह इतना मूढ़न नहीं हो सकता कि वह मेरी बात को न समझ सके। खजुराहो मेरे गवाह हैं। सारा तंत्र का साहित्य मेरा गवाह है।

और यह एम मात्र देश है जहां तंत्र जैसा दर्शन पैदा हो सका है। दुनिया में और कहीं भी काम ऊर्जा को आध्यात्मिक ऊर्जा से रूपांतरिक करने की कोशिश नहीं क ी गई है।

और मैं भी यही कर रहा था। लेकिन पत्रकारों को तथ्य में कोई रस नहीं है। उन्हें उस है सनसनीखेज समाचारों में।

मुझे गलत ढंग से प्रस्तुत किया गया है। लेकिन वह मेरा दर्शन नहीं है।

आप ऐश्वर्य की देशना देते हैं, तो इस कारण गरीब लोग आपकी ओर आकर्षित ह ोने चाहिए थे। लेकिन क्या यह थोड़ी अचरज की बात नहीं है कि अधिकतर अमी र लोग आपकी ओर आकर्षित होते हैं? आप अपने समृद्ध अनुभव के बाद अब, क या गरीब और शोषित वर्ग के लिए कोई नया अभियान शुरू करना चाहते हैं?

पहली बात, चूंकि मैं ऐश्चर्यवादी दर्शन का समर्थक हूं इसलिए अधिकतर गरीब लोग मेरी ओर आकर्षित होने चाहिए, यह बात मनोवैज्ञानिक रूप से गलत है। गर ीब लोग उन लोगों की ओर ज्यादा आकर्षित होते हैं, जो इस बात की देशना देते हैं कि गरीबी में कोई आध्यात्मिक हैं; कि तुम्हारे पिछले जन्मों के बुरे कर्मों के क ारण तुम गरीब हो।

जीसस कहते हैं, सुई के छेद से एक ऊंट भी निकल सकता है, लेकिन एक अमीर आदमी स्वर्ग के प्रवेश द्वार से नहीं निकल सकता।

जीसस गरीब लोगों को आकर्षित करते हैं। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि दुनिय ा की सारी गरीबी ईसाई मिशनरियों और गिरजाघरों का पोषण करने का मूल स्रो त बन गई है। हिंदू, बौद्ध, मुसलमान या जैन, इनमें एक भी अमीर आदमी ने ईस ाई धर्म को अंगीकार नहीं किया है। केवल भिखारी, अनाथ, आदिवासी—ये लोग ही ईसाई बनते रहे हैं।

ईसाइयत गरीबों को आकर्षित करती है क्योंकि वह उन्हें भविष्य के जीवन के संबं ध में आशा और सांत्वना देती है। और भविष्य के संबंध में कोई कुछ नहीं जानता है। उसका कोई गवाह तो नहीं है। गरीब लोगों को बस आशा का सहारा चाहिए ।

मैं गरीबी के खिलाफ हूं। और मैं नहीं कहता कि वह आध्यात्मिक है, मैं कहता हूं, वह जघन्य पाप है और बस अपराधों की जड़ है। फिर गरीब लोग मेरी ओर कैसे आकर्षित होंगे? मैं कह रहा हूं कि गरीबी सारे अपराधों की जड़ है। और मैं कह रहा हूं कि गरीब लोग खुद उनकी गरीबी के लिए जिम्मेदार हैं, उनके पूर्व जन्म नहीं। वे गरीब हैं क्योंकि वे उन धारणाओं और कल्पनाओं को छाती से लगाए बैठे हैं जिनके कारण वे गरीब बने रहते हैं।

जैसे, वे सोचते हैं कि गरीबी यानी सादगी। लेकिन ऐसा नहीं। वे सोचते हैं कि गर ीबी यानी विनम्रता। यह गलत है। वे सोचते हैं, गरीब होना और गरीबी में संतुष्ट रहना आध्यात्मिकता है। यह भी गलत है। उनकी धारणाएं ही उन्हें गरीब रखे हु ए हैं। और मैं इस सब धारणाओं के खिलाफ हूं।

स्वभावतः वे लोग मेरी तरफ आकर्षित नहीं को सकते। मैं दुनिया से गरीबी को ह टा देना चाहता हूं। इसलिए सारे ईसाई मिशनरी मेरे खिलाफ हैं, सारे हिंदू पुरोहित मेरे खिलाफ हैं, सारे मुसलमान, जैन, बौद्ध, संन्यासी मेरे खिलाफ है। क्योंकि यही तो उनका कुल धंधा है। सिर्फ गरीब आदमी उनमें रस लेता है, सिर्फ गरीब आद मी कैथोलिक या मुसलमान या फलां ढिकां बनता है।

मैं यह कह रहा हूं कि गरीब की उन्मूलन हो सकता है। अब हमारे पास टेकनालो जी उपलब्ध है, लेकिन उस टेक्नालोजी का उपयोग हम युद्ध के लिए कर रहे हैं। हम हमारी ऊर्जा का उपयोग विध्वंसात्मक ढंग से कर रहे हैं; : उसे जीवन की सेव ा करने की बजाय मृत्यु की सेवा करने में लगा रहे हैं। एक छोटा सा परिवर्तन; अगर हम तय करें कि अब और युद्ध नहीं चाहिए--तत्क्षण गरीबी विलीन हो जाए गी। क्योंकि जो ऊर्जा युद्ध के प्रयास में व्यय हो रही है, वह सृजनात्मक हो जाएग ी। वह आसानी से समृद्धि में रूपांतरित हो जाएगी।

मैं गरीबी का दुश्मन हूं। और मैं चाहता हूं कि एक भी आदमी गरीब न रहे। और मैं नहीं सोचता कि उसमें कोई आध्यात्मिकता है। और मैं कोई सांत्वना नहीं देता। क्योंकि वहीं सांत्वनाएं उन्हें गरीब बनाए रखती है। इन्हीं सांत्वनाओं के का रण कार्ल मार्क्स ने घोषणा की कि सभी धर्म लोगों के लिए अफीम हैं। क्योंकि वे उन्हें सिर्फ सांत्वनाएं दिए चले जाते हैं; अगले जन्म में, बस कुछ वर्षों का सवाल है, फिर तुम ईश्वर के राज्य में प्रवेश करोगे, जहां धनवान लोग प्रवेश नहीं कर स कते।

यही सांत्वना, यही आशा इन्हें गरीब बनाए रखती है। मैं इस सांत्वना को, इस आ शा को चूर-चूर कर देना चाहता हूं। इसलिए गरीब मेरे विरोध है। तुम किसी की आशा को विनष्ट करो, और वह तुम्हारे खिलाफ हो जाता है। क्योंकि वह किसी तरह उस आशा के सहारे जी रहा था, वह सच थी या झूठ, यह सवाल नहीं था, किसी तरह वह उसको जिलाए रखती थी। और मैं उनकी सारी आशा को नष्ट ि कए दे रहा हूं, उनकी सारी सांत्वनाएं छीन रहा हूं। और यह निहायत जरूरी है। जब तक ये आशाएं नष्ट नहीं होती तब तक गरीब आदमी को टेकनोलाजी, विज्ञा न, उत्पादन के आधुनिक साधन, इनकी ओर ले आना असंभव है।

गरीबों की आशाएं नष्ट करने की दिशा में आप कौन से कदम उठा रहे हैं?

मैंने पूरी दुनिया में कम्यून खड़े किए हैं, जहां कोई गरीबी नहीं है, कोई बेकार नह ीं है, कोई गरीब नहीं है। कम्यून में पैसे का जरा भी उपयोग नहीं किया जाता। ह र व्यक्ति को उसकी जरूरत के अनुसार चीजें मिल जाती है। वहां अस्पताल हैं, स्‍ कूल हैं, खुद की बसे हैं, गाड़ियां और हवाई जहाज भी हैं।

इसी कारण अमेरिका मेरा दुश्मन बन गया। क्योंकि हमने पांच हजार लोगों का क म्यून बनाया था, जो इतना सुंदर और इतना समृद्ध था, कि वहां के राजनीतिक ए कदम समझ गए कि देर अबेर यह उनके लिए समस्या बनने वाली है। लोग दूर-दू र से देखने चले आते हैं और वे जाकर खबर फैलाते हैं कि यह बड़ी अदभुत बात

है। वहां कोई तानाशाही नहीं है, कोई लोकतंत्र नहीं है। कोई शासन नहीं है। लेकिन वहां के लोग इतनी मस्ती में और आनंद में जीते हैं। गरीबी का तो कोई नामों निशान नहीं है।

अमेरिका में भी तीन करोड़ भिखारी रास्तों पर हैं। लोग समझते हैं कि वह समृद्ध देश हैं, और तीन करोड़ लोग रोटी, कपड़ा, और मकान के बिना जिंदगी गुजारते हैं। और उसी अमेरिका में, ठीक तीन करोड़ लोग ज्यादा खाने के कारण मर रहे हैं। और वे ज्यादा भोजन करना छोड़ नहीं सकते क्योंकि उनके पास इतना धन है, वे करें क्या? तो बस खाते रहते हैं। और यह बड़ी बेवकूफी लगती है कि बिलकुल उतनी ही संख्या! तीन करोड़ लोग भूख से मर रहे हैं और तीन करोड़ लोग भोजन की अति से मर रहे हैं!

मेरे कम्यून में न कोई भूखा था, न कोई ज्यादा भोजन कर रहा था। हम अपने आप में आत्मनिर्भर थे। हमने मरुस्थल को मरूद्यान में बदल दिया था। हमने तालाब खुद बनाए थे, अपने पोखरे बनाए थे। हम हर तरह की सब्जियां, फल, अनाज, दूध के उत्पादन पैदा कर लेते थे, जो हमारे उपभोग के लिए पर्याप्त थे। हम पूरी तरह से आत्म निर्भर थे। हमने अपने लिए पहाड़ियों के बीच सुंदर-सुंदर घर बनाए थे। और शायद यह दुनिया में एकमात्र शहर था, जो केंद्रीय रूप से वातानुकूलित था।

और यह उनकी आंख की किरकरी बन गई। और मेरे ऐसे कम्यून सारी दुनिया में जर्मनी में छह हैं। अब जर्मन सरकार उबल रही है और भयभीत हो रही है। मैं आज तक जर्मनी नहीं गया हूं, लेकिन उन्होंने मेरे ऊपर कई मुकदमे चला रखे हैं ताकि मैं जर्मनी में प्रवेश न कर सकूं। स्विटजरलैंड में, जूरिख शहर में मेरा एक सुंदर कम्यून है, लेकिन वे मुझे जहां प्रवेश करने नहीं देते। इंगलैंस में अच्छा कम्यून है। जापान और आस्ट्रेलिया में भी इसी तरह के सुंदर कम्यून हैं।

कम्यून मेरा उत्तर है। हमें आदर्श निर्मित करने हैं। मैं आदर्शों की चर्चा करता रहता हूं। उसको अस्तित्वगत रूप से सिद्ध करने का यही उपाय है कि इस ढंग से लोग जी सकते हैं। और अगर एक शहर इस ढंग हो सकता है तो बाकी शहर क्यों नहीं हो सकते? पांच हजार लोगों के लिए हमारा एक ही रसोईघर था। और पांच हजार लोगों के साथ भोजन करना एक अपूर्व आनंद था। और यह बहुत ही किफायती भी था।

हमारे पास पांच सौ कारें थीं, लेकिन किसी को व्यक्तिगत रूप से कार की जरूरत महसूस नहीं हुई। क्योंकि हमारी सौ बसें थीं। जो निरंतर सड़कों पर घूमती रहती थीं। हर पांच मिनिट में बस मिल जाती थी, तो व्यक्तिगत कार की किसे फिकर? और फिर उसे पार्किंग करना और उनकी देखभाल करना एक मुसीबत थी। उससे अच्छा, बस पर चढ़ जाओ और कहीं भी चले जाओ। और हर पांच मिनिट में, किसी भी जगह से तुम्हें बस मिल सकती है।

तो यह मेरा उत्तर है। मैं जो कहता रहा हूं, उसे मेरे कम्यून साकार कर रहे हैं। और अब सवाल यह है कि राजनीतिक उन्हें जिंदा रहने देंगे या नष्ट कर देंगे—जैस ा कि उन्होंने अमेरिका का कम्यून नष्ट करने की कोशिश की।
वह अत्यंत सफल कम्यून रहा है, क्योंकि मैं वहां पर था। लोगों के लिए यह विश्व ास करना मुश्किल था कि ऐसी घटना घट सकती है। यह कम्यूनिज्म से बहुत ही उच्च श्रेणी की व्यवस्था थी। क्योंकि कम्यूनिज्म की जो एक बुराई है—तानाशाही; व ह वहां बिलकुल नहीं थी। वहां हर बात में पूरी स्वतंत्रता थी। कोई भी सम्मिलित हो सकता था, और कोई जब छोड़कर जाना चाहते तो जा सकता था।
तो अब यह लोग तय करेंगे। मुझे बारह दिन तक सताकर अमेरिका ने यह महसूस किया है कि उन्होंने बहुत कुछ खोया है। मैंने कुछ भी नहीं खोया। अमेरिकन लो गों को भी इस बात का पता चल गया कि मुझे क्यों सताया जा रहा है। यहां तक कि उनके जेलर और मार्शल, जो मुझसे सता रहे थे, बोले कि यह बिलकुल ही अमानवीय है। और इसका कुल कारण इतना है कि आपने जो स्थान निर्मित किया है, उससे वे जीतना के भाव से भर गए हैं। और वे उसको नष्ट करना चाहते हैं ताकि कोई तुलना न हो सके।
मैं यहां मेरा कम्यून बनाना नहीं चाहता, क्योंकि यदि सरकार नहीं चाहती, लोग नहीं चाहते, तो मैं अपने आपको इन लोगों पर थोपना नहीं चाहता। यदि यहां के लोग और सरकार मुझे निमंत्रित करें, मेरा सहयोग करें, तो ही मैं यहां कम्यून ब नाना शुरू कर सकता हूं। क्योंकि मैं यह उन्हीं के लिए कर रहा हूं। मुझे इसकी ज रूरत नहीं है, जरूरत उन्हें है। और उन्हें मुझे यह दिखाने का एक अवसर देना चा हिए कि यह किया जा सकता है। तुम इसे और बड़े पैमाने पर भी कर सकते हो।

अगर वे इस अवसर को खोते हैं, मुझे निमंत्रित नहीं करते तो उनकी निपट मूढ़ता होगी। मैं तो यहां नहीं आने वाला था। यहां तो मैं छुट्टियां बिताने आया हूं। क्योंि क मुझे अमेरिका छोड़ना ही था। कुछ दिनों के लिए मुझे कहीं तो जाना ही था। तब तक मेरे लोग विश्व में कहीं जगह खोज रहे हैं—ऐसी जगह, जहां आने का मु झे निमंत्रण मिले। और जल्दी ही हफते दो हफते में वे कोई जगह खोज लेंगे और मैं वहां चला जाऊंगा। मेरे यहां रहने का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता।
क्या यहां, भारत में आपका स्थायी रूप से रहने का इरादा रहा है?
नहीं। जब तक कि सरकार मुझे निमंत्रण नहीं करती, और लिखित आश्वासन नहीं देती, कि मुझे सब तरह का सहयोग मिलेगा, मेरा कोई इरादा नहीं है।
आपके लोग अपने आप कोई कम्यून खड़ा नहीं करेंगे?
पूना में ऐसा कम्यून है, और सरकार उन लोगों के पीछे पड़ी है। निरंतर किसी न किसी बात की तलाश में रहती है—कोई भी छोटी बात खोजकर उसे बड़ी कर ले ना। तो कम्यून के की तलाश में रहती है—कोई भी छोटी सी बात खोजकर उसे ब.

डी कर लेना। तो कम्यून के निर्माण में अपनी ऊर्जा लगाने की बजाए वे अदालत में जा रहे हैं, जेल के अंदर जा रहे हैं, बाहर जा रहे हैं।

यह देखकर मुझे नहीं लगता कि वह सरकार सचमुच चाहती है कि इस देश की प्र गति हो।

अगर कुछ लोग प्रयोग करने को तैयार हैं तो सरकार को उदारता दिखानी चाहिए। कानून की सीमा के बाहर मत जाओ, लेकिन उस सीमा के भीतर उनका सहयो ग तो करो। यदि सहयोग नहीं कर सकते तो कम से कम बाधा तो मत डालो।

लेकिन समस्या एक सी है, फिर वह अमेरिका हो या भारत, राजनीतिक का मन एक जैसा है। वह सिद्ध करना चाहता है कि सिर्फ वही कुछ कर सकता है। और हजारों सालों तक वह हारता रहा है। और वह जो आश्वासन देता रहा है, उसे उ सने कभी पूरे नहीं किए। और वह किसी ऐसे व्यक्ति को अवसर देना चाहता, जो राजनीतिक नहीं है।

मैं राजनैतिक नहीं हूं। मेरे लोग राजनीतिक नहीं है। हम चुनाव नहीं लड़ने हैं; औ र न वोट इत्यादि के चक्कर में पड़ना है। हमें सिर्फ एक आदर्श निर्मित करना है, जिसे लोग आकर देख सकते हैं। हम उस आदर्श को एक विश्वविद्यालय की तरह बना सकते हैं, जहां लोग आकर तीन या छह महीने का कोर्स कर सकते हैं, कि इसी नमूने के आधार पर उनके अपने गांव को कैसा बसाया जाए। और मैंने जिस तरह निर्माण किया है, वैसा अगर किसी और को करना हो, तो मैं अपने प्रशिक्षित लोग वहां भेज सकता हूं। बीस साल के भीतर तुम इस देश का पूरा नक्शा बदल सकते हो।

लेकिन राजनीतिक यह बात पसंद नहीं करेंगे। क्योंकि इसका मतलब हुआ, उनके हाथ से सत्ता गई।

क्या आप सोचते हैं कि यह राजनीतिकों की गलती है? क्या वे सचमुच गरीबी हट ाना नहीं चाहते?

नहीं, राजनीतिक सिर्फ बातचीत करते रहते हैं। लेकिन वस्तुतः गरीबी हटाने में उनका रस नहीं है क्योंकि उसी पर उनकी आजीवित का निर्भर है; ठीक वैसे ही, जैसे धार्मिक संस्थाएं भी गरीबी पर पलती हैं।

तुम किसी धनी आदमी का मत नहीं खरीद सकते। गरीब आदमी का मत खरीदना बड़ा आसान है: सिर्फ दो रुपए काफी हैं। यदि पूरा देश धनवान और शिक्षित हो जाए तो गधों के लिए मुख्यमंत्री और केंद्रीय मंत्री बनना असंभव हो जाएगा। जि स आदमी को कोई वैद्यकीय ज्ञान नहीं है, वह स्वास्थ्य मंत्री बनता है! जिस व्यक्ति को शिक्षा की कोई जानकारी नहीं है, उसे तो प्राथमिक स्कूल का शिक्षक भी नह ीं बनाना चाहिए, लेकिन वह शिक्षा मंत्री बन जाता है! यह तभी संभव हो सकता है, जब गरीब बनी रहे, अनपढ़ लोग बने रहें।

मनुष्य के हित की दृष्टि से देखें, तो राजनीतिक सबसे बदतर व्यक्ति हैं; क्योंकि म ानसिक रूप से वह हीनता ही ग्रंथि से ग्रसित है, वे सिद्धांत करना चाहते हैं कि वे

महापुरुष हैं—महान सिकंदर जो व्यक्ति हीनता की ग्रंथि से ग्रसित नहीं है, उसे अ पने को महान सिद्ध करने की कोई जरूरत नहीं महसूस होती। वह सरल होता है और विनम्र होता है। वह जो है, वह है; उसे सिद्ध करने का कोई सवाल ही नहीं है।

सुशिक्षित तथा मानसिक रूप से संतुलित दुनिया में राजनीति के लिए स्थान नहीं होगा क्योंकि कौन राजनीतिक बनना चाहेगा? किसलिए?

तो ये राजनीतिक गरीबी हटाने की बात करते रहते हैं, क्योंकि उससे उन्हें अधिक मत मिलने में मदद मिलती है। और अगर वे वे कुछ उपाय करते भी हैं, जैसे, अब वे कुछ उपाय कर रहे हैं; नयी टेक्नोलाजी ला रहे हैं। लेकिन उससे सिर्फ एक अत्यधिक धनवान वर्ग पैदा होगा, गरीबी नहीं हटेगी। और वह वर्ग अगले चुनाव में पैसा देकर उनकी मदद करेगा; क्योंकि उन्होंने टेक्नोलाजी के द्वारा इनकी मदद की है। और गरीब गरीब ही रहेगा; शायद और भी अधिक गरीब हो जाएगा।

मेरा प्रयास बिलकुल ही अराजनीतिक है। यही मुश्किल है। वे किसी अराजनीतिक व्यक्ति को यह कर दिखाने की इजाजत नहीं दे सकते; कि तुम जिन बातों की च र्चा करते हो, वे वास्तव में की जा सकती हैं। मेरे कम्यून में एक भी राजनीतिक दल नहीं था। राजनीति का कोई सवाल नहीं था। हर व्यक्ति बुद्धिमान है और स्व तंत्र रूप से सोच सकता है। वह किसी राजनीतिक विचारधारा के पीछे क्यों चले, जिनमें कोई बातों से वह सहमत न भी हो, लेकिन चूंकि वह उस दल का सदस्य है, उसके अपनी अंतरात्मा की आवाज के खिलाफ उसे हामी भरनी पड़ती है। मुझे नहीं लगता कि राजनीतिक दलों की कोई जरूरत है। वे लोगों की बुद्धि नष्ट कर देते हैं। वे लोगों की विचार क्षमता नष्ट कर देते हैं।

मेरे कम्यून में कोई राजनीतिक दल नहीं था। राजनीति का कोई सवाल ही पदा न हीं होता था। लो अपना भोजन, अपने कपड़े, अपना जीवन, अपना प्रेम, अपने बच चे, इन सबकी फिकर करते थे। रहने को एक अच्छा घर हो, शांतिपूर्ण, मौन जिंद गी हो। कुछ आध्यात्मिक विकास और कुछ निस्तरंग शांति भीतर हो। इसमें राजन ीति आती है? मैं नहीं सोचता कि वास्तव में किसी को राजनीति में रस आता हो गा।

लेकिन लोकतंत्र में राजनीतिक दल की जरूरत होती है। राजनीतिक दल के बिना आपका काम नहीं चल सकता।

अगर राजनीतिक दल के बिना तुम्हारा काम नहीं चल सकता तो लोकतंत्र के बिन ा ही काम चलाना होगा।

मेरा अपना खयाल लोकतंत्र से अधिक ऊंचा है। लोकतंत्र तानाशाही की तुलना में अच्छा लगता होगा। लेकिन मेरा खयाल है मेरिटोक्रेसी का—गुणतंत्र, जो कि लोकतं त्र से अधिक बेहतर है। क्योंकि लोकतंत्र जनता के तल पर उतरे बिना नहीं रह स कता। वस्तुतः वह भीड़ तंत्र, मोबोक्रेसी बन जाता है। उसे लोकतंत्र कहना उचित नहीं है। और भीड़ का सोचने का तल कोई खास ऊंचा नहीं होता। और राजनीति

क को भीड़ के पीछे चलना पड़ता है। ऊपर से तो ऐसा लगता है कि नेता आगे है और जनता उसके पीछे चल रही है। ऊपर से तो ऐसा लगता है कि नेता आगे है और जनता उसके पीछे चल रही है। लेकिन वस्तुतः नेता पीछे होता है। वह हमेशा देखता रहता है कि भीड़ कहां जा रही है, और वह स्वयं को आगे रखने के लिए आगे छलांग लगा देता है—जनता को यह दिखाने के लिए, कि मैं तुम्हारा नेता हूं।

मैं गुणतंत्र में विश्वास करता हूं। फिर किसी दल की कोई जरूरत नहीं है।

उदाहरण के लिए, जब चुनाव हो तो तुम सीधे स्वास्थ्य मंत्री चुन सकते हो। देश के सभी चिकित्सक चुनाव लड़ें, उनमें सर्वश्रेष्ठ चिकित्सक को चुना जाए, और हर व्यक्ति को चुनने का हक हो। उसमें राजनीति का कोई सवाल नहीं है।

तुम्हें शिक्षा मंत्री की जरूरत है—सब उप कुलपतियों को चुनाव लड़ने दो, और संसार का सर्वश्रेष्ठ शिक्षा मंत्री चुनो। इस सब उपद्रव की जरूरत क्या है?

प्रादेशिक सरकारों की कोई जरूरत नहीं है। इतनी सारी लोक सभाओं और विधान सभाओं की कोई जरूरत नहीं है। सबसे काबिल लोगों को चुनो और तुम इस देश को बड़ी जल्दी बदल दोगे।

तो मेरा सोचना बिलकुल भिन्न है। मेरा सोचा यह है कि योग्य पद योग्य व्यक्ति के हाथ में दो। और यह काम सारे व्यक्ति मिलकर कर सकते हैं। इसके लिए किसी पार्टी की कोई जरूरत नहीं है। क्योंकि पार्टी हमेशा गलत लोगों के हाथों में ताकत दे सकती है। वस्तुतः वह गलत लोगों के हाथों में ताकत देना चाहेगी ही; क्योंकि पार्टी अपने नेताओं पर निमंत्रण रखना चाहती है; इसीलिए उसे कमजोर नेताओं की जरूरत होती है।

जब जवाहरलाल की मृत्यु हुई, तो किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि लाल बहादुर शास्त्री भारत के प्रधान मंत्री होंगे। लेकिन वे पार्टी में सबसे कमजोर व्यक्ति थे। और यही उनकी पात्रता था, जिसके लिए वे चुने गए थे।

जब वे मर गए, तब फिर इंदिरा को चुना गया। उस समय, वह इंदिरा नहीं थी, जो उसकी हत्या के समय थी। तब वह सिर्फ जवाहरलाल की देखभाल करती थी। वह राजनीतिज्ञ नहीं थी। वह एक साधारण महिला थी। राजनीतिकों ने सोचा कि यह ठीक रहेगा।

दोनों मौकों पर मोरारजी भी ए प्रतिद्वंद्वी थे। और दोनों वक्त कांग्रेस ने मोरारजी को इनकार किया; क्योंकि वे जानते थे, मोरारजी अड़ियल व्यक्ति हैं; और एक बार उनके हाथ में ताकत आ गई तो किसी की न सुनेंगे।

राजनीतिक दलों का काम करने का ढंग कुछ तरह का होता है कि सबसे कमजोर व्यक्ति सबसे ऊंचा उठता है। और शेष लोग जैसे देश का भाग्य नहीं बदल सकते। इतने विशाल देश का प्रतिभाशाली व्यक्तियों की जरूरत होती है।

तो मेरा सुझाव है : मेरिटोक्रेसी, गुणतंत्र। और क्या गलत है? हमारे पास इतने ब.डे-बड़े चिकित्सक हैं, बड़े शिक्षा शास्त्री हैं, बड़े कृषि पंडित हैं; जिन्होंने अपनी योग

यता सिद्ध कर दिखायी है। अब उन्हें ऊपर उठने दो और उन्होंने लड़ने दो—अगर वे लड़ना चाहें तो और पूरे देश को चुनने दो। और व्यक्ति स्वतंत्र रूप से चुनेगा। उसकी कोई राजनीतिक गुटबंदी नहीं होगी। और तुम्हारे पास विश्व में सबसे अच्छ ी सरकार होगी। और ये लोग संस्कृति को जानते हैं, ये लोग शिक्षा को समझते हैं और ये लोग भद्रता और शिष्टाचार जानते हैं।

जिन राजनीति को को तुम चुनते हो...मुझे बड़ी हैरानी हुई। उस समय मैं विद्यार्थी था। द्वारका, प्रसाद मिश्र, जो मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री थे, नेहरू ऊपर खफा हो गए थे, इसलिए उनको निष्कासित किया गया था। लेकिन उनके हाथ में कुछ तो देना था, नहीं तो वे उपद्रव खड़ा करते। क्योंकि वे ताकतवर आदमी थे। तो उन्हें सागर विश्वविद्यालय का उपकुलपति बनाया गया। मुझे हैरानी हुई देखकर, कि द्वा रका प्रसाद मिश्र एक उपकुलपति के खिलाफ चुनाव जीत गए, तो कि विश्व ख्याि त के इतिहासविद थे, जो आक्सफर्ड विश्वविद्यालय में इतिहास के प्रमुख थे। उन्हें तीन सौ में से दस वोट भी नहीं मिले; और द्वारका प्रसाद, जिनका शिक्षा से कोई संबंध नहीं था, उनको 290 वोट मिले।

और उसके बाद प्रसाद को मैंने सागर के सब गुडों के साथ मिलते जुलते देखा। उ नके मित्र गुंडे थे, अध्यापक नहीं। मुझे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ, कि य ह आदमी विश्वविद्यालय के लिए क्या कर सकता है? एक भी प्राध्यापक उसके पा स नहीं जाता है। उनकी प्राध्यापकों के साथ कोई मित्रता नहीं है। और गुंडे, उनसे बड़े हीन दर्जे के होकर भी उनके मित्र है। क्योंकि ये ही लोग हैं जो उनके वोट खींचकर लाएंगे; जो हमेशा उनके लिए वोट खरीदते रहे हैं।

बड़ा विचित्र दृश्य था। गुंडे उपकुलपति के कक्ष में आते, सिगरेट पीते, अंट-शंट ब कवास करते, अश्लील भाषा में भद्दे मजाक करते। मैंने द्वारका प्रसाद मिश्र से कहा , यह पाप है। आप को अपना पद त्याग करना चाहिए।

वे पान चबाकर वहीं उपकुलपति के पक्ष में पीक थूक देते। कड़ा कुरूप लगता था सब वे अश्लील बातचीत करते और उपकुलपति के कंधों पर हाथ रखते। और वे लोग कमरे के बाहर इस तरह आते, जैसे घनिष्ठ मित्र हों।

राजनीति यदि दलों में बंटकर रहे,तो समाज के निम्नतम वर्ग को संतुष्ट करने ही वाली है। और तुम अगर निम्नतम वर्ग को संतुष्ट करने में लगे हो, तो फिर समा ज को जीवन के उच्चतम तल पर कैसे ले जाओगे?

तो मैं लोकतंत्र के पक्ष में नहीं हूं। मैं गुणतंत्र के पक्ष में हूं। और गुणतंत्र राजनीति क दलों के बिना हो सकता है।

भारतीय पत्रकारिता के बारे में आपकी क्या राय है? क्या वह अमेरिका के प्रेम से भिन्न हैं? बहुत भिन्न है। भारतीय प्रेस अभी भी सनसनीखेज समाचारों में उत्सु क है। वह लोगों की ओर देखता है कि उन्हें क्या चाहिए—और उनकी मांग पूरी करता है। अभी यह जनता को शिक्षित करने में उत्सुक नहीं है। प्रेस निश्चित रूप से भिन्न है। उसकी उत्सुकता लोगों को शिक्षित करने में है। वह इस बात की फि

कर नहीं करता कि लोग उसे पसंद करते हैं या नहीं। जो भी सत्य है, वह ईमानद ारी से प्रस्तुत किया जाता है।

मेरे अपने मामले में पूरा अमेरिकन प्रेस सरकार के खिलाफ था। दूरदर्शन, आकाश वाणी, अखबार—सब सरकार के बहुत खिलाफ थे। सच तो यह है कि अमेरिकन प्र सारण माध्यम न होता, तो वे लोग मुझे मार डालते। वे मुझे जहां भी रखते, उन सब कारागृहों को, सब संवादता घेर लेते। वे लोग पूरी कोशिश कर रहे थे, कि ि कसी को पता न चले कि मैं कहां हूं।

उन्होंने मुझे डेविड वाशिंगटन, इस झूठे नाम से हस्ताक्षर करने पर मजबूर किया। उनके कागजातों में मेरा नाम नहीं था, डेविड वाशिंगटन का नाम था। और जो मु झे हस्ताक्षर करने के लिए कह रहा था, उस अमेरिकन मार्शल से मैंने कहा, तुम तो कानून का पालन करने वाले अधिकारी कहलाते हो, तुम्हारे कोट पर लिखा है, न्याय विभाग, और यह किस तरह का न्याय है कि मुझे किसी और के नाम के नीचे दस्तखत करने पड़ते हैं? मैं तो इसे लिखने वाला नहीं हूं, तुम लिखो। तो उ सने वह नाम लिखा और नीचे मैंने अपने दस्तखत किए। मेरे अक्षर उसकी समझ में नहीं आए क्योंकि मैंने हिंदी में लिखा था। उसने बड़े गौर से देखा, लेकिन वह कुछ समझ नहीं सका कि मेरे हस्ताक्षर क्या थे।

लेकिन मैंने उससे साफ कह दिया कि इससे तुम मुश्किल में पड़ने वाले हो। कल सु बह ही तुम टी. वी. पर देखोगे, रेडियो पर सुनोगे और अखबारों में पढ़ोगे कि मैं यहां हूं। तुम प्रेस को इस बात से बेखबर रखना चाहते हो कि मैं यहां हूं।

जब वे मुझे हवाई अड्डे से जेल ले जा रहे थे, तब मेरे साथ एक लड़की थी। वह दूसरे दिन रिहा की जाने वाली था। तो मैंने उससे कहा कि यहां से बाहर निकलते ही तुम पहला काम यह करो कि प्रेस को खबर कर दो कि मुझे इस जेल में रख ा गया है। उससे अपना काम बड़ी कुशलता से किया। उसने प्रसारण माध्यमों को सूचित कर दिया, और अगले दिन सुबह ही सुबह, सब जगह यह खबर प्रसारित ह ो चुकी थी।

वह मार्शल बड़ा हैरान हुआ। उसने कहा, यह सचमुच चमत्कार है, आपने कहा था कि कल यह बात समाचार बनकर फैल जाएगी। और यहां तक कि डेविड वांशिग टन भी उसमें आ गया, कि मुझसे जबरदस्ती वह नाम लिखवाया गया है, जो कि मेरा नहीं है।

उन्हें तत्क्षण जेल बदलनी पड़ा, क्योंकि यह तो मुसीबत खड़ी हो गई। संवाददाता आने लगेंगे और पूछने लगेंगे कि डेविड वाशिंगटन के कागजात कहां है? उन्होंने ब. डी सुबह 4 बजे, जल्दी से मुझे जगाया और कहा कि वे मुझे हवाई अड्डे पर ले जा रहे हैं। और वास्तव में, वे मुझे शहर से 16 किलोमीटर दूरी पर स्थित एक जेल में ले गए। लेकिन प्रेस के लोग निरंतर उस जेल के आसपास मंडरा रहे थे। क्योंि क उन्हें पता था कि जैसे ही यह समाचार बाहर प्रसारित होगा, वे तुरंत मेरी जेल

बदल देंगे। तो उनके हेलिकाप्टर तैयार खड़े थे, चारों तरफ कारें खड़ी थी, कैमरा लगे हुए थे—ताकि वे मुझे कहीं छिपा न सकें। दूसरी जेल तक वे मेरे पीछे आए। वे लोग प्रेस से ऐसे डरने लगे थे कि उस मार्शल ने मुझसे कहा—वह मेरा दोस्त ब न रहा था—कि मैंने कभी ऐसी बात किसी से कही नहीं है। ऊपर से मुझ पर दबा व यह था कि जब तक संभव हो, तब तक मैं आपको एक जेल से दूसरी जेल घुम ाता रहूं। लेकिन लगता है ये प्रसारण माध्यम के लोग ऐसा नहीं होने देंगे। इसलिए आज मैं आपको ओरेगान वापस भेजता हूं ताकि यह मुकदमा खत्म हो जाए।

समय पूरा हो रहा है। मेरा आखिरी प्रश्न है, इन दिनों आप अपना समय कैसे बि ताते हैं? और आपकी भविष्यकालीन योजनाएं क्या है?

नहीं, मैं भविष्य के संबंध में कभी नहीं सोचता हूं। और जो सदा करता आया हूं, वही अब कर रहा हूं। अपने मौन में डूबा रहता हूं। करने जैसा मेरे पास कुछ नहीं है। मैं जैसा हूं वैसा ही आनंदित हूं। बैठा हूं, लेटा हूं या सो रहा हूं—मेरा आनंद खोता नहीं।

क्या इस सुंदर घाटी में रहने से आपको सुकून और शांति मिल रही है?

किसी सुंदरतम घाटी से भी अधिक शांति मेरे भीतर है। मैं ही इस घाटी को अपन ी शांति दे रहा हूं।

24 नवंबर, 1985, प्रातः कुल्लू मनाली

एक विश्व व्यापी ध्यान आंदोलन

प्यारे भगवान, भारत में आपके लाखों प्रेम इस देश में आपके आगमन से आनंदित हो रहे हैं। कोई पंद्रह वर्ष पहले आपने कहा था कि आपके धर्म की जड़ें भारत में आबुद्ध रहेंगी, इसकी शाखाएं इंग्लैंड तक फैलेंगी और इसके फूल खिलेंगे अमेरिका में। आज की घटनाएं। देखते हुए, कृपया, क्या आप इस विषय में कुछ कहना चा हेंगे?

वह बात अभी भी वैसी ही है। जो कुछ अमेरिका की सरकार ने किया है, उसके ि लए उसे पछताना होगा। अमेरिका के लोगों ने मुझे बहुत ज्यादा प्रेम दिया। अमेरि का देश या कि अमेरिका के लोग मेरे विरोध में नहीं रहे। वह तो पंडित पुरोहितों ने ऐसा किया, विशेष कर ईसाई और यहूदी, और उनसे भी ज्यादा राजनेताओं ने । लेकिन ये तीनों देर अबेर समाप्त हो ही जाएंगे। उनका समय खत्म हो गया है। ऐसा समय आने को है जब सामान्य लोगों का स्थान सब से ऊपर होगा, जहां उन् हें सदा होना चाहिए था। राजनेता और पंडित पुरोहित स्वयं को जनता का सेवक कहते हैं, लेकिन कहने भर को ही।

वह समय आ गया है कि उन्हें आम जनता का सेवक ही रहना होगा और उससे ज यादा कुछ भी नहीं। इसलिए इस संबंध में मेरा वक्तव्य नहीं बदलेगा। यह ठीक वै सा ही रहेगा। और जो कुछ उन्होंने मेरे साथ किया, उन्हें पता नहीं कि इससे उन्ह ोंने अमेरिका भर में मेरे लिए सहानुभूति की बड़ी तरंग बना दी है। जिन लोगों ने

मेरे संबंध में कुछ सुना न था, वे मुझे पढ़ने सुनने लगे हैं। और हैरान हैं कि आखि र क्यों सताया गया ऐसे व्यक्ति को?

इसमें थोड़ा समय लगेगा, लेकिन अमेरिका ने जो अनाचार मेरे प्रति और मेरे धर्म दर्शन के प्रति किया है, वह सारे परमाणु अस्त्रों से कहीं ज्यादा शक्तिशाली सिद्ध होगा। फूल खिलेंगे अमेरिका में। मैंने इसे देखा है लोगों की आंखों में। जहां मुझे ल गातार इधर से उधर ठहराया जा रहा था उन पांच छह जेलों तक में भी मैंने यह ी जाना कि मुझे देखकर सारे कैदी प्रसन्न होते, उन सबने मुझे खूब जोर सके कहा —विक्टरी, जीत हो। बिना किसी अपवाद के, उन सभी ने जीत का संकेत—वी अक्ष र दो उंगलियों से बनाते हुए मेरी ओर देख प्रसन्नता से हाथ हिलाया। क्योंकि वे व ीडियो, टेलीविजन आदि देखते थे, वे नहीं समझ सके कि अमेरिका ऐसे व्यक्ति को क्यों सता सकता है जिसका राजनीति से कोई लेना देना नहीं हैं; जिसने केवल ए क मरूद्यान निर्मित किया है, जिसे मिटाने की वे कोशिशें कर रहे हैं। जब कभी मैं कोई जेल छोड़ता, तो कैदी यही कहते, भगवान, हमें मत भूलना, जब हम बाहर आएंगे तो कृपया हमें अपने कम्यून में शामिल कर लेना।

तो अमेरिकन सरकार की मूर्खता के कारण लोग बड़ी संख्या में, एक साथ मुझमें उत्सुक हो गए हैं।

तो वक्तव्य तो वही रहेगा।

भगवान, आपने इसी संबंध में कहा था; जब सोवियत रूस में लेखक और बौद्धिक व्यक्तियों को कैद किया जाता है पश्चिम का सारा बौद्धिक वर्ग, विशेषकर अमेरि का का, बहुत शोर पुकार करता है। लेकिन जब आपके साथ ऐसा हुआ, आप चार सौ पुस्तकों के लेखक, जिनकी रचनाओं का संसार की करीब-करीब सारी बड़ी भ ाषाओं में अनुवाद हो चुका है, बिना गिरफ्तारी के वारंट के आपको जंजीरों और बेड़ियों में जकड़ कर ले जाया गया; तो एक भी बौद्धिक व्यक्ति ने, अमेरिका के मीडिया के सामने, विरोध में कोई आवाज नहीं उठायी। स्थिति ऐसी क्यों है?

इसका कारण है। उस तथाकथित बौद्धिक वर्ग में वस्तुतः बौद्धिक व्यक्ति नहीं है। उन्होंने शायद कुछ किताबें लिख ली होंगी, लेकिन वे किताबें, दूसरी किताबों से उ धार ली गयी बातों से भरी हैं। उन्होंने शायद चित्रकारी की होगी, कुछ चित्र बना लिए होंगे, लेकिन वे चित्र बस उधार के ही है।

वह तथाकथित बौद्धिक वर्ग बौद्धिक नहीं है, और मेरा उससे कोई संबंध नहीं जुड़ ता।

मैं अपनी कोटि स्वयं हूं। मैंने किसी से कुछ उधार नहीं लिया।

वस्तुतः बौद्धिक कहीं भीतर मेरे विरोधी ही हैं, क्योंकि वे देख सकते हैं अपनी ही न भाव। इसलिए जब मुझे पीड़ित किया गया, वे चुप रहे। शायद वे खुश ही होंगे। यही बात उनकी बुद्धि और हृदय की दरिद्रता को दर्शाती है।

वे सब अहंकारी लोग हैं जो किसी पुरस्कार या कि नोबल पुरस्कार को पाने के लि ए कार्यरत हैं।

मेरा कार्य बिलकुल अलग है। जो कुछ भी मैंने कहा है प्रेमपूर्वक कहा है, वह मेरे आनंद से आया है।उसे कहने में ही मेरा पुरस्कार निहित था। वह उसके भीतर ही समाया था। मुझे कोई नोबल पुरस्कार नहीं चाहिए। मैं उसे स्वीकार न करूंगा। वह तो अपमानित होने जैसा होगा—क्योंकि मुझे पहले से ही मिल चुका है अपना पुरस्कार।

वे लोग बौनी मानसिकता के हैं। आम जनता की तुलना में बौद्धिक जान पड़ते हैं। लेकिन वे ज्ञान को उपलब्ध लोग नहीं हैं।

जब जीसस को सूली लगी, तो विरोध में एक भी बौद्धिक ने व्यक्ति आवाज नहीं उठायी। और जूदिया, जीसस का वह देश भरा था बड़े बड़े बौद्धिकों से। और रबाई बड़े प्रसिद्ध हैं अपनी विद्धत्ता के लिए। जहां तक रबाइयों की विद्धता का संबंध है, उससे किसी अन्य धर्म की तुलना नहीं हो सकती। लेकिन फिर भी एक भी रबाई में इतना साहस न था जो यह कह सके कि यह बात सही नहीं है। वस्तुतः वे सब प्रसन्न थे। सच तो यह है कि वे चाहते ही थे कि जीसस को सूली लगे, क्योंकि वे उनकी श्रेणी के नहीं थे।

मैं यह बात साफ कर देना चाहता हूं कि यह श्रेणी का प्रश्न है। जीसस अपने स्वयं के बल पर बोले, जिस भांति मैं बोलता हूं अपने आत्माधिकार से। जो मैं कहता हूं वह वेदों या बाइबल, या कि कुरान पर आधारित नहीं है। जो मैं कहता हूं, अगर कुरान भी वही कहे, तो वह अच्छा है कुरान के लिए। यदि वह बात उसमें नहीं है, तो कुरान को जाने दो भाड़ में।

अपने लिए मैं किसी का आधार नहीं ले रहा हूं। जिन व्यक्तियों के पास अपना जीवन अनुभव नहीं होता उन्हें कोई आधार चाहिए।

और यह कोई नयी बात नहीं। ऐसा ही सदा से होता आया है।

गौतम बुद्ध को मारने के प्रयत्न किए गए। देश के बौद्धिक वर्ग का कोई भी व्यक्ति इसके विरोध में खड़ा नहीं हुआ।

महावीर को सताया गया, पीड़ित किया गया लेकिन कोई भी बौद्धिक इसके विरोध में नहीं बोला।

मंसूर को मार डाला गया। सुकराते को जहर दे दिया गया, लेकिन किसी भी बौद्धिक ने कोई आवाज न उठायी। और एथेन्स भरा पड़ा था बौद्धिक व्यक्तियों से! विश्व में अस्तित्व रखने वाला वह सर्वाधिक बौद्धिक नगर रहा है, लेकिन सुकरात को सहयोग देने वाला एक भी बौद्धिक सामने नहीं आया। तो कारण स्पष्ट है, इसलिए कि वे तमाम बौद्धिक नपुंसक थे। उनके पास अपना कोई प्रामाणिक अनुभव नहीं था।

और सुकरात की उपस्थिति उनके लिए एक गहरी हीन भावना बना रही थी। यही एकमात्र व्यक्ति था जो वही कह रहा था जिसे वह स्वयं जानता था; और जिसके पास इतना आत्मबल था कि न जानने की बात भी कह सके, वह इतना साहसी थी कि कह सके, मैं नहीं जानता।

तथाकथित बौद्धिक व्यक्तियों की अपेक्षा यह व्यक्ति कहीं ज्यादा ऊंचाइयों पर था। वे सब उसे हटा देना चाहते थे। उसका होना उन्हें कहीं चोट-पीड़ा देता था। सुकरतो के सामने वे कुछ भी न थे। सुकरात न हो तो वे बड़े दार्शनिक हो जाते, महान विचारक लगने लगते।

वही स्थिति मेरी है। विश्व में हजारों ने मेरी गिरफ्तारी का कड़ा विरोध किया। हजारों टेलीग्राम्ज फोन्स, टैलेक्सेस। जिस जेल में भी मैं होता, सभी जेलर बिलकुल थक जाते। वे कहते, हम तो सोचते थे हम आपको सता रहे हैं। किंतु यह आप हमें सता रहे हैं। सारा दिन फोन, चौबीसों घंटे सारी दुनिया से टेलीग्राम्ज, टेलीकोन्ज, टैलेक्सेस। और न्यूज मीडिया भी चौबीसों घंटे लगातार जेल के आसपास ही जमा रहता--हजारों कैमरे, टेलीविजन, समाचार पत्र। उन्होंने कहा कि, हम आपके कारण इतने खुले रूप से सामने आ रहे हैं, और हर आदमी हमारे विरुद्ध हो रहा है कि हम एक निर्दोष व्यक्ति को सता रहे हैं।

जो निर्दोष चित्त हैं वे विरोध में आवाज उठाते हैं, लेकिन बौद्धिक बिलकुल ऐसा नहीं करते।

और मुझे इसमें कुछ अजब भी नहीं लगता क्योंकि केवल निर्दोष ही समझते हैं मुझे, बौद्धिक नहीं। वे कूड़े कचरे से भरे हैं। यह अच्छा ही है कि उन्होंने अपना विरोध नहीं दिखाया। मैं किसी भी ढंग से उनके समूह में सहभागी नहीं होना चाहता।

भगवान, अमेरिका के और अन्य स्थानों के विभिन्न ढंग के कम्यूनों का औसत जीवन तीन या पांच वर्ष रहा है; और अक्सर वे बाहर शक्तियों के दबाववश या फिर भीतरी संघर्षों और षड्यंत्रों के कारण बिखर गए।

वही दुर्घटना हमारे रजनीशपुरम के अनूठे प्रयोग के साथ घट रही है। ऐसा क्यों है, इससे बचने के लिए क्या किया जाना चाहिए?

कारण करीब-करीब स्वाभाविक है। पहली तो बात उन्हें मेरा कुछ पता न था। उन्होंने उस जमीन को खरीदने की इजाजत दे दी। उन्होंने वहां नगर भी बनाने की इजाजत दे दी। फिर उन्होंने कानूनी रूप से से उस नगर को मान्यता भी प्रदान कर दी। दो वर्ष तक चीजें बिलकुल ठीक चलती रहीं। राज्य और संघ दोनों ही अनुदान में सहयोग देते रहे।

दो कारण तो मुख्य रहे। पहला, उन्हें कुछ पता न था मेरे बारे में। दूसरा, मैं मौन में था, और एकांत में था। तो मैं बोल भी न रहा था, वरना तो न्यूज मीडिया द्वारा उन तक पहुंच गया होता। और राजनेता किताबें नहीं पढ़ते। उनके पास इसके लिए समय ही नहीं होता। वे केवल अखबार की कतरने पढ़कर कुछ जान पाते हैं, वह भी उनके सचिव जो ठीक समझते हैं वही उनको देते हैं।

इसलिए मेरे मौन रहने ने मदद दी, मेरे एकांत में रहने ने मदद दी, फिर भी धीरे-धीरे उन्हें पता चलता गया, पहले तो इसके प्रति सचेत हुए कि मैं ईसाई नहीं हूं। जो लोग मेरे आसपास हैं उनमें अधिकांश ईसाई हैं लेकिन उन्होंने ईसाइयत की अवधारणा गिरा दी है।

सबसे पहले ईसाई मिशनरियों, बिशपों, कार्डिनलों और ऐसे ही लोगों ने विरोध कर ना शुरू किया कि मैं ईसाइयों को चुपचाप अपने धर्म में दीक्षित कर रहा हूं। और अमेरिका में ईसाई धर्म का बड़ा नियंत्रण है, क्योंकि सारे वोट ईसाइयों के हैं, बहु त थोड़े वोट हैं यहूदियों के।

यहूदी भी मेरे विरुद्ध थे। और जब साढ़े तीन वर्ष के बाद मैंने बोलना शुरू किया तो राजनेता भयभीत हो गए। क्योंकि मैं केवल वही कुछ कहने का आदी हूं जो मे रे लिए बिलकुल सच होता है। और मैं राजी हूं उसके लिए संघर्ष करने को, तर्क करने को। जब तक मेरे तर्क का खंडन न हो जाए मैं उस पर जोर देने जारी रखूं गा। और यह एक आश्चर्य घटना है कि मेरे सारे जीवन में किसी ने मेरे विरुद्ध क भी कोई तर्क नहीं दिया।

इसलिए साढ़े तीन वर्ष बाद, जब मैंने बोलना शुरू किया तो बहुत तनाव आ बना। तब सरकार भयभीत हो गयी कि यह कोई मामूली सा कम्यून नहीं है। इसका प्र भाव सारे विश्व पर पड़ने वाला है। तो इससे पहले कि यह बहुत ज्यादा मजबूती पकड़ ले इसे नष्ट करना ही बेहतर होगा।

और यह हास्यास्पद बात है कि ऐसा देश जो विश्व में सबसे बड़ा शक्तिशाली देश माना जाता है वह एक अकेले आदमी और उसके पांच हजार मित्रों से भयभीत हो गया। लेकिन इस भय में अर्थ छिपा था।

हमने गैर तानाशाही का, सरकार विहीन कम्यूनिज्म संचालित किया था। कम्यून में नोटों का या पैसों का कोई उपयोग न था।

प्रत्येक व्यक्ति को भरपेट भोजन मिलता था, अच्छे कपड़े और अच्छे घर मिलते थे । और हमने हर चीज अपने हाथों से बनायी थी। हमने बाहर से किसी काम करने वाले को नहीं नियुक्त किया।

केंद्रीय रूप से वातानुकूलित घरों में पांच हजार मित्र रहते थे। जिनका निर्माण उन्ह ोंने स्वयं बड़े सुंदर ढंग से किया था। उन्होंने रेगिस्तान में बांध बना लिया जो कि एक चमत्कार ही था। वे उत्पादित करते अपना भोजन, अपनी सब्जियां, अपने फ ल, अपने दूध उत्पादन। कोई भिखारी न था। कोई गरीब था और न कोई अमीर था।

यह अमेरिका के राजनेता के लिए एक खतरा बन गया, कि ठीक अमेरिका के भ ीतर ही मैं कम्यूनिज्म ले आया, और उससे कहीं बेहतर ढंग का जैसा कि सोवियत रूस या कि किसी और जगह है। वहां तो इसे शक्ति पूर्वक लाया गया है, यहां य ह प्रेम आया है।

इसलिए यह स्वभाविक ही था कि उन्होंने उसे नष्ट करने की कोशिश की।

लेकिन अस्तित्व अपना काम बड़े रहस्यपूर्ण ढंग से करता है। उसे नष्ट करके उन्हों ने एक बात तो प्रमाणित कर दी कि विश्व की सब परमाणु शक्ति, पांच हजार व यक्तियों के एक छोटे से कम्यून को बर्दाश्त न कर सकी! और बर्दाश्त न कर पाने का कुल कारण था क्योंकि वहां कोई भिखारी न था, कोई गरीब न था, कोई अ

मीर न था, कोई वर्ग भेद न था। जल्दी ही अमेरिका और सारा विश्व जान जाएग
ा कि मेरे साथ ऐसा व्यवस्था क्यों किया गया।

मैंने मरुस्थल को मरूद्यान में बदल दिया था। सब से समृद्ध देश अमेरिका तक में भी तीन करोड़ सड़कों पर रहने वाले व्यक्ति हैं जो बेघर हैं, जिनके पास कल का भोजन भी नहीं है। और हमने उन्हें आमंत्रित किया कि जो बेघर व्यक्ति आना च
ाहता है आए और हमारे साथ रहे। हमारे द्वार खुले हैं। दो सौ व्यक्ति हमारे साथ रहने लगे। और वे इतने खुश थे जितने कि इससे पहले कभी न थे। उनके पास र
हने को मकान थे, उन्हें भरपूर भोजन मिलता था, उनके पास वस्त्र थे, चिकित्सीय सुविधाएं थीं, और मानव होने का समान, गरिमा थी।

तो इसका हस्ती मिटा देना इतना आसान नहीं है। इसके लिए उन्हें पछताना पड़ेगा
। जो कुछ उन्होंने किया है, उसके लिए उन्हें भुगतना होगा। उनके व्यवहार से बहु
त सी बातें स्पष्ट हुई हैं।

पहली बात, सोवियत यूनियन गलत विचार से प्रभावित रहा। वहां सोवियत यूनिय
न में वे हमारे संन्यासियों को सता रहे हैं यह सोचकर कर कि वे अमेरिका के एजें
ट्स हैं। अब यह भ्रांति गिराई जा सकती है। जो संन्यासी सोवियत रूस में हैं उनके प्रति अब सोवियत यूनियन को और अधिक सम्मानपूर्वक होना चाहिए। और अगर उसमें साहस है तो उसे हमें आमंत्रण देना चाहिए। सोचियत रूस में कम्यून बनाने के लिए। सारे विश्व को बताने के लिए कि जो अमेरिका न कर सका वह हम क
र सकते हैं।

और मेरा दृष्टिकोण यह है कि मैं अमेरिकी सरकार की भर्त्सना किए जाऊं तब त
क जब तक कि यह बिलकुल स्पष्ट ही न हो जाए कि अगर कोई तीसरा विश्वयुद्ध होगा तो वह अमेरिका और रूस के बीच नहीं होगा, वह अमेरिका और बाकी सा
री दुनिया के बीच होगा। केवल पूरी दुनिया ही नहीं, अमेरिका की फासिट सरकार के विरुद्ध होगा पूरा विश्व और अमेरिका के लोग भी।

वे नहीं जानते कि बीज में क्या छिपा है, जो कुछ उन्होंने शुरू किया है, वह विकि
सत होगा। उन्होंने अपनी गरदनें स्वयं काट दी हैं।

और मुझे लगता है कि यह महत्वपूर्ण घटना है जो घटित हुई है। सिर्फ थोड़ा समय और तुम देखोगे कि अमेरिका छोड़ चुका होगा लोकतांत्रिक होने का सारा पाखंड
—अमेरिका के लोगों की दृष्टि में भी।

प्रत्येक जेल में, जहां भी मैं रहा, वहां के अधिकारी मेरे साथ मित्रतापूर्ण हो गए। उन्होंने स्वयं कहा कि, यह पागलपन है, इस ढंग से पीड़ित करना। हमें इसमें को
सार दिखायी नहीं पड़ता सिवाय इसके कि वे आपको इस देश से हटने के लिए वि
वश कर देना चाहते हैं। आपने कुछ अपराध नहीं किया, यह बात बहुत स्पष्ट ही है।

शासन अधिकारी ऐसा समझते थे, और हर जगह जहां वे मुझे एक जेल से दूसरे में ले गए, सड़कों पर खड़े लोग मेरा स्वागत करते थे, और विजयी होने की शुभ कामना देते थे।

मैं उनके लिए विदेशी था, मुझे वे जानते नहीं थे, लेकिन फिर भी वे देख सकते थे कि क्या हो रहा है।

अमेरिका के जेलों के उन बारह दिनों ने मुझे और मेरे जीवन दर्शन को बहुत मदद दी है। अब यह एक जागतिक घटना हो गयी है। प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक परिवार इसे जानता है। और वे किसी देश के किसी कम्यून के साथ फिर से यही कुछ नहीं कर सकते हैं। इस अनुभव से उन्हें कुछ तो सीख मिलेगी।

और अमेरिका के संन्यासी कम्यून से हटना नहीं चाह रहे हैं। कम्यून बना रहेगा। अ ौर वह मेरी देशनाओं का प्रसार करता रहेगा। तो उन्होंने कुछ नहीं पाया है सिवा य निंदा के।

और जहां तक मेरा संबंध है, मैंने संपूर्ण अनुभव का रस लिया है।

मैं जान सका दोहरे चेहरों को, जिस व्यक्ति को तुम बाहर मिलते हो, वह शेरिफ हो या कि मार्शल, और जो इतना भला सा लगता है, और जब वही व्यक्ति तुम्हें जेल में ले जाता है तो वह करीब-करीब जानवर ही हो जाता है। परिवर्तन इतने नाटकीय ढंग से होता था।

दूसरी बात, मैं यह जान सका कि जो लोग जेल के भीतर हैं, और हजारों हैं जेल के भीतर, उन में से कोई श्वेत नहीं है, सभी काले आदमी हैं! यह यही दर्शाता है कि जैसे अपराध केवल काले आदमी ही करते हों। और इनमें से अधिकांश लोग बिना अदालत ले जाए ही जेल में पहुंचा दिए जाते हैं—छह महीनों के लिए, आठ महीनों के लिए।

एक व्यक्ति ने मुझे बताया कि वह नौ महीनों से जेल में है और मुकदमा चलाए जाने की प्रतीक्षा में है। वह यह भी नहीं जानता था कि उसने आखिर क्या अपराध किया है। कोई उसे बताता ही नहीं। वे बस यही कह देते, प्रतीक्षा करो। जब तुम्हारी बारी आएगी, तुम्हें अदालत में ले जाया जाएगा। बिना कोई अपराध सिद्ध िकए उसे पहले ही नौ महीने की सजा दे दी थी उन्होंने।

न्याय का पहला आधार यही होता है कि जब तक अपराध प्रमाणित न हो जाए, न्याय निर्दोष होता है।

निर्दोष भाव को किसी प्रमाण की जरूरत नहीं होती। अपराध को चाहिए होता है प्रमाण। और लोग के अपराध प्रमाणित किए बिना उन्हें जेल में रखे रखना इतनी भद्दी, इतनी संकीर्णतावादी, इतनी अमानवीय बात है।

और मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि सारे लोग नीग्री थे। तो ऐसा जान पड़ा कि जेल तो बस एक बाहरी तरीका है उनके काले आदमियों को अंदर रखने को जो विद्रोह ी हैं, और जो अपने अधिकारों को मांग करते हैं। किसी भी मामूली कारण से उन्हें

जेल में पहुंचा दिया जाता है। और फिर महीनों तक सताया जाता है, क्योंकि अ
दालत में तो वे छोड़ दिए जाएंगे।

तीसरी जो बात मैं जान पाया वह यह कि कानून को लादने वाले शासन अधिकारी
—सरकार, पुलिस, जेलर्स वे इतने मानवीय नहीं हैं जितने कि जेल में भीतर के अ
पराधी। मैं तो बिलकुल हैरान हो गया उनकी मानवीयता पर।

मैंने जेल के अधिकारियों से कहा कि मुझे टुथपेस्ट चाहिए। मुझे ब्रुश चाहिए। मुझे
कंधा चाहिए।

वह सब मिल जाएगा।

दो दिन बीतते, कि तीन दिन और फिर कहीं टुथब्रश आता और टुथपेस्ट नहीं मि
लती, या पेस्ट मिल जाती और ब्रुश भिजवाया ही न जाता। और जब तक वह स
ब पहुंचता, मुझे भेज दिया गया होता दूसरे ही जेल में।

मैं उन चीजों को लेने न जा सकता। उन्हें वहीं छोड़ देना पड़ता।

लेकिन मैं हैरान हुआ। जैसे ही मैं इन अधिकारियों से कुछ मांगता, दूसरी कोठरियों
में रहने वाले मेरे पास अपनी चीजें लाना शुरू कर देते। वे कहते कि भगवान, इ
सको इस्तेमाल मैंने अभी नहीं किया है।वह एकदम नया है। और उन लोगों को भ
रोसा मत कीजिएगा। वे आपको परेशान करते रहेंगे। वे आपको देंगे कुछ नहीं। सा
बुन चाहिए तो यह रहा।

कोई टुथपेस्ट लिए चला आता। कोई लेकर आ जाता टुथ ब्रश। कोई कंधा लिए अ
ा रहा होता। कोई ले आता अतिरिक्त तकिया। कोई बेहतर कंबल देने को तैयार
रहता।

उन्होंने मुझे एक जेल में ऐसे व्यक्ति के साथ रख दिया जिसे खतरनाक हर्पीज का
रोग था, जिसकी कोठरी में छह महीने से किसी और व्यक्ति नहीं रखा—था वहां द
ो व्यक्तियों की जगह थी। क्योंकि हर्पीज रोग किसी भी व्यक्ति को बड़ी जल्दी पक.
ड सकता है, और एक बार हर्पीज रोग पकड़ ले तो फिर जीवन भर उससे छुटका
रा नहीं होता; उसका कोई इलाज ही नहीं है। और उन्होंने मुझे वहां रखा। और
तुरंत कोठरी में मेरे साथ रहने वाले व्यक्ति ने, जो क्यूबा से था, जो ज्यादा अंग्रेज
ी नहीं जानता था, फिर भी कोशिश करता था, फिर कोशिश की कुछ लिखने की।
और उसने कहना चाहा, भगवान, उन्होंने जान बूझ कर आपको यह कोठरी दी है
रहने को। मुझे हर्पीज है और वे लोग चाहते हैं कि आप जीवन भर हर्पीज से पीा.
डत रहें।

मैंने जेलर को बुलाया और उसे लिखा हुआ कागज दिखाया। और मैंने उससे कहा,
ऐसा लगता है कि अपराधी तुम लोगों से कहीं ज्यादा मानवीय हैं। वस्तुतः अपराि
धयों को जेल संचालित करने चाहिए और तुम लोगों को कैदी होना चाहिए।

उसने कहा, क्या तुम पहले से यह बात नहीं जानते थे? छह महीने तो तुम उस
आदमी को अलग थलग रखा था।

उन्हें केवल एक बात का भय था। और वे जब कभी मुझे एक जेल से दूसरे जेल में ले जाते, तो वे साथ ले जाने वाले व्यक्ति को धीमे स्वरों में यह जानकारी देते कि सावधान रहना, यह व्यक्ति जगत प्रतिष्ठित है, और सारा न्यूज मीडिया इस के आसपास जुटा है। अगर कोई गलत बात हो गयी और इनके द्वारा कुछ कह दि या गया, तो तुम दोषी बन जाओगे।

तो न्यूज मीडिया मेरा एकमात्र बचाव रहा। उन्हें भय था कि मैं न्यूज मीडिया से सब कुछ कह दूंगा और वे लोग सारी बात सारे विश्व में फैला देंगे।

और यह बहुत स्वाभाविक ही था कि ऐसी परिस्थिति में प्रत्येक व्यक्ति सहानुभूतिपू र्ण हो जाता है।

अमेरिका का सारा न्यूज, मीडिया पूरी तरह सहानुभूतिपूर्ण रहा।और उन्होंने लगाता र बारह दिनों तक खूब ध्यान रखा कि मैं कहां हूं और कि मुझे कहां ले जाया जा रहा है। उनके हेलीकाप्पर्स और उनकी कारें और उनके कैमरे हर जगह सदा ही तैयार रहते। इसलिए वे मुझे ऐसी जगह नहीं रख सके जहां किसी को कुछ भी प ता ही न चल सके। उन्होंने अपनी ओर से बहुत ज्यादा कोशिश की, लेकिन फिर वे नहीं छिपा सके यह सब। मुझे तारीफ करनी होगी अमेरिका के प्रेस मीडिया की —वह ऐसा है कि उसका अनुसरण सारे विश्व में किया जाना चाहिए।

जैसे कि बहुत से देशों से देशों में टेलीविजन सरकार द्वारा नियंत्रित होता है। इसि लए वह राजनेताओं के प्रचार-प्रसार की मशीन मात्र हो जाता है। बहुत सी सरका रों द्वारा रेडियो नियंत्रित हैं। और कई शासन तंत्रों के अंतर्गत तो समाचार पत्र भी नियंत्रण में रखे जाते हैं। गैर शासकीय समाचार पत्र नहीं होते। मुझे लगता है ि क यह बेहूदा और बहुत ही खतरनाक बात है।

अमेरिका में सारा न्यूज मीडिया स्वतंत्र है—टेलीविजन, रेडियो, समाचार पत्र किसी सरकार का कोई नियंत्रण, दबाव आदि नहीं है उस पर। इस भांति वह किसी भी अन्याय के विरुद्ध एक बड़ी शक्ति बन जाता है, और सरकार भयभीत रहती है, उससे क्योंकि वह लोगों में कोई मत, कि कोई विचार निर्मित कर देता है।

मैं भारत के लिए भी यही चाहूंगा कि रेडियो और टेलीविजन अब सरकार के नियं त्रण में न रहें। उन्हें लोकतंत्र का एक हिस्सा होना चाहिए। अन्यथा लोगों के पास क्या उपाय बचता है? यदि वे अपने विचार अभिव्यक्त करना चाहें तो उनके पास कोई उपाय नहीं है समाचार पत्रों पर नियंत्रण रहता है बड़े-बड़े धनपतियों का ज ो सरकार के विरोध में कुछ कह नहीं सकते। रेडियो सरकार है। टेलीविजन शासन तंत्र के अंतर्गत है।

अगर यही स्थिति अमेरिका में होती तो उन्होंने मार ही दिया होता मुझे, और कि सी को पता तक भी नहीं चलता। उन्होंने वर्षों मुझे जेल में ही रखा होता।

पहली बार मुझे इतना ज्यादा खयाल आया कि न्यूज मीडिया को सरकार नियंत्रण से बिलकुल मुक्त रहना चाहिए। तब वह प्रशासन अधिकारियों और सरकार की ज ांच पड़ताल कर सकता है, कि वे लोग कोई गलत काम न कर सकें।

और उन्हें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और अधिक मिलनी चाहिए।
अमेरिका के न्यूज मीडिया की मैं प्रशंसा करता हूं।
भगवान, विवेकानंद ने कहा था कि अगर उनके पास अपने सौ व्यक्ति हों तो वे सारे जगत को रूपांतरित कर देंगे। आपने इस विषय में कहा था कि विवेकानंद की मृत्यु निराशा में हुई। लेकिन आप की पहुंच चारों ओर हैं, आप झांक सकते हैं आंखों में और खींच सकते हैं उन सूक्ष्म आत्माओं को जो प्रकाश किरण बन सकती है। आपको इसमें कहां तक सफलता मिली है?
मुझे सफलता करीब-करीब मिल ही चुकी है।
विश्व में मेरे दस लाख संन्यासी है और कम से कम पचास लाख लोग ऐसे हैं जो सदभावना रखे हैं। और माला और गैरिक वस्त्र हटाकर, उनके लिए मैंने द्वार खोल दिए हैं, वे अपना कामकाज या पत्नी या कि माता-पिता खोए बिना ही संन्यासी हो सकते हैं। मैंने वे लोग खोज लिए हैं।
और मुझे एकदम पक्का है कि हम जगत का रूपांतरण कर पाएंगे।
मैं निराशा में जाने वाला नहीं हूं।
मैं जीया हूं, बिना किसी निराशा है। तो मृत्यु कैसे आ सकती है निराशा में!
प्रत्येक बात बिलकुल सही ढंग से घटित हो रही है जैसे कि उसे होना चाहिए। अगर शासन के लोग भी संन्यासयों को सताने लगें, तो बिलकुल ठीक है बात। इसी भांति कोई लौह-तत्व, कोई ठोस केंद्र निर्मित होता है व्यक्ति में और इसी भांति उनकी क्षमता, उनकी आंतरिक शक्ति चुनौती पा लेती है।
तो अमेरिका के अनुभव के बाद हम कहीं बेहतर स्थिति में हैं। और बदल देंगे संसार को क्योंकि कोई अगर यह काम कर नहीं रहा। या तो यह संसार विनष्ट हो जाएगा या फिर हम बदल देंगे इसे। केवल यही दो विकल्प हैं जिन्हें चुन सकता है यह संसार। और मुझे नहीं लगता कि कोई विनय को चुनेगा।
भगवान, इसी संदर्भ में एक और बात, गुरजिएफ ने कहा है कि यदि दो सौ संबुद्ध व्यक्ति सारे जगत में फैल जाएं, तो तीसरे विश्वयुद्ध से बचाव हो पाएगा?
ठीक है वह। और मैं इसी संख्या पर कार्य करता हूं—दो सौ की संख्या एकदम ठीक है। और हम उसके निकटतर आ रहे हैं। और जल्दी ही हमें वह उदघोषणा भी करनी होगी कि दो सौ व्यक्ति संबोधि को उपलब्ध है। यहां तक कि उदघोषणा को भी कोई आवश्यकता नहीं है। उनकी मौजूदगी बदल देगी संसार को।
जो गुरजिएफ न कर सका, हम कर सकते हैं; क्योंकि गुरजिएफ के पास बहुत कम लोग थे। दूसरी बात, तीसरा विश्वयुद्ध बहुत दूर था। लोग इतनी दूर की बातों पर नहीं सोचते। उनकी दृष्टि सीमित होती है। लेकिन अब तो विश्वयुद्ध करीब, और करीब और ज्यादा करीब आता जा रहा है, और कोई निर्णय तो लेना ही होगा।

हमारे लोग तैयार हो रहे हैं। दो सौ संबुद्ध व्यक्तियों के लिए यह सही क्षण है। पूर
ा विश्व निकट आ रहा है; और साथ ही दो सौ व्यक्ति संबोधि को उपलब्ध हो रहे
हैं, वह घड़ी करीब आ रही है।

गुरजिएफ के समय तो ऐसा संभव न था। अगर उन्होंने दो सौ व्यक्तियों के संबुद्ध होने पर कार्य कर भी लिया होती तो भी तीसरा विश्वयुद्ध काही दूर था। 1950 में उनकी मृत्यु हो गई।

तीसरा विश्वयुद्ध कहीं 1999 के आसपास घटेगा। उसमें अभी समय है और हम र
ोक लगा सकते हैं उस पर।

भगवान, इसी संदर्भ में एक बार प्रश्नों के उत्तर देते हुए आपने कहा था कि मैं व
ही कह रहा हूं जैसा शिवपुरी बाबा ने किया—जो वह उस समय नेपाल में करना चाहते थे। वह समय परिपक्क न था लेकिन अब समय परिपक्क है, और मैं वही करूंगा।

वह क्या है, वह कार्य क्या था जो वे करना चाहते थे और वे कर न सके?

सारे बुद्ध पुरुष वही कार्य कर रहे हैं। कार्य इसी संबंध में है कि मनुष्य पशु तल से आया है।...चार्ल्स डारविन का कहना शायद संपूर्णतया सच नहीं भी हो, लेकिन त
ात्विक ढंग से वह सच है कि मनुष्य अपने में काफी पशुता लिए रहता है। और उ
स पशुता को गिराने का एक मात्र रास्ता यही है कि मनुष्य में कुछ ऐसे उच्चतर तत्व का निर्माण हो जाए जो पशुता को देख समझ सके। जैसा कि मनुष्य है, वह नहीं देख सकता है उसे। वह घिरा रहता है उसी से।

...तो सारे संबुद्ध व्यक्ति एक ही कार्य कर रहे हैं—साक्षित्व का वह बिंदु निर्माण क
रना जिससे कोई मनुष्य यह जान सके कि उसके भीतर कितना पशु तत्व है। और चमत्कार यह होता है कि जिस घड़ी तुम उसके प्रति सजग होते हो, वह विलीन हो जाता है। सजगता ही पर्याप्त होती है उसे विलीन करने को।

कार्य एक ही है—बुद्ध का हो, कि शिवपुरी बाबा का, या कि गुरजिएफ का—कार्य वही है।

लेकिन हम इतने सब की अपेक्षा कहीं बेहतर स्थिति में हैं; क्योंकि तीसरा विश्वयु
द्ध सारी मनुष्य जाति को नष्ट कर देगा। मनुष्य जाति को कोई न कोई ढंग खोज निकालना होगा जिससे उससे पशु प्रवृत्तियां गिर जाएं। क्योंकि ये वही प्रवृत्तियां हैं जो युद्ध और क्रोध और हिंसा को जन्म देती है।

ध्यान के अतिरिक्त और दूसरा कोई उपाय नहीं है—जब स्वयं में कुछ ऊंच तत्व क
ी खोज कर ली जाती है, जो स्वयं से अधिक विशाल होता है, अधिक प्रकाशवान होता है, तो उससे अंधकार खो जाता है।

इसलिए मनुष्य के पूरे इतिहास में हम सब से अधिक सुसंगत समय में जी रहे हैं। और अगर हमें विफलता मिलती है, तो पूरी मनुष्य जाति और उसके सभी प्रयास हमारे ही विफलता न होगी। इस छोटी सी पृथ्वी के अतिरिक्त सारी सृष्टि जीवन ि
वहीन है। अगर यह पृथ्वी भी जीवन विहीन हो जाए, तो सारी सृष्टि जीवन और

चेतना खो देगी। फिर लाखों वर्ष लग जाएंगे जीवन निर्मित करने में और फिर चेत
ना जाग्रत करने में, फिर किसी बुद्ध के आने में।

दांव पर इतना कुछ लगा है कि मुझे नहीं लगता कि मनुष्य जाति आत्मघात की
बात कभी सोचेगी। जहां जितनी दूर तक हो सके हमें तो बस फैला देना है कि ध्य
ान को।

इसलिए मैं किसी भी धार्मिक जड़ अभिनय को हटा मिटा दिया है, जिससे कि एक
मुसलमान भी ध्यान कर सके और फिर भी बना रह सके मुसलमान; जिससे मुस
लमानों का हम सके कोई भय न रहे; एक हिंदू बना रह सकता है हिंदू और फिर
भी ध्यान कर सकता है। बिना किसी शर्त के ध्यान सब तक पहुंचा देना है, चाहे
कोई हिंदू हो, कि यहूदी हो, कि ईसाई हो।

मैंने यह धारणा गिरा दी कि हमारा कोई नया धर्म है। करुणापश, मैंने इस तरह
के सारे विचार ही गिरा दिए। हम सिर्फ एक ध्यान आंदोलन है। कोई भी इसमें सि
म्मलित हो सकता है।

और सुंदरता यह है कि अगर कोई ध्यान करता है, तो देर अबेर उसका मुसलमान
होना खो जाएगा, उसका हिंदू होना खो जाएगा। ध्यान के संग साथ वे सब बातें
जुड़ी नहीं रह सकती। इसलिए लोगों के हिंदू होने और मुसलमान होने की चिंता क
यों लेनी, जबकि हमारे पास ऐसा मूल रहस्य है जो कि स्वयं ही उनके भीतर के
सब अंधेरे दूर कर देगा। और मैं चाहता हूं कि ध्यान लगभग सृष्टिगत ही हो जाए
। और वह केवल तभी संपूर्ण सृष्टि का हो सकता है, अगर वह किसी धर्म से न
जुड़ा किसी राजनीति, किसी सिद्धांत से न बंधा हो—और वह ऐसा नहीं है। यह ए
क सहज सरल विधि है। नास्तिक तक भी इसका प्रयोग कर सकता है—कोई अड़च
न नहीं है। इसके अंतर्गत उससे यह नहीं कहा जाएगा कि वह ईश्वर में विश्वास ब
नाए। उसे किसी भी विश्वास रखने को नहीं कहा जाएगा। हम उससे इतना ही क
हेंगे कि यह रही एक विधि, जिसके लिए तुम प्रयास कर सकते हो। परिकल्पनात्म
क ढंग से यदि तुम्हें कुछ प्राप्त हो जाए, तो ठीक है। यदि तुम्हें प्राप्त न हो, तो
छोड़ देना यह विधि। और जिस किसी भी ध्यान के लिए प्रयास किया है, वह कभी
खाली हाथ नहीं लौटा है।

भगवान, वुडलैंड में आप खोजियों के छोटे से समूह के प्रति बोलते थे और आपने
व्यक्ति चेतना को रूपांतरित करने के लिए ऐसी दुर्लभ पुस्तकें प्रदान की : जिन खो
जा तिन पाइयां, दि बुक आफ दि सीक्रेट, मैं मृत्यु सिखाता हूं, योगा, दि अल्फा एं
ड दि ओमेगा। बाद में अपेक्षाकृत अधिक बड़े जनसमूह के प्रति बोलते हुए आप अ
पनी सूक्ष्म, गहरी पहुंच सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक विषयों के प्र
ति अधिक व्यक्ति करने लगे। इधर इन दिनों आपने उदघोषणा की है कि आप के
वल थोड़े से संन्यासियों को साथ रखेंगे।

क्या आप हमें आंतरिक रूपांतरण के प्रच्छन्न, सूक्ष्म और अर्थपूर्ण आयाम में ले चलें
गे?

निश्चित ही, क्योंकि अब मैं बड़ा कम्यून नहीं बनाऊंगा, क्योंकि उसमें बड़ी ऊर्जा लगती है। अब मैं पचास साठ लोगों के छोटे समूह के साथ रहूंगा। लोग आ सकते हैं, लोग जा सकते हैं। रहकर लौट सकते हैं। लेकिन उनकी संख्या सौ से अधिक कभी न होगी। जिससे मैं अधिक सूक्ष्म तल पर, अस्तित्व की अधिक गहरी परतों में उनके प्रति कुछ बोल सकूंगा।

और यह सब कुछ सारे कम्यूनों को और सारे जगत को उपलब्ध रहेगा।

लेकिन मेरी अड़चन वही है जो कि मुझ जैसे लोगों के साथ सदा से रही है—मैं लिख नहीं सकता। इसी कारण से कि यह तो ऐसे हुआ जैसे उसे पत्र लिखना, जो नहीं है। जो नहीं है उसके प्रति तुम लिखोगे भी तो क्या! मैं केवल बोल सकता हूं, क्योंकि उसे सुनने के लिए संवेदनापूर्ण हृदय है।

इसलिए ये पचास व्यक्ति, यह निकटतम व्यक्तियों का समूह होगा, जो पूरे खुले ग्रहणशील संवेदनशील होंगे। तो मैं वह कह सकता हूं जो जनसमूह तुरंत नहीं समझ सकता। और ये सारी बातें कम्यून तक टेप्स के द्वारा, पुस्तकों के द्वारा पहुंचायी जा सकती हैं, जिससे फिर अधिक लोगों तक भी पहुंच सकती है।

लेकिन अब मैं अधिक गहन रूप से अनुभव कर रहा हूं कि रहस्य तत्वों में उतरना है। और यह केवल उन्हीं लोगों के लिए संभव है जो मेरे साथ होने को राजी हैं। इसलिए ये पचास व्यक्ति वस्तुतः पचास न होंगे; यह करीब-करीब एक ही चेतना होगी जिसके साथ मैं सहभागिता में रहूंगा।

मुझे नहीं लगता कि मैं अपने आसपास कोई बड़ा कम्यून बनाऊंगा। बड़े कम्यून तो विश्व में हर जगह रहेंगे, लेकिन मेरे करीब केवल थोड़े से चुने हुए व्यक्ति। क्योंकि कम्यून बड़ा हो तो उन लोगों से भी बात करनी पड़ती है जो उतना ग्रहणशील नहीं है, उतने खुले नहीं हैं।

अब मैं चाहता हूं व्यक्तियों का छोटा सा समूह जो नितांत ग्रहणशील हो, जिससे मैं बिना किसी अवरोध के अपना अंतर अस्तित्व समग्र रूप से उड़ेल सकूं, और यही मेरे कार्य का परम शिखर होगा।

भगवान, जिन खोजा तिन पाइयां और दि बुक आफ दि सीक्रेट पर किए बहुत से प्रश्न अनुत्तरित ही हैं। क्या आप तब उन पर कुछ कहेंगे जब दूसरी कई बातें कहने के बाद आपके पास इसके लिए समय रहेगा?

हां, जब मुझे उन पर कुछ कहना होगा तो संबंधित प्रश्नों को भी देखूंगा।

भगवान, पूरे विश्व के संन्यासियों और प्रेमियों के लिए जो कि आपके दर्शन और देशनाओं के प्यासे हैं, आपका क्या संदेश है?

जल्दी ही यह सब व्यवस्थित हो जाएगा। जब मैं कहीं रहने लगूंगा, तब कुछ लोग एक साथ आ सकते हैं, मेरे साथ कुछ दिन रह सकते हैं और फिर अपने कम्यून में लौट सकते हैं। और मेरा संदेश उन तक प्रतिदिन पहुंचता रहेगा। अगर हमें सच में कोई बड़ा भूमि क्षेत्र मिल जाए तो हम एक वार्षिक महोत्सव भी रख सकते हैं

ताकि सब लोग आ सकें और मेरे साथ तीन सप्ताह तक रह सकें, ऐसा इंतजाम हम कर लेंगे। वे प्यासे नहीं रहेंगे।
मोहम्मद ने कहा है, और मैंने यह कथन बहुत बार उदधृत किया है, कि प्यासे को ही कुएं के पास आना होता है, कुआं नहीं जा सकता प्यासे के पास।
अभी आज मैं कुछ ज्यादा गहरी बात कहना चाहूंगा। यह अच्छा है कि प्यास कुएं के पास पहुंच जाए, किंतु अगर वह नहीं आ सकती तो पहली बार मैंने नए द्वार खोलते हैं—कुआं जाएगा प्यासे के पास।
अगर ऐसी जरूरत आ पड़ी तो मैं सारे विश्व मैं जाऊंगा, प्रत्येक कम्यून में कुछ दि न ठहरने को। वह कहीं आसान होगा उससे कि हजारों लोग पैसा खर्च कर के आ ते रहें। मैं जा सकता हूं दुनिया भर में। उसमें कोई ज्यादा अड़चन नहीं है। और प्र त्येक कम्यून में मेरे ठहरे ने की जगह हो सकती है। जिससे वह जगह वहां मेरी उ पस्थिति की प्रतीक बनी रहे। मैं वहां ठहरूंगा वर्ष में एक दो बार। वे वहां ध्यान कर सकते हैं।
मोहम्मद के समय में कुआं के लिए यात्रा करनी कठिन थी। अब ऐसा संभव हो ग या है।
क्या आप एक और प्रश्न पर कुछ कहेंगे? भगवान, सुंदर वादी देवताओं की वादी कहलाती है। क्या लोग अपने सामूहिक अवचेतन में जानते थे कि आप जैसा ईश्वर ीय व्यक्ति यहां आने को है और यह नाम अर्थपूणें हो जाएगा।
वादी बहुत ही सुंदर है। और लोग बहुत ही निर्दोष हैं। और जब इसे देवताओं की वादी कहा गया होगा, तब यह और भी अधिक सुंदर थी, और भी अधिक हरी थी।
यह सींव है कि इस देश के लोगों के अवचेतन ने इसे देवताओं की वादी कहा होग ा क्योंकि अगर मैं यहां रहा तो मैं सृजन कर दूंगा दो सौ देवताओं का—दो सौ संबु द्ध व्यक्तियों का यही अर्थ है।
और पहली बार वादी का केवल नाम ही नहीं रहेगा बल्कि वह वास्तविकता पाएग ी।
25 नवंबर, 1985, प्रातः, कल्लू मनाली
मैं आशीष देता रहूंगा
भगवान, हम जालंधर के एक हिंदी समाचार पत्र पंजाब केसरी की ओर से आए हैं । हमारे समाचार पत्र के निर्देशानुसार हम यहां आपसे निवेदन करने जाए हैं कि कुछ प्रश्नों के उत्तर देकर हमें बोध दें। यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं प्रश्न प्रस्तुत करूं?
आप इलाज के लिए अमेरिका गए थे। क्या अब आपका स्वास्थ्य पूरी तरह ठीक हो गया है? आपकी पीठ का दर्द अब कैसा है?
वह बढ़ गया है। मैं अनुकूल, नियंत्रित वातावरण में लगभग ठीक ही हो चला था, लेकिन अमेरिका की सरकार ने बाहर दिन में चार वर्ष का काम कर दिया। मेरे

शरीर के साथ लगे कि अगर मैं एक खास स्थिति में बैठा रहूं, तो पीठ में कोई द
र्द न होगा; इसलिए कुछ खास कुर्सियां मेरे प्रयोग के लिए बनायीा गयी हैं। उनके
रहते पीठ में दर्द नहीं होता। लेकिन और किसी भी कुर्सी पर बैठते से पीठ में दर्द
होने लगता है। और डाक्टरों ने कह दिया है कि जीवन भर यह ऐसे ही चलेगा। वे
इसका कोई इलाज नहीं कर सकते।

जेल के बारह दिनों में उन्होंने मेरी पीठ की तकलीफ बढ़ा देने की कोशिश हर सं
भव ढंग से की। उन्होंने लोहे के सख्त बेंच मुझे दिए बैठने को। मैंने तकिया मांगा
तो मना कर दिया। मैंने कहा, उनसे, तुम लोग मेरी पीठ की हालत के बारे में ज
ानते हो, और तुम मुझे बैठते को दे रहे हो स्टील बेंच—और वह भी थोड़ी देर के
लिए नहीं, बल्कि रात भर के लिए। मैं तकिया और कंबल लाने के लिए कह रहा
हूं ताकि मैं सो सकूं। कंबल नहीं, कोई तकिया नहीं, इसके लिए जिसे कहा, वह
फिर लौटा ही नहीं।

लगातार बारह दिन तक जितना हो सका, उतना सताने की कोशिश उन्होंने की।
वे जहां कहीं भी ले जाते, जंजीरों में जकड़ देते; हाथों में कि पैरों में हर जगह
जंजीरें। मेरी पीठ में भी, विशेषकर उस बिंदु पर जहां कि दर्द है, और फिर वे मे
रे साथ भी बांध देते थे पीठ की जंजीरों से। और फिर वे कार इस ढंग से चलाते
कि जितनी चोट मुझे पहुंचायी जा सके, पहुंचायी जाए—झटके से कार रोक लेते;
अचानक गति तेज कर दौड़ाने लगते; कभी झटके से मोड़ देते कार।

मेरी दूसरी चिकित्सीय समस्याएं एलर्जीज से जड़ी रही हैं। वे भी उपचार के बारह
हैं। वे वंशानुक्रम से प्राप्त तकलीफें हैं। कुछ चीजों के प्रति मैं अतिरिक्त संवेदशील
हूं जैसे कि ऊन, इत्र, किसी भी तरह की गंध, धूल, धुआं, विशेषकर तंबाकू का
धुआं।। जेल में उन्होंने जहां धूल के सिवाय और कुछ न होता; यहां तक कि वहां
चलने से भी धूल उड़ती। वे मुझे सब से गंदे कंबल देते। और मैंने उनसे कहा, मु
झे ये कंबल नहीं चाहिए क्योंकि वे ऊनी हैं और मैं इन्हें इस्तेमाल नहीं कर सकता
। वे कहने लगे, लेकिन हमारे पास कोई सूत की कंबल नहीं है। यह बात झूठ थी।
क्योंकि बाद में जब यह बात प्रेस के सामने प्रकट हो गयी कि वे पहले तो उनकी
कहीं दे रहे हैं, तो तुरंत कंबल ला दिए, तकिए आ गए। केवल एक दिन पहले
तो उनका कहीं नामों निशान तक न था।

वे मुझे रहने की ऐसी जगह देते जिस कोठरी में वहां और भी बारह व्यक्ति मेरे स
ाथ ही रहते। शायद विशेष रूप से चुने गए, क्योंकि वे सभी लगातार सिगरेट पीने
वाले होते थे। यह एक गजब का मेल था कि जिन बारह व्यक्तियों के साथ मेरा
रहना होता वे सभी चेन स्मोकर्ज होता। सुबह से लेकर आधी रात तक वे सब लग
ातार सिगरेट ही पीते रहते। इसलिए मेरी आंखों में निरंतर पानी आता रहता, क्य
ोंकि उतना ज्यादा धुआं मुझसे बर्दाश्त ही न हो सकता था। मेरा गला घुटने लगता
, मेरा श्वास लेना कठिन हो जाता और मुझे लगा कि यह सब तो किसी भी क्षण
अस्थमा की तकलीफ को बढ़ा सकता है।

उन्होंने मुझे जेल में रखा और वह भी बारह दिन तक जो कि बिलकुल बेमतलब था; क्योंकि मैंने कोई अपराध नहीं किया था। उन्होंने तो मेरे लिए जारी किए गिरफ्तारी के वारंट तक नहीं दिखाए। उन्होंने कोई कारण नहीं बताया इसका कि मुझे क्यों गिरफ्तार किया जा रहा है। मात्र बारह भरी हुई बंदूकें की नोक पर उन्होंने मुझे गिरफ्तार कर लिया। उस आदमी को जिसके पास पहने हुए वस्त्र और खुले हाथों के सिवाय और कुछ न था! और किसी बात का उत्तर उन्होंने नहीं दिया। वे जानते थे कि मेरे विरुद्ध उनके पास कोई मामला न था मुकदमा चलाने को। तो क्या किया उन्होंने कि उसी हवाई जहाज पर सवार छह दूसरे व्यक्तियों को भी गिरफ्तार कर लिया। हम पहाड़ों में, एक संन्यासी के घर ठहरने जा रहे थे, बस दो या तीन सप्ताह के लिए—वहां रह कर सिर्फ आराम करने को। कोर्ट के उन्होंने छह व्यक्तियों को छोड़ दिया क्योंकि विरोध में मामला ही नहीं था। और यदि छह व्यक्ति छोड़ दिए गए, तो फिर मुझे क्यों नहीं छोड़ा गया?

मेरे लिए सरकार के अटर्नी ने, यू. एस. अटर्नी ने जोर दिया था कि मेरी जमानत को लेकर ओरेगान में फैसला किया जाएगा। यह बात असंगत लगती है। यदि मेरे साथ के छह व्यक्ति यहां गिरफ्तार किए गए और उनकी जमानत यहीं हो गयी, तो मुझे ही खास तौर से क्यों कहीं जाना पड़ेगा?

लेकिन कारण था कि ओरेगान पहुंचने में ज्यादा से ज्यादा देर करना चाहते थे। वहां पहुंचने में केवल छह घंटे लगते थे। लेकिन उन्होंने ऐसे प्लेन की व्यवस्था की जो उनके कैदियों को एक स्थान से दूसरे स्थान लाता ले जाता है। यहां तक कि पायलट ने भी मुझसे कहा कि उसने ऐसा होते कभी नहीं देखा—हम जैसे ही ओरेगान के करीब पहुंचते हैं तो अचानक हमें आदेश मिलने लगते हैं कि दूसरी दिशाओं की ओर मुड़ जाओ। वे आपको परेशान ही कर रहे हैं। इसलिए बीच में मुझे किसी और जेल में भेज दिया जाता था। बारह दिनों में उन्होंने पांच जेल बदले।

एक जेल में उन्होंने मुझे खतरनाक हर्पीज रोग की चरम अवस्था से पीड़ित रोगी के साथ ठहरा दिया। वह कोठरी दो व्यक्तियों के लिए बनायी गयी थी, लेकिन इस अकेले व्यक्ति को ही दे दी गयी थी। छह महीने से और कोई साथ नहीं रहता था। उन्होंने मुझे वह कोठरी दी। जो आदमी वहां था उसे भी लगा कि यह बिलकुल गलत बात है। वह मर रहा था हर्पीज के कारण और हर चीज संक्रामक हो सकती थी। वह कोई ज्यादा अंग्रेजी नहीं जानता था। वह क्यूबासे था। लेकिन फिर भी उसने एक छोटा सा नोट लिख दिया कि भगवान, वे आपको परेशान करने की कोशिश में लगे हैं। मैं हर्पीज से पीड़ित हूं। मैं अपनी ओर से पूरी कोशिश करूंगा हर चीज साफ करने की। लेकिन फिर भी मैं इससे और क्या कर सकता हूं?

फिर एक और जेल के निवासी ने मुझे सूचना दी कि आप तुरंत जेलर को बुलाएं कि यह तो एकदम अमानवीय बात है। उस आदमी की ऐसी अवस्था है कि डाक्टर ने किसी और को वहा ठहराने की इजाजत नहीं दी है। और डाक्टर ने मुझे वहां रहने दिया! जब मुझे उसी कोठरी में ठहराया गया, तो डाक्टर वहां मौजूद था। मे

री कोठरी बदलने में उन्हें करीब बीस घंटे लगे। और मैंने कहा डाक्टर से कि डाक टर, तुम अपराध का हिस्सा बने हुए हो। कम से कम तुम्हें तो राजनेताओं और उ नकी गंदी चालबाजियों से दूर ही रहना चाहिए। तुम खूब अच्छी तरह से जानते थे कि आदमी हर्पीज से मर रहा है। जेल में सभी यह बात जानते हैं। तुम मौजूद थे जब मुझे यहां ठहराया गया।

वह बोला, हम क्या कर सकते हैं, हम तो छोटे लोग हैं।

हर जेल में वे मुझे ठहरने को ऐसी जगह दे देते जहां कोठरी के दोनों ओर टेलीवि जन सेट लगे होते, जो कि पूरे जोर से बज रहे होते, सुबह छह बजे से लेकर रात के बारह बजे तक। और फिर उन्होंने ही ऐसी व्यवस्था बना दी जब टेलीविजन ख ामोश हो जाए, तो जेल में रहने वाले लोग एक कोठरी से दूसरी कोठरी तक परस् पर बातें करते रहें। बारह दिनों मग उन्होंने मुझे पल भर भी सोने का मौका नहीं दिया।

जो कुछ वे छिपे ढंग से कर सकते थे वह उन्होंने किया, क्योंकि उन्हें मेरी तमाम बीमारियों के विषय में पता था। और प्रेस के सामने तो वे...क्योंकि प्रेस के लोग ि नरंतर उनके पीछे लगे थे। प्रेस और न्यूज मीडिया ने मेरी बहुत ज्यादा मदद की, वरना तो उन्होंने बिना मुकदमा चलाए, बिना अरेस्ट वारंट के, बिना किसी स्पष्ट मामले के ही मुझे तीन चार महीनों के लिए रख लिया होता।

लेकिन, क्योंकि जहां कहीं भी वे मुझे रखते, वहां प्रेस के लोग जेल के चारों ओर मौजूद रहते थे—सैकड़ों टेलीविजन स्टेशनों के व्यक्ति, समाचार पत्रों के, रेडियो के। और वे इतना ज्यादा डरे हुए थे मीडिया से कि वे स्पष्ट रूप से कुछ कर भी न सकते थे, क्योंकि वे जानते थे कि यदि वे कुछ करेंगे, यदि मेरे शरीर को जरा भी क्षति पहुंचाएंगे तो जल्दी ही वह खबर दुनिया भर में फैल जाएगी, और सारी दु नया ध्यान से देख रही थी इस घटना को।

एक जेल में उन्होंने क्या किया, मुझसे कहा, यू. एस. मार्शल ने खुद मुझसे कहा ि क डेविड वाशिंगटन के नाम से हस्ताक्षर कर दो। मैंने कहा, यह मेरा नाम नहीं है , और तुम मुझसे गैर कानूनी काम करने को कह रहे हो। तुम्हें तो डिपार्टमेंट आह जस्टिस, कानून लागू करने वाला अधिकारी माना जाता है। जरा मुझे बता दें कि यह सब कौन से कानून की तहत किया जा रहा है? और मैं बात का मकसद स मझ सकता हूं, और तुम जानते हो कि बोर्ड पर लिखा जाएगा, डेविड वाशिंगटन, ताकि कोई जान न पाए कि मैं इस जेल में लाया गया हूं। तो तुम जैसा भी मेरे साथ व्यवहार करना चाहो, यहां तक कि अगर मुझे मारना भी चाहो तो तुम मार सकते हो; और कोई कभी भी न जान पाएगा कि मेरे साथ क्या हुआ, क्योंकि ि कसी के जानने में तो मैं कभी जेल में था ही नहीं।

इसलिए मैंने उससे कहा दिया, मैं ऐसा नहीं लिख सकता; क्योंकि वह मेरा नाम न हीं है। अगर तुम वैसा लिखना चाहते हो, तो तुम खुद भर सकते हो फार्म। मैं हस् ताक्षर कर दूंगा।

और मैंने जान बूझ कर ऐसा किया ताकि वह अपनी ही हस्तलिपि में फार्म भरे, ि जससे वह एक दस्तावेज बन जाए, एक प्रमाण बन जाए और मैंने अपने नाम के ह स्ताक्षर हिंदी में कर दिए। तो उसने यह देखा भी और फिर भी वह समझ न पाया कि यह क्या लिखा है। हस्ताक्षर मेरे, और नाम डेविड वाशिंगटन का, जिसका हस् ताक्षर के साथ जरा भी संबंध नहीं है।

और मैंने उससे कहा कि बहुत ज्यादा होशियार और चालबाज बनने की कोशिश मत करो। सुबह ही तुम देखोगे कि डेविड वाशिंगटन और मेरा नाम विश्व भर के टेलीविजन पर है। क्योंकि वह लड़की जो एक कोने में बैठी हुई थी, जो अभी-अभी अभिवादन करके विदा ले गयी है, वह मेरे साथ ही प्लेन में थी और उसने कहा था मुझसे कि कल सुबह वह यहां से छूट रही है। तो उसने जाते ही तुरंत प्रेस को , मीडिया को, जो कि जेल के बाहर मौजूद था, खबर कर दी होगी। तो कल सुब ह ही यह खबर तमाम प्रेस, रेडियो, टेलीविजन में फौरन आ जाएगी कि वे लोग ऐसी छल योजना बना रहे हैं, जिससे वे यदि मुझे खत्म भी कर दें तो भी कोई ज ान न पाए कि मैं कहां चला गया।

जैसे ही उन्होंने देखा कि वह बात टेलीविजन पर आ ही गयी है, और समाचार प त्रों में भी छप ही गयी है, तो फौरन उन्होंने मुझे दूसरे जेल में भेज दिया। क्योंकि अब यह जोखिम भरा था, मुझे इस जेल में रखना। पूरे बारह दिन लगाए गए सि र्फ मुझे ओरेगान लाने के लिए ही, जो कि बिलकुल अर्थ हीन था जहां केवल एक दिन में ही मुझे छोड़ दिया गया; क्योंकि मेरे विरुद्ध मुकदमा बनाने को कोई बात ही न थी, मैंने कुछ किया ही न था।

लेकिन उन्होंने अपराध सिद्ध किए बिना ही सजा दी। यह लोकतंत्र के एकदम विरु द्ध है। निर्दोषता को कोई प्रमाण नहीं चाहिए; लेकिन अपराध के लिए तो प्रमाण चाहिए। और किसी को अपराधी प्रमाणित किए बगैर तुम उसे सजा नहीं दे सकते। बारह दिन में मेरा वजन आठ पौंड कम हो गया, क्योंकि खाना एकदम रद्दी था। मैं उसे खा नहीं सकता था। मैं सो नहीं सकता था। वे मुझे कारीडोर में भी जरा सा भी नहीं चलने देते थे। वे कहते, नहीं यह संभव नहीं है।

तो मैं स्वास्थ्य की तकलीफें झेलता रहा हूं, लेकिन मेरी स्वास्थ्य समस्याएं ऐसी रही हैं कि उन्हें किसी चिकित्सा की जरूरत नहीं। उन्हें जरूरत रही है एक खास आब ोहवा की--जिसमें नमी न हो, जो शीतल और खुश्क हो। और इसलिए मैं कच्छ के लिए कह रहा था। लेकिन भारतीय सरकार ने कुछ सुना नहीं, सुनेगी भी नहीं। उन्हें चिंता लगी कि अगर मैं कच्छ में रहता हूं तो बहुत से विदेशी वहां आने लगें गे और पाकिस्तान वहां से कितना करीब है। मैंने यहां तक प्रस्ताव रख दिया कि कोई नहीं आएगा। सिर्फ थोड़े ही दिन के लिए। और महल खाली है, कोई नहीं र हता वहां। और इत्तफाकन से वह महल उस राजा के लिए बनवाया गया था, जि से वह तकलीफें थीं, जो मुझे हैं। इसलिए उन्होंने खास तौर से वह जगह उनके लि

ए चुनी थी। उसमें नमी नहीं है, वह शीतल है, वह शुष्क है। और वहां कोई नहीं रहता, तो बस दे दें मुझे। कोई नहीं आएगा वहां।

लेकिन फिर भी शासन तंत्र तो शासन तंत्र ही होता है। उसके पास कोई हृदय नहीं होता, वह केवल एक यंत्र होता है। और वे लोग जिनके पास हृदय है और काम कर रहे हैं इसके अंतर्गत, वे भी धीरे-धीरे बड़े यांत्रिक, यंत्र मानव ही होते चले जाते हैं।

यह ऐसी स्थिति थी जिसके कारण मुझे अमेरिका जाना पड़ा, क्योंकि ओरेगान की जलवायु कच्छ की जलवायु जैसी ही है। अन्यथा आरेगोन में मुझे रस नहीं; वह एक रेगिस्तान है। लेकिन उससे मुझे मदद मिली है। चार वर्ष तक मुझे पीठ के दर्द से छुटकारा मिला रहा। मैं मुक्त रहा हर तरह की एलर्जी से। अस्थमा के दौरे से भी मुक्त रहा। फिर भी, उसका यह अर्थ नहीं कि वे सब तकलीफें ठीक हो गयी थीं। उसका केवल इतना ही अर्थ है कि अनुकूलित, नियंत्रित वातावरण...लेकिन एक बार यदि मैं उस अनुकूल वातावरण से हट कर दूर होता हूं, तो तुरंत तकलीफ मौजूद हो जाती है।

लेकिन फिर भी बहुत मददगार रहे हैं या बारह दिन। पहली तो बात : मैं जान सका कि अमेरिका जैसा देश जो कि विश्व के सामने सब से बड़ा लोकतंत्र होने का दावा करता है, वह लोकतांत्रिक नहीं है—वह केवल पाखंड है।

दूसरी बात, मैं यह अनुभव कर सका कि अमेरिका का अधिकारी वर्ग और शासन केवल सारे विश्व को ही धोखा नहीं दे रहे, वे अपने लोगों को भी धोखा दे रहे हैं। वहां के लोग प्यारे हैं। उतने ही प्रेममय, जितने किसी और जगह के लोग—शायद कहीं ज्यादा। लेकिन उन्हें पता नहीं कि दीवारों के पीछे क्या घटता है।

तीसरा बात, जो मुझे पता चली वह यह कि उन पांच जेलों में, जो अमेरिका के सबसे बड़े जेल थे, एक भी श्वेत वर्ण कैदी था। ऐसा लगता है जैसे कि सारे अपराध काले आदमियों द्वारा ही किए जाते हैं; श्वेत व्यक्ति तो कोई अपराध करता ही नहीं है।

मुझे एक बात साह हो गयी कि वे झेलें अपराधियों के लिए नहीं हैं, बल्कि उनके लिए हैं जिन्हें वे दबाना चाहते हैं। और उन जेलों में मुझे ऐसे व्यक्ति मिले जिन्होंने बताया, हम छह महीनों से यहां हैं, नौ महीनों से यहां हैं, इंतजार कर रहे हैं अदालत की कार्यवाही शुरू होने का।

मुकदमा चलाने के पहले गिरफ्तार करना एकदम अमानवीय है। तुम्हें पहले व्यक्ति को कोर्ट में लाना चाहिए, और अगर कोर्ट उसे सजा दे, तो बात बिलकुल ठीक है। लेकिन तुम तो पहले ही उसे सजा दे देते हो। तुम एक आदमी को नौ महीने की सजा दे देते हो, उसे यह बताए बिना ही कि उसने किया क्या है। और सारी झेलें काले लोगों से भरी हुए हैं। सभी काले आदमी, एक भी अपवाद नहीं।

चौथी बात, मैंने जाना कि जेल के वे कैदी जिन्हें अपराधी समझा जाता, कहीं ज्यादा मानवीय हैं, कहीं ज्यादा प्रेममय हैं, उन लोगों से जो कि लोकतांत्रिक होने का,

मानवीय होने का दिखावा कर रहे हैं, और पूरी दुनिया को बचाने के प्रयास में लगे हैं। मैं टूथपेस्ट मांगता या ब्रश, या कंघा, या साबुन—और दो दिन गुजरने के बाद कहीं ब्रश दिखायी देता। लेकिन तब टुथपेस्ट न मिलती। फिर कहीं दो दिन बाद टुथपेस्ट मिलती। लेकिन मैंने जेल के अधिकारियों से ये चीजें मांगी तो वहां रहने वाले लोगों ने भी सुना और वे ये चीजें लाने लगे। वे बोल, भगवान यह बिलकुल जाती है, नयी है, हमने जरा भी इस्तेमाल नहीं किया। और वे लोग सच में ही आप से गंदा व्यवहार कर रहे हैं, क्योंकि जब हमने इसकी मांग की तो फौरन हमें सब दे दिया गया। और जब आप मांगते हैं, तो उन्हें एक टूथ ब्रश लाने में दो दिन लगते हैं!

तो इसलिए मुझे हर चीज साबुन, टूथ ब्रश, कंघा;—या कि कोई भी चीज जो मुझे चाहिए थी—जेल में साथ रहने वाले लोगों से मिली; वहां के अधिकारियों से नहीं। और वे सब इतने खुश थे कि मैं उनके साथ हूं। और वे बोले, अब हम यह नहीं सोचते कि यह जगह किसी जेल जैसी है। यदि आप यहां हैं, तो हमारे लिए यह मंदिर बन गयी है। छोटे-छोटे प्रेममय ढंग—कोई व्यक्ति लंच के लिए गया तो वहां से फूल ले आया।

और मैंने दूसरा ही संसार देखा, जो शायद हर देश में अस्तित्व रखता है—अपराधियों का संसार। वे हमारे भाई हैं, बहने हैं, और हमने उन्हें ऐसी स्थितियों में डाल दिया है कि उनका लगभग दूसरा ही संसार बन गया है। वे इस संसार के हिस्से नहीं है। कोई नहीं जानता उनके विषय में कि क्या हो रहा है उनके साथ यदि वे मुझे सताने की कोशिश कर सकते हैं जो कि सारे संसार की दृष्टि में था...हर रोज हजारों टेलीग्राम, हर रोज हजारों टेलीफोन और पूरा जेल घिरा रहता था प्रेस के लोगों से...फिर भी यदि वे मुझे सता सकते थे, या कि सताने का भयंकर प्रयास कर सकते थे, तो वे इन बेचारों के साथ क्या करते होंगे जिन्हें कोई जानता नहीं, जिनके बारे में कोई पूछेगा तक नहीं कि वे जिंदा हैं या मर गए?

तो मेरा स्वास्थ्य उन्होंने फिर से बिगाड़ दिया, लेकिन अब मेरा स्वास्थ्य सुधर रहा है। क्योंकि ये रोग कुछ ऐसे नहीं जो किसी को खत्म ही कर दें, बस, व्यक्ति परेशान पीड़ित हो सकता है। और जब जलवायु, वातावरण बदल जाता है, रोग लक्षण भी मिट जाते हैं।

इसलिए कोई समस्या नहीं है। लेकिन वह मेरे लिए अच्छा अनुभव रहा है और मेरे सामने साफ हो गया है कि अगर तीसरा विश्वयुद्ध होगा तो वह सोवियत यूनियन और अमरीका के बीच न होगा; वह होगा पूरे संसार और अमेरिका के बीच! कयोंकि सोवियत यूनियन कम से कम सीधा साफ है। वह लोकतंत्र का दिखावा नहीं करता है। वह स्वयं के तानाशाही ढंग से सत्तावादी होने की घोषणा स्वयं ही करता है। अमेरिका स्वयं के लोकतांत्रिक होने की घोषणा करता है, और इस मुखौटे के पीछे छिपा है एक फासिस्ट राज्य।

उन्होंने मुझे खत्म करने की कोशिश की। जब वे इसमें सफलता नहीं पा सके, तो केरोलिना की प्रमुख स्त्री न्यायाधीश, जो सिर्फ मजिस्ट्रेट ही थी, और जो तरक्की की, जज बनाए जाने की आस लगाए थी, उसे राजी किया गया, उन्होंने दबाव डाले उस पर, कि अगर तुमने इस आदमी को छोड़ने का फैसला दिया तो जज बनने का तुम्हारा अवसर चला जाएगा। क्योंकि यह असंगत है कि मेरे साथ के मेरे छह लोगों को तो छोड़ दिया जाए, और केवल मुझे रहने दिया जाए। और वह भी बिना किसी प्रमाण के--यहां तक कि यू. एस. अटर्नी ने कह दिया कि हम किसी भी मामले का कोई प्रमाण नहीं दे पाए हैं। फिर भी वह मुझे जमानत पर छोड़ने का फैसला न दे सकी। जेलर, शेरिफ तक ने भी मुझसे कहा कि उस पर तो कई दबाव डाले गए हैं, क्योंकि वह जानती है कि अगर वह जमानत पर आपको छोड़ने की इजाजत देती है, तो जज बनने की सकी संभावना समाप्त हो जाएगी।

ओरेगान में मैं फेडरल जज के सामने गया था, उसने तुरंत भांप लिया कि कोई मुकदमा नहीं बनाया जा सकता। उसने जमानत पर मुझे छोड़ दिया। लेकिन मैं जैसे ही जेल में गया--वहां से अपने कपड़े और दूसरी कई चीजें लेने के लिए--तो मुझे आश्चर्य हुआ यह देखकर कि वह निचला कक्ष सारा खाली था, जो कि सदा अफसरों और क्लर्कों और कई लोगों और जेल डिपार्टमेंट के कई अधिकारियों से भरा रहता था। जो मुझे अंदर ले जा रहा था, मैंने उस आदमी से पूछा, बात क्या है? क्या आज छुट्टी वगैरह है? वह बोला, नहीं ऐसा कुछ भी नहीं है, यह तो बस शिकट बदलने का समय है।

इस पर मैंने कहा, मैं कोई नासमझ नहीं हूं। इससे पहले मैं देख चुका हूं शिक्ट बदलना। जेल के कामकाज में यह बीच का खालीपन, कि हर कोई शिफ्ट बदलने के कारण जा रहा है, और उनकी जगह नए व्यक्ति अभी आए नहीं, यह सब बिलकुल बेतुका मालूम पड़ता है।

वह बोला, मुझे नहीं मालूम। आप बस यहां बैठे रहें, और मैं आपने उच्चाधिकारी को खोजने जाता हूं, कुछ जरूरी कागजात हैं जिन पर हस्ताक्षर करवाने हैं, और फिर आप चाहें तो अपने कपड़े ले लें।

बारह दिन में ऐसा पहली बार हुआ कि उन्होंने मुझे अकेला छोड़ा, वरना चाहे मुझे पूरी तरह जंजीरों में जकड़ा हुआ था--हाथ, पांच, कमर सब बंधे हुए, तो भी दो आदमी बंदूकें लिए हमेशा मुझ पर तैनात रहते ही थे। ऐसा पहली बार हुआ कि मुझे जंजीरों से बांधा नहीं गया, और मुझे कमरे में अकेला छोड़ दिया गया, और वह आदमी कमरे में ताला लगाकर चला गया, मुझे कुछ मालूम नहीं था कि हो कया रहा है? कुछ देर बाद वह आया, उसने मुझे कपड़े दे दिए, और मुझे छोड़ दिया।

जैसे ही मैं आपने होटल में पहुंचा, खबर गयी कि जहां मैं बैठा था, वहां बम रखा हुआ मिला है।

अब जरा सोचो कि आखिर जेल में बस कौन रख सकता है? साधारणतया तो को ई वहां प्रवेश तक नहीं कर सकता—पहले तो बिजली से परिचालित तीन बड़े दरव ाजे पार करने होते हैं—केवल वहां के अधिकारी ही भीतर जा सकते हैं। और अब बात एकदम साफ हो गयी कि नीचे की पूरी मंजिल क्यों खाली थी, और क्यों वह आदमी मुझे अकेला छोड़कर बाहर चला गया था। बाद मग मुझे पता चला कि ि कसी उच्चाधिकारी आदि के हस्ताक्षर की जरूरत ही नहीं थी। चाहिए थे तो केवल मेरे हस्ताक्षर, क्योंकि मैं अपनी चीजें वापिस ले रहा था। बात इतनी सी था; इस में उच्चाधिकारी का क्या काम था।

हुआ यही कि उन्हें पता नहीं चला कि कोर्ट मुझे कब छोड़ेगा, किस समय। और ब म रहा होगा टाइम बम। इसलिए उन्होंने केवल अनुमान ही लगाया। और उनका अनुमान चूक गया। अब इस तरह के लोग फासिस्ट ही होते हैं। इन लोगों के लिए कोई दूसरा शब्द नहीं है।

और यह स्थिति देखकर, और कोई एक दिन की बात तो थी नहीं, साढ़े चार वर्ष से वे हर संभव ढंग से हमें सता रहे थे। और सताने का कारण यही था कि जो मरुस्थल पचास साल से बंजर, बेजान पड़ा था, उसे मरूद्यान बनाने में हम सफल हुए थे। कोई भी उसे खरीदने को तैयार न था। और वह कोई छोटा भूमि क्षेत्र नह ीं था—चौरासी हजार एकड़ जमीन थी। हमने उसे खरीदा, हमने उसका रूपांतरण ि कया, हमने सड़कें बना दीं, और बाहर के किसी व्यक्ति से हमने कभी कोई मदद नहीं ली। हमारे संन्यासियों ने ही हर चीज का निर्माण किया।

हमने जल कुंड निर्मित किए, हमने झीलों की रचना की, हम उस जगह को हरा भरा बना रहे थे। रेगिस्तान पूरी तरह रूपांतरित हो रहा था एक सुंदर नगरी में! हमने पांच हजार मित्रों के लिए घर बनाए, बीस हजार मित्रों के लिए सर्दी में रह ने योग तंबू बनाए। क्योंकि प्रत्येक विश्व उत्सव में बीस हजार मित्र आते, और ह में विशेष प्रकार के तंबुओं का आविष्कार करना पड़ा—जो वातानुकूलित हो सकें, जो सर्दियों में गम रह सकें, ताकि सर्दियों में जब बाहर बर्फ गिरती हो तो कोई अड़चन न आए, वह तंबू काम करे।

इसलिए जब वार्षिक महोत्सव होता, तो वह जगह दिव्यलोक सी सुंदर हो जाती। सारी पहाड़ियां और सारे मैदान मित्रों से भर जाते।

कम्यून में हमारी कोई सरकारी नहीं थी। मनुष्य के पूरे इतिहास में यह पहला अनु भव प्रयोग रहा जहां कि पांच हजार लोग बिना सरकार के एक साथ रहते थे। औ र यह भी पहला प्रयोग था कि हम कम्यून में रुपए पैसे का इस्तेमाल नहीं करते थे । मैंने एक भी डालर नहीं देखा कभी। जिसे किसी भी चीज की जरूरत होती, उस की पूर्ति कम्यून द्वारा कर दी जाती थी। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति अपनी जरूरत के मुताबिक सब पा लेता। हमने खाद्य पदार्थों, सब्जियों, फलों और दूध के उत्पादनों के संबंध में पूरी तरह आत्म निर्भरता प्राप्त कर ली थी। मैंने कुछ ऐसी संपूर्ति खो ज निकाली थी जिसे देर अबेर विश्व के सारे शाकाहारियों को स्वीकार करना होग

ा। शाकाहारी भोजन में कुछ प्रोटीन कम होते हैं। और वही ऐसे प्रोटीन हैं जो तुम्ह ारी बुद्धि का विकास करने में सहायक होते हैं। यह केवल एक इत्तफाकन ही नहीं है कि जैन, जो हजारों वर्षों से निरामिष भोजन ले रहे हैं, उन में से किसी को भी कभी कोई नोवल पुरस्कार नहीं मिला है। किसी ने किसी आविष्कार, किसी न यी खोज में कोई योगदान नहीं दिया। इसके लिए बुद्धिमान की जरूरत होती है, लेकिन उससे संबंधित प्रोटीन मिलते नहीं हैं। भारत के जिन तीन व्यक्तियों को नो बल पुरस्कार मिला है, वे तीनों मांसाहारी हैं—खुराना, रमन, रवींद्रनाथ—सभी मांसा हारी हैं। इसका यही अर्थ हुआ कि पूरे संसार में किसी भी एक शाकाहारी को बुि द्धमत्ता के लिए कोई पुरस्कार नहीं मिला है। मैं अपने चिकित्साशास्त्र के जानकारों से पूछा है—क्योंकि हमारा अपना अस्पताल था, अपना स्कूल था, अपनी यूनिवर्सिट ी थी—और हमें यह जानकारी प्राप्त हो गई कि नान फर्टिलाइज्ड़ गैर उर्वर अंडा नि राषित होता है, क्योंकि उसमें कोई जीवन ऊर्जा नहीं आयी होती; और उसमें वह सब प्रोटीन मौजूद होते हैं जो निरामिष भोजन में नहीं होते। तो यह पला शाकाह ारी समुदाय था, जिसने गौर उर्वर अंडों का प्रयोग किया, और शाकाहारी भोजन को संपूर्णता दी। अब मांस खाने या जीवित प्राणियों को मार कर खाने की कोई जरूरत न रही।

कम्यून को देखकर अमेरिका के राजनेता भयभीत हो गए। जैसा सोवियत यूनियन में है यह तो उससे कहीं ज्यादा ऊंचे दर्जे का कम्यूनिजम था। हमारे पास पांच सौ ऐसी कारें थीं, जिनका प्रयोग कोई भी संन्यासी कर सका था। लेकिन कारों का प्र योग कोई भी नहीं करना चाहता था, क्योंकि हमारे पास सौ वातानुकूलित बसें थी , जो निरंतर चलती रहती थीं—हर पांच मिनट के बाद बस मिल सकती थी! तो फिर प्राइवेट कार के या कि पार्किंग के और पेट्रोल आदि के झंझट में क्या पड़ना? तो बस में ही क्यों न चढ़ जाओ, जो लगातार चलती रहती थीं। इसलिए हमें ती न सौ बारे बेचनी पड़ी, क्योंकि कोई उनका उपयोग ही नहीं कर रहा था।

विश्व भर के मेरे हजारों मित्रों ने मुझे तिरानबे रोल्स रायस भेंट दी थीं; क्योंकि र ोल्स रायस के एक विशेष माडल की सीट मेरी पीठ के हिसाब से अच्छी थी। लेकि न मुझे तो केवल एक ही चाहिए, तिरानबे की कोई जरूरत नहीं है। और मैं तो उस एक का भी मालिक नहीं, वह भी कम्यून की संपत्ति है। इसलिए मैंने कहा कि कम्यून में इसका ट्रस्ट बना दो, और जो कोई भी उनका उपयोग करना चाहे, वह कर ले। मैं उन तिरानबे रोल्स रोयस का क्या करूंगा। मुझे विश्व के विभिन्न भाग ों से सैकड़ों घड़ियां भेंट दी गयी। मैंने वे सब कम्यून को दे दी। जब भी कोई प्रयो ग करना चाहे, कर ले। जब कोई बाहर किसी से मिलने जा रहा हो, तो वह प्रयो ग कर ले किसी सुंदर चीज का, सुंदर कार ले जाए। मैं स्वयं तो केवल उन्हीं घड़ि यों का प्रयोग करता हूं, जिन्हें मेरे अपने संन्यासियों ने बनाया है। यह घड़ी जो पह नी हुई है, मेरे ही संन्यासियों ने बनायी है। इसकी कोई खास कीमत नहीं है, क्यों िक ये हीरे नहीं, साधारण पत्थर हैं। बस, कारीगरी ऐसी है कि किसी को भी लग

सकता है कि ये हीरे हैं। पियाजे से आयी ऐसी ही घड़ी की कीमत पौने मिलियन डालर है और इस घड़ी का कोई विशेष मूल्य नहीं है। लेकिन फिर भी मैं इसे कि सी भी कीमत पर नहीं बेच सकता; क्योंकि इसे बड़े प्रेम भाव से बनाया गया है। और प्रेम को बेचा नहीं जा सकता।

लेकिन समाचार पत्रों के कुछ अजग ढंग हैं चीजों को विकृत करने के। मैं एक भी रोल्स रायस का मालिक नहीं हूं, फिर भी सारा संसार सोचता है कि तिरानबे रो ल्स रोयस मेरी हैं। मैं एक भी यहां नहीं लाया, क्योंकि वे मेरी हैं ही नहीं; वे कम्यून की हैं। वे सोचते कि मेरे पास सैकड़ों घड़ियां हैं, हीरे माणिक पन्ने हैं; लेकिन मैंने सब कुछ कम्यून में छोड़ दिया, क्योंकि वे चीजें कम्यून की हैं। और उनका जो भी प्रयोग वे करना चाहें, कर सकते हैं।

यह संपूर्ण परिस्थिति देखकर, कि पांच हजार लोग इतने सुंदर प्रेमपूर्ण ढंग से रह सकते हैं, हर संभव ढंग से परस्पर सहयोग देते हुए; दिन में बारह चौदह घंटे काम करने के बावजूद इतनी ऊर्जा रहता है कि रात नृत्य करते हैं, गाते हैं, गिटार ब जाते हैं; और सुबह ध्यान से प्रारंभ होता है उनका दिन, और रात अंत होता है नृ त्य का आनंद मनाते हुए! बहुत लोग आने लगे थे, रोज-रोज न्यूज मीडिया के लो ग आने लगे। यह बात फैलने लगी कि रेगिस्तान का रूपांतरण किया जा सकता है । एक भी व्यक्ति बेकार नहीं, एक भी व्यक्ति भिखारी नहीं। अमेरिका में तीन क रोड़ भिखारी हैं,जिनके पास रहने को कोई घर नहीं है, भोजन नहीं है, वस्त्र नहीं हैं। वे सड़कों पर सोते हैं, और वे मरते हैं सड़कों पर ही।

हमारे भोजन की गुणवत्ता अमेरिका के किसी भी घर की अपेक्षा कहीं ज्यादा अच छी थी; क्योंकि पांच हजार लोग एक साथ भोजन करते, खिलखिलाते आनंद मना ते।

मेरे देखे, कम्यूनिज्म की वास्तविक प्रेरक शक्ति यही होनी चाहिए—सत्ता की शक्ति नहीं। बल्कि एक विकास होना चाहिए शांतिपूर्ण, प्रेमपूर्ण व्यक्तियों द्वारा, जो यह समझ रखते हों कि वस्तुएं कोई अर्थ नहीं रखतीं; न ही पैसा का कोई अर्थ होता है—महत्व होता है प्रेम का, महत्व होता है तो सम्मिलन की भाव संवेदना का।

यह बात उनके लिए एक समस्या हो गयी। उन्होंने उसे नष्ट कर देना चाहा, क्योंि क अगर यह कम्यून बना रहता है तो लोग उनसे पूछते ही रहते, कि अगर ये लो ग बिना किसी सरकार के इतने आनंद से रह सकते हैं, तो दुनिया भर की सत्ता, शक्ति आपके पास होते हुए भी आप ऐसा क्यों नहीं कर सकते? तो हम उनके लि ए एक अच्छी खास समस्या हो गए। इस कम्यून को तो उन्हें मिटाना ही था, अन्य था यह एक तुलना निर्मित कर देता।

सड़कों पर रहने वाले दो सौ व्यक्ति कम्यून में आए थे, और हमने उन्हें स्वीकार ि कया। वे सभी नीग्रो थे। और जीवन में पहली बार कोई घर मिल जाने से और म नुष्यों को मिलने योग्य सम्मान पाने से वे इतने खुश हो गए थे! उनके पास हर व ह चीज हो गयी थी जो और हर व्यक्ति के पास थी, इसलिए तुलना का भी कोई

प्रश्न नहीं उठता था, कि कोई ज्यादा ऊंचा और कोई ज्यादा नीचा है। कोई शासक तंत्र नहीं था।

यदि कोई सरकार सच में ही लोकतांत्रिक थी, तो उसे कम्यून को सहयोग करना चाहिए था, सहारा देना चाहिए था। उन्हें लोग को कम्यून देखने का और वह कैसा चलता है, यह जानने का अवसर देना चाहिए था; ताकि कोई भी अपने शहर में लौट कर वैसे छोटे छोटे कम्यून बना सके और उसी ढंग से काम कर सके। लेकिन सरकार वस्तुतः लोकतांत्रिक नहीं है। और मैं यह कहना चाहूंगा, सोवियत यूनियन से कि तुम लोग नाहक लोगों का समानता के लिए जबरदस्ती कर रहे हो। यह बात बिना शक्ति के भी संपन्न हो सकती है। और यदि तुम लोग शक्ति का प्रयोग किए बिना ऐसा कर सको तो तुम्हें पूरी दुनिया से बड़ा सम्मान मिलेगा।

मेरा अगला प्रश्न है: आ आनंद शीला के आप से अलग होने के पीछे क्या किसी सरकार का हाथ होने का संदेह आपको है?

ऐसी संभावना है कि शायर अमेरिका की सरकार ने ही यह सब किया हो; क्योंकि साढ़े तीन वर्ष तक मैं मौन में था और एकांत में था। शीला और उसके साथी कम्यून की देख रेख करते थे। ऐसा भी हो सकता है कि सरकार ने शायद उन्हें कम्यून छोड़ने के लिए रिश्वत दी हो, ताकि वह बिखर जाए। क्योंकि ये ही लोग थे जो हर चीज संभालते थे। वे चले गए लेकिन फिर भी कम्यून का कार्य चलता रहा। उनके चले जाने से कोई अंतर नहीं पड़ा, क्योंकि और लोग पर्याप्त रूप से बुद्धिमान थे। सौभाग्य से केवल बुद्धिमान व्यक्तियों का ही झुकाव मेरी ओर होता है। इसलिए हर चीज बिलकुल ठीक रही।

पीछे मुड़ के देखा जाए तो लगता है कि वैसी संभावना रही है। क्योंकि शीला ने खाद्य पदार्थ और दूसरी आवश्यक चीजें जो सर्दियों में जमा के रखनी जरूरी होतीं थीं—जैसे कि कपड़े और ऐसी कई चीजें, यह सब उसने जाने से पहले खरीदना छोड़ दिया था। जिस दिन उसने कम्यून छोड़ा, उस दिन वहां जरा भी खाद्य पदार्थ नहीं थे। यह विध्वंस लाने की और अव्यवस्था बनाने की पूर्व योजना जान पड़ती है—कपड़े वहां नहीं, भोजन वहां नहीं। वह कम्यून को बड़ ऋण तले छोड़ गयी, शायद बीस मिलियन डालर का घाटा और उसकी सेक्रेटरी बताती है कि उसका स्विजरलैंड में बैंक अकाउंट है—बीस मिलियन डालर का।

तो ऐसी संभावना है कि किसी भांति वे ऐसी योजना बनाने में सफल हो गए हों कि व्यवस्था और पूरी व्यवस्था, बीस व्यक्तियों की सारी संचालक टोली शीला के साथ भाग निकले—बिना कोई कारण बताए कि वे जा क्यों रहे हैं; बिना मुझ से आखिरी बार मिल कर, विदा लेकर! शासन ने तो सोचा होगा कि इस तरह कम्यून टूट बिखर जाएगा। लेकिन फिर भी ऐसा नहीं हुआ। लोगों ने उसे संभाले रखा और कुछ ज्यादा ही सुंदर ढंग से संभाला।

यह बात उनके लिए तकलीफ देने वसूली हो गयी। वे असफल हो गए अपने प्रयत्नों में। तब उनके पास एक ही रास्ता बच रहा कि किसी भी तरह मुझे गिरफ्तार

कर ले गए। लेकिन मैंने तो ऐसा कुछ किया नहीं था, जिसके आधार पर वे मुझे ि
गरफ्तार कर सकते। मैं किसी पद पर नहीं था, मैं तो कम्यून का सदस्य भी नहीं
था, मेरे पास कोई शक्ति न थी, मैं तो सिर्फ एक मेहमान मात्र था, कम्यून से ब
ाहर रहता था। इसलिए मेरे विरुद्ध वे क्या आरोप लगा सकते थे? और उन्होंने ऐ
सा किया भी नहीं, दो साल से वे ऐसी कोशिशें जरूर कर रहे थे। सुनी सुनायी ख
बरें पहुंच रही थी कि वे मुझे गिरफ्तार करना चाहते हैं। और मैंने कहा, यह बिल
कुल ठीक है। मुझे गिरफ्तार करने से कुछ ही दिन पहले मैंने कहा था अपने लोगों
से कि यह बिलकुल ठीक है, यदि वे मुझे गिरफ्तार करना चाहते हैं, तो उन्हें मु
झे गिरफ्तार करने दो। मेरे दोनों हाथ में जंजीरें पड़ी देख कर संसार जान जाएगा
कि अमेरिका वास्तव में क्या है।

लेकिन वे कम्यून में नहीं आए। उन्हें डर था कि मुझे गिरफ्तार करने का अर्थ होग
ा, पांच हजार संन्यासियों को खत्म करना। उसके बिना वे मुझे गिरफ्तार न कर प
ाएंगे। और अमेरिका की छवि इससे बहुत बिगड़ जाएगी। इसलिए वे प्रतीक्षा में थे
कि अगर मैं कभी कम्यून से बाहर चला जाऊं, तो वह सही अवसर होगा। और
ऐसा ही हुआ, जब मैं नार्थ केरोलिना में अपने एक मित्र के यहां गया, फौरन एय
रपोर्ट पर ही उन्होंने गिरफ्तार कर लिया मुझे।

आपने रजनीशधर्म को त्यागने की उदघोषणा की। आप भविष्य में प्रवचन या कि
आपके पास आने वाले नये या पुराने लोगों को आशीष नहीं देंगे क्या?

नहीं। मैंने रजनीश धर्म छोड़ा है—धर्म के रूप में; क्योंकि वैसी मेरी अवधारणा ही
न थी। वह बनाया गया था जब तक मैं मौन में था और कोई प्रवचन आदि नहीं
दे रहा था। वह विचार योजना शीला और उसके साथियों द्वारा रची गयी थी। रज
नीश धर्म पुस्तक मैंने नहीं लिखी थी। वे एक धर्म निर्मित करना चाहते थे; क्योंकि
केवल धर्म द्वारा ही शीला हाई प्रीस्टेस का दर्जा पा सकती थी। और वे चाहते थे
कि मैं कभी न बोलूं। और ऐसा संभावना रही है कि वे मुझे मार सकते थे, क्योंि
क उन्होंने मेरे निजी चिकित्सक को मारना चाहा, उन्होंने मेरे निजी की देख रेख
करने वाले व्यक्ति को जहर देने की कोशिश की। और ऐसी कोशिशें इसलिए हुई ि
क वे अपने चिकित्सक को मेरे पास रखवाना चाहते थे, जो किसी भी समय मुझे
कोई भी इंजेक्शन दे सकता था। वे चाहते थे कि उनका अपना व्यक्ति मेरे निजी
कार्यों की देख रेख करे। और शीला मेरे फिर से बोलने का बहुत जोर से विरोध ि
कया था।

मैंने कहा, मैं तो अस्तित्व में वर्तमान क्षण के प्रति जीने वाला व्यक्ति हूं। जब मैं
मौन में उतरना चाहता था, तो मैंने वही किया। अब मैं कुछ ऐसा कहना चाहता
हूं, जो भी अभी तक नहीं कहा गया है, और मैं अपने पूरे जीवन दर्शन को एक सं
पूर्णता देना चाहता हूं। इसे एक अंतिम स्पर्श देना चाहता हूं ताकि यह एक संपूर्ण
दर्शन हो जो4 फिर चाहे यह मेरे स्वास्थ्य के अनुकूल न हो, इससे कुछ अंतर नहीं
पड़ता, क्योंकि स्वास्थ्य का मैं करूंगा क्या? यदि मैं बिना बोले दो वर्ष ज्यादा जी

लूं तो उसमें सार क्या? मैं चाहूंगा कि दो वर्ष कम जी लूं, लेकिन मेरा दर्शन ए क संपूर्णता पा ले। और जब मैंने देखा कि जिस ढंग से ईसाइयों के यहां होता है, यह पुस्तक उसी भांति प्रश्नोत्तरी के रूप में प्रकाशित की गयी है, तो यह मुझे बि लकुल ठीक नहीं लगा।

मैंने कहा, यह एकदम अर्थहीन है। मेरे पूरे जीवन भर मैं संगठित धर्मों के विरुद्ध रहा हूं। अपनी चार सौ किताबों में मैंने आयोजित धर्मों के विरुद्ध बोला है। मेरे ि लए धर्म एक व्यक्ति मामला है। यह इतना पवित्र है कि इस संयोजित नहीं किया जा सकता। तुम प्रेम को आयोजित नहीं कर सकते, फिर तुम धर्म को कैसे योजना बुद्ध कर सकते हो, जो समग्र अस्तित्व की ओर बढ़ रही प्रेम की उच्चतर गुणव त्ता है? यह व्यक्ति की आंतरिक खोज है। तुम स्वयं अपने भीतर उतर सकते हो, अकेले ही। तुम वहां किसी और को नहीं ले जा सकते। और यह वह बड़े से बड़ा उपहार है जो तुम्हें प्रकृति ने प्रदान किया है। यह तुम्हारी आत्यंतिक निजता है, तुम्हारा विशिष्ट अधिकार है। कोई इसमें अनधिकार प्रवेश नहीं कर सकता। सारे योजनाबद्ध धर्म खोखले, बनावटी होते हैं, वे उधार के होते हैं। उनके पास देने को अपनी कोई वास्तविकता नहीं होती, कोई सत्य नहीं होता।

यही रही है मेरी सारी देशना, और उन्होंने मेरे नाम से एक धर्म गढ़ लिया!

इसलिए मैंने किताब जला दी, और घोषणा कर दी कि कोई धर्म नहीं है। यहां के वल धर्ममय व्यक्ति हैं। जो लोग मुझसे जुड़े हैं, वे मेरे पास किसी संयोजित समूह की भांति नहीं आए हैं। वे व्यक्तिगत खोज की अभीप्सा लिए मेरे पास हैं। उनमें प्रे म उमड़ा है मेरे लिए। वे मित्र हैं मेरे, न कि अनुयायी। इसलिए मैं जारी रखूंगा प्र वचन देना; लेकिन ये प्रवचन किसी पैगंबर, उद्धारक, ईश्वर के भेजे एकमात्र पुत्र के न होंगे। वैसी कोई भी नासमझी यहां नहीं चलेगी। मैं भी तुम जैसा एक मनुष्य हूं। बस, थोड़ा सा ही अंतर है, कि मैंने स्वयं को जान लिया है। और वही तुम्हा री भी क्षमता है। तुम भी जान सकते हो स्वयं को।

इसलिए मैं प्रवचन देता रहूंगा, लेकिन वे अपने मित्रों के लिए, अपने अनुयायियों के लिए नहीं। अनुयायी तो अंधे होते हैं। और किसी को अनुयायी बनना, असुंदर बात है। वह तो किसी व्यक्ति का अपमान करने जैसा है। मैं सम्मान देता हूं व्यकि तयों को। और जो व्यक्ति सत्य की तलाश में होता है, वह संसार भर का सम्मान पाने योग्य है।

इसलिए मैं प्रवचन देता रहूंगा, मैं आशीष बांटता रहूंगा। मेरा संपूर्ण अस्तित्व ही उ नके लिए भरपूर आशीष है जो मेरे प्रेम में हैं। सिर्फ मेरे करीब होना मात्र ही उन के लिए आशीष है। इसलिए रजनीश धर्म को योजना बुद्ध धर्म के रूप में त्याग दे ना मेरे लोगों के लिए एक बड़ी स्वतंत्रता ले आया है। और इसने मुझे भी बड़ी प्र सन्नता दी है; क्योंकि अब मैं उस प्रकार के व्यक्तियों, जैसे कि मोहम्मद, मोजेज, जीसस, से संबंधित नहीं हरा। वे सब दिखावा करने वाले थे। जीसस कहते रहे कि वे सारे संसार को बचा सकते हैं; और वे स्वयं को भी नहीं बचा सके। मोहम्मद

कहते रहे कि वे ईश्वर के अंतिम पैगंबर हैं। अब कोई पैगंबर नहीं होगा। मैं तुम्हा रे लिए नए से नया और आखिरी पैगाम लाया हूं। और कुरान को देखो, मूढ़तापूर्ण लगता है उपनिषदों की तुलना में जो कि हजारों वर्ष पुराने हैं। यह अंतिम संदेश है कि, एक व्यक्ति की चार पत्नियां हो सकती हैं, कि जानवर भोजन के लिए ही बने हैं। और स्वयं को पैगंबर या परम उपदेशक कहना तो बिलकुल पागलपन है; ऐसा व्यक्ति समझदार नहीं होता, वह नासमझ है, पागल है।

मैं इस कोटि में शामिल नहीं होना चाहता। मैं औरों की ही भांति मनुष्य मात्र हूं। हां, मैंने कुछ खोज लिया है, जो तुम भी खोज सकते हो; क्योंकि वह तुम्हारे भीत र ही है। बस, तुमने उसे खोजने की कोशिश नहीं की। यह अंतर कोई बहुत बड़ा अंतर नहीं है। किसी भी क्षण तुम निर्णय ले सकते हो, और खोज सकते हो उसे। प्रत्येक व्यक्ति में जन्म से बुद्धत्व प्राप्त करने की क्षमता होती है। अगर वह संबुद्ध नहीं हो पाता, तो वह स्वयं ही जिम्मेदार है।

मेरा प्रवचन देना जारी रहेगा। अब उसमें ज्यादा स्वतंत्रता होगी। और अब मैं ज्या दा करीब सके संपर्क रख सकता हूं। क्योंकि अब मैं दूर किसी पहाड़ पर नहीं खड़ा , और तुम नीचे किसी अंधेरी खाई में। मैं कुछ विशिष्ट नहीं हूं। और मेरे देखे, स ाधारण हो जाना ही जीवन की सबसे असाधारण बात हैं।

आपने अमेरिका की सरकार की कड़ी आलोचना करने की शुरुआत कर दी है। आ पके साथ जो व्यवहार किया गया क्या उसके प्रतिकार स्वरूप ऐसा कह रहे हैं या ि क यह एक ढंग है दूसरे समाजवादी और कम्युनिस्ट देशों को संतुष्ट करने का।

दोनों बातें हैं। दोनों होगी ही।

ऐसा क्यों हुआ कि पूना में और अमेरिका के रजनीशपुरम में भी स्थानीय लोग आ पके द्वारा कम्युनों की स्थापना को बर्दाश्त नहीं कर सके? क्या आप भविष्य में हि माचल प्रदेश में या कि किसी और जगह ऐसा कोई कम्यून बनाना चाहते हैं? आगे की आपकी योजना क्या है?

नहीं, मैं कहीं कोई कम्युन नहीं बनाना चाहता।

शायद आप ने देखा हो, कि आपको बताया गया हो कि पंजाब केसरी में आपके ब ारे में और आपके समुदाय के बारे में क्या रिपोर्ट आयी है। अमेरिका की तुलना में प्रेस की स्वतंत्रता के बारे में आप क्या सोचते हैं?

भारत की अपेक्षा अमेरिका में प्रेस की स्वतंत्रता कहीं ज्यादा है।

ऐसा कहा जा रहा है कि आजकल आप आर्थिक अड़चन से गुजर रहे हैं। क्या यही कारण है कि रोल्स रोयल कारों की पूरी कतार रजनीशपुरम में बेची जा रही है ? क्या पूना आश्रम को भी छोड़ देने की आपकी कोई योजना है?

नहीं, मेरे पास कभी कोई रुपया पैसा रहा ही हनीं। तीस वर्षों से मैं जी रहा हूं वि ना रुपए पैसों के, तो मुझे कोई आर्थिक अड़चन हो ही कैसे सकती है! मेरे मित्र मेरी देख रेख करते हैं, और ऐसे लाखों मित्र हैं विश्व भर में। और रजनीशपुरम में जो हो रहा है, वह हर चीज बेचे जा रहे हैं, क्योंकि वे उन्हीं की हैं। वे रोल्स

रायस कारें मेरी नहीं हैं। और पूना आश्रम बंद हनीं होगा, इसकी कोई जरूरत नह
ीं है। और जहां तक मेरा प्रश्न है, मैं विश्व का सबसे अधिक निधर्म और सबसे अ
धिक धनवान व्यक्ति हूं। सबसे अधिक निर्धन इसलिए हूं क्योंकि मेरे पास कुछ नहीं
 है। सबसे अधिक धनवान इसलिए हूं क्योंकि मेरे इतने प्रेमी और मित्र हैं, जितने
सिकी के नहीं। अगर मैं रोल्स रायस चाहूं, तो कल यहां खड़ी मिलेगी, सौ रोल्स
रायस। इसमें कोई अड़चन नहीं है।

कामवासना के संबंध में आप की वास्तव में क्या शिक्षा है? भारत की सांस्कृतिक
परंपरा से उसका क्या जोड़ बैठता है?

काम से संबंधित मेरी देशना वस्तुतः भारत की सांस्कृतिक परंपरा पर ही आधारित
 है। कोई अन्य देश तंत्र जैसा दर्शन नहीं खोज पाया और तंत्र दर्शन इस दंश की
बड़ी से बड़ी देन है संसार को। और मेरी देशनाएं तंत्र का ही भाग है। यह है आ
धुनिक तंत्र।

ध्यान जैसी सीधी सादी बात भी खतरनाक क्यों मानी जाती है?

वह खतरनाक मानी जा रही है, क्योंकि यदि बीस लोग है जो उदास हैं, कुंठित हैं
 और तुम हो कि मुस्कुरा रहे हो, आनंदित हो, ऐसे में तुम्हें खतरनाक ही माना
जाएगा। वे बीस आदमी तुम्हें खत्म कर दें। वे तुम्हें देखेंगे तो पागल कह देंगे कि
आखिर मुस्कुरा क्यों रहे हो तुम?

ध्यान समस्या बना देता है, क्योंकि वह तुम्हें इतनी परिशुद्धता दे देता है, इतनी श
ांति, इतना आह्लाद तुममें उतार देता है; और चारों तरफ तो हताशा फैली है, अ
ासपास हर तरफ दुख है, पीड़ा है। तो दुखी आदमी तुम्हारे कदम विरुद्ध हो जाएग
ा, क्योंकि तब प्रश्न यह उठ जाएगा कि या तो तुम सही हो या वह सही है। और
 वह मतलब बहुमत; और तुम अकेले हो।

और अगर चीजों का फैसला बहुमत करता है, तो निस्संदेह वही सही हो जाता है
—गौतम बुद्ध सही नहीं होते।

क्या निकट भविष्य में रूस, चीन या कि किसी और देश में जाने की आपकी कोई
 योजना है?

नहीं।

क्या यह सही है कि आप और आपके शिष्य दिल्ली एयरपोर्ट के कस्टम अधिकारिय
ों से बचने में सफल हो गए?

एकदम गलत है; क्योंकि मेरे शिष्य सभी नियमित सामान्य तरीकों से होकर निकल
ते थे। केवल मैं ही बाहर ले जाया गया था, क्योंकि मेरे पास तो दिखाने बताने क
ो कोई चीज थी ही नहीं।

क्या आप ध्यान के लिए कुल्लू घाटी में पहले भी कभी आए थे? यदि आए थे, तो
 क्या आपको याद है कुछ उन स्थानीय लोगों की जो तब आपके साथ थे? क्या मु
ख्यमंत्री से भेंट करने का आपका कोई विचार है?

मैं यहां आया था कोई पंद्रह वर्ष पहले, लेकिन किसी स्थानीय व्यक्ति की बात मेरे खयाल में नहीं है। और जहां तक मुख्यमंत्री वीरभद्र की बात है, मैंने सुना है उन के बारे में। वे बुद्धिमान व्यक्ति हैं, और साहसी भी। अगर वे सच में ही बुद्धिमान हैं आर साहसी हैं, तो उन्हें मुझसे मिलने आना चाहिए। मैं कभी किसी से मिलने नहीं जाता। और मैं तो मेहमान हूं, वे मेजबान हैं। उन्हें इस बात का खयाल रखन ा चाहिए।

मां आनंद शीला ने कम्यून को धोखा क्यों दिया? क्या यह सच है कि श्री विनोद खन्ना भी वापस फिल्म इंडस्ट्री में जाने की सोच रहे हैं? क्या रजनीश फ्रेंडस इंटरने शनल के भारतीय विभाग के प्रेजीडेंट होकर भी वे ऐसा कर सकते हैं?

बिलकुल, क्योंकि किसी पर कोई बंधन नहीं है। अगर उसे लगता है कि फिल्मों में लौटना है तो ठीक; अब वह पहले की अपेक्षा कहीं बेहतर अभिनेता हो पाएगा। और मैं नहीं चाहता कि फिल्म इंडस्ट्री प्रतिभाशाली व्यक्ति से वंचित हो जाए। वह मेरे पूरे आशीष सहित जा सकता है।

और जहां तक शीला की बात है, मुझे कोई धोखा नहीं दे सकता; क्योंकि मैं किस ी से कोई अपेक्षा ही नहीं रखता। तुम अपनी मरजी से आते हो, और जब तुम जा ना चाहते हो, तुम अपनी मरजी से चले जाते हो। धोखे की गुंजाइश ही कहां है? क्योंकि मैं कोई विश्वास नहीं चाहता, मुझे निष्ठा, भक्ति नहीं चाहिए।

धोखा केवल तभी संभव होता है, जब वफादारी की आवश्यकता हो और कोई उस के विपरीत हो जाए। लेकिन मैं तो कहता नहीं कि मेरे प्रति निष्ठा रखो या कि मु झमें विश्वास करो। यह तुम्हारा आनंद है कि आओ मेरे कारवां में शामिल हो जा ओ। चले जाना भी तुम्हारा अपना आनंद है। इसमें धोखे जैसा तो कुछ भी हनीं है।

...ठीक।

प्रश्नों के जो उत्तर आप से मिले, उससे हमें ज्ञान का प्रकाश मिला, उसके लिए भ गवान श्री हम आपके बहुत आभारी हैं।

ठीक है। जब भी आना चाहें फिर आ जाएं।

28 नवंबर 1985, प्रातः, कुल्लू मनाली